इन टू द
शैडो
डेविड जॉनसन

# इन टू द शैडो

# डेविड जॉनसन

## इन टू द शैडो

रिसर्च एंड एनालिसिस विंग की उस विशेष शाखा के नियंत्रण कक्ष के ऑपरेटर वाली डेस्क को संभालने वाली उस खूबसूरत युवती ने सिग्नल मिलते ही हेडफोन को इस अंदाज में उठाया जैसे उसे पहले से ही उसका इंतजार हो। उसकी आंखों व चेहरे पर तत्परता के भाव थे।

"यस।" उसने केवल इतना ही कहा।

"एक्शन फाइव नॉट थ्री रिपोर्टिंग, ओवर...।"

"रिपोर्ट दो...ओवर...।"

"काले रंग की एक एम्बेसडर मेरी आंखों के सामने गुजर रही है। अभी-अभी वह हाइवे की ओर मुड़ी है। ओवर...।"

"ठीक है।"

"मेरे लिए अब क्या आदेश है?"

"फिलहाल वापस आ जाओ। ओवर एंड ऑल...।" कहकर उसने संबंध-विच्छेद किया तथा उसकी खूबसूरत उंगलियां सामने की-बोर्ड पर बड़ी तत्परता के साथ छेड़छाड़ करने लगीं।

हेडफोन अभी तक उसके कानों पर चढ़ा हुआ था।

कुछ पल बाद ही की-बोर्ड पर ग्रीन रंग का एक बल्ब स्पार्किंग करने लगा। जो इस बात का सिग्नल था कि दूसरी ओर से संपर्क स्थापित हो चुका था।

"हैलो...हैलो एक्शन फाइव नॉट सिक्स ओवर...।"

"एक्शन फाइव नॉट सेवन अटैंडिंग, ओवर...।"

"काले रंग की एम्बेसडर तुम्हारी ओर बढ़ रही है, उस पर नजर रखो...ओवर।"

"ओके, आई एम रेडी।"

"जैसे ही वह गाड़ी तुम्हें नजर आए, इसकी सूचना तुरंत कंट्रोल रूम को दो, ताकि अगली कार्यवाही के लिए निर्देश दिया जा सके।"

"ठीक है-मैं तुरंत इसकी सूचना कंट्रोलरूम को देने के लिए तैयार हूं।

"गुड...ओवर एंड ऑल।"

कहने के साथ ही उस खूबसूरत युवती ने की-बोर्ड पर एक बटन दबाकर संपर्क समाप्त किया तथा हेडफोन कानों से उतार लिया, लेकिन उसने अपनी सीट नहीं छोड़ी। बल्कि उसके चेहरे पर व्यस्तता के भाव नजर आ रहे थे।

हेडफोन को हैंगर पर रखने के बाद उसने अपनी टेबल पर रखे कई टेलीफोनों में से एक का रिसीवर उठाया तथा उसकी उंगलियां एक बार फिर उसके डायल के साथ छेड़छाड़ करने लगीं।

□□□

काले रंग की वह एम्बेसडर एक मल्टी स्टोरी बिल्डिंग के प्रांगण के उस कोने में जाकर रुकी जहां प्रांगण में लगी बत्तियों की रोशनी नहीं पहुंच रही थी। इसलिए वहां अंधेरा था।

एक व्यक्ति उस गाड़ी से बाहर आया तथा इमारत के मुख्य द्वार की ओर बढ़ गया।

वह कोई रिहाइशी इमारत नहीं थी। उसके अलग-अलग हिस्सों में अलग-अलग संस्थाओं के ऑफिसों के बोर्ड नजर आ रहे थे- तथा रात्रि के उस प्रहर में वह इमारत एकदम सुनसान नजर आ रही थी।

वह व्यक्ति लिफ्ट के सामने पहुंचा।

लिफ्ट के गेट के बराबर में ही स्टूल पर एक गार्ड नींद में झपकी ले रहा था।

आगंतुक की आहट पाकर उसने अपना झुका हुआ चेहरा उठाया। उसने अपनी आंखें खोलकर एक बार आगंतुक की ओर देखा तथा कोई प्रतिक्रिया वक्त किए बिना फिर से अपनी आंखें मूंदकर झपकी लेने लगा।

इमारत में आने-जाने वाले किसी व्यक्ति से मानो उसे कोई वास्ता ही न हो और न ही किसी के आने-जाने पर उसे कोई एतराज हो।

वह व्यक्ति लिफ्ट के केबिन में दाखिल हुआ और लिफ्ट सक्रिय हो गई।

इंडीकेटर पर संकेत मिल रहा था कि लिफ्ट पांचवीं मंजिल पर जा रही थी।

पांचवीं मंजिल पर जाकर लिफ्ट रुकी तो वह आदमी केबिन से बाहर आकर सामने वाली गैलरी में आगे बढ़ गया।

कुछ कदम आगे चलने पर ही एक दरवाजे पर किसी ट्रेवल एजेंसी का बोर्ड नजर आ रहा था।

वह आदमी उसी दरवाजे के सामने जाकर रुका।

पूरी इमारत उस समय सुनसान नजर आ रही थी। लेकिन अजीब बात यह थी कि उस आदमी ने दरवाजे पर लगी कॉलबेल का बटन दबाया।

इसका मतलब अंदर कोई मौजूद था। जबकि उस घड़ी वहां किसी भी दफ्तर के खुले होने की संभावना नहीं थी।

लेकिन ऐसा कोई प्रतिबंध भी नहीं था।

किसी जरूरी काम के लिए कोई अपना दफ्तर खोल भी सकता था। लेकिन बाहर से अंदर किसी की उपस्थिति का जरा भी आभास नहीं हो रहा था।

कुछ पल बाद ही चरमराहट की आवाज के साथ दरवाजा खुला।

दरवाजे पर एक व्यक्ति प्रकट हुआ। उसने अपना चेहरा उठाकर आगंतुक की ओर प्रश्नसूचक नेत्रों से देखा। उनके चेहरे के भावों से लगता था जैसे दोनों एक-दूसरे से अपरिचित हों।

"लगता है।" आगंतुक ने कहा- "तुम मेरे ही इंतजार में बैठे हुए थे।"

"नहीं।" उसने कहा- "मुझे किसी का इंतजार नहीं है। मैं यहां अपना जरूरी काम निबटा रहा हूं।"

"तुम्हारा वह जरूरी काम कब तक निबट जाएगा?"

"मेरे पास किसी के बेकार के सवालों का जवाब देने का वक्त नहीं है।"

"क्या वाकई ऐसा है?"

"हां।" उसने कहा और दरवाजा बंद करने का उपक्रम किया।

"तब तो तुम्हारे पास 'काला बिल्ला' से बात करने का वक्त भी नहीं होगा?"

दरवाजा बंद करने के लिए बढ़ता उसका हाथ जहां-का-तहां रुक गया।

उसने एक बार फिर अपना चेहरा उठाकर आगंतुक की ओर देखा। इस बार उसकी आंखों में अजीब-से भाव थे।

"अंदर आओ।" उसने सामने से हटकर उसे रास्ता देते हुए कहा।

फिर आगंतुक के अंदर दाखिल होते ही उसने दरवाजा बंद कर दिया।

फिर उसी कमरे के बीचोंबीच पहुंचकर दोनों ने एक-दूसरे की ओर पलटकर देखा।

"माल का क्या हुआ?" वहां मौजूद व्यक्ति ने बिना किसी भूमिका के प्रश्न किया।

"माल पहुंच चुका है।"

"लेकिन तुम दस मिनट देर से पहुंचे हो-मैं ज्यादा इंतजार करने वाला नहीं था। बस यहां से रवाना होने वाला ही था। और एक बार यहां से निकलने के बाद रात-भर के लिए तो वापस लौटने वाला था नहीं।"

"मैंने अपने काम में किसी प्रकार की कोताही नहीं की और देर से पहुंचने की मेरी कोई जिम्मेदारी नहीं है।"

"तुम्हारी कोई जिम्मेदारी नहीं है ?"

"कतई कोई जिम्मेदारी नहीं है।

"फिर किसकी जिम्मेदारी है?"

"यह सवाल तुमने उसी से करना था जिसने तुम्हें मेरे पहुंचने का समय दिया था। साथ ही तुम्हें यह भी छूट दी थी कि तुम्हें इंतजार करने की जरूरत नहीं है।"

"कैसे कर सकता था सवाल? उस समय क्या मैं जानता था कि तुम देर से पहुंचोगे ?"

"तो बाद में कर लेना यह सवाल-लेकिन मेरे से यह सवाल करने का कोई अर्थ नहीं है।"

"और यदि कोई पुलिस वाला कोई इंटेलीजेंस वाला तुम्हें सूंघता-सूंघता यहां तक पहुंच गया-तुम तब भी कहोगे कि इसका जवाब तुम्हारे पास नहीं है।"

"नहीं।" उसने कहा- "तब मैं ऐसा नहीं कहूंगा।"

"यानी?"

"इसकी पूरी जिम्मेदारी मेरी है-मैंने इस मामले में पूरी सावधानी बरती है। मेरे यहां पहुंचने की किसी को हवा तक नहीं लगी है।"

"यह तुम विश्वास के साथ कह सकते हो?"

"पूरे विश्वास के साथ-पूरी जिम्मेदारी के साथ।"

"ठीक है।" उसने कहा।

उसी घड़ी उस व्यक्ति ने जेब से एक मोबाइल फोन निकाला तथा उसे ऑन करके उसने जो कुछ कहा उसे कोई बाहरी व्यक्ति नहीं समझ सकता था। क्योंकि उसने उस घड़ी किसी कोड भाषा का इस्तेमाल किया था।

मोबाइल फोन जेब के हवाले करके उसने एक बार फिर उस व्यक्ति की ओर देखा।

"वह गार्ड-जो लिफ्ट के करीब तैनात है, उस पर इतना भरोसा किया जा सकता है?"

"कितना भरोसा?"

"जितना कि किया जा रहा है।"

"वह तुम्हारी सिरदर्दी नहीं है तुम्हारा काम माल को मेरे हवाले कर देना है। इसके बाद तुम्हारी जिम्मेदारी खत्म हो जाती है।"

"ठीक है।"

"एक आध पैग लगाना चाहो तो उस अलमारी में सारा सामान मौजूद है।" उसने उंगली से संकेत करते हुए कहा।

"जरूर-ऐसी भयंकर ठंड में इसकी जरूरत तो मुझे बहुत देर से महसूस हो रही है।"

"तो करो अपनी जरूरत पूरी।"

"लेकिन मेरे आदमी भी ठंड का शिकार हो रहे हैं।"

"अपने आदमियों को यहां पहुंचने तो दो-मैं इतना फक्कड़ आदमी नहीं हूं कि दो-चार आदमियों की ठंड भी दूर न कर सकूँ।"

कहकर वह एक कुर्सी पर बैठ गया, जबकि आगंतुक उस अलमारी की ओर बढ़ गया।

उसने अपने लिए एक जाम तैयार किया।

जाम उठाकर वह वापस लौटा तथा उस व्यक्ति के सामने वाली कुर्सी पर अपने-आपको स्थापित किया।

"तुम नहीं लोगे?"

"मैं ठंड उतारने के लिए इसे नहीं लेता बल्कि मौज-मस्ती के लिए लेता हूं और काम के समय में मौज-मस्ती से दूर ही रहता हूं।"

"तो मौज-मस्ती के लिए ही हमारा इंतजार करना तुम्हारे लिए मुश्किल हो रहा था?" उसने मुस्कराते हुए कहा ।

लेकिन उस व्यक्ति ने इसका उत्तर नहीं दिया।

आगंतुक ने जाम होंठों से लगाकर एक लम्बा घूंट लिया।

उसी घड़ी कॉलबेल बजी।

मेजबान उठकर दरवाजे तक पहुंचा।

उसने दरवाजा खोला।

इसके साथ ही चार व्यक्ति अंदर दाखिल हुए। वे चारों लकड़ी की दो पेटियां उठाकर लाए थे।

दोनों पेटियां उन्होंने फर्श पर रख दी। पेटियां लाने वाले व्यक्तियों के माथों पर पसीने की बूंदें इस बात का सबूत थीं कि पेटियां बहुत ही भारी थीं।

इसी के कारण कड़ाके की ठंड में भी उन्हें पसीना आ गया था।

पसीना ही नहीं उनकी सांसें भी अनियंत्रित हो रही थीं, जिन्हें वे नियंत्रित करने की कोशिश कर रहे थे।

पहले आने वाले व्यक्ति ने अपना जाम एक ही सांस में खाली किया तथा उठकर पेटियों के करीब पहुंचा, जहां उसके साथी अपनी सांसों पर काबू करने का प्रयास कर रहे थे तथा मेजबान भी उनके करीब ही खड़ा था।

"इसकी जरूरत तो नहीं है लेकिन।" उस व्यक्ति ने कहा- "इसके बावजूद भी मेरे लिए जरूरी है कि माल को तुम्हें चौकस करा दूं।" कहकर उसने अपनी जेब से एक लम्बे फल वाला चाकू निकाला।

मेजबान ने इस पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की।

वह चाकू हाथ में लेकर एक पेटी पर झुका। फिर वह चाकू की नोंक एक तख्ते में फंसाकर उसे उखाड़ने का प्रयास करने लगा।

वहां मौजूद बाकी व्यक्तियों की नजर उसी ओर लगी थीं।

चाकू का फल आधी लम्बाई तक अंदर घुस गया तो उसने चाकू को ऊपर की ओर झटका दिया।

उस झटके के साथ ही तख्ते में लगी लोहे की कीलें निकल गईं और तख्ता अपने आधार से उखड़कर डेढ़ इंच ऊपर उठ गया।

अब उसे केवल हाथ से ही अलग करना बाकी रह गया था।

उस व्यक्ति ने बेहद इत्मीनान के साथ चाकू अपनी जेब में रखा तथा दोबारा पेटी की ओर झुका।

ऐसा लगता था जैसे यह महज एक औपचारिकता थी। पेटी के अंदर क्या था, यह देखने के लिए उनमें से कोई भी विशेष उत्सुक नजर नहीं आ रहा था।

उस व्यक्ति का हाथ तख्ते तक पहुंचा।

उसी घड़ी एक बार फिर कॉलबेल बजी।

कॉलबेल की आवाज सुनते ही उस व्यक्ति ने अपना हाथ इस तरह वापस खींचा मानो वह किसी बिच्छू को पकड़ने जा रहा हो।

वह तेजी से उछलकर खड़ा हो गया।

वहां मौजूद बाकी लोगों पर भी वैसी ही प्रतिक्रिया हुई।

सब-के-सब हक्के-बक्के एक-दूसरे का मुंह ताक रहे थे।

कॉलबेल बजाने वाला जैसे बहुत ही अधीर हो रहा था।

एक बार कॉलबेल के बटन पर उंगली रखने के बाद वह जैसे हटाना ही भूल गया था। कॉलबेल लगातार बज रही थी।

अंत में उन दोनों व्यक्तियों के चेहरों पर चिंता के भाव नजर आए और उसी पल उन दोनों के हाथों में रिवॉल्वर प्रकट हुए।

उनका अनुसरण करते हुए उन चारों के हाथ भी अपनी जेबों की ओर सरकने लगे।

उनके चेहरों पर उलझनपूर्ण भाव थे।

कॉलबेल अब बंद हो चुकी थी लेकिन उसकी जगह दरवाजा बड़ी बेसब्री के साथ भड़भड़ाया जा रहा था।

□□□

वह किसी बहुत ही प्राचीन इमारत के खंडहर थे जिसमें वे लोग उस घड़ी गुप्त रूप से एकत्र हुए थे। उस खंडहर के आसपास का इलाका भी घनी झाड़ियों वाला जंगल था। जो अक्सर निर्जन रहता था।

किसी मानव के उधर आने-जाने की संभावना नहीं के बराबर ही होती थी।

खंडहर का वह कक्ष अपेक्षाकृत बेहतर हालत में था। उसकी छत टूटी हुई नहीं थी।

उस कक्ष को एक सभागार का रूप दिया गया था। इमारत के टूटे हुए हिस्सों को जोड़कर इस तरह रखा गया था कि उन्हें बैठने के लिए कुर्सियों के रूप में इस्तेमाल किया जा सके।

इमारत के दूसरे हिस्सों की अपेक्षा इस कक्ष में धूल भी उतनी ज्यादा नहीं थी-दीवारों पर कई जगह काले निशान थे जो किसी मोमबत्ती आदि के जलाने से बन सकते थे।

इसका मतलब था कि इससे पहले भी खंडहरों के इस हिस्से को इस्तेमाल किया जाता रहा था।

वह सभी आधुनिक व खतरनाक हथियारों से लैस थे और उनके चेहरों पर भी वैसे ही खतरनाक खूंखार भाव नजर आ रहे थे।

जो व्यक्ति उनके बीच में बैठा हुआ था उसके चेहरे पर घनी दाढ़ी थी।

दाढ़ी को जिस तरह उसने बेतरतीब ढंग से रखा हुआ था, उससे लगता था जैसे वह अपनी वास्तविक पहचान को छिपाने के लिए भी उस दाढ़ी का सहारा ले रहा था।

उसकी आंखें बेहद खतरनाक नजर आती थीं जो कि अंगारों की तरह दहकती हुई कटोरियों से बाहर आने को आतुर हो रही थीं।

एक बार उसने अपनी खूंखार आंखों से वहां मौजूद सभी को बारी-बारी से बड़ी गहरी नजर से देखा। उस घड़ी वातावरण में सन्नाटा भी इतना गहरा था कि सुई गिरने तक की आवाज भी साफ- साफ सुनाई दे।

सभी के चेहरों पर घूमती हुई उसकी नजरें एक चेहरे पर ठहर गईं।

“कमांडर अब्बास!”

“यस मेजर साहब।”

“तुम जानते हो कि तुम्हें कितनी बड़ी-कितनी अहम जिम्मेदारी सौंपी गई है?”

“यस मेजर साहब।” उसने कहा- “मैं अपनी जिम्मेदारी को बेहतर ढंग से जानता भी हूं और समझता भी हूं।”

“केवल उसे जानना और समझना ही काफी होगा?”

"केवल जानना और समझना ही नहीं बल्कि मैं यह भी जानता हूं कि मुझे उस जिम्मेदारी को पूरा भी करके दिखाना है और मैं उसे पूरी करके दिखाऊंगा भी।"

"पक्का?"

"वक्त आने पर आपको स्वयं अहसास होगा मेजर साहब कि मुझे इतनी बड़ी जिम्मेदारी सौंपकर कोई गलती नहीं की गई।"

"गुड।" उसने कहा- "तुम्हारी तैयारी कैसी है?"

"मेरी तैयारी पूरी हो चुकी है मेजर साहब। लेकिन...।"

"लेकिन क्या?"

"जब तक मेरे पास पर्याप्त मात्रा में विस्फोटक नहीं होंगे, आर.डी.एक्स. नहीं होगा, पर्याप्त मात्रा में डिटोनेटर नहीं होंगे तो फिर मेरी सारी तैयारी किसी काम की नहीं होगी। वह सारा सामान मुझे अब तक मिल जाना चाहिए था। जैसा कि मुझे तब आश्वासन दिया गया था जबकि यह जिम्मेदारी मुझे सौंपी गई थी। इसमें कुछ और देरी की गई तो मेरी सारी तैयारिया बेकार जाएंगी मेजर साहब, मेरे सारे किए-धरे पर पानी फिर जाएगा।"

"यह समस्या केवल तुम्हारे सामने ही नहीं है कमांडर अब्बास-बल्कि हम सभी को इसका सामना करना पड़ रहा है। इसका कारण है बॉर्डर पर होने वाली सख्ती व चौकसी जो कि आजकल बहुत बढ़ा दी गई है। उसी चौकसी के कारण उस पार से माल का इधर आना बहुत मुश्किल हो रहा है। लेकिन केवल मुश्किल ही है, नामुमकिन नहीं है। इसलिए इससे निराश होने की जरूरत नहीं है।"

"लेकिन इसमें और देर की गई तो हमारी सारी कोशिश बेकार होगी मेजर साहब। फिलहाल हमारे पास जो विस्फोटक सामग्री मौजूद है, केवल उसके सहारे काम नहीं चलाया जा सकता।"

"अब इसके लिए चिंतित होने की जरूरत नहीं है। इसकी एक बहुत बड़ी खेप हिंदुस्तान पहुंच चुकी है। उसमें तुम्हारी जो मांग थी वह सारा सामान बल्कि उससे भी कहीं ज्यादा माल राजधानी पहुंच चुका है। जो कि जल्दी ही तुम्हें सौंप दिया जाएगा।"

"आज की यह बैठक खासतौर से इसी सिलसिले में बुलाई गई है। मैं तुम लोगों को यही बताना चाहता हूं कि अब हमारे किसी भी कमांडर को यह शिकायत नहीं होगी कि उसके पास अपने किसी ऑपरेशन को पूरा करने के लिए गोला-बारूद या हथियारों की कोई कमी है।"

उस कथित मेजर की इस घोषणा के बाद वहां मौजूद हर एक की आंखों में चमक नजर आई।

"तब तो।" अब्बास नाम के उस व्यक्ति ने खूंखार स्वर में कहा- "मैं राजधानी की सड़कों पर मौत की तबाही मचा दूंगा मेजर साहब।"

"हां।" उसने कहा- "मैं यही चाहता हूं। राजधानी में मौत का ऐसा नंगा नाच किया जाए कि चारों और हाहाकार मच जाए। हर एक को चारों और मौत-ही-मौत नजर आए। वह जहां भी पनाह लेने की कोई कोशिश करे, वहीं मौत उसके स्वागत के लिए तैयार मिले।"

"गुड।" दाढ़ी वाले ने कहा- "केवल राजधानी ही नहीं देश के कई हिस्सों में एक साथ ही मौत का यह खेल खेला जाएगा। इसके लिए हमने एक खास अवसर को चुना है जब पूरा

हिंदुस्तान एक राष्ट्रीय पर्व के मौके पर खुशी के नशे में चूर होगा।"

"कोई सोच भी नहीं सकेगा कि इस समय, जबकि लोग इस समारोह की तैयारियां कर रहे हैं, दूसरी ओर हम उनकी तबाही की तैयारियां लगभग पूरी कर चुके हैं। हमारी तैयारियों में जिस चीज की कमी थी, वह आर.डी.एक्स. व गोला-बारूद की इस नई खेप के साथ पूरी हो चुकी है। राजधानी में तो वह सारा सामान पहुंच ही चुका है और अगले चौबीस घंटों में सभी के पास पहुंच जाएगा।" कहते हुए दाढ़ी वाले ने बाकी लोगों की ओर देखा।

"तुम लोगों की तैयारियां कैसी हैं?"

"हमारी तैयारियां पूरी तरह से मुकम्मल हो चुकी हैं। उन तैयारियों में हमारी प्रॉब्लम भी बस इतनी ही थी जैसी कि अब्बास की और अब जबकि वह प्रॉब्लम दूर हो चुकी है तो हमारी तैयारियां भी पूरी तरह से मुकम्मल हैं। अगले चौबीस घंटों के बाद हम किसी भी क्षण तबाही मचाने के लिए तैयार होंगे। हमें केवल आपका संकेत मिलने का इंतजार होगा।" उनमें से एक ने कहा ।

बाकी सभी ने उसके कथन का समर्थन किया।

"हमारी तैयारियां मुकम्मल हैं मेजर साहब।" उनमें से एक ने कहा- "फिर हमें किसी खास अवसर का इंतजार करने की क्या जरूरत है! क्यों न तुरंत ही हमें अपनी कार्यवाही कर देनी चाहिए। मैं नहीं समझता कि इसमें अब जरा-सी देर करने में भी हमें कोई लाभ हो सकता है।"

"हम ऐसा नहीं करेंगे।" दाढ़ी वाले ने कहा- "हमारा यह ऑपरेशन खासतौर से उसी खास अवसर के लिए है और उसे उसी समय आरम्भ किया जाएगा।"

"लेकिन उससे फर्क क्या पड़ेगा मेजर साहब?" एक अन्य कमांडर ने प्रश्न किया- "जो काम तब किया जाएगा उसे अभी क्यों नहीं किया जा सकता? इसमें देर होने पर संभव है कोई उलझन ही पैदा हो जाए। जबकि इस समय हमारे सामने कोई उलझन नहीं है कोई समस्या नहीं है।

"इसके बावजूद भी कार्यवाही उसी समय की जाएगी।"

"लेकिन क्यों?"

"क्योंकि हम चाहते हैं कि हिंदुस्तान की तबाही करने वाले हमारे उन धमाकों की गूंज पूरी दुनिया में उसी घड़ी सुनाई दे।"

"वह तो देगी ही मेजर साहब।"

"हां लेकिन उस खास मौके पर की गई कार्यवाही की गूंज जिस तरह पूरी दुनिया में सुनाई देगी-वह किसी दूसरे मौके पर नहीं।"

"हम समझे नहीं मेजर साहब।"

दाढ़ी वाले होंठों पर एक अर्थपूर्ण मुस्कराहट उभरी ।

"उस समय।" उसने कहा- "उन समारोहों के कारण पूरी दुनिया के समाचार-पत्रों की नजरें खासतौर से हिंदुस्तान की ओर लगी होंगी। लेकिन वहां उन्हें जो कुछ नजर आएगा उसका प्रचार कितने जोर-शोर के साथ होगा।"

"दुनिया यह भी देखेगी कि उस अभूतपूर्व सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद जिस तरह से

हमारे ऑपरेशन को अंजाम दिया जाएगा उससे पूरी दुनिया में यह संदेश जाएगा कि हिंदुस्तान की सुरक्षा व्यवस्था कितनी भी चौकस हो-उसकी तबाही के लिए आगे बढ़ने वाले हमारे कदमों को रोकना संभव नहीं है।"

दाढ़ी वाले के कथन पर सभी निरुत्तर हो गए।

पल-भर के लिए वहां मौन छा गया।

उसके बाद दाढ़ी वाले ने कुछ कहना चाहा। लेकिन उसके मुंह के साथ ही उसकी आंखें भी अविश्वसनीय ढंग से फैलती चली गईं।

"पचास वर्षों से।" एक नए स्वर ने वहां मौजूद हर एक व्यक्ति को चौंकने पर मजबूर कर दिया- "हिंदुस्तान की तबाही का सपना देखने वालों, अब अपनी तबाही की हकीकत को भी देखो।"

इसके साथ ही सभी की गरदनें इस नए स्वर की दिशा में घूमती चली गईं।

"तुम्हारा कहना था कि।" उसने आगंतुक से नाराज़गीयुक्त लहजे में कहा-"तुमने यहां आते समय पूरी सावधानी बरती है। किसी ने तुम्हारा पीछा नहीं किया।"

"वह तो मैं अब भी कह रहा हूं।"

"फिर वह कौन है?"

"इस सवाल का जवाब मैं क्या दूं? कोई तुम्हारा परिचित भी हो सकता है।"

"नहीं।" उसने कहा- "मेरा कोई परिचित इतनी असभ्यता के साथ पेश नहीं आ सकता।"

"हो सकता है तुम्हारे परिचितों में कोई असभ्य हो गया हो।"

"किसकी मौत आई है जो मेरे सामने इस तरह की असभ्यता का साहस कर सके?"

"लेकिन फिलहाल यह बहस का तो वक्त नहीं है। इस मुसीबत से छुटकारे का रास्ता निकालो। जल्दी।"

उसने उन व्यक्तियों को संकेत किया जो उन पेटियों को उठाकर लाए थे। इसके परिणामस्वरूप वे उन पेटियों को अंदर वाले कमरे में ले जाने की नीयत से उठाने लगे।

वह स्वयं दरवाजे की ओर बढ़ा।

"कौन है?" उसने रौबदार स्वर में कहा।

"दरवाजा खोलो-जल्दी।" बाहर से आवाज आई। उसने इस आवाज को पहचाना। यह आवाज इस इमारत के वॉचमैन की थी जो कि आगंतुकों को लिफ्ट के केबिन के पास ऊंघता हुआ मिला था।

"क्या बात है क्यों दरवाजा तोड़ने पर आमादा हो रहा है?"

"तुझे बताया नहीं था कि तुझे इधर नहीं आना है?"

"बाहर बहुत गड़बड़ हो गई है साहब।"

"क्या गड़बड़ हो गई? कहीं इस इमारत में आग लग गई जो...?"

"आग ही लग गई है साहब।"

"क्या?"

"आग ही लग गई है साहब-लेकिन इमारत में नहीं।"

"तो?"

"वह गाड़ी-जिसमें आपके मेहमान आए थे-उसके अंदरन से ऊंची-ऊंची लपटें उठ रही

हैं।"

"क्या-क्या कहा तूने?" उसकी आंखों में हैरत के भाव नजर आए- "यह कैसे हो सकता है? गाड़ी में आग कैसे लग सकती है?"

"आप स्वयं देख लीजिए साहब-गाड़ी में लगी आग इमारत के आसपास फैलकर इमारत तक पहुंच सकती है। कुछ कीजिए साहब मैं तो बेमौत मारा जाऊंगा।"

उसने आगंतुक की ओर देखा।

"यह तुम्हारी किसी लापरवाही का नतीजा है जिसके कारण हम एक भारी मुसीबत में फंस गए हैं।"

"लेकिन हमारी क्या लापरवाही हो सकती है ?"

"तुममें से किसी ने जलती सिगरेट वगैरह का टुकड़ा अंदर डाल दिया होगा। उसी के कारण...।"

"नहीं-हमने ऐसा कुछ नहीं किया।"

"तुम हर तरह की ज़िम्मेदारी से मुकरने की कोशिश कर रहे हो लेकिन हम किसी मुसीबत में फंसे तो इसकी पूरी जिम्मेदारी तुम्हारी होगी।"

"दरवाजा खोलो साहब...।"

उसने दरवाजा खोला-लेकिन रिवॉल्वर अभी तक दोनों के हाथों में थे।

वॉचमैन अंदर आया।

उसके चेहरे पर आतंक के भाव थे।

"तुम यहीं ठहरो।" उसने आगंतुक की ओर देखा- "पहले मैं स्वयं देखता हूं।"

"ठीक है।"

उसने दरवाजे से बाहर कदम रखा। वॉचमैन उससे ज्यादा तेजी से उससे पहले ही बाहर आ गया।

वह दरवाजे से बाहर आकर बाईं ओर मुड़ा।

और उसी घड़ी उसने जो कुछ देखा वह अविश्वसनीय था।

गैलरी में उसे पुलिस-ही-पुलिस नजर आई।

और इससे पहले कि वह कुछ समझ पाता, उसके जिस्म के चारों ओर वर्दीधारी पुलिस वालों की राइफलें सट गईं।

एक पुलिस अधिकारी ने बड़ी सहूलियत के साथ उसका रिवॉल्वर अपने अधिकार में ले लिया, जिसका उसने जरा भी विरोध नहीं किया।

पुलिस वालों ने उसे अंदर उसी कमरे में धकेल दिया जहां से वह बाहर आया था।

और वह नजारा उस आदमी ने भी देखा जिसे वह वहीं मौजूद रहने की बात कहकर गया था।

लेकिन पुलिस के सतर्क जवानों ने उसे भी कुछ करने का मौका नहीं दिया।

उसका रिवॉल्वर भी पुलिस वालों ने अपने अधिकार में ले लिया।

"तलाशी लो इनकी।" एक अधिकारी ने आदेश दिया।

"यह...यह सब क्या हो रहा हा इंस्पेक्टर-उसका कुसूर क्या है?"

लेकिन पुलिस अधिकारी ने इसका उत्तर नहीं दिया।

बड़ी तत्परता के साथ उनकी तलाशी ली गई।

उनके पास रिवॉल्वरों के सिवा कोई दूसरा हथियार नहीं था।

पुलिस अधिकारी ने उस व्यक्ति की ओर देखा।

"बाकी लोग कहां हैं?" पुलिस अधिकारी ने कड़कते स्वर में प्रश्न किया।

"कौन...कौन लोग?" उसने हैरत का प्रदर्शन करते हुए कहा- "मेरी समझ में नहीं आ रहा कि यह सब क्या हो रहा है इंस्पेक्टर? हमने किया क्या है? हमारे साथ इस तरह का बर्ताव क्यों किया जा रहा है?"

इंस्पेक्टर ने जलते नेत्रों से उसकी ओर देखा।

"आपको किसी शरीफ आदमी के साथ इस तरह का बर्ताव करने का कोई हक नहीं है इंस्पेक्टर साहब-मैं कमिश्नर साइब से इसकी शिकायत करूंगा। आप शायद यह नहीं जानते कि कमिश्नर साहब के साथ मेरा गहरा परिचय है।"

उसी घड़ी!

इंस्पेक्टर का हाथ हवा में लहराया।

फिर उसका एक जोरदार तमाचा उस व्यक्ति के चेहरे पर इतनी जोर से टकराया कि उसकी आंखों के सामने लाल-पीले सितारे नाच गए।

उसका संतुलन लड़खड़ाया। लेकिन वह लड़खड़ाकर गिरता, तभी इंस्पेक्टर ने उसका गिरेहबान पकड़ लिया।

"तू समझता है-इस तरह की ड्रामेबाजी करके तू पुलिस की आंखों में धूल झोंक सकेगा? कमिश्नर के साथ तेरा याराना है-चल-फोन लगा कमिश्नर साहब को। यह मत समझ लेना कि कमिश्नर साहब इस समय बिस्तर में आराम फरमा रहे होंगे। वे इस घड़ी भी अपने ऑफिस में बैठे हैं।"

उसके चेहरे पर उलझनपूर्ण भाव उभरे।

"फोन क्यों नहीं उठाता हरामजादे?"

उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

"बोल-बोल उल्लू के पट्ठे बाकी लोग कहां हैं?"

"लेकिन...लेकिन यहां तो हम दोनों के सिवा कोई भी नहीं है इंस्पेक्टर साहब-जरूर आपको कोई गलतफहमी हो रही है।"

"और वह पेटियां।" इंस्पेक्टर ने उसके कथन को अनसुना करते हुए कहा-

"कहां हैं जो अभी-अभी यहां लाई गई हैं?"

"पेटियां-कैसी पेटियां?"

"यानी तू स्वयं कुछ नहीं बताएगा।" कहकर इंस्पेक्टर ने अपने जवानों की ओर देखा- "इस ऑफिस की तलाशी लो-सब कुछ अपने-आप सामने आ जाएगा। तब मैं इस हरामजादे को बताऊंगा कि...।" इंस्पेक्टर ने वाक्य अधूरा छोड़ दिया ।

दो-तीन जवान आगे बढ़े।

"सुनो।"

जवानों ने अपने ऑफिसर की ओर देखा।

"इनके अलावा यहां चार आदमी मौजूद हैं जो यहीं कहीं दुबके बैठे हैं। वे हथियारबंद हो

सकते हैं, लेकिन इसकी परवाह करने की जरूरत नहीं है। उनमें से कोई जरा भी हरकत करने की कोशिश करें तो भूनकर रख दो साले को। मैं सब संभाल लूंगा।"

"ये लोग कानून के और देश के इतने बड़े मुजरिम हैं कि इन सबको लाइन में खड़े करके गोलियों से भून दिया जाए, तब भी हमारा कुछ बिगड़ने वाला नहीं है। जाओ।"

पुलिस के जवान उस कमरे के बराबर वाले एक दरवाजे की ओर बढ़े।

उस व्यक्ति की आंखों में खौफ के भाव नजर आए।

"ठहरो!" उसने आतंकित स्वर में कहा।

"क्या हुआ?"

"अपने जवानों को रोकिए इंस्पेक्टर साहब।"

"क्यों?"

"इससे कोई अनहोनी हो सकती है इंस्पेक्टर साहब।"

"कैसी अनहोनी?"

"आप अपने जवानों को रोकिए तो-मैं सबको यहीं पर बुलवाता हूं।"

इंस्पेक्टर ने संकेत से अपने जवानों को रोका। फिर उस व्यक्ति के चेहरे पर अपनी नजरें गड़ा दीं।

"तू पुलिस के साथ कोई खेल खेलने का इरादा तो नहीं रखता है?"

"नहीं।" उसने कहा- "ऐसा बिल्कुल नहीं है इंस्पेक्टर साहब मेरा विश्वास कीजिए।"

"तेरे जैसे हरामजादों का विश्वास करने का सवाल ही नहीं उठता। इसके बावजूद भी मैं तुझे मौका दे रहा हूं। क्योंकि मुझे तेरे किसी भी धोखे की परवाह नहीं है। क्योंकि तुम जो कुछ भी करोगे उसका परिणाम तुम्हारे लिए बहुत ही भयंकर होगा ।

"मैं...मैं ऐसा कुछ नहीं करूंगा इंस्पेक्टर साहब।"

"ठीक है।"

उसने दरवाजे की ओर देखा।

"सब लोग अपने रिवॉल्वर वहीं छोड़कर और हाथ ऊपर करके यहां आ जाओ।"

कुछ पल के लिए सन्नाटा छाया रहा।

पुलिस के जवानों की राइफलों का रुख उस दरवाजे की ओर ही हो गया था।

उसके बाद दरवाजा खुला!

चार व्यक्ति बाहर आए ये वही थे जो उन पेटियों को उठाकर लाए थे। उन्होंने अपने हाथ ऊपर उठाए हुए थे।

वहां पहुंचते ही पुलिस ने उन्हें अपने घेरे में ले लिया। फिर अपने अधिकारी के आदेश पर उनकी तलाशी ली गई।

उनके पास से कोई हथियार बरामद नहीं हुआ।

"कोई और।" इंस्पेक्टर ने उसकी ओर देखा- "इस ऑफिस में मौजूद है ?"

"नहीं।"

"पक्की बात है?"

"मैं सच कह रहा हूं।"

"अब उतनी ही शराफत के साथ यह भी बता दो कि वह पेटियां कहां रखी गई हैं जो कि

अभी-अभी यहां लाई गई हैं।"

"उन पेटियों में ऐसा कुछ नहीं है इंस्पेक्टर साहब लगता है।"

"कोई बात नहीं।" इंस्पेक्टर ने कहा- "वह सब देखना हमारा काम है। तुम शायद यह मानकर चल रहे हो कि अभी भी पुलिस को गुमराह कर सकते हो जबकि तुम्हारी सारी असलियत उन्हीं के कारण आपको कोई गलतफहमी हो गई है।"

"अब पुलिस के सामने आ चुकी है। हथकड़ियां लगाओ इन्हें।"

इंस्पेक्टर के इस आदेश का तुरंत पालन हुआ ।

इसके बाद उनसे कोई सवाल नहीं किया गया और पुलिस को इससे ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ी।

खतरनाक विस्फोटकों से भरी हुई पेटियां वहीं से बरामद कर ली गई।

उसी घड़ी पुलिस पार्टी का नेतृत्व करने वाले ऑफिसर ने अपने उच्चाधिकारियों को वायरलेस द्वारा इस ऑपरेशन की कामयाबी की सूचना दे दी।

पुलिस के लिए यह एक बहुत बड़ी कामयाबी थी।

सभी की नजरें हैरत और अविश्वास के साथ फैलती चली गईं।

खंडहर के उस दरवाजे पर जो व्यक्ति उन्हें नजर आया उसके हाथ में खतरनाक स्वचालित राइफल थी जिसका रुख उनकी ओर ही था।

लेकिन राइफल से खतरनाक वह भाव थे जो उस घड़ी उसके चेहरे पर नजर आ रहे थे।

उनके मुंह से बोल न फूटा।

कई पल तक वे इस प्रकार बैठे रह गए मानो उनके जिस्मों को लकवा मार गया हो।

कुछ पल बाद दाढ़ी वाले को जैसे होश आया।

"क...कौन हो तुम?"

दरवाजे पर खड़े राइफलधारी के चेहरे के भाव और खतरनाक हो गए।

"मौत।" उसने कहा- "तुम्हारी मौत-तुम सबकी मौत।" उसने एक-एक शब्द को चबाते हुए कहा।

लेकिन अब तक वे सभी शायद अपने-आपको संभाल चुके थे।

राइफलधारी की धमकी से अब वे प्रभावित होते नजर नहीं आ रहे थे।

लेकिन इसके बावजूद भी वे अपने उन रिवॉल्वरों को हाथ में लेने का साहस नहीं कर पा रहे थे जो कि उनकी जेबों में रखे हुए थे।

शायद स्थिति की गंभीरता को वे मन-ही-मन स्वीकार कर चुके थे।

"मौत!" दाढ़ी वाले ने उसकी ओर देखते हुए कहा ।

"वह तुम्हें अभी भी नजर नहीं आ रही?"

"आ रही है।" दाढ़ी वाले ने कहा- "मुझे साफ-साफ नजर आ रही है। लेकिन अपनी नहीं।"

"यानी तुम बच जाओगे? तुम्हारे साथियों की मौत आ जाएगी और तुम तक नहीं पहुंचेगी-तुम अकेले बच जाओगे?"

"नहीं-न मुझे कुछ होगा और न ही मेरे साथियों को। मुझे तो तुम्हारा अंजाम नजर आ रहा है और वह अंजाम बड़ा भयंकर है। वैसे तुम्हारी हिम्मत की दाद देनी पड़ेगी कि तुम

यहां तक पहुंच गए। तुम्हारा यहां तक पहुंचना भी अपने-आप में एक बहुत बड़ी बात है । लेकिन तुमने जो पराक्रम दिखाना था वह दिखा चुके। आगे जो कुछ होगा वह तुम्हारे वश में नहीं होगा।"

"तुम्हें शायद इस बात की गलतफहमी हो रही है कि इस घड़ी राइफल तुम्हारे हाथ में है तो बाजी भी तुम्हारे हाथ में आ गई हो।"

"लेकिन तुम यह नहीं जानते कि यह राइफल हमारे लिए एक मामूली-से खिलौने से ज्यादा कुछ भी नहीं है।" दाढ़ी वाले ने कहा।

उत्तर में राइफलधारी युवक के होंठों पर अर्थपूर्ण मुस्कराहट उभरी।

उसके चेहरे पर इस तरह के भाव थे जैसे वह दाढ़ी वाला कोई बचकानी बात कह रहा हो।

उसी घड़ी एक व्यक्ति जो अकेला एक ऐसे एंगल से बैठा हुआ था कि राइफलधारी को उसके सीने से नीचे का उसके जिस्म का बाकी हिस्सा नजर नहीं आ रहा था।

और वह इस स्थिति का लाभ उठाने का निश्चय कर चुका था।

वह यह भी महसूस कर रहा था कि राइफलधारी की तवज्जो उसके इस प्रकार बैठने की स्थिति पर नहीं थी।

वह शायद ओवर कॉन्फिडेंस का शिकार भी हो रहा था कि जब तक उसके हाथ में राइफल है, तब तक उनमें से कोई इस तरह की हरकत करने का साहस नहीं कर सकेगा।

उस व्यक्ति का हाथ उसकी जेब में रखे रिवॉल्वर की ओर सरक रहा था। लेकिन अपने चेहरे पर उसने इस तरह के भाव नहीं आने दिए।

एक बार उसका हाथ उसके रिवॉल्वर तक पहुंचने की देर थी।

इसके साथ ही वह हालात को पलट सकता था।

और हालात को पलटने का वह निश्चय कर चुका था ।

उसका हाथ रिवॉल्वर तक पहुंच चुका था।

एक बार उसे लगा जैसे हालात उसके हाथ में आ गए हों-उसके चेहरे के भावों में तेजी से परिवर्तन हुआ लेकिन उससे कई गुना तेजी से उसका रिवॉल्वर वाला हाथ बाहर आया।

लेकिन उससे पहले सामने खड़े राइफलधारी की राइफल से गोली निकली और वह उस व्यक्ति के सीने में समा गई जो हालात को अपने पक्ष में मोड़ने का सपना देख बैठा था।

वह अपने स्थान से उछला और पीछे की ओर लुढ़क गया।

यह सब इतना अचानक और अप्रत्याशित था कि सभी हक्के-बक्के रह गए।

राइफलधारी का निशाना भी इतना सटीक था कि गोली निशाने पर इस तरह लगी थी कि उस आदमी के मुंह से चीख तक नहीं निकल सकी थी।

फटे-फटे नेत्रों से सभी उस लाश को देख रहे थे।

जबकि राइफलधारी के चेहरे के भावों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। वह इस कदर नॉर्मल था जैसे कुछ हुआ ही न हो।

कई पल तक वहां भयंकर सन्नाटा छाया रहा।

अंत में वह सन्नाटा भी उस राइफलधारी ने ही तोड़ा।

"तुममें से कोई और है जो।" उसने कहा- "ऐसा कोई करतब दिखाने का इरादा रखता

हो? कोई ऐसा इरादा रखता हो तो मुझे खुशी होगी।"

दाढ़ी वाले व्यक्ति के चेहरे पर भूकम्प के भाव उभरे।

"तूने...तूने हमारे आदमी को मार डाला इस तरह तूने अपना अंजाम बहुत भयंकर बना लिया है। बहुत बुरी मौत मरेगा तू। तुझे हमारे आदमी की मौत का हिसाब चुकता करना होगा।"

"जरूर।" उस युवक ने एक अर्थपूर्ण मुस्कराहट के साथ कहा- "हिसाब तो जरूर देना पड़ेगा। लेकिन बार-बार हिसाब देने वाली बात मुझे पसंद नहीं। सबका हिसाब एक साथ ही चुकता कर दूंगा।"

"तुम...तुम हो कौन?"

"बहुत देर से यह प्रश्न किया तुमने। यह सवाल तो तुम्हें बहुत पहले करना चाहिए था। बल्कि तुम्हारा सबसे पहला सवाल यही होना चाहिए था।"

"मेरे सवाल का सीधा-सीधा जवाब दो-कौन हो तुम?"

"मैं तुम्हारे किसी भी सवाल का जवाब देने के लिए बाध्य नहीं हूं। फिर भी इसे तुम्हारी अंतिम इच्छा समझकर जरूर पूरी करूंगा। तुम्हारे सवाल का जवाब जरूर दूंगा।"

उस व्यक्ति के चेहरे पर बड़े खतरनाक भाव पैदा हुए। लेकिन किसी तरह उसने अपने उन भावों को जब्त किया।

"तुम जिस देश की तबाही का सपना देख रहे हो। मैं उसी भारत देश का एक मामूली-सा सिपाही हूं और तेरे जैसे हजारों कुत्तों की तबाही के लिए, जो अपनी नापाक नजरें उस देश की ओर उठाते हैं, उसका एक मामूली-सा सिपाही ही काफी होता है।"

"ओह...।"

"मिल गया मेरा परिचय।"

"मिल गया।" उसने कहा- "मिल गया तेरा परिचय। तू शायद यह नहीं जानता कि इसके लिए तैरे जैसे मामूली सिपाहियों को शहीद भी होना पड़ता है।"

"किसी भी सिपाही के लिए शहीद होना शान की बात है। लेकिन अभी तू यह नहीं जानता कि तेरे जैसे मेरे जैसे सिपाही का बाल भी बांका नहीं कर सकते।"

"और तू भी यह नहीं जानता कि हमारी तबाही का अरमान लेकर तू अकेला हमारी मांद में चला आया। यहां से जिंदा लौट जाना तेरे लिए संभव ही नहीं है। तू यह भी नहीं जानता कि हमारा मुकाबला करने के लिए तो तेरे जैसे सिपाहियों की पूरी फौज भी कम पड़ जाएगी।"

"चाहता तो मैं यही था।"

"क्या?"

"यही कि मैं अकेला ही तुम सबको मौत के घाट उतार दूं। तुम्हें बता दूं कि इस देश का एक मामूली-सा सिपाही भी कितना ताकतवर होता है। तेरे जैसे कुत्तों के ऊपर वह किस तरह कहर बनकर टूट सकता है। लेकिन...।"

"लेकिन क्या?"

"मेरे ऊपर वालों ने मुझे इसकी इजाजत नहीं दी। क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि तुम मेरी गोलियां खाकर मर जाओ। वे लोग तुम्हें इतनी आसान मौत नहीं देना चाहते।"

"मरने से पहले तुम्हें अभी अपनी शैतानियत का हिसाब चुकता करना होगा और जब तक तुम अपनी हैवानियत का पूरा हिसाब चुकता नहीं कर देते, तब तक तुम्हें इस जिंदगी से मुक्त होने की इजाजत नहीं दी जाएगी। इसलिए...।"

"इसलिए?"

"इसलिए मुझे अकेले यहीं आने की इजाजत नहीं दी गई। जबकि इसके लिए मैं अकेला ही काफी था।"

"तो...तो तुम।" उसके चेहरे पर उलझनपूर्ण भाव पैदा हुए- "तुम अकेले नहीं हो? तुम्हारे साथ और भी कोई है?"

उस युवक के चेहरे पर अर्थपूर्ण मुस्कराहट उमरी ।

"इसका मतलब तुम्हारे साथ कोई और भी है जो शहीद होने की तमन्ना लेकर आया है ? ठीक है-तुम्हारी यह तमन्ना जरूर पूरी की जाएगी।"

"कौन किसकी तमन्ना पूरी करता है, इसका पता अभी चल जाएगा। मेरी तमन्ना तो यह थी कि तुम्हें तड़पा-तड़पाकर अपने हाथों से मौत दूं। लेकिन मुझे अफसोस है कि फिलहाल मेरी यह तमन्ना पूरी नहीं हो सकती।"

"अब तू आ ही गया है तो तेरी शहीद होने की तमन्ना जरूर पूरी हो जाएगी। लेकिन अफसोस इस बात का है कि तेरे ऊपर वालों को तेरी लाश भी नहीं मिल सकेगी।"

उसका वाक्य पूरा होते ही कुछ कदमों की आहट सुनाई दी।

दाढ़ी वाले व्यक्ति की आंखों में उलझनपूर्ण भाव पैदा हुए।

जबकि राइफलधारी युवक के होंठों पर अर्थपूर्ण मुस्कराहट पैदा हुई।

पल-भर बाद ही चार राइफलधारी कमांडोज वहां पहुंचे। उस युवक ने पीछे देखे बिना ही एक ओर हटकर उन्हें अंदर जाने का रास्ता दिया।

वे चारों कमांडो बड़ी तत्परता के साथ उनके करीब पहुंचे तथा उन्हें चारों ओर से अपनी राइफलों के साए में ले लिया।

इसके साथ ही उस युवक ने अपनी राइफल को कंधे पर टांग लिया। फिर वह एक-एक कदम रखता हुआ उनके बिल्कुल करीब पहुंचा।

उसने दाढ़ी वाले के चेहरे पर अपनी नजरें गड़ा दीं।

"अब तेरी बाकी की जिंदगी उसी देश की जेलों में, जिसकी तबाही का सपना तुम लोग पचास साल से देखते आ रहे हो, फांसी का इंतजार करते-करते गुजरेगी।"

पहली बार उस व्यक्ति व उसके साथियों की आंखों में चिंता के भाव नजर आए।

"तुझे यह जानकर भी दुख होगा कि तुम्हारा वह खेल जिसे तुम देश में तबाही के लिए खेलना चाहते थे, खत्म हो चुका है। इधर हम तुम्हारी गिरफ्तारी कर रहे हैं। इसके साथ ही तुम्हारा वह सारा गोला-बारूद, खतरनाक हथियार, आर.डी.एक्स. व डिटोनेटर आदि सब कुछ हमारे कब्जे में लेने की कार्यवाही की जा रही है।

"और तुम्हारी उस पूरी खूनी साजिश का भी पर्दाफाश हो चुका है, जिसकी सफलता के लिए तुम फूले नहीं समा रहे थे।"

"नहीं !" उसके मुंह से सिसकारी-सी निकली।

"लेकिन अब तुम्हारे लिए वह सब सोचने की जरूरत नहीं है।

क्योंकि अब तो तुम्हारे अपने विषय में ही सोचने से फुरसत नहीं होगी।

"अब तुम्हारी बाकी जिंदगी इस तरह नर्क बना दी जाएगी कि तुम्हें इस बात पर अफसोस होगा कि तुमने अपनी नापाक नजरें उठाकर देखने की हिम्मत की ही क्यों थी?"

कहते हुए उस युवक ने आगे बढ़कर दाढ़ी वाले का गिरेहबान पकड़ लिया।

उसकी आंखों में भूकम्प के भाव नजर आए।

"उठ।" उसने उसके गिरहबान को झटका देते हुए खूंखार स्वर में कहा।

वे शायद अब समझ चुके थे कि उनका बचाव किसी तरह भी संभव नहीं था।

इसलिए उनमें से किसी ने भी अपनी गिरफ्तारी का कोई भी विरोध नहीं किया।

अगले दिन के समाचार-पत्रों में इस घटना को मोटे-मोटे अक्षरों में प्रकाशित किया गया।

इसे पुलिस की एक बहुत बड़ी कामयाबी के रूप में देखा जा रहा था।

समाचार-पत्रों के अनुसार पुलिस ने भारी मात्रा में आर.डी.एक्स. व दूसरी विस्फोटक सामग्री, खतरनाक किस्म के विदेशी हथियारों के जखीरे के साथ, कुछ भाड़े के आतंकवादियों को भी गिरफ्तार किया था।

इस तरह एक दुश्मन देश द्वारा हमारे देश में रची गई एक भयानक साजिश का भंडाफोड़ हुआ था जिसमें भारी जन व धन की हानि होने की योजना बनाई गई थी।

समय रहते ही यदि इस साजिश का पता न चल गया होता तो इस साजिश के तहत एक भयानक मंजर देखने को मिलता। सैकड़ों की संख्या में निर्दोष लोग मारे जाते ।

समाचार-पत्रों में पुलिस के हवाले से बताया गया था कि पकड़े गए आतंकवादियों से कुछ और महत्वपूर्ण जानकारी मिलने के संकेत हैं।

और इतनी बड़ी सफलता का पूरा सेहरा पुलिस के सिर पर बांधा जा रहा था।

लेकिन इस सारी साजिश का भंडाफोड़ करने के पीछे असली आदमी कौन था, उसके बारे में न तो समाचार-पत्र कुछ जानते थे और न ही कोई दूसरा। अभी तक शायद आतंकवादी या उनका संचालन करने वाली शक्तियां भी यह नहीं समझ पा रही थीं कि उनकी इस गुप्त योजना का भेद, जिसके बारे में उन्हें पूरा विश्वास था कि इसकी मामूली-सी सूचना भी लीक होना असंभव ही नहीं बल्कि नामुमकिन था, आखिर कैसे खुल गया।

किस तरह ऐन वक्त परं पुलिस ने पहुंचकर उनके सारे किए-धरे पर पानी फेर दिया।

इस बात को लेकर वे सभी अभी तक सकते की हालत में थे।

□□□

रिसर्च एंड एनालिसिस विंग की उस विशेष शाखा की वह अत्यंत उच्चस्तरीय व अति गोपनीय मीटिंग थी जिसमें उसके आतंकवाद निरोधक दस्ते के मुखिया कृष्णचंद्र पाणिकर अर्थात के.सी. पाणिकर सहित कुल मिलाकर चोटी के वे अधिकारी भाग ले रहे थे जिनकी देशभक्ति पर शक नहीं किया जा सकता था।

वे सारे उस आतंकवाद निरोधक दस्ते के जिम्मेदार अधिकारी थे।

और केवल उन पांचों अधिकारियों की मौजूदगी का अर्थ था कि इस बैठक की कार्यवाही तो क्या उस बैठक की जानकारी उनके महकमे तक को नहीं थी।

दस्ते के मुखिया के.सी. पारियकर ने अभी-अभी आकर अपनी सीट संभाली थी। जबकि उसके चारों मातहत कुछ मिनट पहले ही आ चुके थे।

लेकिन बैठक की कार्यवाही अभी आरंभ नहीं हो पाई थी।

के.सी. पाणिकर बेहद शांत भाव से बैठे हुए पाइप के कश ले रहे थे।

इससे लगता था कि बैठक की कार्यवाही आरंभ होने में अभी देर थी।

लेकिन इस देरी का कारण कोई नहीं जानता था ।

किसी को यह भी हक नहीं था कि इस बारे में कोई प्रश्न किया जा सके।

अभी तो वे लोग यह भी नहीं जानते थे कि यह बैठक किस सिलसिले में हो रही थी।

लेकिन इसमें देरी के कारण का अनुमान लगाया जा सकता था।

उस कक्ष में एक सीट खाली थी।

इसका मतलब था कि अभी कोई और भी इस बैठक में भाग लेने के लिए आने वाला था। उसी के लिए यह सीट खाली छोड़ी गई थी।

लेकिन वह इतना महत्वपूर्ण आदमी कौन हो सकता था जिसके लिए अपनी तमाम व्यस्तताओं के बावजूद रॉ के उस विशेष दस्ते के मुखिया तक को इंतजार करना पड़ रहा था।

निश्चित रूप से वह कोई साधारण व्यक्ति नहीं हो सकता था।

लेकिन यह सारी बातें केवल अनुमानों पर आधारित थीं।

हकीकत क्या थी, इस विषय में कोई नहीं जानता था और न ही इस विषय में कोई सवाल किया जा सकता था।

उस कक्ष में पूरी तरह से मौन छाया हुआ था।

उसी घड़ी के.सी. पाणिकर के सामने रखे फोन की घंटी बजी।

उसने हाथ बढ़ाकर इस तरह रिसीवर उठाया जैसे उसे इसी का इंतजार हो।

“यस।” उसने प्रभावशाली स्वर में केवल इतना ही कहा।

बदले में दूसरी ओर से कुछ कहा गया जो उसके सिवा किसी को सुनाई नहीं दिया।

“ठीक है। आने दो उसे।” के.सी. पाणिकर ने कहा और रिसीवर वापस रख दिया।

सभी की नजरों में उत्सुकतापूर्ण भाव पैदा हुए।

शायद वह आ रहा था जिसका उन लोगों को इंतजार था।

कुछ पल बाद गेट खुला!

सभी की नजरें उस ओर ही घूम गईं।

गेट पर जो युवक नजर आया उसका व्यक्तित्व फिल्मी सितारों जैसा था। वह शानदार सूट पहने था। उसने एड़ियां बजाकर सैनिक अंदाज में सैल्यूट किया।

वह कबीर ठाकुर था।

“कम इन कैप्टन ठाकुर।” के.सी. पाणिकर ने भावहीन स्वर में कहा- “टेक योअर सीट।”

वहां मौजूद अधिकारियों को इस बात पर हैरत हो रही थी कि वह आदम इतना महत्वपूर्ण नहीं था जैसा कि वे समझ रहे थे। वहां मौजूद अधिकारियों मे वह सबसे जूनियर अधिकारी था। इसके बावजूद भी उनका आला अफसर उस इतना महत्व दे रहा था। उसके कारण कार्यवाही कई मिनट लेट हो गई थी और उसने कैप्टन कबीर ठाकुर से इसकी

शिकायत तक नहीं की। बल्कि उसके हाव-भाव से ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी हीरो की तरह उसका स्वागत कर रहा हो।

"थैंक्यू सर।" उसने एकमात्र खाली सीट पर अपने आपको स्थापित करते हुए कहा।

लेकिन यह अकारण नहीं हो सकता था।

उनका चीफ इस तरह अकारण ही किसी को महत्व नहीं दे सकता था।

लेकिन इस विषय में उससे कोई सवाल नहीं किया जा सकता था।

हालांकि कैप्टन कबीर ठाकुर महकमे का एक जिम्मेदार, जांबाज और देशभक्त अधिकारी था। उसने ऐसे बहुत सारे कारनामे अंजाम दिए थे जिनके कारण उसके महकमे का नाम रोशन हुआ था। लेकिन यह कोई असाधारण बात नहीं हो सकती थी।

महकमे में इस तरह का वह अकेला अधिकारी नहीं था। वैसे भी इतने महत्वपूर्ण महकमे में किसी साधारण आदमी के लिए तो जगह ही नहीं हो सकती थी।

यह एकमात्र कारण काफी नहीं हो सकता था कि उनके चीफ द्वारा कैप्टन कबीर ठाकुर को इतना अधिक महत्व दिया जा सकता।

कैप्टन कबीर ठाकुर के सीट संभालने के बाद के.सी. पाणिकर ने अपने पाइप से एक गहरा कश लिया तथा फिर उसे एक ओर रखकर अपना चेहरा उठाया और बारी-बारी वहां मौजूद प्रत्येक व्यक्ति की ओर देखा।

"ऑफिसर।" उसने कहा- "जैसा कि आप लोग जानते ही हैं कि हमारे महकमे ने दुश्मन देश की एक खतरनाक साजिश का पर्दाफाश किया है।

"हमारे उस ऑपरेशन के तहत भारी मात्रा में विस्फोटक बरामद किए गए हैं जो सीमा पार से हमारे देश में भयानक तबाही मचाने के लिए पहुंचाए गए थे।"

"विस्फोटकों के अलावा दुश्मन के कुछ आदमियों को भी गिरफ्तार किया गया है तथा अभी कुछ और गिरफ्तारियां भी की जानी हैं।"

"जो आतंकवादी गिरफ्तार किए गए हैं, उनसे बहुत सारी महत्वपूर्ण जानकारियां हासिल हुई हैं। उनका ब्यौरा मैं आप लोगों को इसी बैठक में दूंगा।"

"सारा देश जानता है कि पुलिस की असाधारण चौकसी व तत्परता के कारण इतनी बड़ी साजिश का पर्दाफाश हुआ है। इसके लिए पूरे देश में पुलिस की वाहवाही हो रही है।"

"लेकिन आप लोग जानते हैं कि इसमें पुलिस का कोई पराक्रम नहीं है। उसने केवल हमारे साथ सहयोग किया है। पुलिस के महकमे ने वही किया है जिसके लिए हमने उसे सूचनाएं उपलब्ध कराई हैं। इतना ही नहीं बल्कि पुलिस का प्लान ऑफ एक्शन भी वही था जो हमारे द्वारा तैयार करके उसे दिया गया था।

"इसके बावजूद भी यह नहीं कहा जा सकता कि इसमें पुलिस का कोई रोल ही नहीं था।"

"दरअसल हमें पुलिस के उन जांबाज और बहादुर जांबाज जवानों का शुक्रगुजार होना चाहिए जिन्होंने अपनी जान पर खेलकर इस सारी कार्यवाही को सफलतापूर्वक अंजाम दिया है।"

"हालांकि हमारे कमांडोज इस कार्यवाही को और भी बेहतर ढंग से और बखूबी अंजाम दे सकते थे। लेकिन कुछ कारण ऐसे थे जिनके कारण इस सफलता का श्रेय लेना हमारे हित

में नहीं था।"

"इसलिए इसका पूरा श्रेय पुलिस के महकमे को जा रहा है तो हमें इसकी शिकायत नहीं होनी चाहिए। लेकिन...।" कहने के पश्चात वह कुछ पल के लिए रुका।

उसने एक नजर कैप्टन ठाकुर की ओर देखा।

वह फिर अधिकारियों से संबोधित हुआ।

"यह बात शायद आप लोग भी नहीं जानते कि हमारे महकमे का भी वह कौन जांबाज और बहादुर, देशभक्त नौजवान है जिसके अकेले के बल पर इतनी बड़ी इतनी खतरनाक साजिश का पर्दाफाश करना संभव हो सका है और यह सब कुछ उसने अकेले-अपने दम पर और अपनी जान पर खेलकर किया है। जानते हैं कौन है वो?"

इस सवाल का जवाब उनमें से किसी के पास नहीं था। उनकी आंखों में उत्सुकता के भाव पैदा हुए।

वह आदमी कौन हो सकता है जिसकी तारीफ के.सी. पाणिकर स्वयं अपने मुंह से कर रहा था?

ऐसा बहुत कम होता था।

वह एक अत्यंत रूखे स्वभाव का आदमी था। अपने किसी मातहत की जरा भी तारीफ करना उसके लिए जैसे बहुत ही अप्रिय काम था।

वह कोई दुर्लभ अवसर पर ही किसी की तारीफ किया करता था और इस समय उसके तारीफ करने का मतलब था कि इस साजिश का पर्दाफाश करना अत्यंत असाधारण व दुर्लभ घटना थी।

अपने सुपर चीफ के मुंह से इतनी तारीफ सुनकर उनकी उत्सुकता यह जानने के लिए बढ़ रही थी कि वह आदमी आखिर था कौन?

पल-भर के लिए सन्नाटा छाया रहा।

"कैप्टन ठाकुर।" उसने कहा। सभी की नजरें के.सी. पाणिकर की ओर उठ गईं। लेकिन उसकी नजरें कैप्टन कबीर ठाकुर की ओर थीं।

"कैप्टन कबीर ठाकुर ही वह आदमी है।" उसने घोषणा की- "मुझे कैप्टन ठाकुर पर और उसकी दिलेरी पर गर्व है। दुश्मन के खेमे में घुसकर और अपनी जान पर खेलकर कैप्टन ठाकुर ने जिस तरह यह सूचनाएं हमें उपलब्ध कराई हैं, वह अपने-आप में इतना हैरतअंगेज कारनामा है जिस पर आसानी से विश्वास भी नहीं किया जा सकता।"

"इससे भी बड़ा अविश्वसनीय कारनामा तो यह है कि अपना सारा काम करने के बाद कैप्टन ठाकुर दुश्मन की मांद से इतनी सहूलियत के साथ निकल आया और दुश्मन को इसकी भनक तक नहीं लग सकी।"

सबकी नजरें अब कैप्टन कबीर ठाकुर की ओर उठ गई थीं।

सभी की आंखों में उस घड़ी हैरत के भाव थे।

सचमुच इस विषय में कोई नहीं जानता था।

इस बात की जानकारी किसी को नहीं थी कि कैप्टन कबीर ठाकुर को इतने महत्वपूर्ण मिशन पर भेजा गया था।

यह सब तो उस विशेष दस्ते का काम करने का अपना तरीका था।

इस दस्ते का कोई अधिकारी कितना ही बड़ा क्यों न हो, लेकिन किसी के पास वह जानकारी नहीं होती थी जोकि उसके लिए जरूरी न हो।

कई बार उनके द्वारा इतने बड़े-बड़े कारनामे अंजाम दिए जाते थे जिनके बारे में वे स्वयं भी कुछ नहीं जानते थे।

कैप्टन कबीर ठाकुर का यह मिशन भी इसी तरह गोपनीय रखा गया था।

और इस मिशन को उसने जिस तरह सफलतापूर्वक अंजाम दिया था, उससे लगता था जैसे उसके सुपर चीफ को हकीकत में ही उस पर घमंड हो रहा था।

और इस घड़ी वह इसी का इजहार कर रहा था।

कैप्टन कबीर ठाकुर के लिए भी वह बड़े गर्व की बात थी कि उसे इस तरह सम्मानित किया जा रहा था।

"खैर।" चीफ ने कहा- "आप लोगों को यहां यह जानकारी देने के लिए नहीं बुलाया गया है। बल्कि जिसके लिए आप लोगों को यहां बुलाया गया है उसकी बड़ी अहम वजह है। एक अति महत्वपूर्ण वार्ता के लिए आप लोगों को यहां बुलाया गया है।"

कहने के बाद के.सी. पाणिकर ने एक बार फिर अपना पाइप उठाया और उसके कश लेने लगा।

जबकि वहां मौजूद अधिकारी इस बात का इंतजार कर रहे थे कि वह कब उस विषय पर बात करने वाला था जिसके बारे में उसका कहना था कि वह एक अति महत्वपूर्ण समस्या है।

"जैसा कि मैंने आपको बताया है।" उसने नए सिरे से वार्ता आरंभ करते हुए कहा- "इस खतरनाक साजिश का पता लगाकर हमने एक बहुत बड़ी तबाही को होने से रोक लिया है।"

"लेकिन यह एक वक्ती समस्या है।"

"इससे दुश्मन की आगे होने वाली देशविरोधी और मानवता विरोधी कार्यवाहियों पर अंकुश नहीं लगाया जा सकता। दुश्मन अपनी घिनौनी हरकतों से बाज आने वाला नहीं है।"

"दुश्मन हमारे खिलाफ साजिशें रचता रहे-अपनी चालें चलता रहे, यह हम चुपचाप नहीं देख सकते।"

"अब हमारे लिए यह जरूरी हो गया है कि दुश्मन के इन नापाक इरादों का सही जवाब दिया जाए। सरकार भी यही चाहती है कि हमें कुछ कठोर कदम उठाने चाहिए ताकि देश की जनता में विश्वास पैदा किया जा सके। उसका मनोबल बढ़ाया जा सके और निर्दोष लोगों का कत्ल-ए-आम बंद होना चाहिए।"

"दुश्मनों की घिनौनी चालों से हमारे नागरिकों की सुरक्षा का पूरा दायित्व हमारा है और हमें अपने उस दायित्व से पीछे नहीं हटना चाहिए।"

"इन सारी बातों को ध्यान में रखते हुए हमने कुछ कठोर कदम उठाने का फैसला किया है। उसके लिए एक योजना तैयार की है और हमारी इस मीटिंग का उद्देश्य उसी योजना के सभी पहलुओं पर गौर करना है।"

"कैप्टन कबीर ठाकुर के प्रयासों से जिन आतंकवादियों को गिरफ्तार किया गया है, उनसे कुछ महत्वपूर्ण जानकारियां हासिल की है।"

सभी के चेहरे पर उत्सुकतापूर्ण भाव पैदा हुए। लेकिन कैप्टन कबीर ठाकुर का चेहरा भावहीन था।

इसका मतलब था कि उसे इस योजना के बारे में जानने की उतनी उत्सुकता नहीं थी। इसका एक मतलब यह भी हो सकता था कि वह इस बारे में पहले से ही जानता था।

उन्हीं जानकारियों के मद्देनजर हमने अपनी योजना तैयार की है।

चीफ ने अपनी बात आगे बढ़ानी चाही-उसी घड़ी उसके सामने रखे एक इलेक्ट्रॉनिक यंत्र पर लाल रंग का एक बल्ब स्पार्क करने लगा।

चीफ के चेहरे के भावों में अचानक ही परिवर्तन हुआ ।

उस घड़ी लाल रंग के उस बल्ब का स्पार्क करना किसी

इमरजेंसी की ओर संकेत कर रहा था। साधारण परिस्थितियों में उसे इस समय डिस्टर्ब नहीं किया जा सकता था।

उसने अपना हाथ बढ़ाकर एक स्विच दबाया तो बल्ब ने स्पार्किंग करना बंद कर दिया।

फिर उसने कोई दूसरा स्विच दबाया और इसके साथ ही एक रिसीवर उठाकर कान से लगा लिया।

"यस।"

फिर दूसरी ओर से तीन मिनट तक लगातार कुछ कहा जाता रहा और इन तीन मिनट में एक दर्जन बार उसके चेहरे के भावों में परिवर्तन हुआ।

"ठीक है-मैं मिलता हूं।" अंत में उसने कहा और रिसीवर वापस रखते हुए उन लोगों की ओर देखा।

"हमें यह मीटिंग।" उसने कहा- "यहीं पर समाप्त करनी होगी।"

उसकी इस घोषणा पर सभी के चेहरों पर प्रश्नसूचक भाव उभरे। लेकिन कोई प्रश्न करता, इससे पहले ही उसने स्वयं इसका कारण बताना शुरू किया।

"अभी-अभी घाटी से एक खतरनाक वारदात की सूचना मिली है। इस घटना को हमारी इस नई कार्यवाही के बदले की कार्यवाही समझा जा रहा है।"

"क्या हुआ है सर?" कैप्टन कबीर ठाकुर ने प्रश्न किया।

"दुश्मन ने एक बार फिर अपनी घिनौनी करतूत का शिकार कुछ निर्दोष व निरीह लोगों को बनाया है।"

"घाटी के एक गांव में किसी धार्मिक समारोह में आतंकवादियों ने कई लोगों को गोलियों से भून डाला। मरने वालों की सही संख्या का पता अभी नहीं लग सका है। लेकिन एक अपुष्ट सूचना में कहा गया है कि मरने वालों की संख्या दो दर्जन के आसपास है।"

वहां मौजूद अधिकारी इस सूचना पर हक्के-बक्के रह गए।

जबकि कैप्टन कबीर ठाकुर के चेहरे पर भूकम्प के भाव नजर आए।

"इसका मतलब दुश्मन ने हमें चुनौती दी है सर ।"

"हां इसका यही मतलब है लेकिन उसकी इस चुनौती का जवाब भी उन्हें दिया जा चुका है।"

"चुनौती का जवाब दिया जा चुका है?"

"हाँ- उनकी इस चुनौती का जवाब हमारे सुरक्षा बलों के एक दस्ते ने उसे दे दिया है।"

"कैसे सर?"

"हमारे सुरक्षा बलों का एक दस्ता पहुंच गया। हालांकि पहले से वहां ऐसी किसी घटना की आशंका नहीं थी। क्योंकि वह कोई सार्वजनिक समारोह नहीं था और न ही प्रशासन को या सुरक्षा बलों को पहले ही ऐसे किसी आयोजन की जानकारी थी। क्योंकि वह समारोह व्यक्तिगत था और एक घर में मनाया जा रहा था। जहां कुछ ग्रामवासियों के अलावा उसके कुछ रिश्तेदार मौजूद थे।"

"लेकिन आतंकवादियों को उस समारोह की जानकारी मिल चुकी थी और उन्होंने अपनी योजना बना डाली-फिर उस समारोह में जाकर बेरहमी के साथ लोगों को भूनकर रख दिया।"

"ऐन वक्त पर हमारे सुरक्षा बलों को भी इसकी भनक लग गई। लेकिन इसकी सूचना, वहां तक पहुंचने में कुछ विलम्ब हो गया। नतीजतन आतंकवादी वारदात करने में तो कामयाब हो गए लेकिन वहां से निकलने में कामयाब नहीं हो सके।"

"हमारे सुरक्षा बलों से उनकी जबरदस्त मुठभेड़ हुई।"

"आतंकवादी संख्या में आठ थे सभी आधुनिक व स्वचालित हथियारों से लैस। हमारे सुरक्षा बलों ने बड़ी बहादुरी से उनका मुकाबला किया और आतंकवादियों में से छः को मार गिराया। बाकी दो किसी तरह हमारे जवानों की पकड़ से जान बचाकर भागने में कामयाब हो गए और इस मुठभेड़ में हमारे जवानों में से किसी को खरोंच तक नहीं आई।"

"इस तरह वे मानवता के दुश्मन शैतान तो अपने अंजाम तक पहुंच गए। लेकिन इससे उन निरीह व निर्दोष लोगों की हत्याओं की भरपाई नहीं हो सकती।"

"खैर-फिलहाल चीफ सेक्रेटरी के यहां एक आपात बैठक होने जा रही है जिसमें मेरी मौजूदगी जरूरी है।"

"प्रधानमंत्री भी तुरंत घटनास्थल का दौरा करना चाहते हैं और इन हालात में उनकी यात्रा की भी तैयारियों पर व उनकी सुरक्षा व्यवस्था पर विचार किया जाना है।"

"इसलिए फिलहाल यह बैठक यहीं समाप्त की जा रही है। लेकिन इस विषय पर वार्ता को तुरंत आगे बढ़ाया जाना जरूरी है।"

"पहली ही फुरसत में इस कार्यवाही को आगे बढ़ाया जाएगा।" कहने के साथ ही उसने अपनी सीट छोड़ दी।

इसके साथ ही वहां मौजूद सभी अधिकारी अपनी-अपनी कुर्सियां छोड़कर उठ गए।

□□□

घाटी का वह दूर-दराज का गांव साम्प्रदायिक एकता व सौहार्द का जीता-जागता उदाहरण था।

वहां विभिन्न जातियों व धर्मों के लोग बिना किसी भेदभाव के रहते थे। एक-दूसरे के दुख-दर्द में हमेशा काम आते थे।

वह छोटा-सा गांव एक परिवार की तरह रहता था।

जब भी किसी के यहां कोई खुशी का मौका होता या कोई समारोह होता तो सभी उसमें

इस तरह बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे जैसे वह उनकी अपनी खुशी हो।

घाटी जिस तरह आतंकवाद की आग में झुलस रही थी, उस गांव में इसकी तपिश भी महसूस नहीं हो रही थी।

उस गांव के निवासी यह कल्पना तक नहीं कर सकते थे कि उनके गांव का ही कोई दूसरी जाति या दूसरे सम्प्रदाय का व्यक्ति या परिवार उनका दुश्मन हो सकता है।

सभी एक-दूसरे को भाई की तरह समझते थे।

परिवार में भी कभी-कभी किसी बात को लेकर कोई विवाद खड़ा हो जाता था तो उसे सभी मिल-बैठकर सुलझा देते थे। गांव की इस तरह की किसी बात को गांव वालों ने कभी पुलिस या कचहरी तक जाने की नौबत नहीं आने दी।

एक-दूसरे सम्प्रदाय के त्योहारों को भी सब मिल-जुलकर मनाते थे। कभी ऐसा लगता ही नहीं था कि कोई त्योहार या आयोजन वहां किसी विशेष जाति या सम्प्रदाय का त्योहार है।

उन्हें इस बात का ज्ञान तक नहीं था कि घाटी किस तरह खून से बह रही है।

उन्हें जैसे इस बात से कोई मतलब ही नहीं था।

सब लोग हंसी-खुशी जीवन बिता रहे थे।

उस दिन पूरे गांव में चहल-पहल थी। पूरा गांव दुल्हन की तरह सजा हुआ था।

गांव के बच्चे व बड़े सब रंग-बिरंगी पोशाकों में नजर आ रहे थे। कुछ बाहर के मेहमान भी गांव में आए हुए थे।

कारण गांव में एक शादी थी।

पूरा गांव उसी शादी की खुशी में झूम रहा था।

गांव के जिम्मेदार लोग बाहर से आने वाले रिश्तेदारों व मेहमानों की आवभगत में लगे हुए थे।

रात्रि में रोशनियों के कारण पूरा गांव जगमगा रहा था। अगले दिन बारात जानी थी और उसकी तैयारियां अभी से आरंभ हो गई थीं।

बारात गांव से लगभग पचास किलोमीटर दूर के एक गांव में जानी थी।

पूरी रात इसी तरह मौज-मस्ती में गुजर रही थी।

कई लोग रात-भर स्थानीय लोगों द्वारा स्वयं तैयार की गई शराब के नशे में डूबे रहे।

लेकिन बाहर के किसी आदमी के लिए यह अनुमान लगाना मुश्किल था कि यह समारोह किस तरह की धार्मिक रीति-रिवाज के अनुसार हो रहा था।

अगले दिन ठीक समय पर बारात रवाना हो गई।

बारात बहुत बड़ी नहीं थी। लेकिन मेहमानों व रिश्तेदारों के अलावा गांव के लगभंग प्रत्येक परिवार का प्रतिनिधित्व था। गांव के सभी मुख्य आदमी बारात में शामिल थे।

इनमें सभी जातियों व सभी धर्मों के लोग थे।

सभी के चेहरों पर आनंद व उत्साह की चमक थी। कुछ देर बाद ही बारात की बस अपने गंतव्य पर पहुंच जाने वाली थी।

उस समय बारात की वह बस एक पहाड़ी जंगल से गुजर रही थी जहां दूर-दूर तक कोई आबादी नहीं थी। दूर-दूर तक बस जंगल-ही-जंगल था।

वह इलाका काफी खतरनाक व संवेदनशील था लेकिन किसी भी बाराती को इसकी कोई परवाह नहीं थी।

अचानक ही बस एक स्थान पर रुक गई।

बारातियों ने प्रश्नसूचक नेत्रों से ड्राइवर की ओर देखा।

"क्या हुआ?" बारातियों में से किसी ने पूछा- "बस क्यों रोक दी?"

"आगे रास्ता बंद है।

"रास्ता बंद है क्यों?"

"कोई पेड़ टूटकर सड़क पर गिरा पड़ा है।"

"अब क्या होगा?"

बारातियों ने अपनी सीटों से ही उठकर देखा। वहीं से उन्हें नजर भी आ गया। एक विशाल पेड़ सड़क पर इस प्रकार पड़ा था कि उसने पूरी सड़क को घेर लिया था।

"मैं कोशिश करके देखता हूं।" ड्राइवर ने कहा- "शायद बराबर बराबर से कच्चे में होकर निकल जाए।"

"मुझे नहीं लगता।" एक बाराती ने दूसरे से कहा- "बराबर में इतना रास्ता है ही नहीं कि बस निकल सके। दूसरी ओर गहरी खाई है।"

बारातियों के चेहरों पर चिंता के भाव नजर आए। लेकिन वे निराश नहीं थे। उनका विश्वास था कि वे सब मिलकर उस पेड़ को हटाकर रास्ता साफ कर देंगे।

"बस न निकली तो क्या होगा?" एक दूसरे बाराती ने चिंतित स्वर में कहा- "बारात समय पर न पहुंची तो बहुत गड़बड़ हो जाएगी।"

"कोई गड़बड़ नहीं होगी।" बराबर बैठे एक व्यक्ति ने कहा।

"कैसे?"

"अरे इतने सारे आदमी हैं-सारे मिलकर एक पेड़ को नहीं हटा सकते क्या?"

"लेकिन पेड़ बहुत बड़ा है-बहुत भारी है।"

"तो क्या हुआ हम भी तो बहुत सारे हैं। सब मिलकर जोर लगाएंगे तो इससे भारी पेड़ भी हट जाएगा।"

उस व्यक्ति के कहने पर सभी के चेहरों पर आत्मविश्वास नजर आया।

ड्राइवर गाड़ी को स्टार्ट करने लगा।

"तो फिर पहले पेड़ को ही हटाते हैं।" एक बाराती ने कहा।

"एक बार कोशिश करके देख लेने दो। यदि गाड़ी बराबर से निकल गई तो ठीक है।"

उसकी बात का सभी ने समर्थन किया।

ड्राइवर गाड़ी को बैक करने लगा।

बैक करने के बाद गाड़ी को फिर से आगे बढ़ाया गया ड्राइवर गाड़ी को निकालने में कामयाब नहीं हो सका। इसलिए गाड़ी रोक दी गई।

"चलो भई।" एक बाराती ने कहा- "सब लोग नीचे उतरो।

सब मिलकर इस पेड़ को हटा देते हैं। जल्दी करो, नहीं तो बारात के लिए देर हो जाएगी।"

कुछ बाराती अपनी-अपनी सीटें छोड़कर खड़े हो गए।

उसी घड़ी!

जंगल से कुछ व्यक्ति निकलकर बाहर आए। बस के अंदर बैठे लोगों में से कुछ की नजर उन पर पड़ चुकी थी।

जंगल से निकलकर बाहर आने वाले लोग सैनिकों जैसी वर्दी पहने थे और उनके हाथों में स्वचालित राइफलें थीं।

जिन व्यक्तियों की नजर उन पर पड़ी थी उन्होंने अपने बाकी साथियों को बताया।

फिर सभी की नजरें उनकी ओर घूम गईं।

उन पर नजर पड़ते ही सबकी आंखों में चिंता के भाव उभर आए। यह बात भी उनकी समझ में आने लगी कि यह पेड़ स्वयं ही टूटकर नहीं गिर गया था। बल्कि ऐसा जानबूझकर रास्ता रोकने की नीयत से किया गया था।

राइफलधारी अब बस के करीब आ गए थे।

उनकी आंखों में शैतानी चमक साफ-साफ नजर आ रही थी।

उनकी संख्या दस थी।

देखते-ही-देखते उन्होंने बस को चारों ओर से घेर लिया।

बाराती आतंकित नेत्रों से एक-दूसरे की ओर देख रहे थे।

लेकिन किसी से कुछ कहने या पूछने का साहस कोई नहीं कर पा रहा था।

गाड़ी में दहशतपूर्ण सन्नाटा छा गया।

उसी घड़ी गाड़ी के दरवाजे खुले।

दोनों दरवाजों से एक-एक राइफलधारी अंदर आया।

बारातियों को लगा जैसे वे इंसान नहीं बल्कि साक्षात यमराज के दूत थे जो उनके इतने करीब आ गए थे।

बारात में कुछ बच्चे भी थे जिनका हाल मारे दहशत के और भी बुरा हो गया था।

मारे आतंक के वे चीखना चाहते थे। लेकिन चीख उनके गले से बाहर नहीं आ सकी थी।

बस के अंदर मौत जैसा सन्नाटा छा गया

प्रत्येक चेहरा आतंक से पीला पड़ा हुआ था। मारे खौफ के लोग सांस तक लेने में असुविधा महसूस कर रहे थे।

"सब लोग।" उस व्यक्ति की आवाज बस के अंदर गूंजी जो आगे वाली खिड़की पर खड़ा था- "चुपचाप गाड़ी से बाहर आओ। किसी को भी मुंह से आवाज नहीं निकालनी है।"

उसके इस आदेश के बाद सन्नाटा और भी गहरा हो गया।

लेकिन अभी तक किसी ने उठने का उपक्रम नहीं किया

इसका मतलब यह नहीं था कि वे लोग उसके आदेश की अवहेलना कर रहे थे।

बल्कि वे आतंक के कारण अपनी सीटों से उठने का साहस नहीं कर पा रहे थे-लोग जैसे जड़ होकर रह गए थे।

"सुना नहीं तुम लोगों ने?"

लेकिन इस पर भी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई।

जबकि अपने आदेश का पालन न होते देख वह राइफलधारी गुस्से में लाल हो गया।

उसने किसी गुस्साए शेर की तरह खिड़की के पास वाली सीट बैठे एक बाराती का

गिरेहबान पकड़कर उठाया और फिर दरवाजे से हटते हुए उस बाराती को दरवाजे में धकेल दिया।

वह मुंह के बल पायदान पर गिरा।

उसी घड़ी राइफलधारी ने बूट की ठोकर उसके जिस्म में इतनी जोर से मारी कि वह एक ही ठोकर में गाड़ी से बाहर था।

इसके बाद उसने खूंखार नेत्रों से बस में बैठे दूसरे लोगों की ओर देखा।

फिर तो किसी के अंदर इतनी हिम्मत ही नहीं रह गई थी कि एक पल के लिए भी अपनी कुर्सी पर बैठा रह सकता था।

सब लोग अपनी-अपनी सीटें छोड़कर खड़े हो चुके थे।

"एक-एक करके बाहर चलो।" उसने कहा।

इस बार उसके आदेश का पालन तुरंत हुआ।

बाराती एक-एक करके बाहर आने लगे। लेकिन वे केवल अगली खिड़की से ही बाहर आ रहे थे।

पीछे वाली खिड़की पर तैनात राइफलधारी ने खिड़की को बंद कर लिया था।

कुछ मिनट में ही पूरी बस खाली हो चुकी थी।

उस समय केवल ड्राइवर ही था जो अपनी सीट पर सहमा हुआ बैठा था।

राइफलधारी ने उसकी ओर देखा।

"तू समझता है कि यह आदेश तेरे ऊपर लागू नहीं होगा?"

"मैं...मैं तो ड्राइवर हूं।"

"जानता हूं-वह तो तू नजर ही आ रहा है लेकिन तेरे ड्राइवर होने के कारण तुझे इसकी छूट नहीं मिल जाएगी कि तू हमारे आदेशों का पालन न करे।"

"मैं...मैं...।"

"नीचे चल।"

उसने अपनी खिड़की की ओर हाथ बढ़ाया।

"वहां से नहीं-इधर से।"

वह ड्राइविंग सीट छोड़कर उस खिड़की तक पहुंच गया।

और ड्राइवर जिस समय गाड़ी से बाहर आया तो उसने देखा कि उसकी गाड़ी की तमाम सवारियां गाड़ी से कुछ कदम के फासले पर सड़क पर एक कतार में खड़ी थीं।

सारे बाराती संख्या में लगभग पचास थे।

उनमें दो अबोध व मासूम बच्चे भी थे जो आतंक के मारे अपने संरक्षकों के सीनों से इस प्रकार चिपटे हुए थे जैसे बंदरी का बच्चा अपनी मां के पेट से चिपका होता था।

वे अबोध बच्चे भी शायद इतना जानते थे कि मौत उनके सिरों पर नाच रही थी।

कई राइफलधारी उनसे कुछ कदम की दूरी पर उनकी ओर अपनी राइफलें ताने इस प्रकार खड़े थे मानो वे किसी क्षण भी ट्रिगर दबाने के लिए तैयार हों।

ड्राइवर को भी उसी कतार में खड़े होने का संकेत हुआ।

ड्राइवर को लग रहा था जैसे उसके जिस्म में ताकत ही न रही हो। उसकी टांगें उसके जिस्म का वजन संभालने में कामयाब नहीं हो पा रही थीं।

इसके बावजूद भी वह इस आदेश की अवहेलना नहीं कर सकता था।

वह लड़खड़ाते कदमों से आगे बढ़ा और उस कतार के एक सिरे पर जाकर खड़ा हो गया।

राइफलधारियों में से एक ऐसा भी था जिसके पास राइफल नहीं थी लेकिन उसके दोनों कूल्हों पर होलेस्टर में रिवॉल्वर लटक रहे शायद वह राइफलधारियों का सरगना था।

प्रत्यक्ष में वह लापरवाह नजर आ रहा था लेकिन उसकी नजरें बेहद चौकन्नी थीं।

उसने अपनी चौकन्नी नजरों से एक बार चारों ओर देखा। फिर एक राइफलधारी की ओर देखकर उसे अपनी आंख से कोई संकेत किया।

संकेत मिलते ही उसने अपनी राइफल को कंधे पर डाला और फिर वह एक आदमी के सामने जाकर खड़ा हुआ। कुछ पल तक वह उसकी ओर घूरता रहा।

इसके साथ ही उसने अपने बूट की ठोकर उसकी पसलियों में मारी तो वह व्यक्ति पीड़ा से छटपटा गया।

फिर उसका गिरेहबान पकड़कर इतनी जोर का झटका मारा कि वह मुंह के बल जमीन पर गिरा।

"उठ।" उस शैतान ने आदेश दिया ।

वह सहमता हुआ उठकर खड़ा हुआ।

"उधर जाकर खड़ा हो।" उसने अपनी उंगली से संकेत करते हुए खूंखार स्वर में आदेश दिया।

उस व्यक्ति ने लड़खड़ाते हुए इस आदेश का पालन किया।

उस कतार की ओर बढ़ गया।

सब जानते थे कि आने वाले क्षणों में उनके ऊपर भयंकर तबाही आने वाली थी। लेकिन उनमें से किसी के अंदर इतनी हिम्मत बाकी नहीं रह गई थी कि उन जल्लादों के सामने अपनी जुबान खोल सके।

वह व्यक्ति फिर आगे बढ़ा।

कतार में खड़े एक और व्यक्ति के साथ उसने वही सलूक किया।

कुछ देर पहले ही जो चेहरे खुशी और उमंग से चहक रहे थे, वे अब मौत के आतंक से सफेद हो रहे थे।

इस तरह उस कतार में से एक दर्जन लोगों को अलग करके एक 'दूसरी कतार में खड़ा कर दिया गया।

उन एक दर्जन व्यक्तियों में दो किशोर भी थे जिनकी उम्र चौदह-पंद्रह बरस से ज्यादा नहीं थी। इसके अलावा दो वह अबोध और मासूम बच्चे भी थे जो अभी तक ठीक से अपने पैरों पर चलना भी नहीं सीख पाए थे।

उस समय भी वे अपने संरक्षकों के सीनों से चिपटे हुए थे।

ये सभी व्यक्ति एक विशेष धर्म के मानने वाले थे-शायद उन्हें इसीलिए अलग किया गया था।

शैतानों का इरादा क्या था, यह बात अब तक सबकी समझ में आ चुकी थी। लेकिन वह खतरनाक विचार मन में लाने का भी वो साहस नहीं कर पा रहे थे।

दो राइफलधारी अब उन दर्जन-भर व्यक्तियों की ओर अपनी राइफलें ताने सतर्क मुद्रा में

खड़े थे। शेष राइफलधारी पहले की तरह बाकी लोगों को कवर किए खड़े थे।

रिवॉल्वरधारी ने उनकी ओर देखा।

"तुम लोगों को कुछ नहीं कहा जाएगा। हमारी दुश्मनी केवल उन लोगों से है।" उसका संकेत उन दर्जन-भर व्यक्तियों की ओर था- "लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि तुम लोग हमारे काम में दखल दोगे। जो कुछ हो रहा है या होने वाला है उसे चुपचाप देखते रहोगे। यदि किसी ने हमारे काम में दखल देने की कोशिश की तो इसकी कीमत उसे अपनी जान देकर चुकानी होगी। उसके साथ किसी तरह का रहम नहीं किया जाएगा।"

"नहीं।" उस कतार में खड़े एक व्यक्ति ने कहा।

राइफलधारियों ने चौंककर उस व्यक्ति की ओर देखा।

रिवॉल्वरधारी की आंखों में अजीब-से भाव उभरे।

"नहीं?"

"क्या नहीं?"

"तुम उनके साथ कोई ज्यादती नहीं कर सकते।"

"क्यों?"

"क्योंकि वे भी हमसे अलग नहीं हैं हमारे भाई हैं वे भी।"

"भाई?"

"हां वे हमारे भाई हैं तुम लोग उनके साथ कोई नाजायज सलूक नहीं कर सकते।" उस व्यक्ति ने पूरी दृढ़ता के साथ कहा।

उसके बाकी साथी भी हैरत से उसकी ओर देख रहे थे वह साक्षात आग से खेल रहा था।

लेकिन उसके सिवा और किसी में इतनी हिम्मत नहीं थी कि उन मानवताविरोधी शैतानों का विरोध कर सके।

"जानता है इस हमदर्दी की कीमत तुझे अपनी जान देकर चुकानी पड़ सकती है।"

"क्या मिलेगा।" उसने कहा- "क्या मिलेगा तुम्हें किसी की जान लेकर?"

"हमें क्या मिलेगा यह बात तेरी समझ में नहीं आ सकती। तू यदि अपनी मौत का कारण स्वयं नहीं बनना चाहता तो चुपचाप खड़ा तमाशा देखता रह।"

"नहीं।"

"अब भी नहीं?"

"मैं यह सब नहीं देख सकता।"

उसने अपने साथियों को संकेत किया।

"ठीक है फिर-पहले अपना तमाशा ही लोगों को देखने दे।" कहते हुए उस व्यक्ति के चेहरे पर बड़े खूंखार भाव पैदा हुए। फिर वे अपनी राइफलें कंधों पर लटकाकर आगे बढ़े। उनमें से एक ने आगे बढ़कर चीते की तरह उस पर झपट्टा मारा।

वह मुंह के बल जमीन पर गिरा।

इसके साथ ही उसके दोनों ओर उनके बूटों की ठोकरें पड़ीं।

उसके मुंह से पीड़ायुक्त सिसकारी निकली।

इसके बाद तो उन्होंने उस निर्दोष को अपनी ठोकरों पर रख लिया। वातावरण उसकी दर्दनाक चीखों से गूंज उठा।

लेकिन वहां मौजूद किसी भी व्यक्ति में इतना साहस नहीं था कि इस जुर्म का विरोध कर सके।

लेकिन इस पर भी शैतानों का मन नहीं भरा।

अब वे राइफलों की बटों से उस पर वार करने लगे। उनके अंदर जैसे रहम के लिए कोई जगह ही नहीं थी।

थोड़ी देर में ही उन जल्लादों ने उसे लहूलुहान करके अधमरा कर दिया।

वह बुरी तरह से पस्त हो चुका था-उसके अंदर अब चीखने की भी शक्ति नहीं रही थी। उसकी चेतना भी डूबती जा रही थी।

इसके बाद वे जल्लाद रुके।

उसका जिस्म निश्चल होकर रह गया।

जल्लादों ने अपने सरगना की ओर देखा- "इसे खत्म कर दें भाई?"

"नहीं।" उसने कहा- "इसके लिए यही सजा काफी है। हम इसकी जान नहीं लेंगे।" कहकर उसने उन लोगों की ओर देखा।

"तुममें से कोई और है जो भाईबंदी निभाने का जज्बा रखता हो? कोई ऐसी तमन्ना रखता हो तो आगे आए।"

लेकिन ऐसी हिम्मत किसी में नहीं थी। किसी में थोड़ी-बहुत हिम्मत थी भी तो वह अपने एक आदमी का अंजाम देखकर जवाब दे चुकी थी।

ऐसा लगा जैसे सबको सांप सूंघ गया हो।

फिर वह उस ओर घूम गया जिधर दर्जन-भर व्यक्तियों को उनसे निकालकर अलग कर दिया गया था।

वह कुछ कदम बढ़कर उनके करीब पहुंचा।

राइफलधारी जो उनके सामने अपनी राइफलें ताने खड़े थे उनकी आंखों में शिकारी कुत्तों जैसी चमक नजर आई।

उस व्यक्ति के दोनों रिवॉल्वर जो कि उसके कूल्हों पर लटक रहे थे, अब उसके हाथों में आ चुके थे।

वातावरण में एक बार फिर खामोशी छा गई।

यह खामोशी किसी भयानक तूफान के आने से पहले वाली खामोशी थी।

सामने खड़े व्यक्ति उनकी ओर उस हलाल होने वाले पशु की तरह कातर नेत्रों से देख रहे थे, जिसके सामने कसाई खड़ा हो और वह अपना अंजाम जान चुका हो।

उनके चेहरे बर्फ की तरह सफेद हो रहे थे।

उनके जिस्मों में जान तो जैसे रही ही नहीं थी वे पत्थर की निर्जीव मूर्तियों की तरह नजर आ रहे थे।

फिर उस व्यक्ति ने अपने दोनों रिवॉल्वरों को आसमान की ओर उठाया।

अगले ही पल दो फायर एक साथ हुए।

और इसके साथ ही जैसे मौत का नंगा नाच शुरू हो गया हो।

राइफलधारियों की राइफलें गरज उठीं।

सामने जो लोग अब तक पत्थर के बुतों की तरह खड़े थे उनमें जैसे अचानक ही जान आ

गई हो। उनके मुंह से डरावनी चीखें वातावरण में बुलंद होने लगीं।

लेकिन वे चीखें गोलियों की आवाजों में दबकर रह गईं। वे सब एक-एक करके कटे हुए वृक्षों की तरह जमीन पर गिरने लगे।

उनके जिस्म से खून के फव्वारे छूट रहे थे।

उनकी चीखों में वे चीखें भी शामिल हो गई थीं जो कि उनसे कुछ फासले पर खड़े मौत का यह तमाशा अपनी आंखों से देख रहे थे और उन्हें बता दिया गया था कि यह जल्लाद उनकी जान लेने में रुचि नहीं रखते थे।

लेकिन इसके बावजूद भी वे उन लोगों से कम भयभीत नजर नहीं आ रहे थे, जिनके ऊपर गोलियां बरस रही थीं।

उनमें से कई व्यक्तियों के दिमाग में यह बात अब आ रही थी कि उन्हें अपनी जान बचाने के लिए संघर्ष करना चाहिए था। उन्हें अपनी जान बचाकर भागना चाहिए था।

लेकिन देर से!

देर से यह बात उनके दिमाग में आ सकी थी।

उनमें से जिसने भी यह कोशिश की, वह दो कदम भी आगे नहीं बढ़ सका। जल्लादों की गोलियों ने उसे वहीं ढेर कर दिया।

लेकिन इस कोशिश में बाजी मारने वालों में वे दोनों मासूम लड़के थे जिनकी उम्र अभी जिंदगी के पंद्रह साल भी पार नहीं कर वे मौत की उस कतार को छोड़कर एक साथ भाग निकले।

उनका विचार था कि इस तरह वे अपनी मौत को धोखा देने में कामयाब हो जाएंगे।

लेकिन यह भूल थी उनकी।

एक और राइफलधारी उन लड़कों की ओर घूम गया जो उस कतार से निकलकर भागे थे।

मौत की गति का मुकाबला वे नहीं कर सकते थे।

उसने बिना कोई जल्दबाजी दिखाए अपनी राइफल का मुंह उन लड़कों की ओर घुमा दिया।

लड़के अब तक काफी दूर निकल आए थे।

लेकिन मौत तो उनके सिर पर पहले ही सवार हो चुकी थी।

और उस समय जबकि उन्हें लग रहा था कि वे मौत को धोखा देने में कामयाब हो गए-ठीक उसी समय उन्हें लगा जैसे उनके जिस्मों में पीछे से गर्म लोहे की सलाखें घुसेड़ दी गई हों।

उनके मुंह से एक साथ चीखें निकलीं, लेकिन वे चीखें मुंह से बाहर आने से पहले ही अंदर ही घुसकर रह गईं।

वे मुंह के बल जमीन पर गिरे।

लेकिन जमीन पर गिरने से पहले ही उनके जिस्मों में इतनी गोलियां समा चुकी थीं कि उनके छेद गिनना भी मुश्किल हो जाए।

गोलियों से छलनी उनके जिस्म कुछ देर तक मछली की तरह तड़पते रहे और अंत में शांत हो गए।

इसके साथ ही सब कुछ शांत हो गया।

मौत के शोले उगलने वाली राइफलें भी शांत हो चुकी थीं और सड़क पर पड़े रह गए निर्जीव जिस्म।

लेकिन जो जिंदा थे उनकी स्थिति मुर्दों से ज्यादा गई-गुजरी थी।

मौत का यह खेल खेलने वाले जल्लाद वापस मुड़े। लेकिन उसी घड़ी लाशों के बीच से जिंदगी के संकेत मिले।

इसके साथ ही उनके कदम रुक गए।

वे पलटकर लाशों की ओर बढ़े।

उन्होंने अपने बूटों की ठोकर से दो लाशों को पलट दिया।

ये दो लाशें उन व्यक्तियों की थीं जो अंत तक दो मासूम और अबोध बच्चों को अपने सीनों से चिपटाए रहे थे।

वे दोनों बच्चे बिल्कुल सुरक्षित थे-उनके जिस्म पर कहीं खरोंच तक नहीं थी।

जल्लाद आगे बढ़े।

फिर एक साथ ही उन्होंने बच्चों को एक-एक टांग पकड़कर उठा लिया।

उनकी आंखों में एक बार फिर शैतानी चमक नजर आई।

अचानक ही उस व्यक्ति के जिस्म में हरकत हुई जो पहले उनके विरोध में आगे आया था और उसे पीट-पीटकर उन्होंने अधमरा कर दिया था।

उसने पलटकर उठना चाहा।

लेकिन उठ नहीं सका।

उसकी नजरें उन शैतानों पर ही गड़ गईं जिन्होंने उन अबोध बच्चों को बेरहमी से दबोचा हुआ था।

"अरे शैतानों!" उसने नफरतपूर्ण स्वर में कहा- "जल्लादों, इन मासूम नन्ही-सी जानों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा? खुदा के खौफ से डरो जल्लादों...वह तुम्हें माफ नहीं करेगा। कम-से-कम इन नन्ही जानों को तो बख्श दो।"

उत्तर में उस रिवॉल्वरधारी का भयानक ठहाका घाटी में गूंजा और बहुत देर तक गूंजता रहा।

मासूम बच्चे उन जल्लादों के पंजों में फड़फड़ाते रहे। उनके मुंह से बहुत महीन आवाजें निकल रही थीं।

वे बुरी तरह से सहमे हुए थे लेकिन इतने अबोध थे कि य भी नहीं जानते थे कि उनका अंजाम क्या होने जा रहा है।

फिर वह ठहाका रुक गया।

उस व्यक्ति के चेहरे पर खूंखार भाव पैदा हुए। उसने खूंखार नेत्रों से उस व्यक्ति की ओर देखा।

"बिगाड़ा तो।" उसने कहा- "इन लोगों ने भी हमारा कुछ नहीं जिनकी लाशें यहां पड़ी नजर आ रही हैं। इन्होंने हमारे उन साथियों की मौत का बदला चुकाया है जिन्हें परसों ही सरकारी फौजों ने अपनी गोलियों से छलनी कर दिया था।"

"यह मासूम और अबोध बच्चे उन लोगों तक हमारा यह संदेश पहुंचाएंगे कि अपने

साथियों की मौत के बदले में हम पूरी घाटी को खून से रंग देंगे। पूरी घाटी ऐसे ही मासूमों की चीखों से गूंज उठेगी।"

"नहीं छोड़ दो इन नन्ही जानों को खुदा के लिए इन पर, इनकी मासूमियत पर रहम खाओ।"

उसी घड़ी उन दोनों अबोध बच्चों को गेंद की तरह आसमान में उछाल दिया गया।

ठीक उसी समय एक साथ कई राइफलों का रुख भी आसमान की ओर हो गया।

और इससे पहले कि उनके जिस्म जमीन पर आते, उनमें अनगिनत गोलियां धंस चुकी थीं।

जमीन पर आने से पहले ही वे नन्हे मासूम और फूल जैसे खूबसूरत बच्चे मांस के लोथड़ों में बदल चुके थे, जो जमीन पर गिरते ही छितरा गए।

अमानवीय क्रूरता की शायद सभी हदें पार हो चुकी थीं।

एक बार फिर रिसर्च एंड एनालिसिस विंग के उस विशेष शाखा के सभी जिम्मेदार उच्चाधिकारी उस बैठक में मौजूद थे। जिसकी अध्यक्षता उसका सुपर चीफ के.सी. पाणिकर कर रहा था। बैठक में उस दस्ते का सबसे तेज-तर्रार अधिकारी कैप्टन कबीर ठाकुर भी मौजूद था जिसके बारे में कहा जाता था कि उसे दुश्मन के घर में घुसकर उसकी नाक के नीचे से सूचनाएं हासिल कर लेने में महारत हासिल थी।

उसके दुस्साहस की कहानियां उसके महकमे में किंवदंतियां बन गई थीं।

अभी हाल में ही दुश्मन की एक खतरनाक साजिश को सफल होने से पहले ही नाकाम करने का कारनामा अंजाम देना भी उसकी योग्यता, कुशलता और दुस्साहस का ही उदाहरण था।

यह कारनामा उसने अपनी जान पर खेलकर अंजाम दिया था।

लेकिन इस तरह अपनी जान पर खेल जाना उसके लिए कोई नई बात नहीं थी।

यह तो उसकी रोजमर्रा की जिंदगी का अंग बनकर रह गया था।

वह जांबाज कैप्टन कबीर ठाकुर भी उस बैठक में मौजूद था।

वहां मौजूद अधिकारियों में वह सबसे जूनियर था।

लेकिन उसका व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था कि उसे देखकर इस बात का आभास मिलता था कि वह सबके ऊपर छाया हुआ था।

के.सी. पाणिकर ने एक नजर वहां मौजूद सभी अधिकारियों पर डाली। उसके चेहरे पर गंभीरता साफ-साफ नजर आ रही थी।

"पिछले तीन दिनों में।" उसने गंभीरता-भरे स्वर में कहा- "इन वारदातों ने पूरी घाटी को दहलाकर रख दिया है। आतंकवादियों ने बारात की एक बस को रोका-बारातियों को बस से नीचे उतारा और बड़े ही इत्मीनान के साथ उन्होंने एक धर्म विशेष को मानने वाले लोगों को अलग किया जो संख्या में दर्जन-भर थे और उन्हें बाकी लोगों के सामने गोलियों से भूनकर रख दिया।"

"आतंकवादियों द्वारा यह दूसरी बहुत बड़ी और बहुत ही खतरनाक वारदात है।"

"दूसरे सम्प्रदाय के एक साहसी व्यक्ति ने इसका विरोध करने का साहस भी किया लेकिन बदकिस्मती से उसका साथ किसी ने नहीं दिया।"

"नतीजन आतंकवादियों ने उसे पीट-पीटकर अधमरा कर दिया। लेकिन उसकी जान फिर भी नहीं ली।"

"इसका यह मतलब नहीं कि आतंकवादियों को उससे किसी प्रकार की हमदर्दी थी। ऐसे लोगों में हमदर्दी की तो उम्मीद ही नहीं की जा सकती।"

"इसके पीछे उनका एक ही मकसद हो सकता है और वह है लोगों के बीच नफरत के बीज बोना। आपसी सौहार्द को बिगाड़ना।"

"उनका दूसरा उद्देश्य है, आतंक का राज्य कायम रखना।"

"और इसमें उन्हें कामयाबी भी हासिल हो रही है।"

"लोगों के बीच में वे यह धारणा कायम करना चाहते हैं कि वे सबसे ज्यादा ताकतवर हैं। उनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। घाटी में उनकी आवाज ही कानून है।"

"इतना बड़ा कांड करने के बाद वे लोग जिस तरह इत्मीनान के साथ चले गए उससे लोगों में यह धारणा पनप सकती है कि हकीकत में उन्हें चुनौती देने वाला कोई नहीं है।"

"कानून और व्यवस्था उनके हाथ का खिलौना है।"

"लोगों में उनका आतंक बुरी तरह से छाया हुआ है। लोगों का मनोबल टूट चुका है।"

"ऐसा न होता तो लोग इतने बड़े हत्याकांड को अपने बूते पर ही रोक सकते थे।"

"भले ही वे हथियारबंद थे और लोग खाली हाथ थे। लेकिन जितना साहस एक आदमी ने किया-उतनी हिम्मत उन सभी ने मिलकर की होती तो इतने सारे आदमियों का मुकाबला वे गिनती के आतंकवादी हथियारों के बल पर भी नहीं कर सकते थे।"

"लेकिन ऐसा नहीं हुआ।"

"वे उनकी जान तो क्या लेते-उसके लिए स्वयं अपनी जान बचाना मुश्किल हो जाता।"

"क्योंकि लोगों के दिलों पर उनका आतंक इस कदर हावी हो चुका है कि वे इतनी हिम्मत पैदा ही नहीं कर सकते।"

"इसलिए लोगों के अंदर उस विश्वास को उस हिम्मत को दोबारा वापस लाना जरूरी है। उनके टूटे हुए मनोबल को जोड़ना जरूरी है।"

"और यह तभी संभव हो सकता है, जबकि लोगों को यह नजर आए कि हमारे देश का कानून उन लोगों के हाथ का खिलौना नहीं है। जब तक लोगों का यह विश्वास वापस नहीं लौटता, तब तक आतंकवाद इसी तरह पनपता रहेगा और वे लोग हमारे सामने इसी तरह चुनौती पेश करते रहेंगे।"

"इतने कम समय में कई घटनाएं एक साथ करने के पीछे उनका यही उद्देश्य है कि लोगों के दिलों में यह धारणा कायम हो जाए कि सरकार भी उनके कदमों को बढ़ने से रोकने में सक्षम नहीं है। उनका मुकाबला कोई नहीं कर सकता।"

"हमें लोगों के दिलों से यह धारणा समाप्त करनी होगी सर।"

एक अधिकारी ने कहा- "उनके दिलों में छाया हुआ खौफ दूर करना होगा। यदि हम यह करने में सफल हो गए तो आतंकवाद के विरुद्ध हमारी यह लड़ाई आसान हो जाएगी। उस स्थिति में आम जनता भी आतंकवादियों से अपनी रक्षा में स्वयं आगे आएगी। उस स्थिति में उनके पांव उखड़ जाएंगे।"

"तुम्हारा कहना ठीक है मिस्टर कुलकर्णी-लेकिन इस तरह का प्रयास तो पहले से ही

किया जाता रहा है।"

"इसके बावजूद भी हमें कामयाबी नहीं मिल पा रही है सर।"

एक दूसरे अधिकारी ने कहा- "क्यों ?"

"सफलता मिलेगी जरूर मिलेगी। जुर्म और अन्याय का कहीं-न-कहीं तो अंत होता ही है न?"

"तो क्या हम इसी तरह भगवान के भरोसे बैठे उस वक्त का इंतजार करते रहेंगे सर?"

"नहीं।" चीफ ने कहा- "हम हाथ पर हाथ रखे नहीं बैठे रहेंगे। अब तक भी हम बैठे नहीं रहे हैं। हमारी जंग जारी है और यह तब तक नहीं थमेगी जब तक इस समस्या को जड़ से समाप्त नहीं कर दिया जाएगा।"

"लेकिन क्या कारण है सर हम इस जंग को जीत नहीं पा रहे हैं? जबकि उन चंद सिरफिरे लोगों की ताकत हमारे सामने कुछ भी नहीं है।"

"कारण है इसका कारण है। वे लोग निर्दोष लोगों को सताने के लिए पूरी तरह आजाद है। उनके ऊपर कोई नियंत्रण नहीं है-कोई अंकुश नहीं है। वे कोई भी हथकंडा इस्तेमाल कर सकते हैं।"

"जबकि हम ऐसा नहीं कर सकते-हमारी कुछ सीमाएं हैं। हम उन सीमाओं से बाहर नहीं जा सकते। हमें सब कुछ उन सीमाओं में रहकर ही करना होता है।"

"इसका मतलब तो यही है सर कि हमारे हाथ बंधे हुए हैं और हमारे हाथ बांधकर हमसे कहा जाता है कि हमें उनका मुकाबला करना है।"

"कानून की सीमाओं में रहकर काम करना तो ठीक है लेकिन हमारी सरकार की नीतियां ही कुछ ऐसी हैं कि हम चाहकर भी कुछ नहीं कर सकते। कभी-कभी तो हम लोग इतने मजबूर होते हैं कि सब कुछ देखते रहने के सिवा हमारे पास कोई चारा ही नहीं होता।" उस अधिकारी के लहजे में आक्रोश स्पष्ट नजर आ रहा था।

"तुम्हारा कहना किसी हद तक जायज है लेकिन हम यहां सरकारी कामकाज का विश्लेषण नहीं कर रहे हैं। वह हमारा काम भी नहीं है।"

"यह सही है कि सरकारी नीतियों के कारण कभी-कभी हमें अपना काम करने में उलझन होती है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम कुछ कर ही नहीं कर सकते।"

"इन सारी समस्याओं के बावजूद हमने एक व्यापक योजना तैयार की है जिससे आतंकवाद का जड़ से खात्मा किया जाए। मैं आप लोगों को यह भी बताना चाहता हूं कि सरकार ने भी इस विषय में हमें पूरा आश्वासन दिया है कि इस रास्ते में आने वाली सारी बाधाओं को दूर करने के हर संभव प्रयास किए जाएंगे। क्योंकि सरकार स्वयं हमारी उन बाधाओं को महसूस कर रही है।"

"इस विषय में गृहमंत्री महोदय से मेरी बात हो चुकी है।"

"यदि ऐसा है तो।" एक अधिकारी ने उत्साहित स्वर में कहा- "फिर हमें देर नहीं करनी चाहिए। हमें आतंकवादियों को ढूंढ-ढूंढकर पकड़ लेना चाहिए। जो पकड़ में न आएं उन्हें खत्म कर दिया जाए और यह काम हम चंद दिनों में पूरा कर सकते हैं।"

"निश्चित रूप से हमें ऐसा ही करना चाहिए। लेकिन...।" उसने अपना वाक्य बीच में ही छोड़ दिया।

सभी अधिकारी प्रश्नसूचक नेत्रों से उसकी ओर देख रहे थे।

"इस तरह।" पल-भर की चुप्पी के बाद उसने कहा- "हम इस समस्या का अंत नहीं कर सकते।"

"क्यों-क्यों नहीं कर सकते सर?"

"क्योंकि यह अभियान हमारे विरुद्ध सीमा पार से चलाया जा रहा है। आतंकवाद की इन जड़ों को खाद-पानी सीमा पार से दिया जा रहा है।"

"और जब तक ऐसा होता रहेगा, तब तक इस समस्या का हल नहीं निकाला जा सकता। हम आतंकवादियों को पकड़ते रहेंगे, उन्हें समाप्त करते रहेंगे लेकिन वे उससे भी भारी मात्रा में पैदा होते रहेंगे।"

"हमें उन कारखानों को ही नष्ट करना होगा जहां से आतंकवाद के लिए खाद तैयार की जाती है-मेरा मतलब समझ रहे हैं न आप लोग?"

"इसके लिए हमें क्या करना होगा सर?"

"मेरा मतलब उन प्रशिक्षण शिविरों से हैं जो सीमा पार हमारे दुश्मन देश द्वारा चलाए जा रहे हैं। उन प्रशिक्षण शिविरों में हमारे ही देश के कुछ गुमराह नवयुवकों के दिमाग में हमारे प्रति जहर भरा जाता है।"

"फिर उन्हें विध्वंसक गतिविधियां चलाने का प्रशिक्षण दिया जाता है। उन्हें हथियार व गोला-बारूंद दिया जाता है और वापस भेज दिया जाता है यहां विध्वंस करने के लिए।"

"और जब तक इस ओर से हम आंखें मूंदे रहेंगे तब तक इस समस्या को समाप्त नहीं किया जा सकता।"

"लेकिन इस बार हमारी सरकार चाहती है कि हमें इस समस्या को जड़ से ही समाप्त कर देना चाहिए।"

"इसका मतलब...।"

"इसका मतलब वही है जो तुम समझ रहे हो ऑफिसर-हमें सीमा पार चलाए जा रहे उन प्रशिक्षण शिविरों को ही समाप्त कर देने का अभियान चलाना है।"

इसके पश्चात कई पल तक खामोशी छाई रही।

लेकिन वहां मौजूद प्रत्येक ऑफिसर के चेहरे पर एक अजीब-सी चमक थी। सिर्फ एक अधिकारी-कैप्टन कबीर ठाकुर को छोड़कर।

उसका चेहरा पूरी तरह भावहीन था।

चीफ ने अपना पाइप सुलगाया। एक गहरा कश लेने के बाद उसने एक बार फिर उनकी ओर देखा।

"जो आतंकवादी गिरफ्तार किए गए हैं, उनसे उन प्रशिक्षण शिविरों के बारे में बहुत सारी महत्वपूर्ण जानकारियां हासिल हुई हैं। उनकी जानकारी के आधार पर ही उन प्रशिक्षण शिविरों की निशानदेही की गई है।" कहने के साथ ही उसने अपने सामने रखे एक की-बोर्ड का स्विच दबाया।

उसी घड़ी कोने में रखे एक कम्प्यूटर की स्क्रीन रोशन हो गई।

सभी अधिकारियों की नजरें कम्प्यूटर की स्क्रीन की ओर घूम गईं।

फिर वह की बोर्ड पर अलग-अलग स्विच दबाता रहा।

इस प्रकार कम्प्यूटर की स्क्रीन पर उन प्रशिक्षण शिविरों का पूरा ब्यौरा उसके नक्शे सहित आता चला गया।

यह सारी जानकारी पुलिस ने हाल ही में गिरफ्तार आतंकवादियों द्वारा हासिल की थी।

"और यह सारे प्रशिक्षण शिविर।" चीफ ने अंत में कहा- "इस समय हमारे निशाने पर हैं। हमारे लिए इन सारे प्रशिक्षण शिविरों को तबाह करना जरूरी है।

"यदि हम अपने इस मिशन में कामयाब हो गए तो हमारे मुल्क में फैली आतंकवादी समस्या को जड़ से समाप्त किया जा सकता है। दुश्मन फिर से यदि ऐसी कोशिश करता है तो उसके लिए यह बहुत मुश्किल काम होगा।"

"इस तरह के प्रशिक्षण शिविर दोबारा स्थापित किए बिना वह अपनी गतिविधियां जारी नहीं रख सकेगा और उन्हें रातोंरात खड़ा नहीं किया जा सकता।"

"इसमें उसे वक्त लगेगा और इतने वक्त में हम अपनी व्यवस्था को इतनी चुस्त दुरुस्त कर सकते हैं कि दुश्मन की कोई भी गतिविधि यहां कामयाब नहीं हो सकेगी।"

"एक्जेक्टली सर।" एक अधिकारी ने अत्यंत उत्साहित स्वर में कहा- "इस तरह की कार्यवाही करने की छूट हमें पहले ही मिल गई होती तो यह समस्या खड़ी ही नहीं होती।"

"अंत में मैं यह जानकारी भी आप लोगों को देना चाहता हूं कि इस अभियान की जिम्मेदारी...।" कहते-कहते वह पल भर के लिए उस घड़ी कैप्टन कबीर ठाकुर की आंखों में एक विशेष प्रकार की चमक नजर आ रही थी।

दूसरे अधिकारियों की नजर भी कैप्टन कबीर ठाकुर की ओर ही थी- "यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी हमारे एक नए, लेकिन बहुत बहादुर, जांबाज और दिलेर ऑफिसर अनिल वर्मा को सौंपी जा रही है-अनिल वर्मा।"

उसके इन शब्दों ने सभी को चौंकाया।

उस समय तो सभी उम्मीद कर रहे थे कि यह जिम्मेदारी निश्चित रूप से कैप्टन कबीर ठाकुर को सौंपी जाने वाली है।

लेकिन इस नए नाम की घोषणा उन सबके लिए असहनीय थी।

स्वयं कैप्टन कबीर ठाकुर हक्का-बक्का था।

यह जिम्मेदारी उसके सिवा किसी दूसरे को सौंपी जा सकती है, वह सोच भी नहीं सकता था।

उसने कुछ कहना चाहा।

"लेकिन सर...।"

"नो कैप्टन।" चीफ ने अपना हाथ उठाकर उसे बोलने से रोका- "इस विषय में कुछ भी कहने की गुंजाइश नहीं है। तुम्हारे डॉक्टर ने बताया है कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है और तुम्हें कुछ दिन तक पूर्ण आराम करने की जरूरत है। बल्कि डॉक्टर की सलाह तो यह है कि तुम्हें कुछ दिन के लिए कहीं दूसरी जगह पर आराम करने के लिए भेजा जाए।"

"यह गलत है सर।"

"क्या गलत है?"

"मुझे ऐसा कुछ नहीं हुआ है डॉक्टर ने ऐसा कुछ नहीं कहा है। उसने मुझे मामूली सी थकान की बात अवश्य कही थी। उसके लिए इतना बड़ा फैसला करने की जरूरत नहीं है

सर।

"फैसला तो हो चुका कैप्टन ठाकुर-और यह फैसला मात्र डॉक्टर के कहने पर नहीं हुआ बल्कि मेरे पास डॉक्टर की लिखित रिपोर्ट है। उस रिपोर्ट के आधार पर तुम्हें मिशन पर नहीं भेजा जा सकता।"

"लेकिन सर...।"

"मेरा विचार है, अब तुम्हारे लिए कुछ भी कहना जरूरी नहीं कैप्टन कबीर ठाकुर चुप रह गया। लेकिन उसके चेहरे पर असंतुष्टि के भाव थे।

"लेकिन सर।" एक अन्य अधिकारी ने कहा- "अनिल वर्मा जैसे व्यक्ति को इतना महत्वपूर्ण मिशन सौंपना क्या उचित होगा? जबकि उसका फील्ड का अनुभव उतना नहीं है।"

"यह कहना सही नहीं है मिस्टर शुक्ला -अनिल वर्मा का पिछला रिकॉर्ड उतना बुरा नहीं है। कई मामलों में उसने अच्छी भूमिका निभाई है।"

"उसका जो भी अनुभव है सर, वह देश में ही काम करने का है। विदेशों में जाकर काम करना एकदम अलग बात है। जिसका उसे कोई अनुभव नहीं है।"

"हां-उसे विदेशों में काम करने का अवसर नहीं मिला। लेकिन उसकी क्षमताओं पर भरोसा किया जा सकता है और वह अभी-अभी स्पेशल ट्रेनिंग करके लौटा है। मुझे पूरा विश्वास है कि वह अपनी इस जिम्मेदारी को बखूबी अंजाम दे सकता है।"

"उसे यह जिम्मेदारी सौंपी जा चुकी है। उसे सारी जरूरी जानकारी मुहैया करा दी गई है। उसे जरूरी निर्देश दिए जा चुके हैं। सारी फाइलै उसे सौंप दी गई हैं। उसे किसी समय भी इस मिशन के लिए रवाना किया जा सकता है।" चीफ ने बताया।

कैप्टन कबीर ठाकुर के चेहरे पर निराशा के भाव थे।

"अब आप लोग जा सकते हैं।" कहने के साथ ही वह उठ गया। उसके साथ ही बाकी अधिकारी भी अपनी-अपनी सीटें छोड़कर उठे और बाहर जाने वाले दरवाजे की ओर बढ़ गए।

"कैप्टन ठाकुर।" उसने कहा तो कैप्टन कबीर ठाकुर ने पलटकर पीछे देखा।

"यस सर।"

"तुम कुछ दिन आराम के लिए एक हिल स्टेशन जा रहे हो। तुम्हारी छुट्टियां मंजूर कर दी गई हैं और तुम्हारी यात्रा व वहां ठहरने का इंतजाम भी महकमे की ओर से कर दिया गया है। लेकिन अपनी यात्रा पर जाने से पहले आज शाम तुम मुझसे मिलो। तुमसे एक जरूरी बात करनी है।"

"यस सर।"

"यू कैन गो नाऊ।"

इसके साथ ही कैप्टन कबीर ठाकुर ने असंतुष्टि व निराशा के साथ दरवाजा पार किया।

□□□

उस फौजी अफसर ने अपना चेहरा उठाया।

उसी घड़ी एक सैनिक ने उसे जोरदार सैल्यूट किया।

"यस।"

"हिंदुस्तान से कोबरा का मैसेज है सर-अर्जेंट।"

"कोबरा!" फौजी ऑफिसर उसी घड़ी अपनी सीट छोड़कर उठ गया।

फिर उसने अपने ठीक पीछे एक दरवाजा खोला और उसमें दाखिल हो गया, जबकि आगंतुक सैनिक उसी रास्ते से बाहर चला गया जहां से वह अंदर दाखिल हुआ था।

वह कक्ष संचार के अत्याधुनिक साधनों से लैस था। उस फौजी अफसर ने आगे बढ़कर एक स्विच दबाया तो उसके सामने रखे एक संचार यंत्र पर बीप-बीप का स्वर उभरने लगा। फिर कुछ पल बाद ही एक स्वर उभरा।

"कोबरा फ्रॉम हिंदुस्तान ऑन द लाइन सर।"

"ठीक है-उसे लाइन दो-फौरन।"

"ओके सर।"

फिर एक दूसरा स्वर उस पर उभरने लगा।

"कोबरा फ्रॉम हिंदुस्तान...कोबरा फ्रॉम हिंदुस्तान रिपोर्टिंग।"

"रिपोर्ट दो कोबरा...रिपोर्ट दो।"

"सीमा पार आतंकवादी प्रशिक्षण शिविरों को बरबाद करने की नीयत से यहां की इंटेलीजेंस द्वारा अनिल वर्मा नाम के एक खतरनाक आदमी को भेजा जा रहा है।"

"शिविरों को बरबाद करने की नीयत से?"

"यस सर।"

"क्या उनके पास हमारे शिविरों के बारे में जानकारी है?"

"हां यहां की इंटेलीजेंस के पास उन सारे शिविरों की जानकारी है और यह जानकारी उन लोगों द्वारा उपलब्ध कराई गई है जिन्हें हाल ही में इंटेलीजेंस द्वारा हासिल की गई सूचनाओं के आधार पर पुलिस ने गिरफ्तार किया था।"

"और उनके पास ऐसे कितने शिविरों की जानकारी है क्या यह जानकारी तुम्हारे पास भी है?"

"हां-मेरे पास वह सारी जानकारी उपलब्ध है और उसका पूरा ब्यौरा विस्तारपूर्वक भेज रहा हूं।"

"और यह अनिल वर्मा, जिसे इन शिविरों को तबाह करने के लिए भेजा जा रहा है, उसके बारे में?"

"उसके बारे में सारी जानकारी भी बाकी जानकारी के साथ तुरंत भेजी जा रही है।"

"अनिल वर्मा नाम के इस आदमी को एक विशेष कोड नेम देकर भेजा जा रहा है लेकिन अभी वह कोड मेरे पास नहीं है।"

"तब तो यह जानकारी भी किसी काम की नहीं है।"

"मैं कोशिश करूंगा। जैसे ही यह जानकारी मुझे मिलेगी, वह तुरंत आपके यहां ट्रांसफर कर दी जाएगी।"

"लेकिन अनिल वर्मा को क्या कोड देकर यहां भेजा जा रहा है, उसकी जानकारी हासिल करना बहुत जरूरी है। केवल कोशिश करने की बात कह देने भर से कुछ नहीं होने वाला।"

"मैं केवल कोशिश की बात कहकर ही बात टालने की कोशिश नहीं कर रहा। कोशिश करने का मतलब है हकीकत में ही कोशिश करना और मुझे विश्वास है कि मुझे इसमें

सफलता मिलेगी।"

"ठीक है-तुम्हारे इस आश्वासन पर हम पूरा भरोसा कर सकते हैं।"

"और मैंने कभी आपके भरोसे को टूटने नहीं दिया है। इस बार भी नहीं टूटने दिया जाएगा।"

"ऑफकोर्स।"

"लेकिन...!"

"लेकिन?"

"आप जानते हैं कि आजकल यहां की इंटेलीजेंस किस कदर चौकस हो गई है। और इस प्रकार उसके आंतरिक रहस्य चोरी करना कितना जोखिम का काम हो गया है। जोखिम का काम तो पहले भी था लेकिन आजकल कितना बड़ा जोखिम हो गया है, इसका अनुमान भी आप शायद नहीं लगा सकते।"

"हम लगा सकते हैं।" उसने कहा- "हम इसका पूरा अनुमान लगा सकते हैं। हम यह भी समझ सकते हैं कि इस तरह के काम कितने जोखिम-भरे होते हैं। बिना जोखिम उठाए तो यह काम हो ही नहीं सकते।"

"लेकिन तुम्हें इसकी चिंता करने की जरूरत नहीं है। तुम्हें इसकी पूरी कीमत चुकाई जाती रही है और आगे भी पूरी ईमानदारी के साथ की जाती रहेगी।"

"हमें तुम्हारे ऊपर पूरा भरोसा है। इसी तरह तुम्हें भी हमारे ऊपर उतना ही भरोसा करना चाहिए।"

"भरोसा न करने का तो कोई कारण ही नहीं है। लेकिन...।"

"लेकिन?"

"मैंने अर्ज किया है कि अब जोखिम पहले से बहुत ज्यादा बढ़ गया है।"

"मैं समझ गया तुम्हारा मतलब।"

"केवल समझने से ही तो कुछ नहीं होता।"

"हां-केवल समझने से ही कुछ नहीं होता-हम कुछ करके भी दिखाएंगे। लेकिन हमारे इन माध्यमों को इतनी लम्बी बात के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा सकता।"

"हफ्ते में तुम अपने उस विदेशी गुप्त खाते की पोजीशन देख लेना- तुम्हें पता चल जाएगा कि हमने क्या किया है।"

"इसके लिए हमने क्या किया है, यह जानने के लिए आने वाले समझ भी गया और मुझे विश्वास भी हो गया कि मुझे निराश नहीं होना पड़ेगा।"

"ओके सर-मैं समझ गया।"

"नाऊ ओवर-एंड ऑल।" कहने के पश्चात ही उसने संपर्क समाप्त कर दिया।

उस घड़ी उस फौजी अफसर की आंखों में एक विशेष प्रकार की चमक नजर आ रही थी।

वह नियंत्रण कक्ष से बाहर निकल आया।

□□□

उस टैंट के बाहर एक फोल्डिंग चेयर पर जो फौजी ऑफिसर बैठा हुआ था उसकी वर्दी पर कर्नल रेंक के बैज लगे थे। उसके सामने रखी अंगीठी में लकड़ियों के टुकड़े धीमी आग में जल रहे थे। लेकिन उनकी तपिश उसके चेहरे पर नजर आ रही थी।

कभी-कभी वह अपने एक हाथ को आग के करीब लाकर उसकी गर्मी का आनंद ले रहा था।

उसके दूसरे हाथ में शीशे का गिलास था जो आधे से ज्यादा रम या व्हिस्की से भरा हुआ था, जिसके घूंट वह मजे ले-लेकर ले रहा था।

उसी घड़ी जो व्यक्ति उसके करीब पहुंचा वह फौजी वर्दी नहीं पहने था। लेकिन वह कोई बहुत बढ़िया वस्त्र भी नहीं पहने था। वह साधारण-सी वेशभूषा धारण किए था।

लेकिन उसका चेहरा असाधारण रूप से क्रूर नजर आ रहा था।

कर्नल के पास पहुंचकर उसने झुककर सलाम किया। कर्नल ने उसके सलाम का जवाब नहीं दिया। लेकिन उसकी आंखों में प्रश्नसूचक भाव उभरे।

फिर उस व्यक्ति ने जो कुछ कहा उसे वह कुछ देर तक धैर्यपूर्ण ढंग से सुनता रहा।

इस बीच उसने अपने जाम से एक घूंट भी नहीं लिया।

उस व्यक्ति ने अपनी बात समाप्त की तो कर्नल की आंखों में किसी शिकारी जैसी चमक नजर आई। फिर उसके होंठों पर अर्थपूर्ण मुस्कराहट उभरी।

उसने अपने जाम से एक लम्बा घूंट लिया तथा अपने दूसरे हाथ को अंगीठी पर तपाया।

"इसका मतलब।" उसने कहा- "हमारी यह चाल पूरी तरह कामयाब रही।"

"बेशक हमें कामयाबी मिली है कर्नल।"

"हिंदुस्तानी इंटेलीजेंस को फंसाने के लिए हमने जो दाना फेंका था, उसे चुगने के लालच में आकर वे लोग बड़ी आसानी से हमारे बिछाए जाल में फंस गए।"

"यस कर्नल।"

"क्या नाम बताया था तुमने उसका?"

"अनिल वर्मा।"

"वो यह अनिल वर्मा आ रहा है हमारे प्रशिक्षण शिविरों को तबाह करने।" उसके होंठों पर व्यंग्यात्मक मुस्कराहट उभरी।

"अपने असली नाम की बजाय उसकी पहचान एक कोड के जरिए दी जाएगी।"

"और वह कोड क्या है?"

"इसका अभी पता नहीं चल सका है कर्नल- लेकिन यह कोई बड़ी बात नहीं है।"

"क्या बड़ी बात नहीं है?"

"उसके यहां आने से पहले उसके कोड का भी पता लगा लिया जाएगा।"

"गुड।"

"वह यहां हमारे प्रशिक्षण शिविरों की तबाही का सपना लेकर हमारे मुल्क की सरजमीं पर कदम रखेगा। लेकिन वह यह जान भी नहीं सकेगा कि वह अपनी मौत के मुंह में कदम रख रहा है। उसका पहला कदम ही मौत का कदम साबित होगा। यहां कदम रखते ही उसे समाप्त कर दिया जाएगा।"

"बेवकूफ हो तुम।" कर्नल ने कहा तो उस आदमी ने चौंककर कर्नल की ओर देखा।

"मैं कुछ समझा नहीं कर्नल।"

"तुम बेवकूफ हो-यह बात तुम्हारी समझ में आएगी भी नहीं।"

"लेकिन कर्नल...।"

"यदि अपने मुल्क की धरती पर कदम रखते ही उसे मार डाला तो इसका मतलब होगा हमारे जाल को हम अपने ही हाथों से काट डालेंगे।"

उस व्यक्ति के चेहरे पर उलझनपूर्ण भाव नजर आए।

"हम उसे मारेंगे नहीं बल्कि उसे इस बात का अहसास तक नहीं होने देंगे कि उसका भेद खुल चुका है। बल्कि वह जो चाहता है, उसे लगेगा जैसे वह अपने काम में सफल हो रहा है। जबकि उसे करने देंगे। उसकी प्रत्येक गतिविधि पर हमारी नजर होगी।"

"लेकिन कर्नल...ऐसा तो उसे तब लगेगा जब वह हमारे शिविरों को तबाह करेगा।"

"यही तो हम चाहते हैं।"

"जी।"

"हमारे प्रशिक्षण शिविर तबाह होंगे तभी तो उसे और उसके आकाओं को लगेगा कि वे अपने मिशन में कामयाब हो रहे हैं।"

"इसका मतलब हम अपने शिविरों को तबाह हो जाने देंगे?"

"ऑफकोर्स।"

"फिर तो वे लोग अपने मिशन में कामयाब हो ही जाएंगे कर्नल और उसकी इस सफलता में हमारा पूरा सहयोग होगा। इस तरह तो जीत को हम थाली में परोसकर उनके सामने रख देंगे।"

"और यही जीत उनकी सबसे बड़ी हार होगी।"

"वह जीत हार कैसे होगी कर्नल? हमारे प्रशिक्षण शिविर ही तबाह हो गए तो फिर हमारे पास बचेगा ही क्या?"

कर्नल के होंठों पर अर्थपूर्ण मुस्कराहट उभरी-उसने अपने जाम में बची बाकी मदिरा को एक ही घूंट में समाप्त किया।

"तुम्हारे पास उन प्रशिक्षण शिविरों की जानकारी है, जिन्हें तबाह करने की नीयत से वह आ रहा है?"

"उन शिविरों के बारे में पूरी डिटेल्स यहां पहुंचने ही वाली है। लेकिन हमें यह पता चल चुका है कि वे हमारे जिन प्रशिक्षण शिविरों को तबाह करने का इरादा बना रहे हैं उसके बाद हमें अपनी गतिविधियां चलाना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन हो जाएगा, फिर हम कुछ नहीं कर पाएंगे।"

"बेवकूफ आदमी-तुमने यह नहीं सोचा कि हिंदुस्तानी इंटेलीजेंस का वह आदमी कितना भी तीसमारखां हो-वह अकेला इतना बड़ा कारनामा अंजाम नहीं दे सकता-या दे सकता है?"

"नहीं।" उस व्यक्ति ने कहा-"अकेला तो वह हरगिज कुछ नहीं कर सकेगा।"

"और वह अपने साथ एक पूरी टीम लेकर भी हिंदुस्तान से नहीं आएगा। या तुम्हारा विचार है कि ऐसा होगा?"

"यह तो संभव ही नहीं है कर्नल।"

"तो इसका मतलब है कि उसे इस काम में मदद यहीं से मिलेगी। उसके मददगार यहीं होंगे जो कि उसके स्वागत के लिए यहां आंखें गड़ाए बैठे होंगे।"

"आप ठीक कह रहे हैं कर्नल।"

"और तुम्हारे भेजे में यह बात तब आ रही है, जबकि मैं तुम्हें बता रहा हूं।"

उसके चेहरे पर शर्मिंदगी के भाव उभरे।

"उस समय जबकि हमारी नजर अनिल वर्मा नाम के उस आदमी पर होगी जो कि हिंदुस्तान से हमारे शिविरों को तबाह करने की नीयत से यहां आ रहा है तब हमारी आस्तीनों में छिपे उन सांपों के चेहरे अपने-आप ही उजागर हो जाएंगे और हमारे लिए यह एक बहुत बड़ी कामयाबी होगी।"

"अब तक हमारी नाकामी का कारण भी यही आस्तीन के सांप रहे हैं। उनके कारण ही हमारी सारी योजनाएं लीक होती रही हैं।"

"हिंदुस्तान में तबाही मचाने की हमारी इस बहुत बड़ी योजना का भेद भी ऐसे ही सांपों के कारण खुल सका है। इस तरह न सिर्फ हमारी योजना फेल हो गई, बल्कि हमारे कई आदमी भी इस समय हिंदुस्तान की जेलों में हैं।"

"आपका कहना ठीक है कर्नल।"

"इस तरह उस नाकामी को हम कामयाबी में बदलना चाहते हैं।"

"हम इसमें जरूर कामयाब हो सकते हैं कर्नल।"

"और इस कामयाबी को हासिल करने के लिए जरूरी है कि हम उस हिंदुस्तानी एजेंट को वह सब करने का मौका दें जिसका इरादा लेकर वह हिंदुस्तान से आ रहा है और यह मौका उसे तब तक दिया जाता रहे जब तक कि वह सारे आस्तीन के सांप बेनकाब नहीं हो जाते।"

"लेकिन कर्नल...।" उसके चेहरे पर एक बार फिर उलझनपूर्ण भाव उभरे।

"लेकिन?"

"इस तरह तो वे लोग हमारे सारे प्रशिक्षण शिविरों को तबाह कर सकते हैं।"

"जरूर कर सकते हैं।"

"तो क्या...इसके लिए हम इतनी बड़ी कीमत चुकता कर सकते हैं कर्नल? इस तरह की कामयाबी तो हमारे लिए एक बहुत बड़ी नाकामी साबित होगी इस तरह तो हम जीतकर भी हार जाएंगे।"

"हां-फिलहाल इस विषय में सोचने की कोशिश ही मत करो। कोशिश इस बात की करो कि जल्दी-से-जल्दी उन शिविरों का ब्यौरा हासिल हो सके जिनकी निशानदेही हमारे आदमी उन्हें करा चुके हैं और उन्हें तबाह करने का वे पूरा मंसूबा बना चुके हैं।"

"बेवकूफ हो तुम जो ऐसा सोच रहे हो।"

"लेकिन कर्नल...।"

"तुम्हारे अंदर जरा-सी भी अक्ल होती तो अब तक सारी बात तुम्हारी समझ में आ गई होती। अब भी वह सब तुम्हारी समझ न आ तो जाएगा। लेकिन इसमें वक्त लगेगा।"

"वक्त लगेगा?"

"ठीक है कर्नल।" उसने कहा। लेकिन उसके चेहरे पर उलझनपूर्ण भाव अभी तक मौजूद थे।

कर्नल ने अपने खाली जाम को कुर्सी से ठकठकाया।

उसी घड़ी एक सैनिक रम की बोतल व सोडा लेकर आया और कर्नल का जाम फिर से

तैयार करने के बाद वापस चला गया।

कर्नल ने उस आदमी को ड्रिंक ऑफर करने की औपचारिकता निभाने की कोई कोशिश नहीं की।

उसने अपने जाम से एक चुस्की ली।

"प्रशिक्षण शिविरों की वह डिटेल्स।" उसने कहा- "मुझे तुरंत हासिल कराओ। जब वह सारी डिटेल्स हमारे सामने होंगी तब वह सारी बात तुम्हारी समझ में स्वयं ही आ जाएगी जो कि अभी तक तुम समझ नहीं पा रहे हो। तुम्हें लग रहा है जैसे हम स्वयं अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने की कोशिश कर रहे हैं।"

"यस कर्नल।"

"अब तुम जा सकते हो।"

उसने एक बार फिर अदब के साथ झुककर कर्नल को सलाम किया।

लेकिन उसके अभिवादन का उत्तर देने के बजाय कर्नल अपने जाम से चुस्कियां लेने में व्यस्त हो गया।

□□□

कैप्टन कबीर ठाकुर उस फाइल के पन्नों को देख रहा था- जैसे-जैसे वह उन पन्नों को देखता जा रहा था, उसके चेहरे व आंखों में हैरत के भाव उभर रहे थे।

अंत में उसने फाइल को एक ओर रखा तथा अपने सुपर चीफ के.सी. पाणिकर की ओर देखा।

के.सी. पाणिकर का चेहरा भावहीन था।

"मेरी यह मेडिकल रिपोर्ट।" उसने उत्तेजित स्वर में कहा- "झूठ का पुलिंदा है सर।"

"झूठ का पुलिंदा?"

"सरासर झूठ।"

"झूठ का पुलिंदा कैसे है- क्या तुम्हारा मेडिकल चेकअप नहीं हुआ?"

"मेडिकल चैकअप हुआ था सर।"

"फिर।" उसने कहा- "फिर तुम इसे झूठ का पुलिंदा कैसे कह रहे हो?"

"क्योंकि इस रिपोर्ट के आधार पर तो कहा जा सकता है कि मैं बिस्तर से उठ भी नहीं सकता। जबकि मैं आपके सामने एकदम भला-चंगा बैठा हुआ था। यह सही है कि जिस वक्त मैं मिशन से वापस लौटा था, थोड़ी थकान अवश्य महसूस कर रहा था। लेकिन वह कोई ऐसी बात नहीं थी जिसे गंभीरता से लिया जाता। फिर भी मैंने नियमानुसार अपना मेडिकल चेकअप कराया।"

"हो सकता है डॉक्टर ने तुम्हारे स्वास्थ्य में ऐसा कुछ पाया हो जिसे तुम गंभीर न मान रहे हो। लेकिन डॉक्टर ने उसे गंभीर माना हो।"

"ऐसा हो ही नहीं सकता सर।"

"क्यों नहीं हो सकता?"

"इस रिपोर्ट में कई ऐसे मेडिकल टेस्टों का जिक्र है जो उसने कराए ही नहीं।"

"क्या वाकई ऐसा है?"

"जी हां।"

"लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है?"

"अब यह तो मैं नहीं कह सकता सर-मुझे खुद इस बात पर हैरत हो रही है। लेकिन ऐसा हुआ है।"

"लेकिन डॉक्टर को ऐसा करने की क्या जरूरत थी?"

"उसने ऐसा क्यों किया यह तो वही जान सकता है सर-लेकिन मुझे इसमें किसी साजिश की बू आ रही है।"

"साजिश?"

"मुझे लगता है सर कि यह रिपोर्ट किसी साजिश के तहत तैयार की गई है। यह रिपोर्ट एकदम फर्जी है। मुझे ऐसा कुछ नहीं हुआ है। मेरा स्वास्थ्य एकदम सही है। मैं ऐसी किसी छूत की बीमारी से भी ग्रस्त नहीं हूं कि दूसरों से मेरा मिलना-जुलना बंद कर दिया जाए। मैं किसी दूसरे डॉक्टर से इसकी तस्दीक करा सकता हूं।"

"किसी दूसरे डॉक्टर से तस्दीक कराने की जरूरत नहीं है।" पाणिकर ने कहा- "क्योंकि मैं स्वयं जानता हूं कि यह फर्जी रिपोर्ट है।"

"आप जानते हैं सर?" उसकी आंखों में एक बार फिर हैरत के भाव गहरे हो गए।"

"हां।" उसने कहा- "मैं जानता हूं। मैं यह भी जानता हूं कि यह रिपोर्ट क्यों तैयार की गई है।"

"क्यों तैयार की गई है सर?"

"कोई चाहता है कि तुम्हारी गतिविधियों पर अंकुश लगाया जा सके।"

"कौन चाहता है सर ऐसा?"

"जाहिर है, वह कोई दोस्त नहीं हो सकता। ऐसा चाहने वाला दुश्मन ही होगा।"

"और दुश्मन की इस साजिश में हमारा डॉक्टर भी शामिल है सर?"

"जाहिर है-डॉक्टर के बिना तो इस तरह की रिपोर्ट तैयार की ही नहीं जा सकती।"

"इसका मतलब...।" कैप्टन कबीर ठाकुर की आंखों में क्रूरतापूर्ण भाव पैदा हुए- "वह डॉक्टर गद्दार है-देशद्रोही है।"

"नहीं।" पाणिकर ने हाथ उठाकर उसका विरोध किया- "इतनी जल्दी नहीं। गद्दारी और देशद्रोह बहुत गंभीर आरोप हैं और किसी आदमी पर इस तरह के आरोप लगाने से पहले उसके सभी पहलुओं पर गौर करने की जरूरत होती है।"

"इतना बड़ा सबूत होने के बावजूद भी क्या किसी दूसरी बात पर गौर करने की जरूरत है सर?"

"शायद जरूरत हो।"

"लेकिन सर...।"

"फिलहाल इस विषय पर हम बात नहीं कर रहे। क्योंकि हमारे पास दूसरे इससे अहम विषय हैं।"

"क्या आप पहले नहीं जानते थे सर कि यह रिपोर्ट फर्जी है?"

"मैं तभी जानता था जबकि यह रिपोर्ट तैयार की जा रही थी।"

"और इसके बावजूद भी आपने वही किया जो कि दुश्मन चाहता था।"

"क्या किया मैंने?"

"आपने वह मिशन एक दूसरे आदमी को सौंप दिया जो कि मेरे हवाले किया जाना था। मुझे अनिल वर्मा की योग्यता और बहादुरी पर शक नहीं है सर-लेकिन यह आप भी जानते हैं सर कि उस आदमी को इतना महत्वपूर्ण मिशन सौंपा जाना उतना बेहतर नहीं हो सकता। आपके इस फैसले पर सभी भौंचक्के हैं।"

उत्तर में वह मुस्कराया।

कुछ पल तक दोनों के मध्य मौन छाया रहा। कैप्टन कबीर ठाकुर की आंखों में प्रश्नसूचक भाव उभर रहे थे।

"तुमने बचपन में आंख-मिचौली का खेल तो जरूर खेला होगा कैप्टन?"

"जी?" उसने उलझनपूर्ण नेत्रों से उसकी ओर देखा। यह सवाल उसे बड़ा अटपटा लगा।

"आंख-मिचौली-आंख-मिचौली नहीं जानते?"

"जी-जानता हूं।"

"संयोग से हमारा पेशा भी कुछ ऐसा ही है कि हमें कदम-कदम पर आंख-मिचौली का ही खेल खेलना होता है। यूं समझो कि यह लुका-छिपी का खेल ही चल रहा है।"

"लुका-छिपी के खेल की विशेषता यही होती है कि विरोधी पक्ष की आंखों में धूल झोंकी जा सके। एक पक्ष दूसरे पक्ष को उस जगह तलाश करता है जहां कि वह छिपा होता है और छिपने वाले की कोशिश होती है कि उसका विपक्षी उसकी तलाश में वहां भटकता रहे जहां वह होता ही नहीं।"

"समझ लो दुश्मन भी कुछ ऐसा ही इरादा रखता है। वह हमें इधर-उधर भटकाना चाहता है जहां से हमें कुछ हासिल होने वाला नहीं है।"

"लेकिन हमारी कोशिश यह है कि हम उसके भटकाने से नहीं भटके। हमारी यह भी कोशिश है कि दुश्मन यह समझता रहे कि हम उसकी चाल में फंस गए हैं।"

"आई सी।"

"अनिल वर्मा को उस मिशन पर भेजने का भी हमारा यही मकसद है कि दुश्मन समझे कि सब कुछ वैसा ही हो रहा है, जैसा कि वह चाहता है।"

"इसका मतलब अनिल वर्मा का केवल प्रचार किया जाएगा, उसे भेजा नहीं जाएगा?"

"तुम्हारी दोनों ही बातें गलत हैं कैप्टन ठाकुर।"

"गलत?"

"हां कैप्टन वर्मा मिशन पर जा भी रहा है और इसका प्रचार करना भी जरूरी नहीं है। इसकी जानकारी दुश्मन को स्वयं लग जाएगी। बल्कि लग भी चुकी होगी।"

"इस मामले को इतना गोपनीय रखा गया है सर-गिनती के ही हमारे चंद वह अधिकारी हैं जो इस विषय में जानकारी रखते हैं। उनके बीच से हमारी किसी जानकारी का लीक होना तो संभव ही नहीं है।"

"लग भी चुकी होगी?"

"शायद।"

"लेकिन यह कैसे हो सकता है सर?"

"क्यों नहीं हो सकता?"

"लेकिन हमारी बहुत सारी गुप्त सूचनाएं लीक हुई है कैप्टन-वे सारी इतनी ही गोपनीय

रखी गई हैं। इसके बावजूद भी सूचनाएं लीक होती हैं।"

कैप्टन ठाकुर की आंखों में उलझनपूर्ण भाव उभरे- "यह कैसे संभव होता है सर?"

"सोचो।" उसने कहा- "सोचो यह कैसे हो सकता है?"

"इसका एक ही कारण हो सकता है सर।"

"क्या?"

"हमारी थाली में ही कहीं छेद है।"

"तुम ठीक समझ रहे हो कैप्टन-हमारी अपनी मशीनरी में ही कहीं कोई गड़बड़ है। उस मशीनरी में गड़बड़ है जिसे अति संवेदनशील माना जाता है-अति गोपनीय माना जाता है। उसका कोई-न-कोई तार दुश्मन से जुड़ा हुआ है।"

"यह तो बहुत ही गंभीर मामला है सर-इसके लिए कुछ न किया गया तो भारी गड़बड़ हो सकती है।"

"हां-गड़बड़ तो हो सकती है लेकिन फिलहाल हमारे लिए उस मिशन के बारे में सोचना ज्यादा जरूरी है।"

"मुझे तो उस मिशन की सफलता पर अब संदेह हो रहा है सर।"

"संदेह?"

"यस सर।"

"क्यों?"

"क्योंकि दुश्मन हमारी चाल को पहले ही जान गया होगा। हमें पहले इस बात का पता लगाना चाहिए कि क्या दुश्मन के पास हमारे इस मिशन की कोई जानकारी है? तभी हमें अपनी अगली रणनीति तय करनी चाहिए।"

"हमें कुछ करने की जरूरत नहीं है।"

"जी?"

"सब कुछ ऐसे ही चलता रहेगा जैसी कि हमारी योजना है। उसमे कोई तब्दीली नहीं की जाएगी।"

"लेकिन सर...।"

उसके होंठों पर अर्थपूर्ण मुस्कराहट उभरी।

"मेरे एक सवाल का जवाब सोचकर दो कैप्टन।"

"जी।"

"हाल ही में हमने दुश्मन की एक बहुत खतरनाक साजिश का पर्दाफाश किया है-उसके कुछ आदमियों को पकड़ा है-भारी मात्रा में विस्फोटक बरामद किए हैं। जानते हो हमारी इस कामयाबी का राज क्या है ?"

उसके चेहरे पर उलझनपूर्ण भाव उभरे-वह तुरंत इसका कोई उत्तर नहीं दे सका।

"नहीं समझे?"

"जी वो...वो इसके बहुत सारे कारण हो सकते हैं।"

"लेकिन एक कारण ऐसा है जिसके ऊपर हमारी कामयाबी का पूरा दारोमदार था। हमने इसमें जरा भी लापरवाही की होती तो शायद हमें इतनी बड़ी कामयाबी न मिली होती।"

“वो क्या कारण था सर?”

“वो कारण था कि हमारे उस मिशन की कोई भी मामूली-से-मामूली सूचना लीक नहीं हो सकी थी और यह इसलिए संभव हो सका कि उस पूरे प्लान के बारे में या तो मैं जानता था या फिर तुम-कोई तीसरा नहीं।”

कैप्टन कबीर ठाकुर की आंखें सोचपूर्ण अंदाज में सिकुड़ गईं।

अपने चीफ की बात उसकी समझ में आ रही थी। लेकिन इसके बावजूद भी कई सवाल उसके जेहन में उठ रहे थे जिनका जवाब उसे नहीं मिल पा रहा था।

सबसे पहला सवाल उसके जेहन में डॉक्टर को लेकर ही उठ रहा था। जिस तरह से उसकी मेडिकल रिपोर्ट तैयार की गई थी-वह उसकी गद्दारी का सबूत था। लेकिन इसके बावजूद भी उसके चीफ का रुख उसके प्रति वैसा नहीं था।

दूसरा अहम सवाल उन प्रशिक्षण शिविरों को लेकर था जिनके बारे में उसका अब भी यही कहना था कि दुश्मन के प्रशिक्षण शिविरों को तबाह करने का उसका अब भी वही इरादा था जो कि उसने उस बैठक में जाहिर किया था जिसकी गोपनीयता पर संदेह था।

जबकि दुश्मन को किसी दूसरे तरीके से गुमराह किया जा सकता था और फिर आसानी के साथ अपने मिशन में कामयाबी हासिल की जा सकती थी।

इस तरह तो दुश्मन पूरी तरह चौकन्ना हो चुका होगा।

उसके चीफ ने वैसा क्यों किया?

लेकिन उसने ऐसा नहीं किया।

“क्यों?”

सबसे महत्वपूर्ण सवाल उस देशद्रोही गद्दार को लेकर था जो

उसके महकमे की नाक के नीचे बैठा हुआ था-कौन था वह?

इससे भी अहम बात तो यह थी कि उसका चीफ इसके प्रति उतना गंभीर नजर नहीं आ रहा था।

इसका मतलब था कि वह उस गद्दार की पहचान कर चुका था।

वैसे तो यह बात उसकी ट्रेनिंग के समय ही उसके दिमाग में बैठा दी गई थी कि वह जिस पेशे में है, उसमें अपने साए पर भी विश्वास नहीं किया जा सकता।

लेकिन अब से पहले वह उन लोगों में से किसी के प्रति ऐसा सोच भी नहीं सकता था जो उस बैठक में मौजूद थे।

लेकिन अब ऐसा नहीं था।

अब उसकी धारणा बदल चुकी थी।

उस घड़ी वे सभी अधिकारी उसके शक के दायरे में आ चुके थे।

लेकिन इसके बारे में सोचना उसके लिए जरूरी नहीं था।

क्योंकि चीफ से होने वाली इस बातचीत का मतलब था कि उसे कोई ऐसी जिम्मेदारी सौंपी जाने वाली है जिसके बारे में उसने अभी तक सोचा भी नहीं था।

बैठक में उसे जो कुछ बताया गया था वैसा कुछ भी होने नहीं जा रहा था।

“क्या सोच रहे हो कैप्टन?”

“जी वो...वो...।”

"खैर-फिलहाल तुम्हें कुछ भी सोचने की जरूरत नहीं है। मैं समझ सकता हूं कि इस समय तुम्हारे जेहन में क्या सवाल उठ रहे होंगे।"

"लेकिन इनका जवाब तुम इस समय नहीं खोज सकते। वक्त के साथ इन सवालों का जवाब तुम्हें स्वयं ही मिल जाएगा।"

"जी।"

"फिलहाल तो तुम्हें छुट्टियां बिताने के बारे में सोचना चाहिए।"

"तुम्हें पहले भी बताया था। इसका इंतजाम महकमे की ओर से किया जा चुका है।"

"तुम स्वास्थ्य लाभ करने जा रहे हो न।"

उसने कहा- "जी...गुड़िया?"

एक बार फिर वह उलझकर रह गया।

उसका विचार था कि यह केवल प्रचारित ही किया जाना था।

लेकिन हकीकत में उसे छुट्टियों पर नहीं भेजा जाना था।

"तुम्हें कल ही अपनी छुट्टियां बिताने के लिए रवाना हो जाना है।" चीफ ने कहा- "और तुम्हारी यह छुट्टियां काफी लम्बी होंगी।"

"लेकिन सर...।"

चीफ के होठों पर अर्थपूर्ण मुस्कराहट उभरी ।

"यह रहा तुम्हारा हवाई टिकट। तुम जिस विमान से यात्रा करोगे वह कल दोपहर को उड़ान भर रहा है। इस बीच तुम्हें अपनी लम्बी यात्रा की तैयारी मुकम्मल कर लेनी है। वहां तुम्हारे ठहरने की व्यवस्था कर दी गई है।"

इस तरह उसकी यात्रा का कार्यक्रम पक्का हो चुका था और इस विषय में किसी प्रकार का कोई सवाल करने की गुंजाइश उसे नजर नहीं आ रही थी।

"लेकिन।" उसने कहा- "इस तैयारी के साथ ही एक काम और भी है जो तुम्हें मुकम्मल करना है।"

"कौन-सा काम?"

चीफ ने अपने सामने रखी एक फाइल उसकी ओर खिसका दी।

"इस फाइल का पूरा अध्ययन कर लेना है। संभव है इसके बाद तुम्हें कई उन सवालों का जवाब स्वयं ही मिल जाए जो तुम्हारे जेहन में अब उठ रहे हैं।"

"यस सर।"

"अब तुम्हारे पास वक्त ज्यादा नहीं है। इसलिए तुम जा सकते हो।"

कैप्टन कबीर ठाकुर उसी घड़ी अपनी सीट छोड़कर उठ गया।

डॉक्टर यशवीर चावला ने अपना उदास चेहरा उठाकर उस आहट की ओर देखा। वह उसकी बीवी रानी चावला थी जो चाय की ट्रे लिये उसके सामने खड़ी थी जिसका अहसास उसे तब हुआ था जबकि वह उसके बिल्कुल करीब पहुंच गई थी।

उसने चाय की ट्रे मेज पर रखी। डॉक्टर चावला ने देखा कि रानी चावला ने समाचार-पत्र को एक और रखा तथा प्यालों में चाय बनाने लगी।

रानी चावला के चेहरे पर भी गहरी उदासी थी।

उस दिन का समाचार पत्र भी ट्रे में रखा हुआ था।

डॉक्टर चावला ने समाचार-पत्र उठा लिया।

समाचार-पत्र की पहली सुर्खी, जिस पर डॉक्टर चावला की नजर पड़ी, एक आतंकवादी वारदात से संबंधित थी। उस समाचार में आतंकवादियों द्वारा कई लोगों के साथ एक छः-सात वर्ष के मासूम बच्चे का भी बेरहमी से कत्ल किया गया था।

डॉक्टर चावला के चेहरे पर उदासी और गहरी हो गई।

रानी ने चाय का एक प्याला उसकी ओर खिसका दिया।

डॉक्टर चावला ने समाचार-पत्र इस तरह एक ओर रखा जैसे बाकी के समाचारों में उसकी कोई रुचि ही न हो।

फिर उसने अपना प्याला उठाकर एक चुस्की ली। लेकिन उसका मन कहीं और था।

"समाचार-पत्र देख लिया?" रानी ने उदास स्वर में उसस सवाल किया।

"तुम्हारे इस सवाल करने से लगता है कि तुम इसे पहले ही देख चुकी हो।"

"मैं भी केवल उतना ही देख सकी हूं जितना आपने देखा है। बाकी समाचार देखने में शायद आपकी भी कोई रुचि नहीं है।" उसने कहा।

"तुम उस आतंकवादी वारदात के बारे में कह रही हो न?"

"मैं केवल उस मासूम बच्चे के बारे में सोच रही हूं जिसका कत्ल उन लोगों ने बेरहमी के साथ किया है।"

"क्यों?" डॉक्टर चावला ने कहा- "केवल उस बच्चे के बारे में ही क्यों सोच रही हो? कई और निर्दोष लोग भी तो उनकी शैतानियत का शिकार हुए हैं।"

"आप स्वयं जानते हैं, फिर भी यह सवाल क्यों कर रहे हैं?"

"क्योंकि तुम उस बच्चे के बारे में भी नहीं सोच रहीं।"

रानी ने प्रश्नसूचक नेत्रों से अपने पति की ओर देखा।

"हकीकत तो यह है रानी कि तुम उस मासूम बच्चे के बारे में नहीं बल्कि अपने बेटे के बारे में सोच रही हो।"

रानी चुप रही।

"मैं ठीक कह रहा हूं न?"

उसने इस बार भी जवाब नहीं दिया।

"मेरे एक सवाल का जवाब दो रानी?"

उसने अपना चेहरा उठाकर प्रश्नसूचक नेत्रों से अपने पति डॉक्टर चावला की ओर देखा।

"जिस मासूम बच्चे की दर्दनाक हत्या का जिक्र यहां किया गया है, क्या तुम्हें नहीं लगता कि वह तुम्हारा अपना ही बेटा था?"

ऐसा लगा जैसे वह बड़ी मुश्किल से ही अपनी आंखों में छलक आने वाले आंसुओं को रोक सकी हो। वह कुछ कहना चाहकर भी नहीं कह सकी।

"तुम्हारी यह उदासी।" उसने कहा- "क्या उन लोगों के साथ अन्याय नहीं है जिनका वह बेटा था-वह जिनके बुढ़ापे की लाठी थी-वह जिनके घर का चिराग था।"

"और वह अकेला चिराग नहीं था जो उन शैतानों द्वारा बुझा दिया गया। आए दिन कितने ही चिराग इसी तरह बुझा दिए जाते हैं रानी।"

"ऐसे वातावरण में केवल अपने बेटे के बारे में सोचना क्या उन देशवासियों के साथ

अन्याय नहीं है जो आतंकवाद की इस शैतानियत के शिकार हो रहे हैं और जिनकी हिफाजत के लिए हम जिम्मेदार हैं?"

"लेकिन आप ऐसा क्यों समझ रहे हैं कि मैं अपनी जिम्मेदारी नहीं समझती?"

"मैं ऐसा नहीं सोचता रानी-तुम्हारे बारे में ऐसा सोच ही नहीं सकता।"

"फिर क्यों कह रहे हैं ऐसा?"

"इसलिए कि हम जिस पेशे में हैं उसमें इस तरह की भावनाएं हमें अपने कर्तव्य से विचलित कर सकती हैं। हमने जिस घड़ी इस पेशे में कदम रखा था यह बात तो उसी समय सोच ली थी कि हमें हर तरह का बलिदान देना पड़ेगा। जब बलिदान देने की बात आएगी तो हम उससे मुंह नहीं मोड़ सकते।"

"और आप समझते हैं कि मैं मुंह मोड़ रही हूं?"

"नहीं-मैं ऐसा नहीं सोचता-मैं तो तुम्हें तुम्हारे कर्तव्य की याद इसलिए दिला रहा हूं कि हमारे सामने यह परीक्षा की घड़ी है। भारत माता बलिदान मांग रही है।" डॉक्टर चावला ने कहा।

"मैं यह भूली नहीं हूं-मुझे सब याद है और इस परीक्षा में मैं आपसे पीछे भी नहीं रहूंगी। यह सही है कि मैं एक मां हूं। लेकिन मैं यह नहीं भूल सकती कि मैं भारत मां की बेटी भी हूं।"

"मुझे तुम पर नाज है रानी-तुम्हारा पति होने पर मुझे घमंड है। मुझे यह भी विश्वास है कि कैसे भी हालात तुम्हें तुम्हारे फर्ज से विचलित नहीं कर सकते। तुम्हारे ऊपर मुझे अपने आप से ज्यादा विश्वास है।"

"लेकिन क्या मुझे अपने बेटे के बारे में सोचने का भी अधिकार नहीं है?"

"क्यों नहीं है-तुम्हें इसका पूरा हक है और तुम क्या समझती हो कि मैं उसके बारे में नहीं सोचता?"

"सोचते हैं तो एक बात बताइए।"

"क्या?"

"अब जबकि उनकी मांग पूरी हो चुकी है जिस कारण उन्होंने हमारे बेटे का अपहरण किया था, उनका वह मकसद पूरा हो चुका है। क्या वे अब हमारे बेटे को लौटा देंगे?"

डॉक्टर चावला ने तुरंत इसका उत्तर नहीं दिया। उसका चेहरा और ज्यादा गंभीर हो गया।

कई पल तक दोनों के मध्य मौन छाया रहा।

चाय के प्याले खाली हो चुके थे।

"आप जवाब क्यों नहीं दे रहे? या फिर आपके पास इसका कोई जवाब है ही नहीं।"

"इसका जवाब तो मेरे पास है लेकिन...।"

"लेकिन क्या?"

"मैं इस बात का फैसला नहीं कर पा रहा कि यह जवाब मैं एक बेटे की मां को दे रहा हूं या भारत की टॉप खुफिया एजेंसी की एक जांबाज अधिकारी को।"

"इससे क्या फर्क पड़ता है?"

"फर्क पड़ता है, तभी तो सोच रहा हूं।"

"क्या फर्क पड़ता है?"

"खुफिया विभाग की एक जिम्मेदार अधिकारी को जवाब देना होता तो मैं कभी का दे चुका होता। लेकिन यदि एक बेटे की मां मुझसे इस बारे में मेरे विचार जानना चाहती है तो इसके लिए उसे अपना दिल बहुत मजबूत करना होगा। मेरे विचार जानने से पहले उसका कलेजा पत्थर का होना चाहिए।"

पल-भर के लिए उसके चेहरे पर पीड़ा के भाव उभरे-लेकिन अगले पल ही उसका चेहरा पत्थर की तरह कठोर होता चला गया।

"मैं उस बेटे की मां जरूर हूं लेकिन ऐसे बेटे की मां हूं जिसका बाप कर्तव्य की राह पर अपना कुछ भी बलिदान करने का जज्बा रखता हो। उसकी मां भारत मां की बेटी है। और वह भारत मां की ओर उठने वाली किसी भी नापाक आंखों में गर्म सलाखें घुसेड़ देने की हिम्मत रखती है। उस मां का कलेजा इतना कमजोर नहीं हो सकता। आप जो कहना चाहते है साफ-साफ कह दीजिए-मैं कुछ भी सुनने की हिम्मत रखती हूं।" डॉक्टर चावला कई पल तक अपनी पत्नी के चेहरे पर नजरें गड़ाए रहा।

"मुझे...मुझे तुम पर गर्व है रानी।"

"आप मेरे सवाल का जवाब दीजिए।"

"यह सही है रानी कि हमने उनकी शर्त मान ली, लेकिन...।"

उसने कहा- "यह तुम भी जानती हो कि वे अपने मकसद में कामयाब नहीं हो सकते।"

"उनकी शर्त मानकर हमने उनके विरुद्ध एक खतरनाक चाल चली है। इस तरह हमने उनके साथ धोखा किया है। मैं यह नहीं कहता कि उन्हें हमारी इस चाल का इतनी आसानी से पता चल सकता है।"

"लेकिन वे ईमानदारी के साथ अपनी शर्त का पालन करेंगे इसकी उम्मीद इसलिए नहीं कर सकते कि अपने हितों के लिए वे भी उसी तरह हमारे साथ धोखा कर सकते हैं जैसा कि अपने कर्तव्य का पालन करने के लिए हमने उनके साथ किया है।"

डॉक्टर चावला की बात सुनकर रानी जरा भी विचलित नजर नहीं आई।

"इसका मतलब ।" उसने बेहद शांत व संतुलित स्वर में कहा- "हमें अपने बेटे की लाश का स्वागत करने के लिए अपने-आपको तैयार रखना चाहिए?"

डॉक्टर चावला अवाक अपनी बीवी की ओर देखता रह गया।

उसे अपनी बीवी की दिलेरी और जांबाजी के विषय में कभी संदेह नहीं रहा। लेकिन वह परीक्षा के ऐसे कठिन दौर से गुजरकर उसमें इस तरह खरी उतरकर दिखा सकती है, इसकी वह कल्पना भी नहीं कर सकता था।

ऐसे वक्त में यदि उसे अपनी उस बहादुर बीवी का साथ न मिला होता तो वह स्वयं भी शायद विचलित हो गया होता। वह बहक गया होता।

लेकिन इस मामले में उसकी बीवी उससे बहुत आगे निकल गई थी।

"तुम सचमुच बहुत महान हो रानी-मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं क जिस देश की नारी इतनी महान होगी उस देश की ओर कोई आंख उठाकर देखने का साहस भी नहीं कर सकता।"

"उस देश की सीमाओं को कोई दुश्मन छूने का भी साहस नहीं कर सकेगा।"

“आपकी ड्यूटी का समय हो रहा है-उठकर तैयारी नहीं करेंगे?” उसने खाली प्यालों की ट्रे उठाते हुए कहा।

डॉक्टर चावला ने एक गहरी सांस ली और वह अपनी कुर्सी छोड़कर उठ गया।

कैप्टन कबीर ठाकुर की आंखें हैरत से फैलती चली गईं। उसे इस बात पर ग्लानि हो रही थी कि उसने डॉक्टर चावला के बारे में कितनी गलत धारणा बना ली थी।

वह उसे गद्दार और देशद्रोही समझ बैठा था-उसने अपनी इस धारणा का प्रदर्शन अपने चीफ के सामने कर भी दिया था।

लेकिन अब सारी स्थिति उसके सामने थी।

सारी स्थिति जानने के बाद वह डॉक्टर दम्पति के प्रति नतमस्तक हो गया था। वह सोच रहा था कि कभी उसे अवसर मिला तो वह डॉक्टर दम्पति के सामने अपनी इस गलतफहमी के विषय में माफी जरूर मांगेगा।

वे दोनों पति-पत्नी तो पहले ही देश की सेवा के लिए अपनी जान तक देने का जज्बा रखते थे लेकिन इस बार तो उन्होंने अपने मात्र बारह वर्ष के मासूम बेटे को भी देश के लिए दांव पर लगा दिया था।

वह उसके बेटे के लिए भी चिंतित हो उठा था।

सारी कहानी अब वह जान चुका था ।

चीफ द्वारा उसे उपलब्ध कराई गई फाइलों में वह फाइल भी मौजूद थी जिसमें डॉक्टर चावला के साथ पेश आए उस हादसे का भी ब्यौरा था।

उस फाइल के अनुसार!

डॉक्टर चावला के बेटे का अपहरण आतंकवादियों द्वारा किया गया था।

यह इस बात का भी सबूत था कि आतंकवादियों की जड़ें कितनी गहराई तक फैली थीं। वरना यह जानकारी किसी आम आदमी को तो क्या, खास आदमियों को भी नहीं थी कि चावला दम्पति के संबंध भारत की एक टॉप इंटेलीजेंस के साथ थे।

उसके बेटे का अपहरण करने के पीछे उनका मकसद उसे दबाव में लेकर वह मेडिकल रिपोर्ट तैयार कराना था जिसके तहत कैप्टन कबीर ठाकुर को जबरदस्ती छुट्टी पर भेजा जा रहा था।

डॉक्टर के बेटे का अपहरण करने के बाद आतंकवादियों ने उससे संपर्क करके अपनी मंशा जाहिर की और डॉक्टर चावला को धमकी दी गई कि उसने यह बात नहीं मानी या इसके बारे में किसी को कुछ बताया तो इसके बदले में उसके बेटे के जिस्म को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर पार्सल द्वारा उसके पास भेज दिया जाएगा।

ऐसी हालत में किसी का भी विवेक डगमगा सकता था। लेकिन डॉक्टर चावला कोई साधारण इंसान नहीं था। उसने उन हालात में भी अपने विवेक पर काबू रखा।

उसने धैर्य न खोते हुए उनसे सोचने के लिए कुछ समय मांगा।

उसे वह समय मिल गया लेकिन यह समय मात्र कुछ घंटों का ही था।

वैसे डॉक्टर चावला को कुछ सोचना तो था ही नहीं-उसे क्या करना था, यह तो उसने उसी समय सोच लिया था जब उसे धमकी दी जा रही थी।

इसके बाद उसने तुरंत बड़ी सावधानी के साथ अपने महकमे के सबसे आला अफसर

के.सी. पाणिकर से संपर्क स्थापित किया।

उसे सारी स्थिति बता दी गई।

हालांकि डॉक्टर चावला जानता था कि उसके ऊपर आतंकवादियों की नजर होगी। उसकी प्रत्येक गतिविधि को नोट किया जा रहा होगा।

वह यह भी जानता था कि उसकी इस तरह की किसी भी कार्यवाही उसके बेटे की जान को खतरा पैदा कर सकती थी।

लेकिन इसके बावजूद भी उसने यह रिस्क लिया।

क्योंकि उस समय एक ही बात उसके दिमाग में थी-वह यह कि उसके लिए उसका फर्ज पहले है, बेटा बाद में।

इस काम में उसकी पत्नी रानी चावला ने उसका पूरा सहयोग किया जो कि स्वयं भी उसी के महकमे से संबंधित थी और उसके पास महकमे की जिम्मेदारी पति से भी बड़ी थी।

डॉक्टर चावला इसी बात को लेकर चिंतित था।

हालांकि वह अपनी पत्नी के बारे में जानता था कि वह अपने कर्तव्य के प्रति कितनी जागरूक थी। लेकिन वह थी तो औरत ही इससे भी बड़ी बात, वह उस बेटे की मां भी थी जिसकी जिंदगी सूली पर टंगी थी।

यह हालात एक मां को विचलित कर सकते थे।

लेकिन उसकी यह आशंका निर्मूल साबित हुई।

रानी चावला ने उसे यही कहा कि इन हालात में उन्हें यह देखना जरूरी है कि उनका कर्तव्य क्या है।

हालांकि ऐसा कहते समय उसकी छाती फटी जा रही होगी।

लेकिन उसने अपने सीने पर पत्थर रख लिया।

इस तरह डॉक्टर दम्पति ने वही किया जो कि उनका फर्ज था।

उनका विचार था कि उनके महकमे की ओर से उन्हें यही निर्देश दिया जाएगा कि वे आतंकवादियों की इस मांग को नामंजूर कर दें।

हालांकि उन्हें इस बात का आश्वासन दिया जाएगा कि उनके बेटे का जीवन हर कीमत पर बचाया जाएगा।

लेकिन वे जानते थे कि मौजूदा हालात में कुछ नहीं किया जा सकेगा।

क्योंकि उसका बेटा उन लोगों के कब्जे में था और जब तक उसका महकमा इसका पता चलाएगा, तब तक तो बहुत कुछ किया जा सकता है।

लेकिन उनके चीफ ने जो निर्देश दिया, वह उनकी आशा के एकदम विपरीत था।

'डॉक्टर चावला-इन हालात में दूसरा कोई चारा नहीं है।'

उसके चीफ ने कहा था- 'तुम उन लोगों से कहो कि तुम वह सब करने के लिए तैयार हो जैसा कि वे चाहते हैं।'

डॉक्टर चावला इस निर्देश पर हक्का-बक्का रह गया था।

'लेकिन सर...।'

'फिलहाल इसमें ज्यादा कुछ सोचने की गुंजाइश नहीं है।'

'यह...यह कैसे हो सकता है सर?'

‘क्या कैसे हो सकता है?’

‘इसका मतलब तो यह होगा कि सारा महकमा उन लोगों के सामने झुक गया।’

‘मैंने कहा न- यह वक्त इस तरह की बातें सोचने का नहीं है। तुम्हारे बेटे की जिंदगी का सवाल है और हमारे सामने फिलहाल अहम मसला तुम्हारे बेटे की जीवन रक्षा करना ही है।’

‘वह तो ठीक है सर लेकिन... ।’

‘अब भी लेकिन?’

‘मेरे बेटे के लिए पूरे राष्ट्र और पूरे महकमे के हितों को तो दांव पर नहीं लगाया जा सकता सर।’

‘वह केवल तुम्हारा बेटा ही नहीं इस राष्ट्र का भावी नागरिक भी है। देश की धरोहर भी है-और देश की धरोहर की हिफाजत करना हमारा फर्ज है।’

‘इसके बावजूद भी देश के हित-महकमे के हित उससे बड़े हैं।’

‘डॉक्टर चावला- यह बहस का वक्त नहीं है। हमारे पास यह सब सोचने का वक्त नहीं है। मौजूदा हालात में तुम यही कर सकते हो कि उन लोगों की मांग मान लो।’

‘अभी तो उन्होंने केवल हमारे एक आदमी की फर्जी मेडिकल रिपोर्ट तैयार करने के लिए कहा है। वे इसके बदले में हमारे उस आदमी की मांग भी कर सकते थे। उन हालात में हम उनकी इस मांग को भी नजरअंदाज नहीं कर सकते थे। इसलिए वही करो जो वे चाहते हैं।’

‘ठीक है सर-मैं उनकी मांग मान लेता हूं। लेकिन इसके बावजूद भी उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता।’

‘क्या भरोसा नहीं किया जा सकता?’

‘इस बात की क्या गारंटी है कि अपना काम निकालने के बाद भी वे मेरे बेटे को सुरक्षित लौटा सकते हैं?’

‘क्यों-क्या उन्होंने इसकी गारंटी नहीं दी?’

‘उन्होंने ऐसा केवल कहा है लेकिन उनकी जुबान पर भरोसा नहीं किया जा सकता।’

‘यह सब बाद की बात है-वैसे भी वे लोग उस फर्जी मेडिकल रिपोर्ट का इसलिए कोई नाजायज लाभ नहीं उठा सकते, क्योंकि यह सारा मामला हमारी जानकारी में आ चुका है। इस तरह तुम्हारे इस कदम से न तो महकमे को कोई नुकसान पहुंच सकता है और न ही कुछ दांव पर लग रहा है।’

‘थोड़ी देर के लिए ही सही-लेकिन वे महकमे के एक जिम्मेदार अधिकारी को झुकाने पर तो मजबूर कर ही रहे हैं। इससे उनका मनोबल तो बढ़ ही रहा है।’

‘एक मासूम की जिंदगी की यह कोई महंगी कीमत नहीं है और उनका यह बढ़ा हुआ मनोबल उनके लिए कितना घातक साबित होगा यह तो वक्त ही बताएगा।’

‘ठीक है सर।’ डॉक्टर चावला ने कहा था और संपर्क समाप्त हो गया था।

यह संपर्क जिस स्पेशल लाइन पर किया गया था। उसके बारे में डॉक्टर चावला का विचार था कि आतंकवादियों की जड़ें कितनी भी गहराई तक क्यों न हों, इसकी भनक तक उन्हें नहीं लग सकती।

और अब वह सारी सच्चाई कैप्टन कबीर ठाकुर के सामने भी आ चुकी थी।

उस डॉक्टर चावला की सच्चाई जिसे उसने देशद्रोही मान लिया था।

लेकिन अब वह उसके मासूम बेटे की जिंदगी के लिए चिंतित हो उठा था।

इस मामले में वह डॉक्टर चावला के विचारों से सहमत ही था कि उन लोगों की जुबान का भरोसा नहीं किया जा सकता था। भरोसे का कोई संकेत भी उन्होंने नहीं दिया था अभी तक। डॉक्टर चावला उनका काम कर चुका था जबकि उन लोगों ने डॉक्टर चावला के बेटे को अभी तक नहीं छोड़ा था।

वह अब भी उनके कब्जे में था।

यह जानने का भी कोई जरिया नहीं था कि वह जिंदा भी था या...।

'क्या उस मासूम बच्चे को उसके हाल पर छोड़ दिया जाएगा?' कैप्टन कबीर ठाकुर ने अपने आपसे प्रश्न किया।

लेकिन ऐसा नहीं हो सकता था।

इस मामले में उसका महकमा शांत नहीं बैठा होगा। वह एक मासूम की जिंदगी को यूं ही दांव पर नहीं लगा सकता। जरूर उसके लिए कुछ-न-कुछ किया जा रहा होगा।

यही सोचकर कैप्टन कबीर ठाकुर ने वह फाइल एक ओर रखी तथा दूसरी फाइलें उठा लीं।

इस तरह उसने एक-एक करके उन सभी फाइलों का अध्ययन किया।

इसके साथ ही उसे उन सारे सवालों का जवाब भी मिल गया जो कि उसके जेहन में उठ रहे थे।

टेलीफोन की घंटी बजते ही डॉक्टर चावला ने अपना चेहरा घुमाकर उसकी ओर देखा।

ऐसा लगता था जैसे वह रिसीवर उठाने में किसी प्रकार की जल्दबाजी में नहीं था।

कुछ देर तक घंटी बजती रही।

अंत में डॉक्टर चावला ने रिसीवर उठाया।

"डॉक्टर चावला स्पीकिंग।" उसने कहा।

"कैसे हो डॉक्टर?" उधर से कहा गया तो डॉक्टर चावला के चेहरे के भावों में अचानक ही परिवर्तन हुआ।

"कौन हैं आप?"

"पहचाना नहीं?" उधर से पूछा गया। जबकि हकीकत यह थी कि डॉक्टर चावला दूसरी ओर से बोलने वाले को तुरंत पहचान गया था।

लेकिन वह एक बार उनसे पुष्टि जरूर करना चाहता था और वह हो चुकी थी।

"नहीं पहचाना?" उसने दोबारा प्रश्न किया।

"पहचान लिया।" डॉक्टर चावला ने कहा- "मैंने तुम्हारा काम कर दिया है।"

"हम जानते हैं डॉक्टर ।" उसने कहा- "आपने हमारा काम कर दिया-उसी का शुक्रिया अदा करने के लिए तो आपको फोन किया है।"

"इसकी जरूरत नहीं है।" डॉक्टर ने रूखे स्वर में कहा।

"जरूरत कैसे नहीं है डॉक्टर? आपने हमारी मदद की है और हम अपने मददगारों का शुक्रिया जरूर अदा करते हैं।"

"मैंने तुम्हारी कोई मदद नहीं की।"

"मदद नहीं की? यह आप क्या कह रहे हैं डॉक्टर? आपकी मदद के कारण ही हम अपने एक बहुत बड़े मिशन में कामयाब हो सके हैं जो कि आपकी मदद के बिना संभव ही नहीं था।"

"मैं नहीं जानता कि तुम्हारा मिशन क्या था-न ही उसकी सफलता में मेरी कोई दिलचस्पी थी। मैंने यह जो कुछ भी किया है, अपने बेटे के लिए किया है।"

"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता डॉक्टर-कारण कुछ भी रहा हो-हमारी मदद तो हो ही गई-वह भी आपके द्वारा। इसीलिए जरूरी था कि आपका शुक्रिया अदा किया जाए।"

"वह तो हो चुका।"

"हमारे लिए और कोई सेवा हो तो बताइए डॉक्टर।"

"तुम सेवा की बात कर रहे हो-अभी तो तुमने अपनी शर्त भी पूरी नहीं की है। जबकि वह तुम्हें अब तक पूरी कर देनी चाहिए थी।"

"शर्त!" उसने अनभिज्ञता जाहिर करते हुए कहा- "क्या हमारे बीच में कोई शर्त भी तय हुई थी डॉक्टर?"

"अब भूल रहे हो?"

"होता है कभी-कभी हम तो समझते हैं कि हमारे बीच में शर्त जैसी कोई बात थी ही नहीं। फिर भी ऐसा है तो आप हमें याद दिलाइए-हम जरूर उस शर्त को पूरा करेंगे।"

"तुमने कहा था कि तुम्हारा काम होते ही मेरे बेटे को मुक्त कर दोगे।"

"ओह!"

"अब तो याद आया?"

"वह कोई शर्त नहीं थी डॉक्टर।"

"शर्त नहीं थी-कहीं तुम मुकर तो नहीं रहे अपनी बात से?"

"हम अपनी बात से कभी मुकरते नहीं डॉक्टर-दरअसल आपको कुछ गलतफहमी हो रही है।"

"कैसी गलतफहमी?"

"ऐसी कोई शर्त हमारे बीच में तय नहीं हुई थी हां, हमने ऐसा वादा जरूर किया था। आप शायद शर्त और वादे में भेद नहीं कर रहे हैं। वैसे हम अपने वादे पर अब भी कायम हैं।"

"लेकिन हमने ऐसा नहीं कहा था कि वह वादा हम तुरंत पूरा करेंगे। हमें अच्छी तरह से याद है। तुरंत कुछ करने की बात हमने नहीं की थी।"

"लेकिन अब तक तुम्हें अपने वादे के अनुसार मेरे बेटे को मुक्त कर देना था। वैसा तुमने अभी तक नहीं किया है।"

"जरूर मुक्त कर देंगे-आपके बेटे को मुक्त कर दिया जाएगा डॉक्टर-आप निश्चिंत रहिए। हम झूठा वादा कभी नहीं करते-वादा करते हैं तो उसे निभाते भी जरूर हैं।"

"फिर कब निभाओगे अपना वादा?"

"इसके लिए आपको थोड़ा इंतजार और करना होगा।"

"इंतजार?"

"हां।"

"यह तो सरासर ज्यादती है तुम लोगों की।"

"ज्यादती?"

"हां-मैं तुम्हारा काम कर चुका-अब भी मेरे बेटे को तुम लोगों ने मुक्त नहीं किया। इसका कोई कारण नहीं हो सकता।"

"कारण तो कोई नहीं डॉक्टर-लेकिन हालात कुछ ऐसे हैं कि आपके लिए थोड़ा इंतजार करना जरूरी है। वैसे आपको बेटे की ओर से चिंता करने की जरूरत नहीं है। वह बिल्कुल सुरक्षित है और मजे में है।"

"हालात को क्या हुआ?"

"हमारे हालात को आप नहीं समझ सकते डॉक्टर आपके लिए बस इतना ही समझ लेना काफी है कि आप थोड़ा इंतजार और करें।"

"कब तक? कब तक कर इंतजार?"

"बस थोड़ा इंतजार और कीजिए डॉक्टर चावला कहते हैं न-इंतजार करने में बड़ा मजा है।"

इन शब्दों के साथ ही फोन पर बोलने वाले की हंसी का स्वर भी डॉक्टर चावला के चेहरे पर भूकम्प के भाव उभरे।

वह उसकी स्थिति का मजाक उड़ा रहा था। उस घड़ी वह आदमी डॉक्टर चावला के सामने होता तो शायद वह उसे चीरकर रख देता। लेकिन उस घड़ी वह मजबूर था।

"ठीक है, मैं इंतजार कर लूंगा-लेकिन।" डॉक्टर चावला ने कहा- "मेरे बेटे से बात कराओ मेरी?"

"क्यों-क्यों करना चाहते हैं उससे बात?"

"ताकि उससे कह सकूं कि वह हिम्मत से काम ले।"

"इसकी जरूरत नहीं है डॉक्टर-तुम्हारा बेटा वैसे ही बहुत हिम्मत रखता है। आखिर तुम्हारा बेटा है। अपनी उम्र के लिहाज से वह बहुत हिम्मत रखता है।"

"फिर भी मेरी बात कराओ उससे मैं उसका हालचाल जानना चाहता हूं।"

"वह एकदम सही-सलामत है। लेकिन तुमसे बात कराना इस घड़ी संभव नहीं हो सकता।"

"क्यों?"

"क्योंकि वह इस घड़ी फोन के करीब नहीं है। वह जहां है, वह जगह यहां से बहुत दूर है। उसे यहां तक लाने में घंटों का समय लगेगा।"

"वह जहां भी है, वहीं से मेरी बात कराओ।"

"कहा न, यह संभव नहीं है। तुम्हें कुछ और कहना है डॉक्टर? मैं फोन बंद कर रहा हूं।"

"ठीक है-मुझे अपना कोई नम्बर दो ताकि वक्त पड़ने पर मैं अपने बेटे के बारे में जानकारी हासिल कर सकूं।"

"मुझे हैरत हो रही है डॉक्टर-हिंदुस्तान की टॉप इंटेलीजेंस का एक जिम्मेदार अधिकारी बच्चों जैसी बात कर रहा है।"

"तुम जानते हो-मेरा बेटा इस समय तुम्हारे कब्जे में है-मैं इस तरह की किसी भी जानकारी का कोई बेजा इस्तेमाल करने की स्थिति में नहीं हूं।"

"खैर-मैं इस बहस में नहीं पड़ना चाहता-जरूरत पड़ने पर हम स्वयं ही आपसे संपर्क कर लेंगे।"

और इन शब्दों के साथ ही उधर से लाइन कट गई। लेकिन रिसीवर अभी तक उसके हाथ में ही था।

तभी किसी ने उसके हाथ से रिसीवर लेकर क्रेडिल पर रख दिया।

उसने चेहरा उठाकर देखा।

वह उसकी बीवी थी-रानी चावला।

एक बार दोनों की नजरें आपस में टकराई। उसके चेहरे से ही रानी ने अनुमान लगा लिया कि यह फोन किसका था और यह भी कि उसके पति के पास देने के लिए कोई अच्छी खबर नहीं थी।

फिर भी उसने पूछा।

"क्या कहा उन लोगों ने?"

"हमारा बेटा ठीक ठाक है। सुरक्षित है।"

"और कुछ नहीं कहा उन्होंने?"

"उसकी रिहाई के लिए हमें अभी और इंतजार करना होगा।"

"ऐसा आपका विश्वास है या उन्होंने कहा है?"

"उन्होंने कहा है ऐसा?"

रानी ने एक गहरी सांस ली। उसके चेहरे पर पीड़ा की गहरी लकीरें साफ-साफ नजर आई।

□□□

कैप्टन कबीर ठाकुर एयरपोर्ट के बाथरूम की ओर बढ़ा।

अंदर पहुंचकर उसका सामना एक दूसरे व्यक्ति से हुआ जो कि कद-काठी में ठीक उसी के जैसा था।

एक बार दोनों की नजरें आपस में टकराई।

फिर ऐसा लगा जैसे दोनों के बीच आंखों-ही-आंखों में कोई बात हुई हो।

उस व्यक्ति के पास भी ठीक वैसा ही ब्रीफकेस था जैसा कि कैप्टन कबीर ठाकुर के पास था।

इसके साथ ही दोनों बराबर-बराबर में बने बाथरूमों में दाखिल हो गए।

उनके अंदर दाखिल होते ही बाथरूम के दरवाजे अंदर से बंद हो गए।

लगभग पांच मिनट बाद ही उस बाथरूम का दरवाजा खुला जिसमें वह व्यक्ति दाखिल हुआ था जो कि कैप्टन कबीर ठाकुर से पहले ही वहां मौजूद था।

लेकिन जैसे कोई जादू हुआ हो।

क्योंकि उस दरवाजे से बाहर आने वाला वह व्यक्ति नहीं बल्कि कैप्टन कबीर ठाकुर था जो कि उस दरवाजे में दाखिल हुआ ही नहीं वह जिसमें दाखिल हुआ था वह दरवाजा अभी तक बंद था।

बाथरूम से बाहर आकर वह लॉबी की ओर बढ़ा।

उस घड़ी उसी फ्लाइट के बारे में एनाउंसमेंट हो रही थी जिससे कैप्टन कबीर ठाकुर को

यात्रा करनी थी।

उस विमान के यात्रियों से कहा जा रहा था कि उसके यात्री विमान में पहुंचकर अपनी-अपनी सीटें संभाल लें।

कैप्टन कबीर ठाकुर रनवे की ओर बढ़ गया ।

□□□

शहर के उस बाहरी इलाके में वह कोई पुरानी और जर्जर इमारत थी। लेकिन उसके ऊपर जो बोर्ड लगा था, वह एकदम नया-नया था।

बोर्ड पर मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा था- 'होटल रौनक'।

उसके नीचे छोटे-छोटे अक्षरों में लिखा था।

'यहां भोजन व ठहरने की बढ़िया व्यवस्था उचित दामों में उपलब्ध है।'

यह बढ़िया व्यवस्था कितनी बढ़िया थी, इस बारे में तो कुछ कहना मुश्किल था, लेकिन इतना जरूर था कि बाहर से आने वाले मध्यम व निम्न-मध्यम आयवर्ग के यात्री इस होटल के ग्राहकों में थे।

यहां ठहरने के लिए व्यवस्था उनकी जेब के अनुसार सस्ती अवश्य थी।

लेकिन इसके बारे में यह चर्चा आम थी कि वैसा खर्च करके यहां सारी जायज व नाजायज सुविधाएं हासिल की जा सकती थीं।

लोगों का तो यहां तक कहना था कि यहां ठहरने वाले यात्रियों को उनकी मांग पर औरतें तक सप्लाई की जाती थीं।

लेकिन यह सुविधा हर एक को हासिल नहीं थी।

ऐसी सुविधा केवल उन्हीं ग्राहकों को उपलब्ध थी जो अक्सर यहां ठहरते थे और उनके ऊपर पूरी तरह से भरोसा किया जा सकता था।

लेकिन यह बात कहां तक सच थी, यह कहना मुश्किल था।

संभव था कि यह महज अफवाहें ही हों जबकि हकीकत में ऐसा कुछ भी न हो।

फिर भी कुछ लोगों का कहना था कि कुछ बदनाम किस्म की औरतों को इस होटल में आते-जाते अक्सर देखा जा सकता था।

कई बार इन शिकायतों के कारण होटल पर पुलिस का छापा भी पड़ चुका था लेकिन पुलिस को हर बार खाली हाथ ही वापस लौटना पड़ा था।

वह कुछ लोगों की चर्चा का विषय जरूर था लेकिन दबी जुबान में। खुलकर उसके बारे में कुछ कहने का साहस किसी में नहीं इसके बारे में भी दबी जुबान से लोगों का कहना था कि यहां जो कुछ होता है, वह सब पुलिस की मिलीभगत से ही होता है।

एक नियमित रकम पुलिस को पहुंच जाती है।

इस तरह के छापे तो महज खानापूर्ति के उद्देश्य से मारे जाते हैं। जिनके बारे में होटल के मालिक को पहले ही आगाह कर दिया जाता है।

उसका मालिक पचास-पचपन की आयु का भारी डील-डौल का जो आदमी था, उसका नाम जयसिंह था।

जयसिंह नाम के इस आदमी का अतीत भी काफी विवादास्पद था। वह अपने जमाने का माना हुआ दादा रहा था। पुलिस की पुरानी फाइलों में उसके आपराधिक जीवन का एक

लम्बा इतिहास था।

लेकिन आजकल वह उस जीवन से रिटायरमेंट लेकर शांतिपूर्ण जिंदगी गुजार रहा था।

उसके बारे में कहा जाता था कि वह अपनी जिंदगी के उन सारे पुराने धंधों से पूरी तरह किनारा कर चुका था।

अब उसकी आमदनी का जरिया महज यह होटल ही था।

उससे उसे इतनी आमदनी जरूर हो जाती थी कि उसे रुपए-पैसे के लिए ज्यादा तंगी नहीं झेलनी होती थी।

लेकिन उसका दादागिरी का वह पुराना रुतबा कहा जाता है कि अब तक कायम था। यही कारण था कि उसके बारे में जो भी चर्चा थी वह सब दबी जुबान से होती थी।

कुछ लोगों का तो यहां तक कहना था कि अपराध जगत से उसका रिटायरमेंट एक ढोंग था-हकीकत तो यह थी कि वह आज भी अपराधों में पूरी तरह से लिप्त था।

और वह अपनी सारी गतिविधियां इसी होटल में बैठा-बैठा चलाता था।

हकीकत जो भी हो।

उन दिनों उसका धंधा मंदा चल रहा था।

यात्रियों का आना-जाना कम था इसलिए उसके होटल के अधिकतर कमरे खाली ही रहते थे।

नीचे हॉल में जहां रेस्टोरेंट था और रेस्टोरेंट के उसके ग्राहकों में स्थानीय लोग भी होते थे, में भी कोई विशेष चहल-पहल नहीं थी।

जबकि शहर के दूसरे रेस्टोरेंट व होटलों की अपेक्षा यहां खाना वगैरह काफी सस्ती दरों पर उपलब्ध था।

चोरी-छिपे यहां बैठकर लोग शराब भी पी सकते थे, जबकि उसके पास इसका लाइसेंस नहीं था।

लेकिन यह सुविधा भी आम नहीं थी। कुछ गिने-चुने नियमित ग्राहक ही थे जो इस सुविधा का लाभ उठा सकते थे।

जैसा कि उस होटल का नाम था-होटल रौनक-रौनक कहीं उसमें नजर नहीं आती थी।

वह दिन के दस बजे का समय था।

उस समय तो रौनक या चहल-पहल दूर-दूर तक नजर नहीं आ रही थी। रेस्टोरेंट के हाल में इक्का-दुक्का लोग ही थे जो चाय पी रहे थे।

काउंटर पर भी जो मरियल-सा आदमी बैठा हुआ था, उसका चेहरा भी होटल की तरह बेरौनक ही नजर आ रहा था।

उसी समय जो व्यक्ति अंदर दाखिल हुआ-वह साधारण वेशभूषा धारण किए हुए था। उसके चेहरे पर घनी दाढ़ी थी और उसे देखकर लगता था जैसे अपनी वेशभूशा की बजाय वह अपनी दाढ़ी के रख-रखाव पर ज्यादा ध्यान देता था।

उसके हाथ में एक ब्रीफकेस था जो बहुत भारी लगता था।

वह सीधा काउंटर की ओर बढ़ा।

काउंटर पर बैठे मरियल-से व्यक्ति ने उसकी ओर कोई खास तवज्जो नहीं दी।

उस समय भी जबकि वह उसके बिल्कुल करीब पहुंच गया-तब भी उसने रूखेपन से

उसकी ओर देखा।

उस व्यक्ति ने अपना ब्रीफकेस बड़ी बेतकल्लुफी के साथ काउंटर पर रखा। लगता था कि उसका यह अंदाजा काउंटर पर बैठे व्यक्ति को जरा भी पसंद नहीं आया।

"क्या चाहिए?" उसने रूखेपन से व नागवारीपूर्ण भाव से प्रश्न किया।

"जयसिंह।" उसने उत्तर दिया। फिर उसने इत्मीनान के साथ अपनी जेब से तम्बाकू की पुड़िया व चूने की डिब्बी निकाली और उसे हथेली पर रखकर रगड़ने लगा।

उसने तम्बाकू रगड़ते-रगड़ते मरियल-से आदमी की ओर देखा।

मरियल-सा व्यक्ति उसकी ओर इस तरह घूर रहा था जैसे वह आदमी न होकर कोई अजूबा हो।

"मेरी जरूरत पूरी करते हुए तुम नजर नहीं आए अभी या तुमने समझा ही नहीं मेरी जरूरत को?"

"समझ गया।"

"क्या?"

"तुम्हारी जरूरत।"

"क्या समझे?"

"मौत।"

"मौत?"

"हां-तुम्हें मौत की ही तो जरूरत है न?"

"मैंने ऐसा तो नहीं कहा।"

"जो कुछ तुमने कहा उसका यही मतलब होता है।"

"यही मतलब कैसे होता है?"

"बॉस के बारे में इस तरह से बात वही आदमी करता है जो किसी कारणवश जिंदगी से तंग आ चुका होता है। और मौत को ही वह एकमात्र रास्ता समझता है।"

"बॉस से तुम्हारा मतलब जयसिंह से है?"

"वही मतलब है मेरा।"

"और वह तुरंत मौत की पुड़िया दे देता है?"

"तुरंत से भी पहले।"

वह व्यक्ति हो-हो करके हंसा। मरियल-से व्यक्ति की आंखों में हैरत के भाव उभरे।

"हंसता है!"

"बोल किधर मिलेगाजयसिंह जिसे तू कहता है कि वह साक्षात मौत है-मुझे उससे मिलना है।"

"ऐसे कैसे मिल सकता है कोई उससे?"

"क्यों-जो मौत की तमन्ना लेकर आएगा उसे भी मिलने में दिक्कत होगी क्या?"

"यही तो बात है।"

"क्या?"

"मौत से मिलने में ही तो देर होती है। उससे बस मिलने की ही तो देर है फिर तुम्हारे मरने में देर नहीं।"

"लेकिन मेरे साथ उल्टा है।"
"क्या उल्टा है?"
"मौत से हर घड़ी मेरी मुलाकात होती है लेकिन मैं मरता नहीं। जबकि दूसरे वे लोग मर जाते हैं जिनकी ओर मेरा इशारा हो जाता है।"
"यानी बहुत बड़ी तोप मानकर आए हो अपने-आपको?"
"जयसिंह का भी मेरे बारे में ऐसा ही मानना है। बोल किधर मिलेगा वह? मेरे पास जाया करने के लिए ज्यादा वक्त नहीं है।"
"ऐसे तो बॉस से नहीं मिल सकते तुम।"
"जैसे मिल सकता हूं वैसा ही कर-मैंने कहा है, मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है।"
"पहले पूछना होगा बॉस से।"
"तो पूछता क्यों नहीं-यहां खड़ा क्यों है अभी तक?"
"तू यहीं ठहर-मैं पूछकर आता हूं।"
"ठीक है।"
"लेकिन...।"
"अब क्या हुआ?"
"अपना नाम बोल।"
"उससे क्या होगा?"
"बॉस को बताना होगा।"
"जोजो।"
"जोजो यह क्या बला है?"
"यह बला मेरा नाम है। मैं वैसे भी एक बला ही हूं। बड़ी खतरनाक बला।" उस व्यक्ति ने कहा लेकिन मरियल-से व्यक्ति पर इसका कोई प्रभाव नहीं हुआ।
"काम बोल।"
"इसकी जरूरत नहीं पड़ेगी।
"जरूरत पड़ेगी-बॉस आने वाले व्यक्ति की पूरी जन्मपत्री जानकर ही उससे मिलते हैं।"
"वह सब कुछ जानता है-तू जाकर उससे सिर्फ मेरा नाम बोल।"
"लेकिन...।"
"तू जाता है या मैं स्वयं चला जाऊं उसके पास?"
"नहीं-नहीं-तू ठहर यहीं पर। मैं अभी आता हूं।" कहकर वह व्यक्ति काउंटर से हटा। फिर पीछे से एक दरवाजा खोलकर अंदर दाखिल हो गया।
जल्दी ही वह वापस लौटा।
"आओ।" उसने कहा।
इस बार उसके लहजे में पहले वाला रूखापन नहीं था।
जोजो नाम का वह व्यक्ति काउंटर का घेरा काटता हुआ उसके पीछे पहुंचा। फिर उसी दरवाजे में दाखिल हो गया जहां से वह मरियल-सा व्यक्ति जाकर बाहर आया था।
उसके जाते ही मरियल-से व्यक्ति ने दरवाजा बंद कर दिया।
□□□

जोजो ने भारी-भरकम जयसिंह के सामने ब्रीफकेस रखा तथा स्वयं भी उसके सामने रखी एक कुर्सी पर आसीन हो गया।

फिर उसने स्वयं ही ब्रीफकेस का लॉक खोला तथा उसका ढक्कन उठाकर जयसिंह की ओर घुमा दिया।

ब्रीफकेस भारतीय करेंसी के नोटों की नई-नकोर गड्डियों से भरा हुआ था।

"गिनकर देख लो जयसिंह-कहीं बाद में कहो कि रकम पूरी नहीं थी।"

"इसकी जरूरत नहीं है-इस मामले में जयसिंह भरोसा करता है और आज तक उसके भरोसे को तोड़ने की किसी ने हिम्मत नहीं की।" कहकर जयसिंह ने स्वयं ही ब्रीफकेस का ढक्कन बंद किया तथा उसे अपने सामने वाली उस विशाल टेबल के कोने में खिसका दिया।

"तुम्हारा दिया हुआ समय तो पूरा हो चुका है।" जयसिंह ने कहा- "अब लड़के का क्या करना है?"

"अभी कुछ दिन तक और तुम्हें लड़के को अपनी निगरानी में रखना होगा।"

"लेकिन तुमने तो कहा था कि...।"

"हां।" हमें याद है, हमने क्या कहा था। लेकिन हालात ऐसे हैं कि अभी कुछ दिन तक उसका तुम्हारी निगरानी में रहना बहुत जरूरी हो गया है।"

"लेकिन...।"

"मैं समझ गया जयसिंह-तुम क्या कहना चाहते हो।"

"क्या समझ गए?"

"आगे तुम जब तक इसकी निगरानी करोगे, इसकी तुम्हें पूरी कीमत दी जाएगी।"

"वह तो ठीक है लेकिन तुम जानते ही हो कि यह कितने बड़े जोखिम का काम है।"

"जोखिम का काम है तभी तो तुम्हें इतनी भारी रकम चुकाई जा रही है।"

"अच्छा एक बात बताओ।"

"क्या?"

"जिस लड़के को सुरक्षित रखने पर तुम लोग इतना रुपया खर्च कर रहे हो उसकी फिरौती की रकम कितनी होगी?"

"तुम्हें पहले भी बताया गया था जयसिंह-यह मामला फिरौती का नहीं है। वैसे तुम्हें इस बात से कोई मतलब नहीं होना चाहिए।"

"मैं कब कह रहा हूं कि मुझे इस बात से कोई मतलब है? मैं तो बस यूं ही पूछ रहा था।"

"तुम्हें यूं ही भी नहीं पूछना चाहिए था।"

"ठीक है-नहीं पूछूँगा-लेकिन लगातार लम्बे समय तक इस लड़के को संभाले रखना मेरे लिए मुश्किल है।"

"लेकिन तुम तो अपने-आपको बहुत बड़ी तोप कहते हो-इतने मामूली-से काम को कह रहे हो कि मुश्किल है।"

"मैं तोप इसीलिए हूं कि हमेशा हालात की नजाकत को देखकर चलता हूं।"

"ठीक है-जल्दी ही इस लड़के की किस्मत का फैसला होने जा रहा है।"

"ठीक भी यही रहेगा।"

"मैं चलता हूं।" उस व्यक्ति ने कहा।

"अरे-ऐसी जल्दी क्या है!" जयसिंह ने कहा- "कुछ खा-पीकर जाना।"

"ऐसी खातिर-तवज्जो वाले आदमी तो तुम लगते नहीं।" उस व्यक्ति ने व्यंग्यात्मक लहजे में कहा और अपनी कुर्सी से उठ गया।

"बैठो न-मैं अभी कुछ मंगवाता हूं।" जयसिंह ने कहा।

लेकिन हकीकत में उसका ऐसा कोई इरादा नजर नहीं आ रहा था।

"फिर कभी मंगवा लेना। इस समय मैं वैसे भी जल्दी में हूं। चलता हूं।"

जयसिंह ने उसे विदा करने की किसी औपचारिकता को निभाने की कोशिश नहीं की।

वह व्यक्ति दरवाजे की ओर बढ़ गया।

□□□

जोजो ने मोबाइल फोन कान से लगाया।

"जो स्पीकिंग।"

फिर उधर से कुछ कहा गया उसके जवाब कहा- "जयसिंह मुंह फाड़ रहा है कमांडर-वो पूछ रहा था कि लड़के को कब तक रखना है? लगता है वह अब ज्यादा दिन तक इस मामले में हमारा सहयोग नहीं कर सकेगा।"

"वो लालची कुत्ता है साला-पैसा मिलेगा तो जिंदगी पर लड़के को अपना बाप बनाकर भी रख सकता है। लेकिन अब इसकी जरूरत नहीं है। हमारा काम पूरा हो चुका है। कल ही उसे मुक्त कर दो।"

"उसे डॉक्टर को सौंप दें कमांडर?"

"बेवकूफ हो तुम।" उधर से कहा गया-मैं उसे जिंदगी से मुक्त करने की बात कर रहा हूं।"

"उसे खत्म कर दिया जाए कमांडर?"

"क्या यह मुझे लिखकर देना होगा?"

"ठीक है कमांडर-उसे खत्म करके उसकी लाश ठिकाने लगा दी जाएगी।"

"उसकी लाश ठिकाने नहीं लगानी है?"

"लाश ठिकाने नहीं लगानी?"

"हां-लाश को हमारी ओर से डॉक्टर को तोहफे के रूप में भेज दो। वह बहुत खुश होगा।"

"ठीक है कमांडर-लेकिन...।"

"लेकिन क्या?"

"ऐसा करना क्या ठीक होगा?"

"गलत क्या होगा?"

"इस तरह डॉक्टर हमारी उस स्कीम का भेद खोल सकता है।"

"नहीं खोल सकता।"

"क्यों?"

"स्कीम का भेद खोलने का मतलब होगा वह अपने आपको गद्दार साबित करेगा और ऐसा वह हरगिज नहीं कर सकता।"

"बेटे की लाश देखकर उसका जमीर जाग सकता है कमांडर।"

"नहीं जाग सकता उसका जमीर-और यदि ऐसा हुआ भी तो अब हमें कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। हम एक निश्चित समय तक कैप्टन कबीर ठाकुर को हरकत में आने से रोकना

चाहते थे, हमारा वह उद्देश्य पूरा हो चुका है।"

"ठीक है कमांडर।"

"जयसिंह को बता देना कि वह आज रात और लड़के की हिफाजत करे और कल उसकी लाश हमें सौंप दे।"

"इसके लिए जयसिंह से कहने की क्या जरूरत है कमांडर-लाश में तो उसे हम ही तब्दील कर देंगे।"

"यह काम जयसिंह को ही करने दो।"

"वह इसके लिए रुपयों की मांग करेगा कमांडर।"

"वह जितने रुपयों की मांग करे, उसे दे दो। अभी वह नहीं जानता कि वह लड़का किस हस्ती के घर का चिराग है। बाद में हम उसे बताएंगे कि उसने हिंदुस्तान की टॉप इंटेलीजेंस के एक आला अफसर के बेटे की हत्या की है तो वह फिर कभी हमारे किसी काम को करने से इनकार नहीं कर सकेगा। बाद में वह हमारे काम आता रहेगा।"

"मैं समझ गया कमांडर।"

"तुम समझते तो हो जोजो, लेकिन देर से समझते हो।"

जोजो खिसियानी हंसी हंसा।

"मैं अभी जयसिंह को बता देता हूं कमांडर।"

"अभी नहीं। यह बात उसे ऐन वक्त पर बतानी है। ताकि उसे कुछ सोचने का मौका ही न मिले और फिर इस बीच तुम्हें इसका इंतजाम भी करना है कि हमारे पास इस बात का कोई-न-कोई सबूत तो हो जिसके आधार पर उसे लड़के का हत्यारा साबित किया जा सके। या इतना भी नहीं कर सकते तुम?"

"वह सब मैं कर लूंगा कमांडर।"

"ठीक है फिर।" उधर से कहा गया और इसके साथ ही दूसरी ओर से लाइन कट गई।

जोजो नाम के उस व्यक्ति की आंखों में शैतानी चमक नजर आई। उसने मोबाइल फोन जेब के हवाले कर लिया।

□□□

वह कोठरी शायद स्टोर के रूप में इस्तेमाल की जाती रही होगी जिसमें प्रकाश बहुत ही कम रहता था।

छोटे आकार की उस कोठरी में एक ही दरवाजा था जो हमेशा बंद रहता था। दरवाज़े के अलावा कोई खिड़की भी नहीं थी।

पूरी कोठरी में मात्र एक रोशनदान था जो बहुत ऊंचाई पर था और उस पर लोहे की जाली लगी हुई थी।

यह रोशनदान न होता तो उसमें किसी आदभी का ज्यादा समय तक ठहरना नामुमकिन ही न होता-वह दम घुटकर ही मर गया होता।

प्रशांत चावला पिछले कई दिनों से इसी कोठरी में कैद था।

शुरू-शुरू में उसे बहुत डर लगा था लेकिन धीरे-धीरे उसका डर दूर हो गया।

उसकी उम्र अभी बहुत कम थी, लेकिन इसके बावजूद भी वह आम बच्चों की अपेक्षा कुछ ज्यादा ही दिलेर था।

लेकिन था तो वह फिर भी बच्चा ही।

अपने भविष्य के बारे में सोचकर वह आतंकित तो होता ही था। इसी कारण उसकी हालत ऐसी हो गई थी जैसे वह महीनों से बीमार रहा हो।

अब तो वह यह भी भूल गया था कि वह कितने दिन से इस कोठरी में कैद था।

क्योंकि कोठरी के वातावरण में इस बात का पता लगाना भी मुश्किल था कि कब दिन होता था और कब रात।

उसे केवल एक बार उस कोठरी से नित्य-क्रियाओं से निबटने के लिए बाहर निकाला जाता था। बाकी समय तो उसे पेशाब आदि भी कोठरी के कोने में बनी एक नाली में करना होता था। गनीमत थी कि वहां पानी मौजूद होता था जिसे वह नाली में डाल देता था-इसके बावजूद भी बदबू से पूरी तरह छुटकारा नहीं मिलता था। उसी समय उसके लिए खाना भी रख दिया जाता था। खाने के लिए एक बार फिर उस कोठरी का दरवाजा खोला जाता था। लेकिन उस बार उसे कोठरी से बाहर निकलने की इजाजत नहीं होती थी।

खाना रखने वाला पहले बर्तन उठाकर ले जाया करता था।

वह नहीं जानता था कि उसे यहां क्यों कैद किया गया है और कब तक इस कैद में रहना होगा।

वह यह भी नहीं जानता था कि यह कोठरी किस जगह पर बनी हुई है। क्योंकि उसे जब यहां लाया गया था, उस समय वह होश में नहीं था।

जब उसे होश आया तो उसने अपने-आपको इसी कोठरी के नंगे फर्श पर पड़ा पाया था और तबसे अब तक इस कोठरी का नंगा फर्श ही जैसे उसका घर बनकर रह गया था।

लेकिन अब उसके सब्र का बांध टूटता जा रहा था उसे अपने मम्मी-पापा की बहुत याद सताती थी।

कई बार उसने इस विषय में उस आदमी से पूछना चाहा जो कि उसके लिए खाना लेकर आता था।

लेकिन शक्ल-सूरत से जल्लाद-सा नजर आने वाला वह आदमी उसके किसी सवाल का जवाब देने की बजाय उसे बेरहमी से डांट देता था।

ऐसा लगता था जैसे उस आदमी के दिल में रहम नाम की कोई चीज थी ही नहीं वरना उस मासूम बच्चे की हालत पर किसी को भी रहम आ सकता था।

लेकिन अब वह लगातार इस कैद से मुक्ति का उपाय सोच रहा था। परंतु उसे मुक्ति का कोई रास्ता नजर ही नहीं आ रहा था।

कोठरी का एकमात्र दरवाजा बाहर से बंद होता था-जिसे खोलने का उसके पास कोई जरिया नहीं था।

लेकिन वह इस कैद से मुक्ति पाने के लिए इस कदर उतावला हो रहा था कि इसके लिए कोई भी कदम उठाने के लिए तैयार हो सकता था।

उसका दिमाग उस घड़ी तेजी से काम कर रहा था।

उस समय उसके लिए खाना लाने का समय हो रहा था-इसका अनुमान वह अपनी भूख को महसूस करके लगा सकता था। खाना आने के कुछ समय पहले ही उसे भूख का अहसास होने लगता था।

उसे जो खाना दिया जाता था वह निहायत ही घटिया किस्म का हुआ करता था। एक-दो दिन तो वह उसे खा भी नहीं सका था।

लेकिन भूख ने उसे वह खाना खाने पर मजबूर कर दिया था।

इस तरह अब तो उसे वह खाना खाने की आदत ही पड़ चुकी थी। खाना उसे मिलता ही तब था, जबकि भूख पूरी तरह से उसे सताने लगती थी।

इसलिए खाना आते ही वह उस पर टूट पड़ता था।

उस समय भी भूख के मारे उसका वही हाल हो रहा था।

लेकिन इसके साथ ही वह उस कैद से अपनी रिहाई के बारे में भी सोच रहा था।

सोचते-सोचते उसकी नजर कोने में पड़े लगभग एक मीटर लंबे लकड़ी के लट्ठे पर पड़ी। दो इंच व्यास का लकड़ी का लट्ठा शायद किसी टूटी हुई कुर्सी की टांग का हिस्सा था।

यह लट्ठा उसी समय किसी जादू के जोर से वहां प्रकट नहीं हो गया था-बल्कि वह तो उससे भी पहले वहां पड़ा हुआ था, जब उसे इस कोठरी में लाकर कैद किया गया था।

लेकिन इसकी ओर उसका ध्यान ही नहीं गया था।

और इस बार उसका ध्यान उसकी ओर गया तो उसकी नजरें लकड़ी के उस लट्ठे पर ठहरकर रह गईं।

कई पल तक वह उसकी ओर देखता रह गया। उस घड़ी फिर उसके दिमाग में एक खतरनाक विचार बिजली की तरह कौंधा।

उसकी आंखों में एक अजीब-सी चमक थी।

पल-भर के लिए उसका चेहरा चमक उठा।

लेकिन अगले पल ही वह अपने दिमाग में उभरे इस खतरनाक विचार से स्वयं ही कांप उठा।

पल-भर के लिए उसके चेहरे व आंखों पर जो चमक उभरी थी वह गायब हो गई।

उसकी जगह उसके चेहरे पर आतंक के भाव उभर आए।

शायद उसके अंदर इतना साहस नहीं था कि अपने जेहन में उभरते उस खतरनाक विचार को अंजाम दे सके।

लकड़ी के उस डंडे की ओर से उसने अपना चेहरा इस तरह घुमा लिया जैसे उसकी ओर देखना भी उसके लिए खतरनाक साबित हो सकता था।

लेकिन ऐसा लगता था जैसे उसके दिमाग में उथल-पुथल मच गई हो।

उसके चेहरे पर कई प्रकार के भाव आकर जा रहे थे।

इस बीच कई बार उसकी आंखों में पहले वाली ही चमक उभरकर बुझती नजर आई।

जैसे वह किसी निर्णय पर पहुंचने की कोशिश कर रहा हो।

लेकिन हर बार निर्णय पर पहुंचकर वापस लौट आता था।

इस तरह काफी समय गुजर गया।

उसके खाने का वक्त भी करीब आ रहा था लेकिन अब उसकी ओर उसका ध्यान ही नहीं था।

थोड़ी देर पहले उसे जिस भूख का अहसास हो रहा था-उसका अब नामोनिशान तक नहीं था।

एक बार फिर वैसी ही चमक उसकी आंखों में उभरी-लेकिन इस बार वह चमक पहले की तरह गायब नहीं हुई।

ऐसा लगा जैसे वह किसी निश्चय के करीब पहुंच गया हो।

फिर उसका पीला पड़ गया चेहरा भी सुर्ख होता चला गया।

ऐसा लगा जैसे वह किसी निर्णय पर पहुंच चुका हो और फिर उसने बेहद सतर्क नेत्रों से एक बार उस कोठरी के चारों ओर नजरें घुमाकर उसका जायजा लिया।

पिछले कई दिन से वह इस कोठरी में मौजूद था लेकिन इस तरह उसका निरीक्षण करने की पहले उसने कोई कोशिश ही नहीं की। करीब ही वे बर्तन रखे थे जिनमें उसका खाना आया था और वे हर समय ही उसके पास रहते थे।

उसे खाना पहुंचाने वाला व्यक्ति दूसरे बर्तनों में उसका खाना लेकर आता था और पहले खाली बर्तनों को वापस ले जाता था।

यह उसका हर दिन का रुटीन था।

ऐसा वह शायद इसलिए करता था ताकि उसे बर्तन उठाने के इंतजार में उसके पास बैठा न रहना पड़े।

फिर उसने लकड़ी के उस डंडे को उठाकर देखा-डंडा काफी वजनी और मजबूत था लेकिन इतना वजनी भी नहीं था कि वह उसे उठा न सके।

वह न केवल उसे उठा सकता था, बल्कि बड़ी सहूलियत के साथ संभाल भी सकता था।

फिर उसने लकड़ी के डंडे को वहीं रख दिया।

इसके बाद वह उठा तथा खाने के बर्तनों को उठाकर सामने वाली दीवार के सहारे रख दिया, जिधर उस कोठरी का एकमात्र दरवाजा था।

इसके बाद वह दोबारा अपनी जगह वापस आ गया तथा उस दीवार के सहारे पीठ लगाकर बैठ गया।

उस घड़ी लकड़ी का वह डंडा उसके इतना करीब था कि वह बैठे-बैठे ही अपना हाथ बढ़ाकर उसे उठा सकता था।

उस घड़ी उसकी आंखों में सोचपूर्ण भाव उभर रहे थे तथा चेहरा किसी चट्टान की तरह कठोर व स्थिर था।

इसका अर्थ था कि वह अपने उस खतरनाक निर्णय पर अटल था और अब उससे डिगने वाला नहीं था।

उसके चेहरे पर आतंक के कोई भाव उस घड़ी मौजूद नहीं थे।

इसका कारण या तो वह इस खतरनाक फैसले के उस खतरनाक परिणाम से आगाह ही नहीं था या फिर परिणाम का खौफ ही उसके दिमाग में नहीं था।

कोठरी के अंदर इतना अंधेरा रहता था कि कुछ देर उसमें रहने के पश्चात तो आंखें उसके अंदर सब कुछ साफ-साफ देखने की अभ्यस्त हो जाती थीं लेकिन बाहर से अंदर आने वाला व्यक्ति तो बहुत देर तक अंधेरा महसूस करता था।

कुछ समय इसी प्रकार गुजर गया।

लेकिन समय बीतने के साथ प्रशांत चावला के इरादों में किसी प्रकार की कमजोरी नजर नहीं आ रही थी।

फिर उसे बाहर से किसी की आहट महसूस हुई।

शायद वही व्यक्ति इधर उसका खाना लेकर आ रहा था जिसका उसे बेचैनी से इंतजार था।

लेकिन आज इस इंतजार का कारण उसकी भूख नहीं बल्कि कोई दूसरा था।

आहट पाते ही वह संभलकर बैठ गया। उसे अपने जिस्म में एक अजीब-सा तनाव महसूस हुआ।

उसकी आंखों में उस बिल्ली जैसी चालाकी नजर आ रही थी

जो अपने शिकार की ताक में बैठी हो।

उसकी नजरें दरवाजे पर ही ठहरी थीं।

फिर दरवाजा धीरे से खुला-पहले एक पैर दरवाजे से अंदर आता उसे नजर आया।

फिर दरवाजा पूरा खुल गया।

अंदर आने वाला वही व्यक्ति था जिसका उसे बेचैनी से इंतजार था। उसके एक हाथ में उसके खाने की ट्रे थी, जबकि दूसरा हाथ खाली था।

“यह ले।” उसने कहा- “तेरा खाना।”

प्रशांत चावला ने कुछ नहीं कहा।

वह व्यक्ति दो कदम आगे बढ़कर उसके करीब पहुंच गया।

लेकिन कोठरी में अंधेरा होने के कारण वह उसके चेहरे के भावों को नहीं देख सका।

यदि वहां पर्याप्त रोशनी होती तो प्रशांत चावला चाहकर भी अपने उन भावों को छिपा नहीं सकता था और वह देखते ही ताड़ गया होता कि उसके इरादे नेक नहीं हैं।

लेकिन वह तो उसे किसी साए की तरह नजर आ रहा था।

खाने की ट्रे उसने प्रशांत चावला के सामने रख दी-फिर इधर-उधर देखा।

“बर्तन कहां रखे हैं?” उसने प्रश्न किया।

उत्तर इस बार भी प्रशांत चावला ने कोई नहीं दिया। लेकिन अपनी उंगली से उस कोने की ओर संकेत कर दिया।

“साला।” उसने कहा- “आज तो बड़ा संभालकर रखा है बर्तनों को लगता है समझदार होता जा रहा है।”

प्रशांत चावला ने इसका भी कोई उत्तर नहीं दिया।

वह व्यक्ति पलटकर उस कोने की ओर बढ़ा जहां बर्तन रखे हुए और ठीक उसी समय प्रशांत चावला का हाथ लकड़ी के उस डंडे की ओर सरकने लगा।

उस व्यक्ति के बर्तनों तक पहुंचने से पहले ही प्रशांत के हाथ में लकड़ी का वह डंडा आ चुका था।

उसी घड़ी वह डंडे समेत सावधानी से उठकर खड़ा हो गया।

फिर वह बिल्ली जैसी चालाकी के साथ ही पंजों के बल पर चलता हुआ उस आदमी के पीछे पहुंचा।

उस डंडे को उसने अपने दोनों हाथों में मजबूती के साथ पकड़ रखा था।

और यहां तक पहुंचने में उसने मामूली-सी भी आहट पैदा नहीं होने दी थी।

वह आदमी उस समय बर्तन उठाने के लिए झुक रहा था।

प्रशांत का चेहरा पत्थर की तरह सख्त हो गया। उसके दोनों हाथ डंडे सहित आसमान की ओर उठ गए।

लेकिन उसकी लाख कोशिश के बावजूद भी उस आदमी को अपने पीछे प्रशांत चावला की झलक मिल चुकी थी।

उसी घड़ी उसने बर्तन उठाने का इरादा छोड़ दिया।

तभी उसने तेजी से सीधा होकर पलटना चाहा लेकिन तब तक देर हो चुकी थी।

शायद वह इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकता था कि हर समय आतंकित-सा रहने वाला वह लड़का ऐसा दुस्साहस भी कर सकता है।

वह अभी तक पूरी तरह सीधा भी नहीं हो पाया था कि प्रशांत चावला ने पूरी शक्ति से वह डंडा उस व्यक्ति की खोपड़ी में दे मारा।

डंडा उसकी खोपड़ी के पिछले हिस्से से इतनी जोर से टकराया कि उसकी आंखों के सामने अंधेरा छा गया।

उसने चीखना चाहा लेकिन आवाज गले से बाहर नहीं निकल सकी। उसने अपने दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ लिया।

लेकिन इसके बावजूद भी वह अपने-आपको संभाल नहीं सका। उसके घुटने मुड़ते चले गए।

और देखते-ही-देखते उसका चेतनाविहीन जिस्म फर्श पर ढेर हो चुका था।

प्रशांत चावला दो कदम पीछे हट गया।

उसकी अपनी आंखें भी फैलकर चौड़ी होती जा रही थीं। ऐसा लगता था जैसे इतना दुस्साहसपूर्ण कारनामा अंजाम देने के बाद अब उसकी हिम्मत जवाब दे रही हो।

□□□

वह व्यक्ति माउथपीस को करीब लाकर बोला- "मेजर अल्ताफ अटैडिंग।" हालांकि वह सैनिक वर्दी पहने हुए नहीं था।

लेकिन उसके हावभाव से ही इस बात की तस्दीक हो रही थी कि वह सेना का कोई उच्चाधिकारी था- "रिपोर्ट दो, ओवर।"

"अनिल वर्मा अभी-अभी एक टैक्सी में सवार हुआ है सर। टैक्सी में सवार होने से पहले उसने जेबी ट्रांसमीटर पर किसी से रखा और जेब से कीमती सिगरेट केस निकालकर एक सिगरेट सुलगाई।"

उस घड़ी उसकी आंखों में उस शिकारी जैसी चमक थी, जिसका शिकार उसके जाल में स्वयं ही आ फंसा हो ।

"संपर्क साधकर बात भी की है, ओवर...।"

"टैक्सी का नम्बर बोलो, ओवर...।"

उसने बता दिया। जिसे मेजर अल्ताफ नाम के उस आदमी ने फौरन अपनी डायरी में नोट किया।

"उसका पीछा कर। वह वहां कहां जाता है, किससे बात करता है इसकी पूरी जानकारी मुझे दो।"

"यस सर।"

"उसके साथ साए की तरह लगे रहो-उसकी हर एक गतिविधि तुम्हारी नज़र में रहनी चाहिए और उसकी पल-पल की खबर मुझे मिलती रहनी चाहिए।"

"ओके सर-मैं उसकी हर एक गतिविधि की जानकारी आपको इस तरह देता रहूंगा कि आपको ऐसा लगेगा जैसा आप उसे अपनी आंखों से देख रहे हों।"

"गुड-लेकिन एक बात का ध्यान रखना होगा तुम्हें।"

"जी।"

"यह हिंदुस्तानी जासूस सुना गया है बहुत ही मक्कार और चालाक किस्म का आदमी है। यदि उसे इस बात का जरा भी अहसास हो गया कि उसके ऊपर नजर रखी जा रही है तो फिर तुम्हारे हाथ कुछ भी नहीं लगेगा।"

"और एक बार वह तुम्हारी नजरों से दूर हुआ नहीं कि फिर कहीं उसकी धूल भी हाथ नहीं लगेगी।"

"आप निश्चिंत रहें सर उसके फरिश्तों को भी पता नहीं चलेगा कि उसके ऊपर नजर रखी जा रही है।"

"ठीक है-ओवर एंड ऑल।" मेजर अल्लाफ न कहा-फिर उसने इत्मीनान के साथ हैडफोन उतारकर हैंगर में रख दिया ।

□□□

कुछ देर के लिए प्रशांत चावला की हिम्मत बिल्कुल जवाब दे चुकी थी लेकिन उस लड़के के अंदर बला की हिम्मत थी कि उसने अपनी हिम्मत के टूटे हुए तारों को फिर से जोड़ लिया क्योंकि उसके विवेक ने पूरी तरह से जवाब नहीं दिया था।

वह सोच सकता था कि ऐसे में उसने हिम्मत से काम नहीं लिया तो हालात उसके लिए बहुत ही खतरनाक साबित हो सकते हैं। उसके सारे किए-धरे पर पानी फिर सकता है और अब तक उसने जो कुछ भी किया है, इसका बदला उसे अपनी जान देकर चुकाना पड़ सकता है।

उसकी इसी सोच ने उसे अपनी हिम्मत बटोरने के लिए प्रेरित किया।

उसने लकड़ी का वह डंडा वहीं कोने में रख दिया।

एक बार फिर उसने उस आदमी की ओर देखा-वह उसी तरह फर्श पर पड़ा हुआ था तथा उसके सिर के पिछले भाग से खून अभी तक बह रहा था।

उसका वार इतना जबरदस्त था कि सिर का पिछला भाग दूर तक खुल गया था और खून के साथ वहां से मांस भी उबल रहा था।

जल्दी हो उसने उस व्यक्ति की ओर से अपनी नजरें घुमा ली।

वह इस बात का अनुमान नहीं लगा सकता था कि वह आदमी मर चुका था या केवल अचेत ही था। उसने दरवाजे से बाहर कदम रखा।

फिर उसने बाहर से दरवाजा बंद किया। दरवाजे में जंजीर वाली पुराने फैशन की सांकल लगी थी-प्रशांत चावला ने सांकल को बंद कर दिया।

इसके बाद उसने इधर-उधर देखा।

दरवाजे के सामने एक गैलरी थी-उस गैलरी में भी प्रकाश बहुत कम मात्रा में था।

वह सावधानी के साथ आगे बढ़ा।

कुछ दूर चलने पर ही वह गैलरी दाहिनी ओर मुड़ गई। प्रशांत चावला भी गैलरी के साथ-साथ ही आगे बढ़ने लगा। इस गैलरी की लम्बाई भी कुछ कदम की ही थी।

उससे आगे गैलरी दाहिनी व बाई दोनों ओर मुड़ी हुई थी।

जबकि ठीक सामने एक सपाट दीवार थी।

प्रशांत चावला पल-भर के लिए रुका।

कुछ आवाजें भी आ रही थीं।

बाईं ओर से गैलरी में प्रकाश भी नजर आ रहा था और उधर से वहीं उसे मसालों के जलने की सुगंध भी आ रही थी। इसका मतलब वहीं कहीं रसोईघर था और उसमें कुछ पकाया जा रहा था।

उधर जाना उसे खतरे से खाली नहीं लगा।

वह दाहिनी ओर ही मुड़ा-इस भाग में वही पहले जैसा नीम अंधेरा था।

वह सावधानीपूर्वक कदम बढ़ाता हुआ उस नीम अंधेरी गलीनुमा गैलरी में ही आगे बढ़ा और जहां वह गैलरी समाप्त हुई वहां वैसा ही दरवाजा था जैसा उस कोठरी में था, जहां से वह अभी निकलकर आया था।

दरवाजे की ओर देखते ही उसका दिल निराशा से भर उठा।

वहां से कहीं भी जाने का कोई रास्ता नहीं था। केवल पीछे की ओर ही जा सकता था लेकिन उधर से तो लोगों के बोलने की आवाजें आ रही थीं।

उधर बढ़ने का मतलब था किसी की नजर में आ जाना।

वह कुछ पल तक खड़ा सोचता रहा।

वह ज्यादा देर भी नहीं लगा सकता था।

उसका दिमाग उस समय बहुत तेजी से काम कर रहा था। तभी यह बात उसके दिमाग में आई कि बाहर से कुंडी लगी होने का मतलब वह कमरा अंदर से खाली होगा। और किसी भी खतरे के समय वह अपने-आपको इस कमरे में छिपा सकता था।

इसी संभावना का पता लगाने के लिए उसने सावधानी के साथ उस कुंडी को खोला।

फिर उसने दरवाजे पर हल्का-सा दबाव बढ़ाया।

लेकिन दरवाजा नहीं खुला-फिर उसने पहले से कुछ ज्यादा ताकत से उसे बाहर की ओर धकेला-लेकिन इस बार भी वह दरवाजा खोलने में नाकाम ही रहा।

उसके चेहरे पर चिंता की लकीरें उभर आईं।

लेकिन तभी उसने देखा कि वह बेकार में ही कोशिश कर रहा था। वह दरवाजा उसकी ओर ही खुलने वाला था जबकि वह विपरीत दिशा में कोशिश कर रहा था।

उसने दरवाजा अपनी ओर खींचा।

इस बार उसकी कोशिश का नतीजा निकला।

उसने दरवाजे से बाहर कदम रखा।

उसी घड़ी उसकी आंखें चमक उठीं।

वह दरवाजा बाहर एक गली में खुलता था।

फिर एक क्षण जाया किए बिना वह दरवाजा पार कर गया।

एक लम्बे समय के पश्चात वातावरण की ताजा हवा उसके जिस्म से स्पर्श हुई।

उसने आसमान की ओर अपना चेहरा उठाया। नीले आसमान में उसे तारे टिमटिमाते नजर आए।

उसी से उसे पता चला कि यह रात्रि का समय था और इस गली में गहरा अंधेरा था।

लेकिन इस अंधेरे में भी उसकी आंखें विशेष रूप से चमक रही थीं।

वह उसकी आजादी की घड़ी थी उसकी जिंदगी को घड़ी थी।

□□□

जयसिंह बहुत ही मक्कार किस्म का आदमी था।

धोखेबाज, बेईमान व क्रूरता उसकी नस-नस में बसी हुई थी पैसे का लालची तो वह इस कंदर था कि उसके लिए कुछ कर सकता था। पैसा हासिल करने के लिए वह किसी सिद्धांत का पालन करना जरूरी नहीं समझता था।

बड़ी रकम को देखकर तो उसकी लार टपकती थी।

उस अपहृत लड़के को अपने पास छिपाकर रखने का काम भी उसने पैसे के लिए ही किया था।

ऐसा उसने यह सोचकर किया था कि अपहृत लड़के से जो रुपया उन लोगों को हासिल होगा उसका हिस्सा उसे घर बैठे ही हासिल हो जाएगा।

जिस काम के लिए उससे बात की गई थी, यह उसके लिए बहुत ही आसान काम था।

केवल उसे कुछ दिन तक अपने यहां छिपाकर ही तो रखना था।

इस विषय में उसने कुछ और जानकारी हासिल करने की कोशिश नहीं की थी लेकिन उन लोगों ने यह बात साफ-साफ कह दी थी कि वह केवल अपने काम से वास्ता रखे। उससे ज्यादा जानने की कोशिश न करे।

जयसिंह ने इसके लिए ज्यादा जिद भी नहीं की।

वास्तव में उसे ज्यादा कुछ जानने की जरूरत भी नहीं थी। उसे केवल उस रुपए से वास्ता था जो कि उसे इस काम के बदले मिलना था।

उन लोगों ने इस विषय में जयसिंह को कुछ नहीं बताया था।

वैसे भी वह जानता था कि इस बार उसका वास्ता बहुत ही खतरनाक लोगों से पड़ रहा था-उनके सामने ज्यादा जिद की भी वह इस काम के लिए मना तो कर सकता था लेकिन एक बार हां करने के बाद उनके साथ हुई किसी भी बात से मुकरने में सक्षम नहीं था। न वह तो उस लड़के के बारे में कुछ जानता था और न ही यह कि उसके नहीं जा सकती थी। वह जानता था कि इन लोगों के सामने उनकी दादागिरी चलने वाली नहीं थी।

वैसे भी उसे किसी बात से मुकरने की जरूरत ही नहीं थी। उसे घर बैठे ही एक मोटी रकम हासिल हो रही थी। लेकिन उसे इतनी भारी रकम मिली थी कि उसे देखकर वह सोचने पर मजबूर हो गया था।

जिस अपहृत बच्चे के रख-रखाव पर वे लोग इतनी मोटी रकम खर्च कर रहे थे उसकी फिरौती में कितनी रकम मिलने वाली थी?

उनकी यह बात उसके गले से नहीं उतर रही थी कि यह अपहरण फिरौती के लिए नहीं किया गया था।

इसका दूसरा कारण भी कोई हो सकता था-यह बात उसकी समझ से बाहर थी।

फिरौती में करोड़ों रुपए मिलने की उम्मीद होती लगी तो उसके लिए इतना खर्च उठाया जा रहा था।

करोड़ों की बात सोचकर तो जयसिंह के मुंह में पानी आ रहा था।

लेकिन वह उन लोगों के साथ गद्दारी करने की बात सोच भी नहीं सकता था।

मगर रकम जबकि इतनी भारी हो।

इतनी बड़ी रकम के लिए तो जान पर भी खेला जा सकता था।

इसके बावजूद भी वह ऐसा कुछ करने का साहस नहीं कर पा रहा था।

वैसे भी यह उसका अनुमान ही था-निश्चित तौर पर बदले में कितनी रकम की मांग की गई है या की जाने वाली है। उसे इस बात की भी सख्त हिदायत दी गई थी कि वह लड़के से भी उसके विषय में किसी प्रकार की जानकारी हासिल करने की कोशिश नहीं करेगा।

और अब, जबकि वे लोग कुछ और दिन के लिए लड़के को उसकी देखरेख में छोड़ना चाहते थे और इसके लिए भी उसे भारी रकम चुकाने को तैयार थे तो उसे पूरा विश्वास हो गया कि मामला निश्चित रूप से करोड़ों का था।

उनके साथ गद्दारी करने की बात तो वह अब भी नहीं सोच पाया था लेकिन तड़के के बारे में सारी जानकारी वह जरूर हासिल करना चाहता था

और इस जानकारी को हासिल करने के लिए वह मरा जा रहा था।

और यह जानकारी उस लड़के द्वारा आसानी से हासिल की जा सकती थी।

लेकिन उसकी ऐसी किसी कोशिश की भनक उन लोगों तक पहुंची तो यह उसके लिए बहुत खतरनाक साबित हो सकता था।

इसके बावजूद भी वह अपनी इस इच्छा को दबा नहीं पा रहा या। भारी कश्मकश के बाद उसने फैसला किया कि वह उस लड़के के बारे में जानकारी उसी से हासिल करने की कोशिश करेगा।

वह उसे इसके लिए आतंकित कर देगा कि उसके साथ हुई बातचीत की जानकारी वह किसी को न दे।

यही सोचकर वह अपनी सीट छोड़कर उठा।

वह जानता था कि उस हिस्से में पर्याप्त रोशनी नहीं थी इसलिए उसने ड्राज से टॉर्च निकालकर हाथ में ले ली।

वह उस कोठरी के सामने पहुंचा।

बाहर से कोठरी में कुंडी लगी थी। जयसिंह ने कुंडी हटाकर दरवाजा खोला तो उसे अंदर कुछ नजर नहीं आया। उसने टॉर्च जलाकर उसका प्रकाश अंदर फेंका।

सामने उसे खाने की प्लेट ज्यों-की-त्यों नजर आई। उसे अभी तक इस्तेमाल ही नहीं किया गया था।

जयसिंह ने अंदर कदम रखा।

वहां उसे किसी की मौजूदगी का अहसास नहीं हुआ।

शायद लड़का दहशत के मारे किसी कोने में दुबका बैठा होगा।

टॉर्च की रोशनी का दायरा कमरे में घूमने लगा।

अंत में टॉर्च की रोशनी एक जगह केंद्रित हो गई। इसके साथ ही उसकी आंखें भी हैरत से

फैलती चली गई।

लड़के की बजाय उसे अपना आदमी वहां पड़ा नजर आया जिसके सिर के करीब ताजा खून फैला हुआ था जो कि अभी तक सूखा नहीं था।

जयसिंह उस व्यक्ति के ऊपर झुक गया।

वह मरा नहीं था लेकिन बेहोश था। लकड़ी का एक डंडा भी उसे करीब पड़ा दिखाई दिया।

वह समझ गया कि उसके सिर में धोखे से उस डंडे का प्रहार किया गया होगा।

और लड़का उस पर प्रहार करने के बाद कोठरी से निकल भाग गया।

इस घटना ने जयसिंह के होश उड़ाकर रख दिए। कई पल तक उसकी समझ में नहीं आया कि यह सब कैसे संभव हो गया।

लेकिन जल्दी ही वह इस मानसिक झटके से उबरा- 'खून ताजा था।' उसने सोचा- 'इसका मतलब इस घटना को घंटे ज्यादा वक्त नहीं गुजरा था।'

फिर वह उस आदमी की चोटों की कोई परवाह किए बिना तेजी से बाहर की ओर लपका।

उसने वहीं से किसी को ऊंचे स्वर में पुकारा।

उसके पुकारने का तुरंत प्रभाव हुआ-एक साथ कई कदमों के दौड़ने की आवाज सुनाई दी।

चार मवाली-से नजर आने वाले आदमी उसके करीब आकर रुके।

"क्या हुआ बॉस?"

"लड़का कहां गया?" जयसिंह ने कहा। उसके स्वर में बौखलाहट साफ-साफ नजर आ रही थी।

"लड़का-लड़का कहां जाएगा बॉस? अभी-अभी तो किशन उसका खाना लेकर आया था। वह अंदर ही होगा।"

"वह अंदर नहीं है-किशन जख्मी होकर बेहोश पड़ा है। वह उसके सिर में डंडा मारकर भाग गया।"

"ऐसा कैसे हो सकता है बॉस-हम उसकी निगरानी कर रहे थे।"

"ऐसा हुआ है उल्लू के पट्ठों-तुम्हारी निगरानी के बावजूद ऐसा हुआ है। लड़का भाग गया और लड़के के भागने का मतलब है मैं तुम सबको गोली से उड़ा दूंगा।"

"कोठरी से निकल भी गया होगा तो भी वह कहीं नहीं जा सकता बॉस, यहीं कहीं छिपा होगा।"

"वह जहां भी छिपा हो-उसे फौरन मेरे सामने पेश करो-तुम्हारी खैरियत इसी में है। लड़का हाथ से निकल गया तो तुम्हारी खाल में भूसा भरवा दूंगा।"

"वह कहीं नहीं जाएगा बॉस-आप निश्चिंत रहें।"

"निश्चिंत तुम्हें अपने आपको करना है उल्लू के पट्ठों! लड़का नहीं मिला तो मेरा कहर तुम्हारे ऊपर ही टूटेगा। तुममें से एक उस किशन के बच्चे को संभालो। देखो वह मर तो नहीं गया?"

"यह सब उसी हरामजादे की लापरवाही का नतीजा है-उसे इसकी सजा तो भुगतनी ही

पड़ेगी। लेकिन पहले उसे जाकर देखो वह मर भी सकता है।"

उनमें से एक कोठरी की ओर लपका, जबकि बाकी तीन आदमी जयसिंह के साथ आगे बढ़े।

उस गैलरी के मुहाने पर वे पहुंचे तो दाहिनी ओर से प्रकाश नजर आया।

सभी के चेहरे उस ओर ही घूम गए।

और इसके साथ ही उन सभी की आंखें हैरत से फैलती चली गईं।

पिछवाड़े वाला दरवाजा खुला हुआ था।

"तुम तो कहते थे उल्लू के पट्ठों-वह भाग नहीं सकता। वह तुम्हारी नजर से बच ही नहीं सकता। फिर उस दरवाजे से क्या तुम्हारा बाप निकला है?"

अब वे समझ गए कि वे जयसिंह के कहर से नहीं बच सकेंगे।

उनके चेहरों पर आतंक के भाव नजर आए।

आतंकित तो वह स्वयं भी था।

बल्कि उसे तो अपने सामने साक्षात मौत नजर आ रही थी।

क्योंकि इस काम के लिए उसने जिन लोगों से पैसा लिया था वे बहुत ही खतरनाक, बहुत ही क्रूर थे।

"उल्लू के पट्ठों-अब खड़े-खड़े मेरा मुंह क्या देख रहे हो-जाकर तलाश करो उसे भगवान से दुआ करो कि वह ज्यादा दूर न निकला हो और तुम्हारी पकड़ में आ जाए।"

वे तीनों पिछवाड़े वाले उस दरवाजे की ओर लपके जो खुला हुआ था।

जयसिंह भी उनके साथ ही उस ओर लपका।

गली सुनसान नजर आ रही थी।

उसी घड़ी उनमें से एक को बहुत दूरी पर कोई साया नजर आया।

"वह रहा।" उसने उत्तेजित स्वर में कहा।

फिर वे तीनों तेजी से उस ओर ही दौड़ पड़े। उनके कदमों की आहट उस सुनसान गली में गूंजने लगी।

जयसिंह वहीं खड़ा हुआ उनकी ओर देख रहा था।

□□□

टैक्सी अनिल वर्मा को लेकर शहर के महंगे व शानदार होटल के गेट में दाखिल हो गई। टैक्सी अभी पार्किंग तक पहुंच भी नहीं पाई थी कि एक मोटरसाइकिल गेट के सामने पहुंची।

गेट के सामने पहुचंकर उसकी गति धीमी हो गई। लेकिन वह गेट की ओर नहीं मुड़ी। जबकि मोटरसाइकिल सवार गेट के अंदर देखता हुआ गेट के सामने से गुजर गया।

सड़क पर कुछ दूरी तक चलने पर ही मोटरसाइकिल एक स्थान पर रुक गई।

मोटरसाइकिल जिस स्थान पर रुकी थी उसके बराबर में एक पब्लिक कॉलबूथ था-मोटरसाइकिल सवार ने मोटरसाइकिल को स्टैंड में खड़ा किया तथा बूथ में दाखिल हो गया।

लेकिन बूथ में दाखिल होकर टेलीफोन इस्तेमाल करने की बजाय उसने अपनी जेब से कोई चीज निकाली।

वह अत्याधुनिक टैक्नीक से बना हुआ जेबी ट्रांसमीटर था। वह उस पर किसी से संपर्क स्थापित करने की कोशिश करने लगा।

यह भी अजीब बात थी कि उसे किसी से संपर्क ही स्थापित करना था तो वह बूथ में दाखिल क्यों हुआ? ऐसा तो वह अपनी मोटरसाइकिल पर बैठा-बैठा ही कर सकता था। लेकिन ऐसा शायद उसने अतिरिक्त सावधानी बरतने की नीयत से किया था।

उसे जल्दी ही ट्रांसमीटर पर संपर्क स्थापित होने का सिग्नल मिला।

और उस समय जबकि वह किसी को अनिल वर्मा के होटल में दाखिल होने की सूचना दे रहा था-ठीक उसी समय ब्रिटिश एयरवेज का एक बोइंग यात्री विमान शहर के अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर लैंड कर रहा था।

विमान से उतरने वाले यात्रियों में एक बेहद शानदार व्यक्तित्व वाला युवक भी था जो शक्ल-सूरत से किसी पश्चिमी मुल्क का नागरिक लगता था।

वह बहुत ही शानदार सूट पहने था-अपनी शानदार वेशभूषा के कारण वह किसी कंपनी का एक्जीक्यूटिव लगता था।

वह विमान की सीढ़ी द्वारा नीचे उतरा।

उसकी चाल में भी एक अजीब-सा आकर्षण था।

रनवे से चलकर वह क्लियरेंस काउंटर पर पहुंचा। वहां की औपचारिकताओं से फारिग होकर जैसे ही वह आगे बढ़ा, एक अधेड़ आयु का विदेशी उसके सामने आ गया।

पल-भर के लिए दोनों की नजरें आपस में टकराई।

अधेड़ उम्र के उस व्यक्ति का व्यक्तित्व भी काफी प्रभावशाली था। उसके सिर के पूरे बाल बर्फ की तरह सफेद थे। और वह सफेद बाल ही जैसे उसके व्यक्तित्व को और अधिक प्रभावशाली बना रहे थे।

लेकिन उसकी आंखों में सतर्कता के भाव थे।

उसने एक बार चौकन्नी नजरों से इधर-उधर देखा। अपने आसपास उसे उस युवक के अलावा कोई नजर नहीं आया।

"लगता है आपको।" अधेड़ आयु वाले व्यक्ति ने युवक से अंग्रेजी में पूछा- "किसी मित्र की तलाश है।"

"आपका अनुमान ठीक हो सकता है लेकिन...।" युवक ने कहा- "वह आप नहीं हैं।"

उस व्यक्ति के होंठों पर मुस्कराहट उभरी।

"आपका अनुमान ठीक नहीं है।"

"कारण?"

"कारण यह कि जिसका कोई मित्र न हो मुझे उससे मित्रता करने में मजा आता है और इस जमीन पर आपको शत्रु बहुत मिलेंगे लेकिन मित्र एक अकेला ही है और वो मैं हूं।"

"ऐसा है?"

"श्योर।"

"लेकिन मैं किसी अजनबी को इस तरह मित्र बनाने में विश्वास नहीं रखता।"

"विश्वास कायम करना मेरा काम है और यह भी कि थोड़ी देर बाद मैं अजनबी भी नहीं रहूंगा।"

"ओह!"

उस व्यक्ति ने अपनी जेब में हाथ डालकर कोई चीज बाहर निकाली- "यह सफेद हाथी।" उसने वह चीज, जो कि प्लास्टिक का बना हुआ मुट्ठी में आ जाने के साइज का एक खिलौना हाथी था जिसे बच्चों के खिलौने के रूप में इस्तेमाल किया जाता था, उसके सामने किया- "इस बात का सबूत है कि मैं अजनबी नहीं।"

युवक की नजरें एक बार फिर उस व्यक्ति की नजरों से मिलीं।

उसके होंठों पर बेहद मोहक मुस्कराहट थी।

फिर युवक ने अपना हाथ उस व्यक्ति की ओर बढ़ाया। उस व्यक्ति ने गर्मजोशी के साथ युवक से हाथ मिलाया।

लेकिन युवक के चेहरे पर अभी तक गर्मजोशी के भाव नजर नहीं आ रहे थे।

"मित्रों के वेश में।" युवक ने कहा- "कभी-कभी दुश्मन भी छिपे होते हैं-आइए।" वह आगे बढ़ गया।

"ठीक कहा आपने।"

उस व्यक्ति ने साथ चलते हुए कहा- "हम-जैसे लोगों का उसूल भी यही होना चाहिए और आपके बारे में मुझे बताया भी यही गया था।"

"क्या?"

"यही कि आप अपने साए पर भी आसानी से विश्वास नहीं करते और यही हमारा उसूल होना भी चाहिए। दोस्त और दुश्मन का पता लगाने के लिए उसे ठोक-बजाकर देख लेना चाहिए।"

युवक ने इसका उत्तर नहीं दिया।

"लेकिन मेरे बारे में तो आपको शक नहीं होना चाहिए-मैं तो अपनी दोस्ती का सबूत भी दे चुका।"

"कई बार सबूत भी झूठे सिद्ध होते हैं।"

"इसके बावजूद भी आप मेरे ऊपर विश्वास कर रहे हैं।"

"मैं आपके ऊपर विश्वास कर रहा हूं, यह आप कैसे कह सकते हैं?"

"आप मेरे साथ-मेरे बगलगीर होकर चल रहे हैं।"

"हालात कभी-कभी ऐसे होते हैं कि विश्वास न करते हुए भी विश्वास करने का प्रदर्शन करना पड़ता है।"

"यानी आप केवल प्रदर्शन कर रहे हैं?"

"ऑफकोर्स।"

"और अंत तक ऐसा ही प्रदर्शन करते रहेंगे?"

"अंत तक नहीं केवल कुछ देर तक।"

"कुछ देर बाद क्या होगा?"

"तब तक मैं आपको ठोक-बजाकर देख लूंगा-उसके बाद हम दोस्त होंगे या फिर दुश्मन।"

"लेकिन ऐसा भी तो हो सकता है कि वह वक्त आए ही नहीं कि आप मुझे ठोक-बजाकर देख सकें।"

युवक के होंठों पर अर्थपूर्ण मुस्कराहट उभरी।

"आपने जवाब नहीं दिया मेरी बात का।"

"मुझे हैरत है कि आपने इस तरह का सवाल कैसे कर दिया?"

"क्यों?"

"आप दुश्मन हों या दोस्त-लेकिन यह बात अवश्य जानते होंगे कि मेरे कार्यक्रम का वक्त जिसे मैं स्वयं निर्धारित करूंगा, उसमें किसी दूसरे के लिए फेरबदल करना उतना आसान नहीं हो सकता।" युवक ने कहा।

उसी घड़ी वे एक गाड़ी के करीब रुके।

विदेशी मॉडल की वह शानदार गाड़ी बहुत ही कीमती लगती थी।

अधेड़ उम्र के व्यक्ति ने आगे बढ़कर गाड़ी का पैसेंजर साइड का दरवाजा खोला।

"आइए।"

युवक इत्मीनान के साथ गाड़ी में सवार हो गया। अधेड़ आदमी ने स्वयं दरवाजा बंद किया-फिर सामने से उसका घेरा काटता हुआ ड्राइविंग साइड में पहुंचा तथा ड्राइविंग सीट पर सवार हो गया।

फिर उसने गाड़ी का इंजन स्टार्ट किया।

एक बार फिर दोनों की नजरें एक दूसरे से मिलीं और गाड़ी आगे बढ़ गई।

□□□

शाम के वक्त पूनम अपने घर पहुंची तो वह बहुत उदास नजर आ रही थी।

घर पहुंचकर उसने अपने लिए चाय बनाई और बैठकर उसकी चुस्कियां लेने लगी।

उदास तो वह दिन-भर रही थी-अपने काम में ठीक से मन भी नहीं लगा पाई थी-सारा दिन वह खोई-खोई रही थी।

लेकिन इस समय तो उसकी उदासी और भी गहरी हो गई थी। कारण उसका अकेलापन।

घर में उसका साथी केवल उसका अकेलापन ही था। कोई ऐसा फिर भी वह काम की व्यस्तता में खोई रहती थी।

कोई भी नहीं था जिससे वह अपने दिल की बातें कर सके। दिन-भर तो उसके लिए यह अकेलापन अजनबी भी नहीं था-वर्षों से वह इस घर में अकेली रहती आई थी।

पहले उसकी मां उसके साथ थी। लेकिन मां का स्वर्गवास होने पर तो वह बिल्कुल अकेली रह गई थी।

वह उसी प्रकार उदास चेहरा लिए अपनी सोचों में डूबी कब तक बैठी रही, इसका उसे अहसास ही नहीं रहा। शाम का धुंधलका रात्रि में तब्दील हो चुका था।

उसका घर भी रात्रि के अंधेरे में डूब चुका था लेकिन उसे बत्ती जलाने का भी ख्याल नहीं आया।

जब उसे ख्याल आया भी तो बत्ती जलाने का मन ही नहीं हुआ।

बैठे-बैठे वह थक गई तो उठकर बत्ती जलाई।

यह उसके खाने का वक्त था जो उसे अपने लिए स्वयं ही बनाना था।

लेकिन खाने का तो उसका मन ही नहीं हो रहा था। वह उठकर अपने बिस्तर तक पहुंची। उसने कोई पत्रिका उठाई तथा बिस्तर पर लेटकर पत्रिका के पृष्ठ उलटने लगी।

खाने का इरादा तो वह पूरी तरह से त्याग चुकी थी।

लेकिन पत्रिका में भी वह अपना मन नहीं लगा सकी। उसके पन्ने पलट-पलटकर भी जब उसकी बेचैनी कम नहीं हुई तो उसने पत्रिका को उठाकर रख दिया।

उसे महसूस हो रहा था जैसे बत्ती की रोशनी उसकी आंखों में चुभ रही हो।

उसने बत्ती बंद कर दी।

उसे लग रहा था जैसे आज की रात उसके लिए बहुत लम्बी हो जाएगी।

यह तो उसका बिस्तर पर पहुंचने का समय ही नहीं था।

उसे अपना खाना बनाने व दूसरे काम निबटाने में बहुत रात गुजर जाती थी और जिस समय वह बिस्तर पर पहुंचती थी तो इतनी थकी होती थी कि बिस्तर पर पहुंचते ही नींद की गोद में समा जाती थी।

इस तरह रात कब गुजर जाती थी, इसका पता ही उसे नहीं चल पाता था।

वही रात आज उसे लग रहा था जैसे वर्षों लम्बी हो जाएगी।

नींद का तो उसकी आंखों में कोसी दूर तक भी कोई पता नहीं था।

वह कमरा पूरी तरह से अंधेरे में डूबा था।

लेकिन उस अंधेरे में भी जो आकृति उसके जेहन में उभर रही थी, वह लगता था जैसे उसे अपनी आंखों के सामने स्पष्ट नजर आ रही थी।

लेकिन हकीकत में इस घड़ी वह आकृति-वह चेहरा उससे बहुत दूर था-हजारों मील दूर। उसकी उदासी का कारण शायद वही चेहरा था।

ताजा फूलों की तरह मुस्कराता हुआ उस युवक का चेहरा ही उसे उदास कर रहा था।

पवन कुमार!

यही नाम था उस खूबसूरत, गोरे-चिट्टे युवक का जिसने उस घड़ी पूनम का चैन, उसकी नींद, उसकी भूख-प्यास सब कुछ छीन लिया था।

और उस समय वही मुस्कराता हुआ चेहरा उसके जेहन में उभर रहा था।

कोई ज्यादा लम्बा वक्त नहीं गुजरा था। कल ही तो वह मिला था पूनम से।

लेकिन कल उसका मिलन एक लम्बी जुदाई का कारण बनेगा, ऐसी जानकारी उसे पहले नहीं थी।

तभी तो वह अपने-आपको इस जुदाई के लिए तैयार नहीं कर पाई थी अभी तक।

कल ही जब उसने पूनम को यह बताया तो वह इस बात का फैसला नहीं कर पाई थी कि यह सूचना उसके लिए खुशी की है या गम की।

कई पल तक वह यूं खड़ी रही थी जैसे उसे काठ मार गया हो।

'पूनम?' पवन कुमार ने ही उसे टोका था तो जैसे उसे होश आया। उसने अपना चेहरा उठाकर पवन कुमार की ओर देखा।

'लगता है यह जानकर तुम्हें खुशी नहीं हुई।'

"ऐसा।' उसने कहा- 'ऐसा कैसे हो सकता है तुम्हारी तरक्की की बात सुनकर मुझे भला खुशी क्यों नहीं होगी?'

'लेकिन वह खुशी तुम्हारे चेहरे से तो कहीं जाहिर नहीं हो रही।'

ऐसा है तो मैं अपना विदेश जाने का इरादा छोड़ दूंगा।'

‘इरादा छोड़ दोगे?’

‘तुम एक बार न करके देखो।’

‘मैं भला न कैसे कर सकती हूं तुम्हारी तरक्की की बात तो मेरे लिए खुशी की बात होगी। मैं इसमें बाधा तो नहीं बन सकती।’

‘लेकिन वह खुशी तुम्हारे चेहरे से तो कहीं जाहिर नहीं हो रही। तुम्हारे चेहरे पर उदासी क्यों है?’

‘यह उदासी तो तुम्हारे बिना रहने के कारण है।’

‘मेरा वश चलता तो तुम्हें साथ लेकर चलता पूनम-लेकिन क्या करूं? यह संभव नहीं और फिर कुछ दिन की ही बात तो है। अभी मुझे केवल तीन महीने के लिए ही भेजा जा रहा है। वैसे संभव यह समय बढ़ा भी दिया जा सकता है। लेकिन इसकी संभावना बहुत कम है। यदि समय बढ़ाया गया तो इसकी सूचना तुम्हें जरूर दे दूंगा।’

‘लेकिन एक बात बताओ पवन।’

‘पूछो।’

‘यह बात तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताई? कल तुम रवाना हो रहे हो और इसके बारे में मुझे जान बता रहे हो। तुम्हारे जाने का फैसला इतनी जल्दी में तो नहीं हुआ होगा।’

‘तुम ठीक कह रही हो पूनम -इसका फैसला तो कई महीने पहले हो चुका था। लेकिन यह भी सही है कि निश्चित रूप से इसका पता मुझे दो दिन पहले ही लगा था और इस बीच मुझे इतना बिजी रहना पड़ा कि तुमसे संपर्क ही नहीं कर सका। आज का समय भी मैंने कैसे निकाला है, यह बस मैं ही जान सकता हूं।’

‘ऐसे महत्वपूर्ण फैसले की जानकारी तुम्हें केवल दो दिन पहले दी गई?’

‘महीनों पहले जब हमारी कंपनी ने तीन महीने की एक विशेष ट्रेनिंग पर एक आदमी को विदेश भेजने का फैसला किया था, उसकी जानकारी तो मुझे उसी समय दे दी गई थी। लेकिन वह मेरा फाइनल चुनाव नहीं था।’

‘फाइनल चुनाव नहीं था?’

‘हां इसके लिए मेरे साथ दो दूसरे आदमियों को भी चुना गया था। इस तरह हम तीनों में से किसी एक का चुनाव किया जाना था।’

‘इस समय मैं पूरी तरह आश्वस्त नहीं था कि पहला नम्बर मेरा ही होगा। मेरा स्वयं का मानना तो यह था कि उन तीनों में मेरा नम्बर तीसरा होगा।’

‘लेकिन हम तीनों से ही कहा गया था कि हम अपनी विदेश यात्रा की तैयारी करें। विदेश यात्रा की सारी औपचारिकताएं भी कंपनी ने स्वयं हम तीनों के लिए पूरी कराई थीं।’

‘हमें केवल इतना बताया गया था कि हमें किसी समय भी यात्रा के लिए रवाना किया जा सकता था। इसलिए मुझे तैयारी तो करनी ही थी।’

‘लेकिन जिस बात के लिए मैं स्वयं आश्वस्त नहीं था-उसके बारे में तुम्हें क्या बताता?’

‘बताने में कोई हर्ज था क्या?’ पूनम ने कहा ।

‘लगता है इस बात से नाराज हो।’

‘नहीं-ऐसी बात नहीं है।’

‘ऐसी ही बात है-मैं इसके लिए तुमसे क्षमा मांग रहा हूं पूनम।’

‘सचमुच ऐसी कोई बात नहीं है-मैं दिल से कह रही हूं।’

‘दिल से कह रही हो तो ठीक है-वरना यह बात मुझे वहां भी सताती रहती कि मैंने तुम्हें नाराज किया। अच्छा अब मैं चलता हूं।’

पूनम ने गरदन को जुम्बिश देकर उसे जाने की इजाजत दी।

‘लेकिन।’ पूनम ने कहा- ‘वहां से मुझे चिट्ठी तो लिखती रहोगे न?’

‘नहीं पूनम।’

‘नहीं?’

‘हां न तो मैं वहां से तुम्हें चिट्ठी लिख सकूँगा और न ही तुम एयरपोर्ट तक मुझे छोड़ने जा सकोगी।’

पूनम की आंखों में प्रश्नसूचक भाव उभरे।

‘ऐसा क्यों?’

‘हमारी कंपनी का यह एक गोपनीय मिशन है तभी तो इसकी जानकारी मुझे ऐन वक्त पर दी गई है।’

‘लेकिन ऐसी गोपनीयता क्यों है?’

‘तुम तो जानती हो पूनम आजकल कम्पीटिशन का युग है। हमारी कंपनी मुझे एक स्पेशल ट्रेनिंग पर इसलिए भेज रही है ताकि एक विदेशी टेक्निक का इस्तेमाल करके हमारी कंपनी अपने उत्पादों की क्वालिटी में सुधार कर सके और उनकी लागत घटा सके, ताकि वह बाजार में अपने उत्पादों को कम दामों पर उपलब्ध करा सके।’

‘और यह सारा मिशन उन कंपनियों से गोपनीय रखना जरूरी है जिनकी हमारी कंपनी के साथ प्रतिस्पर्धा है।’

पूनम के चेहरे पर संतुष्टिपूर्ण भाव नजर आए।

शायद पवन कुमार के तर्कों पर शक करने का कोई कारण ही वह नहीं समझती थी।

उसने जो कुछ कहा-पूनम ने मान लिया ।

इस तरह उसने न सिर्फ उसे खुशी-खुशी विदा किया बल्कि भगवान से उसकी सफलता की भी कामना की।

उस समय पवन ने किस प्रकार आसानी से कह दिया था कि वह मात्र तीन महीने के लिए ही जा रहा था-जैसे यह कोई मामूली-सा वक्त हो।

लेकिन अब पूनम को लग रहा जैसे यह तीन महीने बीतते-बीतते कई युग गुजर जाएंगे।

आज तो पहली ही रात थी।

नींद उसकी आंखों से कोसों दूर थी।

ऐसी कितनी ही रातें उसे आंखों-ही-आंखों में गुजारनी होंगी।

वह पूरी रात उसने इसी तरह करवटें बदलते-बदलते व्यतीत की थी।

□□□

समय का चक्र अपनी गति पर घूमता रहा।

लेकिन पूनम को लग रहा था जैसे समय की गति थम सी गई हो। एक एक दिन उसे पहाड़ की तरह लग रहा था।

इसी तरह कुछ वक्त गुजर गया।

दिन तो फिर भी किसी तरह व्यस्तता में गुजर जाता था, लेकिन रातें तो बहुत लम्बी हो गई थीं।

पहले जबकि उसे लगता था कि रातें बहुत छोटी होती हैं।

दिन भर की थकान के बाद नींद पूरी भी नहीं हो पाती थी कि रात बीत जाती थी लेकिन अब इसके विपरीत हो रहा था।

नींद तो बस थोड़ी-बहुत देर के लिए ही आती थी। बाकी रात तो उसे जागते-जागते ही काटनी होती थी।

वह रात भी ऐसी ही एक रात थी।

उस रात वह कुछ ज्यादा ही बेचैन थी-उसे पवन की बहुत याद आ रही थी।

पवन के बारे में सोचते-सोचते उसके जेहन में उसके अतीत के पन्ने जैसे एक-एक करके पलटते जा रहे थे।

वही पवन कुमार जिसके बिना वह आज जिंदगी की कल्पना भी नहीं कर सकती थी-उसकी ओर पहली नजर उसने नफरत से उठाई थी।

उस समय उसकी नजर में उस युवक के प्रति नफरत-ही-नफरत भरी थी।

पवन कुमार के साथ उसका मिलना एक हादसा ही था।

यूं तो उसका जीवन ही एक हादसा था ।

जिस समय उसने होश संभाला था, उस समय उसके चारों ओर गरीबी और अभावों के सिवा कुछ भी नहीं था।

उसका सहारा केवल एक औरत थी जो उसकी मां थी। न जाने वह किस तरह मेहनत कर-करके अपना और अपनी बेटी का पेट पाल रही थी।

न सिर्फ पेट पाल रही थी, बल्कि उसके स्कूल का भी खर्चा उठा रही थी। शायद उसे यह उम्मीद थी कि पढ़-लिखकर एक दिन उसकी बेटी किसी काबिल हो जाएगी तो शायद उनका भाग्य बदल जाएगा।

इसी आशा के सहारे उसे किस कदर कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी, उसका अहसास उसे बचपन से ही उस समय हो गया था जो कि उसके खेलने और खाने के दिन थे। अपनी पढ़ाई की ओर पूरा ध्यान दे सके। ताकि बड़ी होकर वह अपनी मां को इतना सुख दे सके कि वह इन सारे सुखों को सारे लेकिन इसमें वह कुछ कर भी नहीं सकती थी। सिवा इसके कि अरमानों को भूल जाए।

इसी तरह उसने इंटर तक की पढ़ाई पूरी की।

पढ़ाई में वह हमेशा अच्छे नम्बरों से पास होती थी।

लेकिन अब तक की यात्रा में उसकी मां बहुत थक चुकी थी।

वह अक्सर बीमार रहने लगी थी। उसका स्वास्थ्य इसलिए भी गिरता चला गया कि वह अपने इलाज और दवाइयों पर ध्यान नहीं दे पाती थी।

ध्यान दे भी कैसे सकती थी।

उसके पास इतना पैसा ही कहां था।

बीमारी के कारण वह इतना काम भी नहीं कर पाती थी इसलिए उसकी आमदनी और

भी घट गई थी।

लेकिन पूनम अब इतनी समझदार जरूर हो गई थी कि घर के हालात को उससे छिपाया नहीं जा सकता था।

इसके बावजूद भी मां चाहती थी कि वह अपनी पढ़ाई जारी रखे।

उसके विचार से अब तो केवल कुछ ही दिन की बात थी। पूनम ग्रेजुएशन कर लेगी तो उसे कोई बढ़िया-सी नौकरी मिल सकती थी।

फिर तो उन्हें किसी चीज का आभाव रहेगा ही नहीं। उनके सारे कष्ट स्वयं ही दूर हो जाएंगे।

चाहती तो पूनम भी यही थी।

पढ़ाई तो वह भी नहीं छोड़ना चाहती थी।

लेकिन वह इस सच्चाई से भी इनकार नहीं कर सकती थी कि मां के कंधे अब इस भार को सहन नहीं कर सकते।

घर का खर्चा और उसकी पढ़ाई से ज्यादा जरूरी तो पूनम को मां का इलाज लग रहा था जिसकी ओर मां का जरा भी ध्यान नहीं था।

वह जानती थी कि मां का ठीक से इलाज न किया गया तो उनकी बीमारी गंभीर रूप धारण कर सकती थी।

उसने फैसला किया कि वह अपनी पढ़ाई के साथ-साथ कोई छोटी-मोटी नौकरी भी करेगी।

लेकिन जल्दी ही उसे अहसास हो गया कि यह काम उतना आसान नहीं था। काफी प्रयासों के बावजूद भी उसे कैसी भी नौकरी नहीं मिली।

उसने कुछ बच्चों को ट्यूशन पढ़ाना जारंभ कर दिया। इससे उसे आमदनी होने लगी। इस तरह उसका व मां की दवाइयों का लेकिन मां की बीमारी ठीक होने की बजाय बढ़ती ही चली गई। उसके इलाज का खर्चा बढ़ता गया।

फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी।

खर्च चलने लगा।

एक समय ऐसा आया जबकि उसकी सारी कमाई मां के इलाज पर ही खर्च होने लगी।

मां ने अब पूरी तरह से चारपाई पकड़ ली थी।

कई महीने से उसकी कॉलेज की फीस जमा नहीं हो सकी तो स्कूल से उसका नाम काट दिया गया।

ग्रेजुएशन करने का उसका सपना धरा-का-धरा रह गया। इस पर भी उसने उम्मीद नहीं छोड़ी।

उसने सोचा कि एक बार उसकी मां ठीक हो गई तो वह पढ़ाई फिर से चालू कर देगी।

लेकिन सब कुछ वैसा ही तो नहीं हो सकता था जैसा कि वह चाहती थी।

मां की हालत और भी गंभीर हो गई।

फिर एक दिन ऐसा आया जबकि मां का जीवन बचाने के लिए उसे कुछ महंगी दवाइयों की जरूरत थी, लेकिन उसकी जेब में पैसे नहीं थे।

उस दिन उसकी हिम्मत जवाब देने लगी थी।

लेकिन वह अपनी आंखों के सामने दवाइयों के अभाव में अपनी मां को मरते हुए नहीं देख सकती थी।

तभी उसने अपने जीवन का एक खतरनाक फैसला किया।

उसने वह काम किया जिसके बारे में वह कभी कल्पना भी नहीं कर सकती थी।

चोरी।

उसने चोरी करने का फैसला किया।

और इस काम में किस्मत ने पूरी तरह से उसका साथ दिया।

चोरी जैसा अपराध करने पर उसे अहसास हुआ कि वह कितना आसान काम था।

अपने इस प्रयास से वह न सिर्फ मां के लिए दवाइयां ही खरीद सकी, बल्कि उसकी कई दूसरी जरूरतें भी पूरी हो गईं।

फिर तो इस घटना ने उसके जीवन की धारा को ही बदल दिया।

वह नैतिकता की उन सारी शिक्षाओं को भूल गई जिन्हें वह अब तक पढ़ती भी रही थी और उन पर अमल भी करती रही थी।

अब तो उसके हाथ ऐसा गुरुमंत्र लग चुका था-उसने सोच लिया था कि अब वह अपनी मां को नहीं मरने देगी।

लेकिन यह उसकी बहुत बड़ी भूल थी।

वह नहीं जानती थी कि पाप की इस कमाई से वह मां के लिए केवल दवाइयां खरीद सकती थी जिंदगी नहीं।

और एक दिन वही हुआ !

कोई भी इलाज-कोई भी दवाई उसकी मां को मौत से नहीं बचा सकी और एक दिन मां हमेशा-हमेशा के लिए मौत की गोद में समा गई और वह बेटी को अपनी जिम्मेदारी से मुक्त कर गई।

लेकिन इससे पहले जो चस्का उसे लग चुका था, उससे वह मुक्त नहीं हो सकी।

अचानक ही उसके हाथ एक शानदार जिंदगी जीने का जो गुर हाथ लग चुका था उसे वह छोड़ने का कोई इरादा नहीं रखती थी।

इस कला में वह इतनी पारंगत हो चुकी थी कि रास्ते चलते किसी भी व्यक्ति का पर्स उड़ा देना उसके बाएं हाथ का खेल था।

एक बार वह किसी भीड़-भाड़ वाले स्थान से निकल गई तो फिर उसके पास पैसे की कमी नहीं होती थी।

उसके पास अब कोई अभाव नहीं था।

अपनी पढ़ाई जारी रखने की बात वह अब नहीं सोचती थी।

उसके विचार से वह पढ़ाई अब उसके लिए बकवास से ज्यादा कुछ नहीं थी। और भविष्य में उस पढ़ाई की उसे कोई जरूरत नहीं पड़ने वाली थी।

सिर छिपाने के लिए उसके पास एक छोटा-सा घर था जो उसकी मां उसके लिए छोड़कर गई थी।

इसके अलावा अब उसे किसी चीज की जरूरत नहीं थी।

अपने इस काम से अब उसे कोई दहशत नहीं होती थी। उसका मनोविज्ञान भी इतना

तेज हो गया था कि वह आदमी की शक्ल देखकर ही अनुमान लगा सकती थी कि उस आदमी की जेब में मोटी रकम होगी।

इस धंधे में उसे काफी समय गुजर चुका था-इस धंधे काउसका कोई गुरु भी नहीं था। लेकिन फिर भी वह उस्तादों की उस्ताद थी।

आज तक वह पकड़ी नहीं गई थी-किसी को उसके ऊपर शक तक नहीं हुआ था।

जब वह धंधे पर निकलती थी तो बहुत ही तड़क-भड़क वाली उत्तेजक ड्रेस पहनती थी। ऐसा वह शिकार को अपनी ओर आकर्षित करने की नीयत से करती थी। खूबसूरती में तो शायद ऊपर वाले ने उसके साथ बहुत ही उदारता बरती थी।

उसके खूबसूरत जिस्म पर भड़कीली ड्रेस तो ऋषि-मुनियों तक का संयम डगमगाने की क्षमता रखती थी। और उस समय जबकि उसका शिकार उसकी ओर आकर्षित होता था और उसके समीप आने को बेचैन हो उठता था, ठीक उसी समय वह उसे हलाल करके छोड़ देती थी।

उसकी पल-भर की समीपता उसके लिए कितनी महंगी पड़ी, इसका अहसास उसे तब होता होगा जब वह अपनी जेब देखता होगा और वहां से उसका पर्स गायब मिलता होगा।

लेकिन किसी ने गलत नहीं कहा कि सौ दिन चोर के होते हैं तो एक दिन शरीफ का भी होता है और वह दिन चोर के सौ दिनों से भारी पड़ता है।

एक दिन पूनम के साथ भी वैसा ही हुआ।

□□□

उस दिन उसका शिकार एक हैंडसम सजीला नौजवान था जो फिल्मी सितारों की तरह सजा-धजा था और पूनम का विचार था कि उसकी जेब का पर्स काफी भारी होगा।

फिर मौका देखते ही उसने अपने हाथों का कमाल दिखा दिया।

लेकिन वह उससे दो कदम ही अलग हटी थी कि उसका हंटर जैसा स्वर पूनम के कानों से टकराया।

'सुनिए मैडम!'

उसने एक बार पलटकर युवक की ओर देखा। उसके चेहरे पर पल-भर के लिए परेशानी के लक्षण उभरे। फिर उसने अपना चेहरा इस तरह घुमाया जैसे उसने युवक की आवाज पर कोई तवज्जो ही न दी हो।

वह फिर आगे बढ़ी।

वह जल्दी-से-जल्दी उस युवक से दूर निकल जाना चाहती थी।

लेकिन वह दो कदम ही आगे बढ़ सकी थी कि पीछे से उसकी कलाई को पकड़ लिया गया। पूनम ने महसूस किया कि वह पकड़ बहुत सख्त थी।

वह तुरंत पीछे की ओर पलटी।

'कौन हैं आप और...।' उसने गुस्से का प्रदर्शन करते हुए कहा- 'यह क्या बदतमीजी है?'

युवक के होंठों पर अर्थपूर्ण मुस्कराहट उभरी।

'कमाल है!' युवक ने कहा।

'कैसा कमाल?'

'यह हमारी दूसरी मुलाकात है और आप पहचानने से भी इनकार कर रही हैं।'

‘मैं तुम्हारे जैसे बदतमीज लोगों की फितरत जानती हूं।’ उसने गुस्से में कहा- ‘मेरा हाथ छोड़ो, नहीं तो।’ उसने अपनी कलाई छुड़ाने का प्रयास करते हुए कहा लेकिन इसमें सफल नहीं हो सकी।

‘नहीं तो तुम शोर मचाओगी-लोगों से कहोगी कि मैं तुम्हें छेड़ रहा हूं। यही न?’

पूनम ने घूरकर उसकी ओर देखा।

‘लेकिन इससे कुछ नहीं होगा मैडम-मेरे जैसे लोगों की फितरत की बात भी छोड़ो और अपनी फितरत के बारे में सोचो। तुम्हारे इन लटके-झटकों का मेरे ऊपर कोई असर नहीं होने वाला।’

‘आखिर तुम चाहते क्या हो?’

‘मेरे चाहने की छोड़ो-तुम बताओ, तुम क्या चाहती हो?’

‘मैं...मैं क्या चाहूंगी?’

‘तुम्हारे सामने दो विकल्प हैं।’

‘कैसे दो विकल्प?’

‘एक तो यह कि मैं तुम्हारी असलियत पब्लिक को बता दूं। उसके बाद मुझे कुछ नहीं करना पड़ेगा-पब्लिक स्वयं करेगी। पहले पब्लिक वह करेगी जिससे उसे संतुष्टि मिलेगी और उसके बाद वह क्या करेगी, इसका अनुमान तुम स्वयं लगा सकती हो।’

‘दूसरा विकल्प है कि तुम अपने-आपको मेरे हवाले कर दो। मैं तुम्हें और कोई आश्वासन तो नहीं दे सकता लेकिन उस हालत में वह नहीं होगा जो ऐसे मौकों पर पब्लिक करती है।’

पूनम के चेहरे पर चिंता व उलझन के भाव पैदा हुए।

‘मैं सोचने के लिए ज्यादा वक्त नहीं दे सकता।’

‘ठीक है।’ उसने कहा।

‘क्या ठीक है?’

‘अपना मामला हम स्वयं निबटा सकते हैं-पब्लिक को बीच में लाने की जरूरत नहीं है।’

‘लगता है बहुत समझदार हो।’ युवक ने अर्थपूर्ण मुस्कराहट के साथ कहा-‘लेकिन मामला निबटाने का आश्वासन मैंने नहीं दिया।’

‘फिर क्या करेंगे आप?’

‘यह जानने के लिए तुम्हें थोड़ा सब्र करना होगा।’

‘ठीक है-मैं वही करने के लिए तैयार हूं जैसा आप चाहते हो।’

‘तो आओ मेरे साथ।’ युवक ने कहा।

पूनम का हाथ उसने अभी तक नहीं छोड़ा था।

एक शानदार चमचमाती गाड़ी के पास पहुंचकर युवक ने उसकी आगे वाली पैसेंजर साइड का दरवाजा खोला और उसकी कलाई छोड़ते हुए उसमें बैठने का संकेत किया।

पूनम के चेहरे पर हिचकिचाहट के भाव उभरे।

‘अब तुम्हारे पास इसके सिवा कोई दूसरा विकल्प नहीं है। बैठो।’ उसने अधिकारपूर्ण स्वर में कहा।

सचमुच उसे कोई चारा नजर नहीं आया था।

उसे लगा जैसे आज वह बुरी तरह से फंस गई है और अब उससे बच पाना उसे बहुत

कठिन लग रहा था।

वह गाड़ी में सवार हो गई।

इसके बाद युवक ने स्टेयरिंग संभाला और गाड़ी आगे बढ़ गई।

'मैंने कहा था।' ड्राइविंग करते हुए युवक ने पूछा- 'यह हमारी दूसरी मुलाकात है। तुमने पहली मुलाकात के बारे में नहीं पूछा।

'मुझे तो ऐसा कुछ याद नहीं।' पूनम ने उत्तर दिया।

'हां-तुम्हें याद भी कैसे होगा-किस-किस को याद करोगी तुम? लेकिन मैं उस मुलाकात को नहीं भूल सकता।'

'क्योंकि मुझे अपने-आप पर बहुत घमंड था कि मुझे कोई इस तरह शिकार नहीं बना सकता। लेकिन तुमने मेरा घमंड उस दिन चूर कर दिया था।'

'वैसे आज तुम यदि सोचती हो कि तुमने मुझे शिकार बना लिया तो यह तुम्हारी बहुत बड़ी भूल है। दरअसल आज तो शिकार बनने के लिए मैंने स्वयं अपने-आपको तुम्हारे सामने पेश किया था।'

पूनम ने कुछ नहीं कहा।

लेकिन उसे अपनी गलती का अहसास हो रहा था।

'शिकार तो इस बार भी आपने मुझे बना लिया लेकिन बदकिस्मती से मैं अपने आपको शिकार बनते हुए देख रहा था।'

'शिकार?' पूनम के तेवर अचानक बदले- 'कैसा शिकार? तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आ रहीं।'

युवक ने हैरत से उसकी ओर देखा।

'तुम तो रंग बदल रही हो।'

'कैसा रंग?'

'समझ गया।'

'क्या समझ गए?'

'यही कि अब वो पब्लिक की भीड़ तो रही नहीं जिसके डर से तुम मेरी बात मानने पर राजी हो गई थीं।'

'मेरी समझ में नहीं आ रहा क्या बकवास कर रहे हो तुम? गाड़ी रोको।'

'तुम तो मुझे आदेश भी दे रही हो?'

'गाड़ी रोको वरना...।'

'वरना क्या?'

'तुम जानते हो कि आगे पुलिस स्टेशन है- मैं शोर मचा दूंगी।'

'उससे क्या होगा?'

'तुम स्वयं जानते हो क्या होगा?'

'लेकिन पुलिस को बताओगी क्या?'

'वही जो हकीकत है।'

'और हकीकत क्या है?'

'मैंने तुमसे लिफ्ट मांगी थी-उस समय मैं नहीं जानती थी कि तुम मेरे साथ जोर-

जबरदस्ती पर उतर आओगे। मेरे ऊपर बुरी नीयत डालोगे।'

'तुम वाकई ऐसा कहोगी पुलिस के सामने?'

'जरूर कहूंगी-तुमने मुझे गाड़ी से नहीं उतारा तो...।'

'यह तो सरासर झूठ है।' युवक ने कहा-लेकिन उसने गाड़ी रोकने का उपक्रम नहीं किया।

'तुम गाड़ी रोकते हो या...?'

'मुझे सोचने तो दो-अभी पुलिस स्टेशन आने में देरी है।' पूनम के चेहरे पर उलझनपूर्ण भाव उभरे।

गाड़ी पुलिस स्टेशन से चंद गज की दूरी पर थी।

'तुम गाड़ी रोकते हो या...?'

युवक ने गाड़ी को पुलिस स्टेशन के गेट की ओर घुमा दिया।

युवती ने हैरत से उसकी ओर देखा।

'कहां जा रहे हो?'

'पुलिस स्टेशन।'

'लेकिन क्यों?'

'ताकि हकीकत बताने के लिए तुम्हें गला फाड़ फाड़कर न चीखना पड़े।'

युवती के चेहरे पर आतंक के भाव उभरे।

'यह...यह तुम ठीक नहीं कर रहे।'

लेकिन तब तक गाड़ी पुलिस स्टेशन के कम्पाउंड में पहुंचकर गतिशून्य हो चुकी थी।

ड्यूटी ऑफिसर ने नागवारीपूर्ण नेत्रों से उसकी ओर देखा।

'कहिए-मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?' उसने कहा लेकिन उसका लहजा उसके शब्दों के ठीक विपरीत ऐसा था जैसे ऐसा कहकर उसने कोई अहसान किया हो।

'सेवा मेरी नहीं।' युवक ने कहा- 'इन देवीजी की करनी है आपको।' कहने के बाद युवक बड़ी बेतकल्लुफी के साथ ड्यूटी ऑफिसर की टेबल के सामने वाली एक सीट पर बैठ गया। जो कि ड्यूटी ऑफिसर को बहुत ही नागवार गुजरा। लेकिन उसने ऐसा कुछ कहा नहीं।

'कौन हो तुम?' उसने सख्त स्वर में कहा- 'और यहां आने का कारण क्या है?'

'कहा न-कारण यह देवीजी हैं।'

'मेरा पहला प्रश्न यह था कि तुम कौन हो? और तुम मेरे दूसरे सवाल का जवाब भी ठीक से नहीं दे रहे। जो कुछ कहना है साफ-साफ कहो। मेरा काम यहां बैठकर पहेलियां बुझाना नहीं है और यह मत भूलो कि तुम यहां पुलिस स्टेशन में बैठे हुए हो।'

सब-इंस्पेक्टर ने अपना पुलिसिया रौब झाड़ते हुए कहा। उसके अंदर वर्दी की अकड़ कुछ ज्यादा ही लगती थी।

लेकिन युवक इससे जरा भी प्रभावित होता नजर नहीं आया।

युवक ने अपना नाम पवन कुमार बताया-अपना बाकी परिचय एक प्रतिष्ठित कंपनी के एक जिम्मेदार ओहदेदार के रूप में दिया।

लेकिन पवन कुमार के इस परिचय से वह सब-इंस्पेक्टर भी प्रभावित नहीं हुआ।

'अब बोलो, क्या कहना है?'

पवन कुमार ने पूनम की ओर देखा।

'कहिए मैडम...।' उसने कहा- 'क्या कहना चाहती थीं आप?'

'यह।' पूनम ने हिचकिचाहट के साथ कहा- 'यह आदमी मेरे साथ जोर-जबरदस्ती पर उतारू हो रहा था।'

'जोर-जबरदस्ती कैसे?'

'मैंने इनसे इनकी गाड़ी में लिफ्ट मांगी थी इंस्पेक्टर साहब।'

'इन्होंने उस समय तो बड़ी शराफत के साथ मुझे अपनी गाड़ी में बिठा लिया।'

'फिर?'

'फिर यह गाड़ी में ही मेरे साथ छेड़खानी करने लगे। मैंने विरोध किया तो यह जबरदस्ती पर उतर आए।'

इंस्पेक्टर ने घूरकर उसकी ओर देखा।

'क्यों मिस्टर?'

पवन कुमार मुस्कराया।

'मुस्करा रहे हो।' उसने कठोर स्वर में कहा।

'मैंने कहा इंस्पेक्टर साहब कि।' पूनम ने इंस्पेक्टर के कठोर व्यवहार से उत्साहित होते हुए कहा- 'मैं पुलिस में इनकी शिकायत करूंगी तो कहने लगे कि पुलिस इनका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। यह बहुत पहुंच वाले आदमी हैं। पुलिस के कई बड़े अधिकारी इनकी जान-पहचान वाले हैं। मैं शिकायत करूंगी तो यह उल्टे मुझे ही फंसवा देंगे।' कहते-कहते पूनम रुंआसी हो गई।

पवन कुमार ने देखा कि रुंआसी होने का उसने बहुत ही सफल अभिनय किया था। सब-इंस्पेक्टर उससे प्रभावित हो रहा था।

इसके बावजूद भी पवन कुमार के होंठों पर मुस्कराहट थी।

उसकी मुस्कराहट ने सब-इंस्पेक्टर का पारा गर्म कर दिया था।

'क्यों मिस्टर-कानून को मजाक समझ रखा है? एक बड़ी कंपनी में बड़े ओहदेदार हो तो समझ लिया कि कानून तुम्हारे घर का हो गया?'

'और हम यहां बैठे हुए तुम्हारी नौकरी कर रहे हैं। एक गंभीर अपराध करने के बाद तुम यहां मेरे सामने कुर्सी पर जमे बैठे हो।'

उसने इस अंदाज में कहा जैसे अभी उसे कुर्सी से उठाकर फेंक देगा।

लेकिन वह सब-इंस्पेक्टर के इस बर्ताव से जरा भी विचलित नहीं हुआ।

'मैडम ठीक कह रही हैं इंस्पेक्टर साहब।' पवन कुमार ने कहा- 'लेकिन इसका सबूत भी तो पेश करना चाहिए इन्हें।'

'इसका सबूत मेरे पास क्या होगा इंस्पेक्टर साहब?' पूनम ने ऐसे लहजे में कहा मानो वह अभी रो देगी।

'सबूत तो है इनके पास इंस्पेक्टर साहब।'

'क्यों नहीं यह सुविधा भी तो इन्हें मैंने स्वयं ही मुहैया कराई है कि आपके सामने मेरी शिकायत कर सकें।'

'मुझे मेरा धंधा सिखाने की कोशिश मत करो। इसकी सफाई में तुम्हें कुछ कहना है तो

बोलो।'

'मुझे सफाई में कुछ नहीं कहना इंस्पेक्टर साहब-लेकिन सबूत देख लेने में हर्ज क्या है? इससे इनका भी भला होगा और आपको भी मेरे खिलाफ कार्यवाही करने में आसानी होगी।'

'तो तुम अपने विरुद्ध सबूत भी स्वयं ही जुटाओगे?'

'तो दिखाओ क्या सबूत है?'

'सबूत तो मैडम के पास है।'

'मुझे तो कहीं नजर नहीं आ रहा।'

'नजर ऐसे नहीं आएगा।'

'कैसे नजर आएगा?'

'इसके लिए मैडम के जिस्म का एक-एक वस्त्र उतारना होगा। ऐसा करने पर सबूत स्वयं प्रकट हो जाएगा।'

'क्या बकवास करते हो?'

'देखा इंस्पेक्टर साहब।' कहते-कहते पूनम की आंखों में आंसू आ गए-'आपके सामने भी यह मेरा अपमान कर रहे हैं। आप स्वयं अनुमान लगा सकते हैं कि उस समय इन्होंने मेरे साथ क्या सलूक किया होगा जब मैं इनके साथ अकेली थी। यह बड़े आदमी हैं इंस्पेक्टर साहब, इसका मतलब यह नहीं हो सकता कि इस तरह किसी की इज्जत उछालने का अधिकार मिल गया इन्हें। अब आप ही इंसाफ कीजिए मेरे साथ।'

'यह तो कह रहे थे कि पुलिस वही करेगी जो ये कहेंगे। कह रहे थे मेरी भलाई इसी में है कि मैं चुपचाप इनकी बात मान लूं।'

सब-इंस्पेक्टर का चेहरा कठोर हो गया।

'तुम्हें इंसाफ जरूर मिलेगा।' उसने कहा- 'इनके खिलाफ पहले रिपोर्ट लिखाओ। फिर मैं देखता हूं।'

'मैं...मैं किसी के खिलाफ कुछ करना नहीं चाहती इंस्पेक्टर साहब-मेरे लिए इतना ही काफी है कि मुझे सुरक्षित घर जाने दिया जाए।'

'मैं एक गरीब घर की लड़की हूं इंस्पेक्टर साहब रिपोर्ट लिखवाकर भी बदनामी मेरी ही होगी। लोग मेरे बारे में तरह-तरह की बातें करेंगे।'

सब-इंस्पेक्टर उसकी बात से द्रवित हो गया।

'क्यों मिस्टर-क्या तुम इनसे माफी मांगने और आइंदा इस तरह की कोई हरकत करने न करने का वचन देने के लिए तैयार हो?'

'मुझे इसमें कोई ऐतराज नहीं है इंस्पेक्टर साहब-ऐतराज इस बात पर है कि आपने मेरी बात पर जरा भी ध्यान नहीं दिया।'

'क्या ध्यान नहीं दिया?'

'आपने यह नहीं सोचा कि मैं स्वयं अपने विरुद्ध शिकायत करने के लिए इन्हें यहां लेकर आ गया। क्यों किया मैंने ऐसा? मैंने इनकी तलाशी लेने के लिए भी कहा था। मैं जानता हूं कि यह काम आप स्वयं नहीं कर सकते। मुझे भी इसकी इजाजत नहीं देंगे। लेकिन आपके पास लेडीज स्टाफ होगा।'

‘और तुम समझते हो कि तुम जैसा कहोगे मैं वैसा ही करूंगा? तुम फिर से मुझे मेरा धंधा सिखाने की कोशिश कर रहे हो। लेकिन तुम यह नहीं जानते कि मैं क्या सोच रहा हूं।’

‘क्या सोच रहे हैं आप?’

‘यही कि इस लड़की की शिकायत पर तुम्हें हवालात में बंद कर दूं और मैं ऐसा ही करूंगा।’

‘ठीक है-आप करिए ऐसा ही। लेकिन इससे पहले एक बात आप भी सुन लीजिए।’

‘क्या?’

‘मैं जो कुछ कह रहा हूं वह पूरी जिम्मेदारी के साथ कह रहा हूं। बाद में आपको पता चले कि मैंने किसी तरह आपको गुमराह किया है तो आप मेरे साथ कोई भी कार्यवाही कर सकते हैं। कुछ कारण ऐसे हैं कि मैं आपको अपना पूरा परिचय नहीं दे सकता।’

‘परिचय तो जितना तुम दे चुके मेरे लिए उतना ही काफी है । तुम इससे भी बड़ी कोई तोप हो तो मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ने वाला।’

‘मैं इस लड़की की शिकायत पर तुम्हें हवालात में बंद करता हूं। तुम अपनी रिपोर्ट लिखाओ।’

‘लेकिन इंस्पेक्टर साहब...।’

‘इससे डरने की जरूरत नहीं है। तुम बेखौफ होकर रिपोर्ट लिखाओ। यह तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता-मेरी गारंटी है।’

‘मैं एक फोन कर सकता हूं इंस्पेक्टर साहब।’ पवन कुमार ने कहा।

‘किसी मिनिस्टर को फोन करोगे?’

‘नहीं-मेरा किसी मिनिस्टर से कोई संबंध नहीं है। मैं कहीं आपकी शिकायत भी नहीं करने जा रहा।’

‘तो?’

‘आप मुझे फोन करने की इजाजत दीजिए।’

‘ठीक है-करके देख लो फोन भी।’ इंस्पेक्टर ने कहा।

पवन कुमार ने कोई नम्बर मिलाया।

‘मैं पवन कुमार बोल रहा हूं। यहाँ इंस्पेक्टर साहब मेरी बात ठीक से नहीं समझ पा रहे हैं। ऐसा कोई कदम उठाइए कि वे मेरी बात सुन सकें।’ कहकर पवन कुमार ने रिसीवर रख दिया।

इंस्पेक्टर ने घूरकर उसकी ओर देखा।

‘फोन किसे किया?’

पवन कुमार केवल मुस्कराया।

‘तुमने बताया नहीं।’

‘अपने किसी हमदर्द को फोन किया है।’

‘और वह हमदर्द कौन है?’

‘आपके इस सवाल का जवाब देना मेरे लिए जरूरी नहीं है।’

‘ठीक है-मत दो जवाब-लेकिन यह बात याद रखो कि मैं तुम्हारे साथ किस तरह की रियायत करने वाला नहीं।’

‘मुझे स्वयं ऐसे पुलिस वाले पसंद आते हैं जो किसी दबाव के आगे नहीं झुकते। लेकिन एक जिम्मेदार पुलिसवाले को विवेकवान भी होना चाहिए। कोई लड़की छेड़ने वाला मवाली लड़की को साथ लेकर पुलिस में नहीं जाएगा अपने-आपको गिरफ्तार कराने के लिए।’

‘अब यह भाषणबाजी बंद करो।’ कहकर उसने पूनम की ओर देखा- ‘बैठो और तुम्हारे साथ जो कुछ हुआ है उसे लिखकर दो।’

वह हिचकिचाती-सी बैठी।

उसी घड़ी टेलीफोन की घंटी बजी। सब-इंस्पेक्टर ने अपना हाथ बढ़ाकर शान के साथ रिसीवर उठाया।

‘यस।’

‘यस सर...यस सर।’

‘.....।’

‘लेकिन सर।’

‘.....।’

‘राइट सर-राइट सर।’

और जिस घड़ी उसने रिसीवर वापस रखा, उस समय उसका चेहरा उतरा हुआ था। उसने घूरकर पवन कुमार की ओर देखा।

‘लगता है कि कोई बहुत ही बड़ी सिफारिश लगवाई है तुमने कमिश्नर साहब का भी कहना है कि तुम कोई गैरजिम्मेदारी वाला काम नहीं कर सकते। लेकिन एक बात में अब भी कह रहा हूँ।’

‘जरूर कहिए।’

‘तुम्हारी ओर से किसी भी तरह की गैरजिम्मेदारी हुई तो समझ लो कमिश्नर साहब भी तुम्हारा बचाव नहीं कर सकेंगे।’

‘मुझे उसकी खुशी होगी।’

‘क्या चाहते हो?’

‘वही-जो मैं बता चुका। लड़की की तलाशी कराओ। सारा मामला अपने-आप सामने आ जाएगा।’

‘ठीक है।’ कहकर उसने घंटी बजाई। फौरन एक कांस्टेबल प्रकट हुआ।

‘सुनीता और ज्ञानवती को भेजो।’ उसने आदेश दनदनाया।

पूनम आतंकित नजर आई।

‘यह...यह तो ज्यादती है।’ पूनम ने कहा।

सब-इंस्पेक्टर ने उसकी ओर देखा- ‘ज्यादती कैसे?’

‘मेरे साथ बदतमीजी हुई-मैं शिकायत कर रही हूं और कार्यवाही भी मेरे ही साथ हो रही है।’

‘कार्यवाही तुम्हारे साथ क्या हो रही है?’

‘मेरी तलाशी जो हो रही है।’

‘इसमें क्या हुआ?’

'हुआ कैसे नहीं इंस्पेक्टर साहब मेरी तलाशी ली जा रही है। मेरा अपमान हो रहा है। यह ज्यादती नहीं तो और क्या है यह प्रभावशाली आदमी हैं। कानून इनके हाथ में है। पुलिस इनके हाथ में है। अब पुलिस उल्टे मेरा ही अपमान करने पर उतारू हो गई।'

'यह बात है तो मैं कोई शिकायत नहीं कर रही-मैं पहले ही कह चुकी थी। मैं जानती थी-यह कार वाले हैं। मैं इनसे उलझना नहीं चाहती। भगवान के लिए मुझे जाने दो। मुझे इंसाफ नहीं दे सकते तो कम-से-कम अन्याय तो मत करो मुझ पर।' कहते-कहते ऐसा लगा जैसे वह रो देगी।

'कोई अन्याय नहीं हो रहा-कोई अपमान नहीं हो रहा। यदि तलाशी का कोई नतीजा नहीं निकला तो मैं वादा करता हूं कि इस आदमी के साथ बहुत बुरी तरह पेश आऊंगा। तुम्हारी केवल तलाशी ली जा रही है। लेकिन तुम्हारे साथ कोई दुर्व्यवयहार नहीं होगा।'

उसी घड़ी दो लेडी कांस्टेबल अंदर दाखिल हुईं।

'ज्ञानवती-इन मैडम को अंदर ले जाकर जरा ठीक से तलाशी लो इनकी।'

'लेकिन...।'

'ले जाओ इन्हें।'

लेकिन इस बार उसकी कोई नहीं सुनी गई। लेडी कांस्टेबलों ने उसे दोनों ओर से पकड़ा और ले गई।

पूनम विरोध करती रह गई।

□□□

लेडी कांस्टेबलों के साथ पूनम वापस लौटी तो वह बहुत बदली-बदली नजर आ रही थी।

उसकी नजरें झुकी हुई थीं। वह कदम भी इस तरह उठा रही थी जैसे उसके पैर मन-मन-भर के हो रहे हों।

सब-इंस्पेक्टर ने प्रश्नसूचक नेत्रों से लेडी कांस्टेबलों की ओर देखा। एक कांस्टेबल ने आगे बढ़कर एक पर्स सब-इंस्पेक्टर के सामने रख दिया।

'यह पर्स इसके पास से बरामद हुआ है और...।' कांस्टेबल ने बताया- 'यह पर्स बरामद करने के लिए हमें इसके सारे कपड़े उतरवाने पड़े। पर्स को ऐसी जगह छिपाया था इसने कि कोई सोच भी नहीं सकता।'

'जरा इस पर्स को खोलकर भी देखिए इंस्पेक्टर साहब।' पवन कुमार ने कहा- 'नहीं तो यह मैडम कहेंगी कि पर्स इन्हीं का है और यह अपने पर्स को कहीं भी रख सकती हैं।'

इंस्पेक्टर ने पर्स को खोलकर देखा।

कुछ रुपयों के अलावा एक कार्ड भी पर्स के अंदर से बरामद हुआ।

यह कार्ड पवन कुमार का था जिस पर वही पता अंकित था जो उसने बताया था।

सब-इंस्पेक्टर ने फाड़ खाने वाली नजरों से उसकी ओर देखा।

'और अपनी इस कला में।' पवन कुमार ने कहा- 'यह इतनी माहिर हैं कि मेरा मन इन्हें इनाम देने का हो रहा था। मुझे अफसोस हो रहा है कि मैं इन्हें पुलिस स्टेशन ले आया।'

'ले जाओ इसे और...।' सब-इंस्पेक्टर ने कठोर लहजे में कहा- 'बंद कर दो हवालात में।'

पूनम के मुंह से बोल न फूटा।

वह इसका विरोध नहीं कर सकी। इसके लिए वह माफी मांगकर छूटने का प्रयास भी नहीं कर सकी।

वही दोनों लेडी कांस्टेबल उसके दोनों बाजू पकड़कर लगभग घसीटती हुई सब इंस्पेक्टर के केबिन से ले गई।

पवन कुमार तब तक वहीं बैठा हुआ था।

□□□

'सुनिए।'

पूनम के कानों में पवन कुमार का स्वर टकराया तो उसने अपना चेहरा उठाकर देखा।

पवन कुमार ने देखा कि सलाखों के दूसरी ओर खड़ी उस खूबसूरत युवती के चेहरे पर पश्चाताप के कोई भाव नहीं थे।

उसको जगह उसकी आंखों में नफरत दिखाई दे रही थी।

'अपना पराक्रम तो तुम दिखा चुके।' उसने कहा- 'अब यहां क्या लेने आए हो?'

'पराक्रम? कैसा पराक्रम?'

'मुझे पकड़कर पुलिस को सौंप दिया न-तुम समझ रहे होगे कि तुमने बड़ा बहादुरी का काम किया है और अब मुझे जलील करने भी आ गए?'

'मैं तुम्हें जलील करने नहीं आया और न ही यह सब... ।' पवन कुमार ने कहा- 'मैंने किसी पराक्रम के इरादे से किया। मैंने जो कुछ किया है यह मेरा फर्ज था।'

'फर्ज-तुम्हारा कौन-सा फर्ज था? तुम क्या इस इलाके के थानेदार लगे थे? तुम्हें अपना पर्स ही तो चाहिए था। वह तो तुम पुलिस के बिना भी मुझसे ले सकते थे। तुम जानते थे कि उस समय मैं आनाकानी करने की स्थिति में नहीं थी।'

'हां-मैं जानता था लेकिन ऐसा करने से तुम्हें यह सबक नहीं मिलने वाला था।'

'सबक-कैसा सबक?'

'यही कि यह कितना घटिया काम है। कितना बुरा काम है जिसके लिए तुम्हें इतना अपमान सहन करना पड़ा। दूसरों के सामने नंगा होना पड़ा तुम्हें।'

'अब मेरे मान-अपमान से तुम्हें क्या लेना? तुमने जो करना था कर लिया। मेरे साथ जो हुआ मैंने भुगता। आगे भी जो होगा भुगत लूंगी। तुम जाओ।'

'आगे तुम्हें कुछ नहीं भुगतना होगा।'

'क्यों?'

'मैंने तुम्हें पुलिस के हवाले किया है यहां से तुम्हें निकाल भी मैं लूंगा। तुम्हारे साथ आगे कोई कार्यवाही भी नहीं होगी। लेकिन तुम्हें वादा करना होगा कि तुम ऐसा गंदा काम नहीं करोगी। अपनी मेहनत की कमाई खाओगी और इज्जत की जिंदगी गुजारोगी।'

'इज्जत? इज्जत तो तुम जैसे रईसजादों की होती है। मुझे न तुम्हारी मदद की जरूरत है और न तुम्हारी हमदर्दी की। तुम्हारा यह भाषण मुझे नहीं सुनना।'

'गलतफहमी है तुम्हारी।'

'कैसी गलतफहमी?'

'मैं कोई रईसजादा नहीं हूं। मैं नौकरीपेशा आदमी हूं और मेहनत करके अपना पेट भरता हूं। इसीलिए तुम्हें सलाह दे रहा हूं।'

'देश-भर में तुम्हारे जैसे मैहनत की रोटियां खाने वाले सभी इतनी शानदार गाड़ियों में घूमते हैं!' उसने व्यंग्यपूर्ण स्वर में कहा- 'मैं तुम्हारी सलाह जरूर मानती बशर्ते कि तुमने नौकरी के लिए मेरी तरह दर-दर की ठोकरें खाई होतीं। तुम्हारे दफ्तर में भी नौकरी के लिए जाती तो शायद मुझे चपरासी रखने के लिए भी तैयार न होते। संभव है गई भी होऊं।'

'मैं फिर भी तुम्हारी सलाह मानती बशर्ते कि तुम्हारी मां भी बीमारी में एड़ियां रगड़-रगड़कर इसलिए मर रही होती कि तुम्हारे पास उसकी दवाई के लिए पैसे न होते। उसके लिए दवाइयां खरीदने के वास्ते तुम्हें वह काम करना पड़ता जो मैंने किया। तब मैं जरूर तुम्हारी सलाह मानती।'

पवन कुमार भौंचक्का रह गया।

'क्या...क्या तुम्हारी मां वाकई इतनी बीमार है? यह बात तुमने पहले क्यों नहीं बताई?'

'बीमार है नहीं-बीमार थी। अब वह सारी बीमारियों से-सारे दुखों से मुक्ति पा चुकी है। लेकिन उन हालात ने मुझे यह सबक सिखा दिया कि यहां मांगने से कुछ मिलने वाला नहीं है।'

'इसलिए मैं तुम्हारे सामने रहम की या हमदर्दी की भीख नहीं मांगने वाली। चले जाओ यहां से।' उसकी आंखों से पवन कुमार नामक युवक के प्रति नफरत का सैलाब उमड़ रहा था।

इस युवती ने मुजरिम होते हुए भी उस व्यक्ति को निरुत्तर कर दिया जो कानून की हिफाजत कर रहा था।

उसे महसूस हुआ कि मुजरिम होते हुए भी युवती के अंदर जो आत्मसम्मान था वह आश्चर्यजनक था।

'ठीक है।' पवन कुमार ने कहा- 'मैं चला जाता हूं। लेकिन मेरी एक बात सुन लो।'

'क्या?' उसने उपेक्षापूर्ण अंदाज में कहा।

'मैं मानता हूँ कि कभी कभी हालात आदमी को इस कदर मजबूर कर देते हैं कि वह अच्छे या बुरे में भेद नहीं कर पाता और वह अपना रास्ता भटक जाता है।'

'लेकिन तुम्हारी यह कमाई जो तुम्हारी माँ को नहीं बचा पाई-तुम्हारे सम्मान की रक्षा नहीं कर पाई इसके बावजूद भी तुम वह रास्ता नहीं छोड़ रहीं जो कि तुम्हें छोड़ देना चाहिए।'

'मैं पहले ही बता चुकी हूं कि मुझे सलाह देने के लिए क्या योग्यता होनी चाहिए। जिस दिन वह योग्यता हासिल कर लो उस दिन चले आना। मैं तुम्हारी सलाह का स्वागत भी करूंगी और उसे मानूंगी भी।'

'तुम मुझे समझने में भूल कर रही हो-मैं वो नहीं हूं जो तुम मुझे समझ रही हो। या मेरी कीमती कार को देखकर मेरे बारे में सोच रही हो। मेरी हकीकत इसके ठीक विपरीत है।'

'फिर भी तुम्हें इस बात का पूरा अधिकार है कि तुम किसी के बारे में कुछ भी सोचो।'

'लेकिन इस समय तुम्हारे पास वक्त है-अपने बारे में भी सोचना। उन बातों पर भी गौर करना जो मैंने कही हैं। इसके बाद तुम्हें महसूस हो कि तुम्हें यह रास्ता बदल देना चाहिए

तो मैं एक नए रास्ते पर तुम्हारा स्वागत भी करूंगा और उस पर चलने में तुम्हारी पूरी मदद भी। मेरी बातों पर गहराई से सोचने की कोशिश करना।'

कहकर वह जाने के लिए वापस मुड़ गया।

एक कदम आगे बढ़कर वह फिर रुका-पलटकर पूनम की ओर देखा- 'मैं फिर आऊंगा।'

और वह पलटकर तेज कदमों से आगे बढ़ गया। लेकिन पूनम की आंखों में उसके प्रति नफरत की मामूली-सी भी कमी नहीं आई।

यह उसकी पहली मुलाकात थी।

उस समय वह सोच भी नहीं सकती थी कि उसकी यही नफरत एक दिन उसे पवन कुमार के इतना करीब ले आएगी कि वह उसके बिना जीवन की कल्पना तक नहीं कर सकेगी।

आज उसी के लिए वह इस कदर बेचैन थी- नींद उसकी आंखों से कोसों दूर थी और उसके जेहन में वही आकृति उभर रही थी।

पवन कुमार।

रात्रि के सन्नाटे में एक साथ कई आदमियों के दौड़ने से उनके कदमों की आहट बहुत दूर तक सुनाई दे रही थी जिसे प्रशांत चावला ने भी सुना।

जिस तरह उसने कोठरी से निकलकर उसका दरवाजा बंद किया था, उसी तरह उसे वह दरवाजा भी बंद कर देना चाहिए था।

उसी घड़ी उसे अपनी भूल का अहसास हुआ।

जिसके द्वारा वह उस इमारत से बाहर आया था।

लेकिन वह उस खतरनाक कैद से मुक्ति के समय इस कदर उत्तेजना व तनाव से ग्रस्त था कि यह बात उसने सोची तक नहीं।

और वह अपने पीछे दरवाजा खुला छोड़ आया था।

दरवाजा खुला देखते ही उन लोगों ने उस रास्ते से उसके भागने का अनुमान लगाने में एक पल भी जाया नहीं किया होगा।

वह एक ऐसी गलती थी जिसका अब कोई भी सुधार नहीं किया जा सकता था।

उसका दिल धक से करके रह गया।

एक बार उसने पलटकर देखा-एक साथ कई साए उसे अपनी ओर आते नजर आए।

इसके साथ ही प्रशांत चावला को अपना खेल खत्म होता नजर आया।

उसने जिस कैद से भागने का प्रयास किया था, वह कैद उसे फिर से नजर आई।

और वहां से भागने की कोशिश करने पर उसे शायद बड़ी भयंकर सजा दी जाएगी।

एक बार वह सिर से पांव तक कांपकर रह गया।

उसे लगा जैसे उसकी टांगों में जान ही न रही हो-उसका मस्तिष्क चकरा गया।

उसे लगा जैसे वह चक्कर खाकर गिर पड़ेगा।

तभी उसके मस्तिष्क में झटका-सा लगा।

एक बार यदि वह उन शैतानों के चंगुल में फंस गया तो दोबारा शायद उसे यह खुला आसमान देखना नसीब नहीं होगा।

उसे यातना दे-देकर मार दिया जाएगा-शायद उसकी लाश ही इस बार उस कैद से

बाहर आ सकेगी।

'कोशिश कर प्रशांत।' उसके मस्तिष्क से ही जैसे यह आवाज उभरी- 'भाग।'

और वह दोबारा अपनी शक्ति व हिम्मत बटोकर भागा।

पीछा करने वाले अभी उससे काफी दूरी पर थे।

वह कोशिश करे तो उनकी पकड़ से अपने-आपको बचा सकता था।

यही सोचकर वह जान छोड़कर भाग रहा था।

वह संकरी गली आगे चलकर बाईं ओर घूम गई थी उसके साथ ही प्रशांत घूम गया।

गली में स्ट्रीट लाइटें जल रही थीं जो कि प्रशांत के हित में नहीं था। उनके प्रकाश में तो उसे साफ-साफ देखा जा सकता था।

पीछा करने वालों के कदमों की आहटें अब भी उसके कानों में थी।

लेकिन वह अनुमान लगा सकता था कि वे अभी काफी दूरी पर थे।

आगे उस गली के दोनों ओर फिर दो गलियां थीं। वह सीधा दौड़ने की बजाय दाहिनी ओर मुड़ गया। तो उसने अपने-आप को एक ऐसी सड़क पर पाया जो काफी व्यस्त थी और उस पर काफी संख्या में वाहन आ-जा रहे थे।

लेकिन आगे अंधरा नहीं था।

फिर तो उसे यह भी याद नहीं रहा कि वह कितनी गलियों में कब तक इसी प्रकार दौड़ता रहा। उसे दिशा का भी ज्ञान नहीं रहा।

पीछा करने वालों के कदमों की आहटें भी अब उसे सुनाई नहीं दे रही थीं।

शायद वे गलियों में भटक गए थे और इस तरह प्रशांत उनकी नजरों से दूर हो गया था।

लेकिन प्रशांत अभी तक भी अपने-आपको सुरक्षित महसूस नहीं कर रहा था। उसके चेहरे पर आतंक के भाव अभी भी नजर आ रहे थे।

अब तक वह बुरी तरह से थक चुका था-उसकी सांस फूल रही थी और वह धोंकनी की तरह चल रही थी।

लेकिन वह रुक नहीं सकता था।

उसे लग रहा था कि मुसीबत किसी क्षण भी उसके सिर पर आ सकती थी।

हालांकि वह पहले जितनी तेजी से तो नहीं लेकिन फिर भी दौड़ रहा था।

वह अभी यह भी नहीं सोच पा रहा था कि वह कहां तक दौड़ता रहेगा और उन शैतानों से बचाव के लिए उसे कहां पनाह मिलेगी।

वह यह भी नहीं जानता था कि यह उसका अपना ही शहर है या कोई दूसरा।

इस घड़ी तो बस एक ही बात उसके दिमाग में थी और वह यह कि वह इस मुसीबत से जितनी दूर निकल सकता है, वही उसके हित में होगा।

हालांकि उसके दौड़ने की गति अब सामान्य रूप से पैदल चलने की गति से ज्यादा नहीं थी।

बस यही सोचकर वह दौड़ता चला जा रहा था।

अचानक ही उसकी नजर सड़क के दूसरे सिरे पर लगे एक बोर्ड पर पड़ी। वह बोर्ड पुलिस स्टेशन का था।

प्रशांत की नजरों में चमक नजर आई।

जिस विषय में अभी तक वह नहीं समझ पाया था-वह अचानक ही उसकी समझ में आ गया।

पुलिस स्टेशन के अलावा मौजूदा हालात में ऐसी कोई दूसरी जगह नहीं हो सकती थी जहां उसे शरण मिल सके।

उसने एक बार इधर-उधर देखा।

कोई उसे अपने पीछे आता नजर नहीं आया।

उसी घड़ी वह सड़क पार करने के लिए दाहिनी ओर मुड़ा। वह पलक झपकते ही सड़क पार कर लेना चाहता था। लेकिन सड़क पर चलने वाले ट्रैफिक के कारण उसे इस काम में मुश्किल पेश आ रही थी।

हालांकि उस घड़ी उसे अपने पीछे कोई नजर नहीं आ रहा था।

लेकिन फिर भी उसे लग रहा था कि मुसीबत किसी भी क्षण दोबारा आकर उसे दबोच सकती थी।

किसी तरह उसने सड़क पार की।

एक बार फिर अपनी बची-खुची शक्ति समेटकर उस गेट की ओर दौड़ा जिसके सामने पुलिस स्टेशन का बोर्ड लगा हुआ था।

गेट के पास पहुंचते ही संतरी ने उलझनपूर्ण नेत्रों से उसकी ओर देखा।

"ऐ।" संतरी ने पुकारा- "कौन है?"

लेकिन प्रशांत ने जैसे उसकी आवाज को सुना ही नहीं। उसे लग रहा था कि गेट के अंदर कदम रखते ही वह उस मुसीबत से सुरक्षित हो जाएगा और वह सुरक्षा पाने के लिए मरा जा रहा था।

संतरी लपककर उसके करीब पहुंचा।

"कहां जा रहा है?" संतरी ने लपककर उसका बाजू पकड़ते हुए कड़ककर पूछा।

"वो...वो मुझे मार डालेंगे।" प्रशांत ने आतंकित स्वर में कहा- "मार डालेंगे मुझे।"

"कौन-कौन मार डालेंगे तुझे?"

"वो...वो...।" प्रशांत ने कहना चाहा। लेकिन वह अपना वाक्य पूरा नहीं कर पाया।

उसे लगा जैसे उसके मस्तिष्क में अंधेरा छाता चला जा रहा हो। उस समय संतरी ने बड़ी मुश्किल से उसे संभाला तो उसका जिस्म संतरी की बाहों में झूल गया।

संतरी की आंखें हैरत से फैलती चली गई।

□□□

रानी चावला ने अपने दिल के टुकड़े को सीने से लगा लिया।

वह इस कदर भावावेश में आ गई थी कि कोशिश करने पर भी अपने आंसू नहीं रोक पाई।

फिर वह फफक-फफककर रो पड़ी।

वह कुछ पल तक यूं ही रोती रही-उसका पति डॉक्टर यशवीर चावला मां-बेटे का यह मिलन देख रहा था।

उसके चेहरे पर गंभीरता थी।

उसने तुरंत रानी को रोकने का प्रयास नहीं किया। शायद वह उसे रो लेने देना चाहता

था।

कई पल तक भी उसकी सिसकियां नहीं थमीं तो डॉक्टर चावला ने उसके कंधे पर हाथ रखा।

"रानी!"

उसने अपना चेहरा उठाकर कातर नजरों से पति की ओर देखा। प्रशांत ने भी अपना चेहरा उठाकर अपनी मम्मी की ओर देखा।

"मम्मी...आप रो क्यों रही हैं? अब तो मैं घर आ गया हूं। अब तो आपको खुश होना चाहिए। लेकिन अब भी आप रो रही हैं। क्यों?"

"तू मेरे रोने का अर्थ नहीं समझ पाएगा मेरे लाल।"

"क्यों नहीं समझ पाऊंगा मम्मी?"

"म...मैं सोच भी नहीं सकती थी मेरे लाल कि मैं फिर कभी तेरा चेहरा देख भी पाऊंगी। मैंने तो समझ लिया था कि...।" आगे के शब्द वह पूरे नहीं कर पाई।

"आपने क्या समझ लिया था मम्मी?"

"कुछ नहीं बेटे-कुछ नहीं।"

प्रशांत ने उलझनपूर्ण नेत्रों से उसकी ओर देखा।

रानी उसके जिस्म को टटोल-टटोलकर देखने लगी। शायद वह समझ रही थी कि उसके बेटे के जिस्म पर उन शैतानों द्वारा दी गई यातनाओं की कहानी अंकित होगी।

"देख रही हूं-उन शैतानों ने मेरे लाल को कितना सताया होगा-कितनी यातनाएं दी होगी उन्होंने।"

"मेरे लाल को भूखा-प्यासा रखा होगा-कितना कमजोर हो गया है तू-लगता है जैसे महीनों बीमार रहा हो।"

"ऐसा कुछ नहीं हुआ मम्मी-उन लोगों ने मुझे भूखा-प्यासा नहीं रखा। मुझे समय पर खाना दे दिया जाता था। हालांकि वह खाना बहुत घटिया दर्जे का होता था। एक आध बार मैं ठीक से खा भी नहीं सका था। लेकिन बाद में वही खाना मुझे अच्छा लगने लगा। मुझे भूखा नहीं रहना पड़ा मम्मी। आप बेकार में चिंतित हो रही हैं।"

"इस तरह आप क्या देख रही हैं मम्मी।"

"ऐसा उन्होंने कुछ नहीं किया मम्मी।"

"तू झूठ बोल रहा है-मेरा मन रखने के लिए। उन दरिंदों ने तुझे बहुत सताया होगा।"

"मैं सच कह रहा हूं मम्मी-वे मुझे क्या सताते! मैंने ही उनके आदमी को मारा है। मैंने उसके सिर में इतनी जोर से डंडा मारा कि वह चीख भी नहीं सका।"

"जरूर वह जान से मर गया होगा।"

"फिर मैं उनकी कैद से निकलकर भाग आया। उन्होंने मेरा पीछा भी किया लेकिन मैं उनके हाथ नहीं आया।"

"यदि तू उनके हाथ आ गया होता तो...।"

"इस तरह निराशापूर्ण बातें क्यों कर रही हो रानी-प्रशांत हमारा बेटा है-बहादुर बेटा है। इसने बहादुरी का काम किया है। और तुम एक बहादुर बेटे की मां होकर भी निराशा की बातें कर रही हो।"

"पापा ठीक कह रहे हैं मम्मी।"

"मैं जानती हूं तुम्हारे पापा ठीक कह रहे हैं बेटा-लेकिन तुम बाप-बेटा मां के दिल को नहीं समझ सकते।"

"देखो।" डॉक्टर चावला ने कहा- "तुम्हें अपने-आपको संभालना चाहिए रानी-बच्चे के सामने इस तरह की बातें करना ठीक नहीं है।"

रानी चुप हो गई।

वह आँचल से अपने आंसू पोंछने लगी।

"प्रशांत बेटे!"

"जी पापा।"

"तुम मेरे साथ आओ-मेरे कमरे में।"

"ठीक है पापा।"

रानी ने अपने पति की ओर देखा।

"नहीं।"

"नहीं-क्या नहीं?"

"इस समय आप प्रशांत को कहीं नहीं ले जा सकते। इसे मेरे करीब ही रहने दो।"

"लेकिन मैं इसे ले कहां जा रहा हूं रानी-तुम्हारे पास ही तो घर में ही तो है।"

"मैं जानती हूं आप कहां ले जा रहे हैं क्यों ले जा रहे हैं।"

"मैं कुछ समझा नहीं रानी-तुम कहना क्या चाहती हो?"

"आप इससे पूछताछ आरंभ करने वाले हैं इसीलिए इसे अपने कमरे में ले जा रहे हैं। यही बात है न?"

डॉक्टर चावला ने उसकी ओर देखा।

उसका इरादा ठीक नहीं था।

"लेकिन अभी-अभी तो यह आया है-कितना थका होगा मेरा बेटा। इसे कुछ देर तो आराम करने दीजिए न।"

डॉक्टर चावला के चेहरे पर सोचपूर्ण भाव उभरे।

"ठीक है।" उसने कहा और एक लम्बी सांस ली।

□□□

रॉ की एक टीम प्रशांत चावला के साथ वहां पहुंची तो वहां के स्टेशन इंचार्ज को पता चला कि वह लड़का जो अचानक ही पुलिस स्टेशन पहुंच गया था-न तो वह किसी साधारण आदमी का बेटा था और न ही यह मामला कोई साधारण मामला था।

उसने उस लड़के द्वारा बताए गए पते पर राजधानी पुलिस से संपर्क किया तो उसे फौरन निर्देश दिया गया कि वह बच्चे को तुरंत उसके द्वारा बताए गए पते पर हिफाजत के साथ पहुंचाने की व्यवस्था करे।

उसे यह भी निर्देश दिया गया कि वह इस मामले में कोई कार्यवाही न करे न ही बच्चे से आगे कोई बयान ले।

यह निर्देश उसे उसके उच्चाधिकारियों के माध्यम से दिए गए थे। उस समय इस तरह के निर्देशों का अर्थ न समझ पाने के कारण वह उलझन में था।

लेकिन अब शायद उसे उन सवालों का जवाब मिल गया था।

मामला अत्यंत गंभीर और बेहद महत्वपूर्ण था-उसे इसीलिए कार्यवाही करने से रोका गया था कि उसकी सूचना मिलते ही इस मामले की उच्चस्तरीय जांच का फैसला कर लिया गया था।

उस टीम के पहुंचने के साथ ही उसके उच्चाधिकारियों के निर्देश भी उस तक पहुँच चुके थे कि वह उन लोगों का न केवल सहयोग करे बल्कि उनके निर्देशों का पालन भी करे।

राजधानी से पहुंची उस टीम में उसी लड़के के अलावा तीन उच्चाधिकारी थे!

आते ही उन्होंने अपनी कार्यवाही आरंभ कर दी-पूछताछ का क्रम उन्होंने उसी स्टेशन के इंचार्ज से आरंभ किया जिसका नाम इंस्पेक्टर रणबीर सिंह था।

"यह तो जाहिर है इंस्पेक्टर कि बच्चे को जहां कैद करके रखा गया था वह जगह कहीं आसपास ही होनी चाहिए। क्या आप इसका अनुमान लगा सकते हैं कि वह जगह कहां रही होगी?"

"मैं जरूर अनुमान लगा सकता था सर-किसी ठोस नतीजे पर भी पहुंच सकता था। लेकिन...।"

"लेकिन क्या?"

"मुझे इस मामले में किसी तरह की जांच की कार्यवाही करने से रोक दिया गया था।"

"आई सी।" उस अधिकारी ने कहा- "बाई द वे, अब इस मामले की पूरी जांच की जाएगी और इस जांच को आगे बढ़ाने के लिए सबसे पहले हमें उस जगह का पता लगाना जरूरी है, जहां बच्चे को कैद करके रखा गया था। इसमें यह बच्चा ही हमारी मदद करेगा। इसलिए बच्चे को हम साथ लेकर आए हैं।"

"हालांकि उसने हमें बताया है कि उसे इतनी गलियां पार करनी पड़ी हैं कि उसे वह रास्ता जरा भी याद नहीं है। लेकिन प्रशांत चावला बहुत ही ब्रिलिएंट बच्चा है-बहुत ही प्रतिभाशाली है।"

"हम उसकी मदद करेंगे तो वह जरूर हमें उस जगह तक पहुंचाने में कामयाब हो जाएगा।"

"यह तो आप ठीक कह रहे हैं सर।" इंस्पेक्टर रणवीर सिंह ने कहा- "उसका अनुमान तो मैंने उसी समय लगा लिया था। वह असाधारण प्रतिभा का मालिक है-तभी तो वह इस तरह उन खतरनाक लोगों के चंगुल से अपने-आपको सुरक्षित निकालकर हमारे पास मदद के लिए पहुंच गया।"

"इतना बड़ा काम कोई साधारण बच्चा तो क्या-साधारण पुरुष भी नहीं कर सकता।"

"हां।" उसने कहा- "वह इतना ही प्रतिभावान लड़का है। इसीलिए हमें पूरी आशा है कि लड़के की मदद से हम अपराधियों तक पहुंच सकते हैं।"

"ठीक है सर। आप मुझे आदेश दीजिए, मुझे क्या करना है।"

"हम लड़के को साथ लेकर वह ठिकाना तलाश करेंगे जहां उसे कैद करके रखा गया था। वह ठिकाना हमें मिल गया तो फिर अपराधी भी मिल जाएंगे।"

"मैं इसी समय तैयार हूं सर।"

"इस काम में हमें कुछ सावधानियां भी रखनी पड़ेगी।"

"वह सावधानियां किस तरह की होगी सर?"

"हम इस तरह लड़के को लेकर वह ठिकाना तलाश करेंगे तो संभव है अपराधियों में से किसी की नजर लड़के पर पड़ सकती है जो उसे पहचानता हो।"

"यदि ऐसा हो गया तो वे लोग सर्तक हो जाएंगे। उस स्थिति में वे हमारी पकड़ में नहीं आएंगे।"

"आप ठीक कह रहे हैं सर।"

"इसके लिए आप हमारे साथ तो रहेंगे, लेकिन वर्दी में नहीं। गाड़ी भी हम पुलिस की इस्तेमाल नहीं करेंगे। इसके लिए हम अपनी गाड़ी इस्तेमाल करेंगे। वैसे भी मेरा अनुमान है कि हमें पैदल ही ज्यादा घूमना पड़ेगा।"

"ठीक है सर।"

"प्रशांत चावला का हुलिया भी हमें बदलना पड़ेगा। ताकि वह उनके सामने पड़ भी जाए तो वे उसे आसानी से पहचान न सकें।"

"यह काम तो मेकअप द्वारा ही किया जा सकता है सर।"

"ऑफकोर्स।"

"इसके लिए आपको कोई कष्ट करने की जरूरत नहीं है इंस्पेक्टर। मिस्टर गोस्वामी...।" उसने अपने एक साथी की ओर संकेत करते हुए कहा- "इस काम में माहिर हैं। मात्र दस मिनट में यह प्रशांत चावला का हुलिया इस तरह बदल देंगे कि हम भी उसे नहीं पहचान पाएंगे।"

"यह तो बहुत बढ़िया बात है सर।"

"और यह काम हमें अभी शुरू करना है। क्योंकि हमारे पास ज्यादा वक्त नहीं है। बहुत जल्दी ही हमें अपना काम समाप्त करके वापस लौटना है।"

"पहले आप कोई ऐसी जगह बताइए जहां मिस्टर गोस्वामी अपना काम संपन्न कर सकें।"

"इसके लिए यहां करीब ही मेरा क्वार्टर है-इन्हें जो सामान चाहिए वह बता दें। मैं अभी मंगवा दूंगा।"

"मुझे केवल बाथरूम चाहिए।" गोस्वामी ने कहा- "जहां पानी उपलब्ध हो। इसके अलावा और किसी चीज की जरूरत नहीं।"

"वह तो होगा ही सर।"

"ठीक है-किसी को मेरे साथ भेजिए जो आपके क्वार्टर तक मुझे छोड़ आए।"

"अभी लीजिए सर।" कहकर इंस्पेक्टर ने घंटी बजाई तो एक कांस्टेबल हाजिर हुआ।

"रामसिंह!"

"यस सर।"

"साहब को मेरे क्वार्टर तक छोड़ आओ।" इंस्पेक्टर ने जेब से चाबी निकालकर उस कांस्टेबल की ओर बढ़ा दी।

"यस सर।"

"प्रशांत बेटे-आओ मेरे साथ।" उसने प्रशांत की ओर देखते हुए कहा।

प्रशांत उसी घड़ी अपनी कुर्सी छोड़कर उठ गया।

गोस्वामी ने अपना बैग उठाया-जो काफी भारी प्रतीत होता था तथा प्रशांत चावला को लेकर उस कांस्टेबल के साथ उस कक्ष से बाहर निकल गया।

□□□

गोस्वामी प्रशांत चावला के साथ वापस लौटा तो इंस्पेक्टर रणबीर सिंह मंत्रमुग्ध-सा उस लड़के की ओर देखता रह गया।

यह प्रशांत चावला नाम का वही लड़का था, इसका अनुमान इंस्पेक्टर इसी बात से लगा सकता था कि उस अधिकारी के साथ आने वाला वही लड़का हो सकता था।

यदि वह अकेला आया होता वह उसे पहचान ही नहीं सकता था।

"मेरा विचार है।" अधिकारी के शब्द इंस्पेक्टर रणबीर सिंह के कानों में पड़े तो वह जैसे किसी सपने से जागा- "अब हमें देर नहीं करनी चाहिए।"

"ठीक है।" उसने कहा- "ठीक है सर।"

इसके साथ ही वे सब उठकर बाहर आ गए।

पुलिस स्टेशन के प्रांगण में एक क्रीम कलर की एम्बेसडर मौजूद थी जिसमें वे सवार हो गए।

ड्राइविंग गोस्वामी नाम के उस अधिकारी ने संभाली। इंस्पेक्टर रणबीर सिंह उसके बराबर में बैठा।

प्रशांत चावला को पीछे वाली सीट पर बिठाया गया जिसका शीशा खुला हुआ था। शेष दोनों अधिकारी उसकी बगल में बैठ गए।

गाड़ी पुलिस स्टेशन के प्रांगण से निकलकर दक्षिण दिशा में मुड़ गई।

क्योंकि यह बात संतरी पहले ही बता चुका था कि लड़के को उसने उधर से ही आते देखा था।

"प्रशांत बेटे!"

"जी अंकल।"

"उधर गौर से देखते रहो-उस लोकेशन को याद करने की कोशिश करना जहां से निकलकर तुम मेन रोड पर पहुंचे थे।"

"ठीक है अंकल।"

गाड़ी सामान्य गति से आगे बढ़ रही थी।

गाड़ी कुछ मिनट तक उसी सड़क पर दौड़ती रही। यहां आकर सड़क पर यातायात काफी बढ़ गया था।

इतना तो उसे अब भी याद था कि वह जिस समय मेन रोड पर आया था उस समय वह वहां पर यातायात बहुत ज्यादा था।

इस समय भी यातायात बहुत ज्यादा था इसका मतलब यह सड़क रात-दिन काफी व्यस्त रहने वाली थी।

प्रशांत चावला के चेहरे पर उलझनपूर्ण भाव उभरे।

"अंकल!"

"क्या बात है बेटे?"

"मुझे लगता है जैसे हम आगे निकल आए हैं।"

"तुम्हें ऐसा क्यों लगता है बेटे?"
"क्योंकि यहां जिस तरह की इमारतें नजर आ रही हैं वैसी इमारतें मैंने नहीं देखी थीं।"
"हो सकता है तुम्हें ठीक से ध्यान न रहा हो।"
"मुझे बिल्कुल ऐसा ही लगता है अंकल जैसे हम आगे निकल आए हो।"
"ठीक है-हम वापस चलते हैं।"
इसके बाद गाड़ी वापस घूम गई।
प्रशांत की सीट बदल दी गई-वह दूसरी साइड पर आ गया।
अब वह ज्यादा सहूलियत के साथ उधर देख सकता था। क्योंकि यह बात उसे अच्छी तरह से याद थी कि वह इसी साइड से मेन रोड पर आया था।
गाड़ी अब विपरीत दिशा में दौड़ रही थी।
"क्या हुआ बेटे?"
"अंकल, गाड़ी रुकवाइए।" प्रशांत ने कहा। उसके स्वर में उत्तेजना थी।
"वो गली वहां है।" उसने पीछे की ओर अपनी उंगली का संकेत करते हुए कहा। उसके स्वर में उत्तेजना थी।
"गाड़ी रोको गोस्वामी।" उसने कहा और गाड़ी रुक गई।
उसने अपना चेहरा घुमाकर प्रश्नसूचक नेत्रों से देखा।
"गोस्वामी, तुम गाड़ी लेकर वापस होटल चले जाओ। मेरा विचार है कि अब गाड़ी का इस्तेमाल करना हमारे लिए ठीक नहीं होगा।"
"गाड़ी छोड़कर मुझे वापस आना है क्या?"
"इसकी जरूरत नहीं है।" उसने कहा- "तुम आराम करो।"
"हम जरूरत महसूस करेंगे तो तुम्हें होटल में फोन कर लेंगे।"
"ठीक है।" उसने कहा।
गोस्वामी को छोड़कर बाकी सब बाहर आ गए। प्रशांत तो उसके साथ था ही।
गोस्वामी ने गाड़ी आगे बढ़ा दी।
"प्रशांत बेटे-चलो और हमें बताओ कि तुम कौन-सी गली से इस मेन रोड पर पहुंचे थे।"
"आइए अंकल।"
वे सब प्रशांत चावला के साथ-साथ चल दिए। कुछ दूरी तक चलने के बाद प्रशांत बाईं ओर मुड़ा।
"यही वह गली थी अंकल।" उसने एक चौड़ी गली के मुहाने की ओर संकेत करते हुए कहा।
वह गली काफी चौड़ी थी और उसमें गाड़ी आसानी से अंदर जा सकती थी।
लेकिन उसने जानबूझकर गाड़ी को छोड़ा था क्योंकि उन्हें अपनी मंजिल को तलाश करने में पैदल चलकर ही ज्यादा सुविधा थी।
"तुम्हें ठीक से याद है प्रशांत बेटे?"
"शाबाश!"
"हाँ अंकल-इसमें मुझसे कोई भूल नहीं हुई है।"
इस तरह वह पूरी टीम उस गली में दाखिल हो गई।

कुछ दूर आगे चलने पर गली तीन हिस्सों में बंट गई। दो गलियाँ उस गली के अगल-बगल जा रही थीं तथा एक सीधी चली गई थी।

उस चौराहे पर प्रशांत रुक गया। उसके चेहरे पर उलझनपूर्ण भाव उभरे।

"क्या हुआ बेटे?"

"मुझे याद नहीं आ रहा अंकल, मैं यहां किधर से पहुंचा था।"

"इसके लिए परेशान होने की जरूरत नहीं है प्रशांत बेटे-हम एक-एक करके तीनों गलियों को देख लेते हैं। तुम्हे कहीं-न-कहीं कोई ऐसा चिह्न जरूर नजर आएगा जो आगे बढ़ने के लिए हमारा मार्गदर्शन करेगा। ठीक है न बेटे?"

"ठीक है अंकल।"

"तो सबसे पहले हम सीधे ही आगे बढ़ते हैं।"

और इस तरह वे आगे बढ़ गए।

इस तरह वे कई घंटे तक उस इलाके की गलियों में भटकते रहे। लेकिन अभी तक कोई नतीजा सामने नहीं आया।

लगातार कई घंटे तक पैदल भटकते रहने के कारण वे थकान महसूस करने लगे थे।

प्रशांत चावला तो उनके सामने बच्चा ही था-वह तो और भी ज्यादा थक गया होगा।

रॉ के एक अधिकारी ने उसकी ओर देखा।

"प्रशांत बेटे-तुम बहुत थक गए होंगे इसलिए अब चलकर आराम करते है। कल फिर कोशिश करेंगे।"

"नहीं अंकल।"

"नहीं?"

"मुझे बिल्कुल भी थकान नहीं हो रही। मैं बिल्कुल ठीक हूं। हम शाम तक कोशिश करेंगे। शायद हमारा काम आज ही पूरा हो जाए।"

"लेकिन बेटे...।"

"आप मेरी चिंता बिल्कुल न करें अंकल।"

"प्रशांत बहुत बहादुर लड़का है।" इंस्पेक्टर रणबीर सिंह ने प्रशंसापूर्ण नेत्रों से उसकी ओर देखते हुए कहा।

"इसमें कोई शक नहीं इंस्पेक्टर साहब-प्रशांत बहादुर ही नहीं समझदार भी है।"

"तो क्या हमें प्रशांत का सुझाव मान ही लेना चाहिए?" दूसरे अधिकारी ने कहा।

"ठीक है।" पहले ने कहा- "लेकिन पहले कहीं चलकर चाय वगैरह लेते हैं। उसके बाद फिर से अपना काम आरंभ करेंगे। यहां आसपास में कोई रेस्टोरेंट वगैरह होगा इंस्पेक्टर साहब?"

"जी हां आइए।"

इस समय जहां भटक रहे थे वह एक तंग गली थी-उसके इसके साथ ही वे आगे बढ़ गए।

□□□

सूरज डूबने लगा था।

दोनों और ऊंची-ऊंची इमारतें थीं।

ऊंची-ऊंची इमारतों के कारण ही शाम अपेक्षाकृत कुछ अधिक ही गहरा रही थी।

पूरी टीम के चेहरे पर निराशा और थकान के चिह्न साफ-साफ नजर आ रहे थे।
लेकिन प्रशांत की चाल में तेजी आ गई थी।
उसके चेहरे पर भी अजीब-से भाव थे।
अचानक ही प्रशांत एक जगह पर रुका। उसके चेहरे पर उत्तेजना के भाव नजर आए।
"वो देखिए अंकल।" उसका स्वर भी अत्यंत उत्तेजित था।
सभी की नजरें उसकी ओर घूम गईं।
"यही वो दरवाजा है अंकल-इसी दरवाजे से मैं बाहर आया था।" कहकर वह तेजी से उस दरवाजे की ओर बढ़ा।
इस अंदाज में जैसे वह दौड़कर उस दरवाजे को धक्का मारकर तोड़ देने का इरादा रखता हो।
लेकिन उस ऑफिसर ने लपककर प्रशांत का बाजू पकड़कर उसे रोक लिया।
"अंकल!"
"ऐसे नहीं करते बेटे-इस तरह तो हमारा सारा खेल ही बिगड़ जाएगा।"
"लेकिन अंकल...।"
"पहले तुम सोचकर हमें यह बताओ कि तुम्हें किसी प्रकार का धोखा तो नहीं हो रहा?"
"बिल्कुल नहीं अंकल-मुझे कोई धोखा नहीं हो रहा। यह वही दरवाजा है।"
"तो अभी शांत हो जाओ बेटे-अभी इस दरवाजे को खोलना ठीक नहीं होगा। वे लोग सावधान हो जाएंगे।" कहकर उसने इंस्पेक्टर रणबीर सिंह की ओर देखा।
"आप इस इमारत के बारे में कुछ जानते हैं इंस्पेक्टर साहब?"
"मैं इस इमारत के बारे में भी और इसके मालिक के बारे में भी अच्छी तरह से जानता हूं सर। लेकिन...।"
"लेकिन क्या?"
"लगता है मंजिल पर पहुंचकर भी हमें निराशा ही हाथ लगेगी। हम जिस रहस्य को खोलना चाहते थे वह इस इमारत में ही दफन होकर रह गया है।"
"ऐसा क्या हो गया इंस्पेक्टर साहब?"
"यह दरवाजा दरअसल एक साधारण दर्जे के होटल का पिछवाड़े का दरवाजा है।"
"होटल?"
"जी हां इस होटल का मालिक जयसिंह नाम का एक आदमी था जो कभी छंटा हुआ गुंडा हुआ करता था। पुलिस में उसका अच्छा-खासा रिकॉर्ड है।"
"लेकिन पिछले कुछ दिनों से इस आदमी के बारे में कहा जा रहा था कि इसने अपनी उस जिंदगी से किनारा कर लिया था और अब वह शराफत की जिंदगी गुजार रहा था। यह होटल ही इसकी आमदनी का जरिया था। वर्षों से इसके खिलाफ कोई मामला दर्ज नहीं हुआ।"
"वैसे इस तरह की अफवाहें उड़ती रही हैं कि उसने अपना पुराना धंधा छोड़ा नहीं, बल्कि अब वह पहले की अपेक्षा ज्यादा चालाकी से धंधा चला रहा था और यह होटल उसके गैरकानूनी धंधों का अड्डा है।"
"इन अफवाहों के कारण इसके होटल में पुलिस के छापे भी एक-दो बार पड़े थे लेकिन

पुलिस के हाथ कुछ नहीं मिला।"

"और अंत में पुलिस ने भी यही मान लिया कि वह सब महज अफवाहें थीं। हकीकत में जयसिंह अपनी इस जिंदगी से पूरी तरह छुटकारा पा चुका है।"

"लेकिन अब समझ में आ रहा है कि वह अफवाहें गलत नहीं थीं।"

"और अब जबकि यह बात हमारी समझ में आ गई है तो देर हो चुकी है।"

"देर हो चुकी है?"

"यस सर।"

"किस बात की देर हो चुकी है?"

"क्योंकि अब इन सारी बातों का कोई अर्थ नहीं रह गया है सर।"

"कोई अर्थ नहीं रह गया है?"

"यह आदमी-जयसिंह मर चुका है।"

"मर चुका है-कैसे?"

"इसका कत्ल कर दिया गया है।"

"कत्ल- कब हुआ यह कत्ल?"

"परसों ही।" इंस्पेक्टर रणबीर सिंह ने बताया।

उसकी इस जानकारी पर कई पल तक खामोशी छाई रही।

"यदि उसका कत्ल हुआ है तो।" उस अधिकारी ने कहा। - "इस कत्ल का प्रशांत के अपहरण से गहरा रिश्ता है यह बात मैं दावे के साथ कह सकता हूं।"

"हो सकता है सर।"

"हो सकता नहीं निश्चित रूप से है। मुझे जयसिंह नाम के इस आदमी की पूरी हिस्ट्री चाहिए।"

"यह सब तो मैं आपको आसानी से उपलब्ध करा दूंगा सर।"

"ठीक है-फिलहाल इस होटल को कौन चला रहा है?"

"अभी तो बंद ही पड़ा है सर-आगे भी जयसिंह के बिना यह चल सकेगा, इसकी संभावना कम ही है।"

"ठीक है-अब हमें वापस चलना चाहिए।" उस अधिकारी ने कहा।

और वह पूरी टीम वापस लौट गई।

उस घड़ी उनके चेहरे पर निराशा के भाव थे।

मदिरा की एक घूंट लेने के बाद कर्नल की वर्दी पहने उस व्यक्ति ने अपनी गोद में रखी फाइल का एक और पन्ना पलटा तथा उसे गौर से देखने लगा।

कुछ पल बाद उसने फाइल से अपना चेहरा उठाकर अपने सामने बैठे दूसरे फौजी अफसर की ओर देखा।

"वैलडन मेजर अल्ताफ।" उसने प्रशंसात्मक स्वर में कहा- "वैलडन-इन सारे आदमियों की निगरानी की मुकम्मल व्यवस्था कराओ।"

"वह करा दी गई है सर-इनमें से अब कोई भी ऐसा नहीं है जिसकी प्रत्येक गतिविधि पर हमारी नजर न हो। यूं समझिए कि हम उनकी सांसों की गति तक बता सकते हैं।"

"वैल-वैरी वैल मेजर अल्ताफ! मुझे तुम्हारी काबलियत पर पूरा भरोसा है।"

"थैंक्यू सर।"

"वैसे इन लोगों के बारे में तुमने कोई नतीजा अब तक निकाला।"

"नतीजा तो अभी तक नहीं निकाला सर।" मेजर अल्ताफ ने कहा- "अभी मैं इस फाइल का उतनी बारीकी से अध्ययन नहीं कर पाया। इतना अवसर ही नहीं मिला मुझे। बाद ही निकाल पाऊंगा।"

"लेकिन फिर भी एक धुंधला-सा खाका मैंने इसका जरूर खींचा है। निश्चित नतीजा तो इस फाइल का पूरा विश्लेषण करने के बाद ही आएगा।

"तुमने जो धुंधला-सा खाका खींचा है, मैं उसी के बारे में सुनना चाहता हूं।" मेजर अल्ताफ के चेहरे पर सोचपूर्ण भाव उभरने लगे। पल-भर के लिए उनके बीच मौन छाया रहा।

"मेरा अनुमान है सर कि...।" मेजर अल्ताफ ने कहा- "अजरा नाम की वह औरत ही इस रिंग की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है।"

"क्या नाम बताया तुमने इस औरत का?"

"अजरा।" उसने बताया- "अजरा खान।"

"अजरा खान?"

"यस सर-यह अजरा खान बला की खूबसूरत औरत है। उसकी उम्र तीस को पार कर रही है लेकिन उसे देखकर लगता है जैसे वह अभी बीस भी पार नहीं कर पाई है।"

"इसके बारे में कहा गया है कि यह एक हाई प्राइज्ड कॉलगर्ल है और इसके दीवानों में बड़े-बड़े महत्वपूर्ण आदमी हैं। जिसमें बड़े-बड़े उद्योगपति, राजनीतिज्ञ, प्रशासनिक और यहां तक कि फौजी अफसर तक हैं।"

"इसके हुस्न में वह जादू है कि यह जिसे चाहे अपना दीवाना बनाकर उसे अपने तलुवे चाटने के लिए मजबूर कर सकती है।"

"लेकिन यह खूबसूरत बला स्वयं दौलत की दीवानी है। इसकी दौलत की भूख कभी मिटती नहीं। दुनिया के कई मुल्कों के बैंकों में इसके एकाउंट्स हैं जिनमें अकूत दौलत इकट्ठी है।"

"लेकिन इसके पास जितनी दौलत इकट्ठी हो रही है, दौलत हासिल करने की इसकी भूख उतनी ही बढ़ जाती है। दौलत इसकी बहुत बड़ी कमजोरी है। उसके लिए यह कुछ भी कर सकती है।"

"उसकी इसी कमजोरी का लाभ दुश्मन ने उठाया। उसे एक बहुत बड़ी दौलत का लालच दिया गया ताकि वह अपनी खूबसूरती के बल पर उन लोगों को अपने जाल में फांस सके जो हमारे दुश्मनों के काम आ सकें और वे उनका उपयोग हमारी तबाही के लिए कर सकें।"

"इस तरह उन्होंने हमारे तीन फौजी अफसरों को व एक प्रशासनिक उच्चाधिकारी को देश के साथ गद्दारी करने पर राजी कर लिया।"

"बदले में उसे अजरा खान नाम की उस खूबसूरत बला के हुस्न के जलवे लूटने को मिले ही साथ ही उन्हें बहुत बड़ी-बड़ी रकम भी इस गद्दारी के बदले में दी गईं।"

"उन्हें इसमें कामयाबी हासिल भी हुई।"

"इसका सबूत इस फाइल में मौजूद वे तस्वीरें हैं जिनमें हमारा यह गद्दार अफसर उस

हिंदुस्तानी एजेंट अनिल वर्मा के साथ बड़े दोस्ताना लहजे में हाथ मिलाते दिखाया गया।"

"इन तस्वीरों के बाद फिर किसी दूसरे सबूत की जरूरत ही नहीं रह जाती सर।"

"हिंदुस्तानी इंटेलीजेंस उसे अपनी बहुत बड़ी कामयाबी मान रही है।"

"लेकिन यह उन लोगों की कितनी बड़ी बेवकूफी है-वे नहीं जानते कि उनकी यह कामयाबी हकीकत में बहुत बड़ी नाकामी है।"

"वे यह भी नहीं जानते कि उनकी प्रत्येक हरकत पर हमारी नजर है और सब कुछ वैसा ही हो रहा है जैसा कि हम चाहते हैं।"

"वैल-वैल मेजर अल्ताफ।" कर्नल को स्वर अत्यंत उत्साह से भरा हुआ था-"तुम्हारा यह अनुमान हकीकत से दूर नहीं है। इस फाइल का बारीकी से अध्ययन करने के बाद भी जो नतीजा निकलेगा, वह इससे जुदा नहीं होगा।"

"मुझे भी ऐसी ही उम्मीद है सर।"

"तुम्हें उम्मीद होनी भी चाहिए इस तरह हम दुश्मन को एक इतनी बड़ी चोट देने में कामयाब हो सकेंगे जिसे वह वर्षों तक नहीं भुला सकेगा।"

"आप ठीक कहते हैं सर।"

"अब तुम्हारा वो एक्शन कब होने जा रहा है जिसका हमें बेसब्री से इंतजार हो रहा है?"

"उस हिंदुस्तानी एजेंट अनिल वर्मा की गतिविधियों से तो ऐसा लगता है सर कि वह वक्त बहुत करीब आ गया है और हम इसके लिए पूरी तरह से तैयार हैं।"

"यानी निश्चित तौर पर नहीं बता सकते?"

"निश्चित तौर पर तो इसलिए नहीं बताया जा सकता सर कि यह सब अनिल वर्मा पर निर्भर करता है कि वह कब क्या रुख अपनाता है।"

"हूं।" उसने एक लम्बी हुंकार भरी और उसके साथ ही मदिरा का एक लम्बा घूंट लिया।

फिर उसने अपनी गोद में रखी फाइल को बंद किया तथा उसे मेजर अल्ताफ की ओर बढ़ा दिया।

फाइल को लेकर मेजर अल्ताफ उठा।

"ओके सर-खुदा हाफिज।"

"खुदा हाफिज।"

इसके बाद मेजर अल्ताफ कुछ कदम के फासले पर खड़ी फौजी जीप की ओर बढ़ गया।

"मेजर अल्ताफ दिस साइड।" उसने माइक्रोफोन को मुंह के करीब लाते हुए कहा-"रिपोर्ट दो-ओवर।"

"उसे गिरफ्तार किया जाना अब जरूरी हो गया है सर-एक मिनट के लिए भी उसे आजाद रखना खतरनाक होगा। ओवर...।"

"क्यों खतरनाक होगा?"

"उसने थर्टी फाइव गोल्डन पर बम लगाकर उसकी मुकम्मल तबाही का सामान जुटा दिया है सर।"

मेजर अल्ताफ के होंठों पर अर्थपूर्ण मुस्कराहट उभरी-लेकिन उसने हैरत का प्रदर्शन करते हुए कहा।

"क्या कहा-बम लगा दिए हैं?"

"यस सर।"

"उसकी यह मजाल हो गई कि उसने हमारे ठिकाने पर बम लगा दिए?"

"उसकी इतनी मजाल नहीं हो सकती थी सर। लेकिन...।"

"लेकिन क्या?"

"आपका आदेश था कि वह जो चाहता है, उसे करने दिया जाए। हम केवल उसकी गतिविधियों पर नजर रखें।"

"ओह यस।"

"अब हमारे लिए क्या आदेश है सर-उसे गिरफ्तार कर लिया जाए? ओवर...।"

"नहीं।"

"नहीं?"

"हां-अभी उसे गिरफ्तार नहीं किया जाए...।"

"लेकिन सर...।"

"हम देखना चाहते हैं कि उसका निशाना केवल थर्टी फाइव गोल्डन ही है या वह हमारे कुछ और ठिकानों को भी तबाह करने का इरादा रखता है?"

"लेकिन सर, यह बहुत खतरनाक होगा।"

"खतरनाक कैसे होगा-उसकी सारी कार्यवाही हमारी नजरों में है तो खतरनाक कैसे होगा?"

"यह बम रिमोट कंट्रोल से चालू होंगे सर-और इनका नियंत्रण पूरी तरह से उसके हाथ में है।"

"वह किसी समय भी ऐसा कर सकता है। उसे रोक पाना हमारे लिए असंभव होगा।"

"असंभव नहीं होगा।"

"लेकिन सर...।"

"इसकी चिंता करने की तुम्हें जरूरत नहीं है। तुम्हें बस उस पर नजर रखनी है।"

"ओके सर।" उधर से कहा गया- "ओके।"

"अभी वह कुछ और ठिकानों पर बम लगा सकता है-उसे ऐसा करने दो। बल्कि उसके इस काम में रुकावट हो भी तो ऐसा होने मत दो।"

"ठीक है सर।"

"उसे इस बात का अहसास तक नहीं होना चाहिए कि उसके ऊपर नजर रखी जा रही है।"

"नहीं होगा सर-बिल्कुल अहसास नहीं होगा। लेकिन...।"

"अब भी लेकिन...?"

"इस तरह तो वो...।"

"इसके बारे में सोचकर तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं है। क्योंकि यह बात तुम्हारी समझ में नहीं आने वाली।"

"ओके सर।"

"ओवर एंड ऑल।" कहते हुए मेजर अल्ताफ ने संपर्क समाप्त कर दिया।

लेकिन उसने हैडफोन कानों से नहीं उतारा और वह दोबारा यंत्रों के साथ छेड़छाड़ करने

लगा।

कुछ पल बाद ही वह दोबारा किसी से संपर्क स्थापित करने में कामयाब हो गया।

"हैलो...हैलो कर्नल...मेजर अल्ताफ स्पीकिंग दिस साइड, ओवर...।"

"बोलो मेजर-मैं सुन रहा हूं, ओवर।"

"उसने वो कार्यवाही आरंभ कर दी है सर जिसकी हमें उससे उम्मीद थी और जिसका इंतजार था हमें। ओवर...।"

"गुड।" उधर से कहा गया- "वैरी गुड मेजर अल्ताफ। मुझे पहले ही इस बात का विश्वास था कि वह तुम्हारे द्वारा फैलाए गए जाल में स्वयं ही आकर फंसेगा। उस जाल से वह बच नहीं सकेगा।"

"अब हमें इस बात का इंतजार है सर कि वह अपना बाकी काम भी जल्दी से पूरा कर ले। क्योंकि उसके बाद ही हमारा एक्शन शुरू होगा।"

"अब वो देर क्यों करेगा-या करेगा?"

"देरी करने का कोई कारण तो नहीं है सर। बशर्ते कि ऐन वक्त पर उसकी हिम्मत ही जवाब न दे जाए।"

"ऐसा लगता तो नहीं कि वह इस तरह हिम्मत हार जाने वालों में से हो।"

"इतनी हिम्मत वो कर भी नहीं सकता था सर।" मेजर अल्ताफ ने कहा।

शायद उसकी तारीफ सुनना मेजर को अच्छा नहीं लगा- "यह जितना भी कर रहा है, इसी भूल में कर रहा है कि उसके ऊपर किसी की नजर नहीं है।"

"एक ही बात है-खैर अब वह वक्त आ गया है कि तुम्हारा एक्शन चालू हो-क्या इसके लिए तुम्हारी तैयारी मुकम्मल है?"

"मेरी सारी तैयारी मुकम्मल है सर-इसमें कोई ढील नहीं।"

"गुड-लेकिन इसके बावजूद भी तुम्हें पूरी होशियारी के साथ काम करना है।"

"आप निश्चिंत रहें सर-हमारी ओर से कोई गफलत नहीं होगी। ओवर...।"

"ओवर एंड ऑल।"

इसके साथ ही उसने हैडफोन कानों से उतारकर हैंगर से लटका दिया और वह नियंत्रण कक्ष से बाहर निकल आया।

उस घड़ी उसकी आंखों में शिकारियों जैसी चमक थी।

□□□

यह पवन कुमार की प्रेरणा से ही संभव हो सका था कि पूनम आज शराफत की जिंदगी गुजार रही थी।

उसी के प्रयासों से एक प्राइवेट फर्म में उसे नौकरी मिल गई थी। इतना ही नहीं, उसने व्यक्तिगत रूप से अपनी पढ़ाई भी आरंभ कर दी थी।

पवन कुमार ने ही उसे यह सलाह दी थी कि वह ग्रेजुएशन कर लेगी तो उसे कोई अच्छी-सी सरकारी नौकरी मिल सकती है और इसमें वह उसकी पूरी मदद करेगा।

इस तरह वह अपना भविष्य बहुत उज्ज्वल देख रही थी।

इसके लिए उसे कड़ी मेहनत की जरूरत थी और मेहनत से वह जी चुराने वाली नहीं थी।

अब तो वह जब भी अपनी जिंदगी के बारे में सोचती थी वह अपने-आपसे ही शर्मिंदा होने लगती थी।

उस समय वह ऐसा नहीं सोचती थी लेकिन अब सोचती थी-उसने अपना वह रास्ता न बदल लिया होता तो इसका परिणाम कभी भी उसके लिए अच्छा नहीं हो सकता था।

क्योंकि वह रास्ता जो उसने चुन लिया था-वह जेल की चारदीवारी में जाकर समाप्त होता था।

पवन कुमार ने उसके इस भयंकर अंजाम को रोक लिया था।

यह वही आदमी था जिसे उसने पहली बार नफरत की नजर से देखा था।

और आज वह उसी आदमी के लिए बेचैन थी।

उसे महीनों गुजर गए थे।

इस बीच उसके बारे में पूनम को कोई भी सूचना हासिल नहीं हो सकी थी।

यह भी अजीब बात थी कि वह उसके बारे में आज तक कुछ भी नहीं जान सकी थी।

वह केवल इतना ही जानती थी कि पवन कुमार एक बहुत बड़ी व्यापारिक कंपनी में किसी ऊंचे पद पर काम करता था।

लेकिन वह उस कंपनी का नाम तक नहीं जानती थी।

पुलिस स्टेशन में उसने अपने परिचय के साथ उस कंपनी का नाम बताया भी था।

लेकिन उस समय उसका ध्यान ही उस ओर नहीं था-उस कंपनी का नाम उसे बिल्कुल भी याद नहीं था।

उसके बाद पवन कुमार ने कभी उसे अपनी कंपनी का नाम नहीं बताया। और पूनम को इसके बारे में जानने की कभी जरूरत ही महसूस नहीं हुई।

यही कारण था कि वह उसके बारे में अब कहीं से भी कोई भी जानकारी हासिल नहीं कर सकती थी।

अब उसे अपनी इस भूल का अहसास हो रहा था।

उसे पवन कुमार के बारे में इतना तो जान ही लेना चाहिए था।

उसे यह बात भी अजीब-सी लगी थी कि वह किसी विशेष ट्रेनिंग के लिए विदेश जा रहा था लेकिन उसकी यह यात्रा पूरी तरह से गोपनीय थी।

आखिर ऐसा क्यों था?

लेकिन पवन कुमार ने जो कुछ उसे बताया था उस पर किसी प्रकार का भी संदेह करने का कोई कारण था ही नहीं।

लेकिन यह बात उसे लगातार सता रही थी कि पवन कुमार ने उसे किसी भी तरह सूचित करने का कोई प्रयास नहीं किया।

आखिर ऐसी भी क्या गोपनीयता हो सकती थी?

वह इस विषय में जरूर उससे कुछ और ज्यादा जानकारी हासिल करने की कोशिश करती। लेकिन उसे यह सब सोचने का वक्त ही कहां मिल सका था!

पवन कुमार ने जब उसे अपने जाने की बात कही थी तो वह स्वयं इतनी जल्दबाजी में था कि उसकी पूरी बात सुनने का वक्त भी उसके पास नहीं था।

इसलिए पूनम केवल उसकी बात ही सुन सकी थी-अपनी कहने या उसके बारे में सोचने

का वक्त ही उसे नहीं मिला था।

फिर भी उसे इस बात की तसल्ली थी कि वह कोई बहुत लम्बी अवधि के लिए नहीं जा रहा था।

केवल कुछ महीनों की ही बात थी-उसके बाद तो उसे वापस आ ही जाना था।

हालांकि अभी तक उनके बीच में ऐसा कोई रिश्ता नहीं-लेकिन पूनम उसके साथ भविष्य के जाने कितने हसीन सपने देख चुकी थी।

ऐसा उसने अकेले नहीं किया था बल्कि ऐसे सपने देखने के लिए पवन कुमार ने बराबर उसे प्रेरित किया था।

कोई रिश्ता न होते हुए भी उनके बीच एक अनजाना रिश्ता इस तरह कायम हो चुका था कि दोनों एक-दूसरे के बिना जीवन की कल्पना तक नहीं कर सकते थे।

अब उसे लग रहा था जैसे उस समय का इंतजार करना कितना कठिन था जिसकी कोई समय सीमा ही निर्धारित न की गई हो।

इंतजार की अवधि भले ही लम्बी होती लेकिन उसे इस बात की जानकारी होती कि यह इंतजार उसे कब तक करना होगा, तब शायद वह आसानी से उस समय तक इंतजार कर सकती थी।

लेकिन अनिश्चितता के इस वातावरण में कभी-कभी उसका दिल किसी अनजानी-सी आशंका से डरने लगता था।

कहीं उसके साथ कोई धोखा तो नहीं हो रहा-कोई खिलवाड़ तो नहीं किया गया उसके साथ?

फिर उसे अपने आपसे ही शर्मिंदगी भी महसूस होने लगती थी कि उसने पवन कुमार के बारे में इतनी घटिया बात क्यों सोच ली।

उस आदमी के बारे में जिसके कारण वह आज सम्मान की जिंदगी जी रही थी।

वही आदमी उसके साथ कोई धोखा कर सकता है, ऐसा सोचना भी गुनाह है।

और फिर इसका कोई कारण भी तो नहीं था।

पवन कुमार का ऐसा कोई स्वार्थ भी तो नहीं था जिसके लिए वह उसके साथ धोखे वाली बात करता।

उसे तो बस इतनी ही शिकायत थी कि पवन कुमार ने अपने लौटने के बारे में उसे कोई निश्चित बात नहीं बताई थी। वह उसे चिट्ठी तो लिख सकता था।

यदि उसकी यह यात्रा इतनी ही गोपनीय थी-तब भी क्या फर्क पड़ने वाला था-वह उसकी गोपनीयता तो भंग नहीं कर सकती थी।

या फिर उसे इतना विश्वास ही नहीं था।

सोचते-सोचते रात काफी गुजर चुकी थी।

उसकी आंखें भारी होने लगी थीं।

फिर नींद आकर कब उसके ऊपर हावी हो गई उसे इसका पता ही न चल सका।

लेकिन वह पूरी तरह से नींद की गोद में समा भी नहीं पाई थी कि उसकी नींद टूट गई।

इसका कारण वह दस्तक थी जो उसके दरवाजे पर हो रही थी।

उसके चेहरे पर उलझनपूर्ण भाव उभरे।

‘कौन हो सकता था इस समय?’

उस घड़ी दस्तक बंद थी।

‘कहीं उसे वहम तो नहीं हुआ?’ उसने सोचा। लेकिन यह वहम नहीं था। दरवाजा खटखटाने की आवाज उसने स्पष्ट सुनी थी। उसी के कारण उसकी नींद टूटी थी।

अभी वह निश्चय भी नहीं कर पाई थी कि दरवाजा फिर से खटखटाया गया।

वह बिस्तर पर उठकर बैठ गई।

अब तो वहम वाली कोई बात थी ही नहीं। लेकिन यह उलझन ज्यों-की-त्यों थी कि इतनी रात गए कौन हो सकता है?

पवन कुमार-यह नाम उसके जेहन में चिंगारी की तरह चमका।

आने वाला कहीं पवन कुमार ही तो नहीं लेकिन वह इस तरह? इतनी रात गए?

शायद वह उसे सरप्राइज देना चाहता हो।

बस उसे अपने सवाल का जवाब मिल गया और कोई और तो इस समय हो ही नहीं सकता था।

उसी घड़ी वह उठकर दरवाजे की ओर बढ़ी।

उस समय ऐसा लग रहा था जैसे उसके कदम हवा में तैर रहे हों।

उसने दरवाजा खोला।

और दरवाजा खोलते ही उसे लगा जैसे उसका कोई बहुत ही हसीन सपना टूट गया हो।

क्योंकि दरवाजे पर उसे पवन कुमार की सूरत नजर नहीं आई।

बल्कि जो चेहरे उसे नजर आए, उन्हें देखकर उसकी आंखों में हैरत के भाव उभरे।

वे तीनों चेहरे उसके लिए नितांत अजनबी थे।

शक्ल-सूरत से पूनम को वे कोई शरीफ आदमी भी नजर नहीं आ रहे थे। उनके चेहरे से क्रूरता टपकती साफ-साफ नजर आ रही थी।

पूनम के जिस्म में एक बार आतंक की लहर दौड़ती चली गई।

लेकिन चेहरे पर आ गए आतंक के भावों को उसने अंदर ही छिपा लिया।

“कौन हो तुम लोग?” उसने अपना लहजा कठोर बनाने की कोशिश करते हुए कहा।

“पूनम।” उनमें से एक ने कहा- “यही नाम है तुम्हारा?”

पूनम के चेहरे पर हिचकिचाहट के भाव उभरे।

“तुमने जवाब नहीं दिया?”

“हाँ-मेरा नाम तो यही है। लेकिन तुम कौन हो और इतनी रात गए यहां आने का कारण क्या है?”

उस व्यक्ति के होंठों पर अर्थपूर्ण मुस्कान उभरी।

“इतनी रात गए आए हैं तो कोई कारण तो होगा ही पूनम बेबी। बिना किसी विशेष कारण के कौन किसके घर आता है, वह भी इतनी रात गए।”

“वह कारण क्या है?”

“अब सारी बात यहां दरवाजे पर खड़े-खड़े ही तो नहीं हो सकती। दरवाजे से तो हटो।”

“नहीं।”

“नहीं?”

"मैं इस तरह किसी अनजबी को अपने घर आने की इजाजत नहीं दे सकती, जब तक कि वह अपना परिचय व आने का कारण स्पष्ट न करे।"

उत्तर में उसके होंठों पर एक बार फिर अर्थपूर्ण मुस्कराहट उभरी।

"लगता है तुम किसी गलतफहमी का शिकार हो रही हो पूनम बेबी।"

"गलतफहमी-कैसी गलतफहमी?"

"यह कि हमें अंदर आने के लिए तुम्हारी इजाजत की जरूरत पड़ेगी।"

पूनम के चेहरे पर हैरत के भाव उभरे।

"क्या मतलब क्या मतलब है तुम्हारा?"

उत्तर में उस व्यक्ति का एक हाथ उठा तथा पूनम को एक ओर हटाते हुए अंदर आ गया। उसके बाकी साथी भी उसके साथ ही अंदर आ गए।

पूनम अपने स्थान पर खड़ी-खड़ी ही उनकी ओर घूम गई।

उसकी आंखों में हैरत व आतंक के मिले-जुले भाव थे।

वह अभी तक उन लोगों का उद्देश्य नहीं समझ पाई थी, लेकिन यह बात उसकी समझ में आ रही थी कि उनके इरादे अच्छे नहीं थे।

"अब तुम्हें अंदर आने के लिए किसी से इजाजत लेने की जरूरत नहीं है।" उसने पूनम की ओर देखते हुए कहा- "अब भी दरवाजे पर क्यों खड़ी हो? अंदर आओ।"

"क्या चाहते हो तुम लोग?"

"हम तुम्हें वही तो बताने जा रहे हैं और वह जानकारी तुम्हारे लिए बहुत ही धमाकेदार होगी।"

पूनम उलझनपूर्ण चेहरा लिए उनकी ओर बढ़ी।

उस व्यक्ति ने जेब से पोस्टकार्ड साइज की एक तस्वीर निकाली तथा उसे पूनम के सामने कर दिया।

"इस आदमी को पहचानती हो?"

पूनम की नजर उस तस्वीर पर पड़ी-उसकी आंखों में हैरत के भाव उभरे।

यह पवन कुमार की तस्वीर थी।

"पहचानती हो इस आदमी को?"

"क्यों।" पूनम ने पूछा- "क्यों पूछ रहे हो?"

"यानी कि पहचानती हो।"

"लेकिन बात क्या है?" पूनम का दिल किसी अनजानी-सी आशंका से धड़क उठा- "यह तस्वीर तुम्हारे पास कहां से आई और तुम इसके बारे में क्यों पूछ रहे हो?"

"पहले तुम बताओ कि यह आदमी कौन है?"

पूनम ने तुरंत इसका कोई उत्तर नहीं दिया।

"यानी बताना नहीं चाहती-कोई बात नहीं। हमारे लिए यही जानना काफी है कि तुम इस आदमी को पहचानती हो। और यह बात साबित हो चुकी है। बाकी इसके बारे में हम सब कुछ जानते हैं।"

"लेकिन इन्हें हुआ क्या है?"

"हुआ तो कुछ भी नहीं है-मजे में है। तुम इस आदमी को पवन कुमार के नाम से ही

जानती हो न?”

“पवन कुमार के नाम से-कहना क्या चाहते हो? मैं क्या जानती हूं-यह पवन कुमार है ही।”

“पवन कुमार के अलावा वह और भी बहुत कुछ है-यह सब तुम शायद नहीं जानतीं।”

“मैं क्या नहीं जानती?”

“यह सब जानने के लिए ही तुम हमारे साथ चल रही हो।”

“मैं तुम्हारे साथ? कहां?”

“यह सब तुम्हें यहां नहीं बताया जा सकता-हमारे साथ चलो।”

“नहीं।”

“नहीं?”

“मैं सारी बात जाने बिना और यह जाने बिना कि तुम लोग कौन हो-तुम्हारे साथ कहीं नहीं जाऊंगी।”

“यह काम तुम अपनी मर्जी से नहीं कर रही पूनम बेबी।”

“क्या मतलब?”

उस घड़ी उन तीनों के हाथों में रिवॉल्वर नजर आए। पूनम कुछ समझ पाती, इससे पहले ही वे तीनों रिवॉल्वरें उसके जिस्म से सट गई।

पूनम की आंखें आतंक से चौड़ी होती चली गई।

अचानक ही उस पहाड़ी व शांत इलाके में जैसे भूकम्प आ गया हो-कानों के पर्दो को फाड़ देने वाले विस्फोट से वह पूरा इलाका कांप गया। इसके साथ ही आग व धुएं का एक गुब्बार आसमान की ओर उठता नजर आया।

और फिर आधे मिनट बाद ही दूसरा धमाका हुआ।

इसके बाद तो जैसे कोई घमासान जंग छिड़ गई हो। एक के बाद एक धमाकों ने जैसे पूरे इलाके को नर्क में बदलकर रख दिया।

धमाकों के अलावा कोई आवाज नहीं थी-कोई आवाज थी भी तो वह धमाकों की आवाज में दबकर रह गई थी।

इस तरह लगातार पांच धमाके हुए।

लेकिन धमाके होने के बाद भी उनकी प्रतिध्वनि पहाड़ियों से टकरा-टकराकर बहुत देर तक सुनाई देती रही।

उसके बाद सन्नाटा।

लेकिन विस्फोटों से पैदा होने वाली आग का धुआं जैसे पूरे आकाश में छा गया था-इस तरह की सूरज की रोशनी भी नजर आनी बंद हो गई थी।

इसके लगभग दस मिनट बाद फौजी सायरन की आवाजों से एक बार फिर वह पूरा इलाका गूंज उठा।

और इसके कुछ देर बाद ही फौजी गाड़ियों का एक पूरा काफिला तेजी से विस्फोटों की दिशा में दौड़ता नजर आया। गाड़ियों की छतों पर लगे सायरनों की आवाज ने वातावरण को और भी ज्यादा खौफनाक बना दिया था।

□□□

उस महत्वपूर्ण उच्चस्तरीय बैठक की अध्यक्षता मेजर अल्ताफ कर रहा था जिसमें आर्मी के चार और बड़े ऑफिसर मौजूद थे। उन सभी के सामने वह फाइलें रखी हुई थीं जो स्वयं मेजर अल्ताफ ने उन्हें उपलब्ध कराई थीं।

अभी वह सारे अधिकारी उन फाइलों को ही देख रहे थे।

उसी घड़ी एक और फौजी अधिकारी अंदर दाखिल हुआ तथा उसने एड़ियां बजाकर सैल्यूट किया।

मेजर अल्ताफ ने प्रश्नसूचक नेत्रों से उसकी ओर देखा।

"सर-अभी-अभी सूचना मिली है कि थर्टी फाइव गोल्डन में स्थित हमारे कैम्प को बमों से उड़ा दिया गया है। उसे पूरी तरह से तबाह करके मलबे के ढेर में बदल दिया गया है।"

मेजर अल्ताफ ने बड़े धैर्यपूर्ण अंदाज में इस सूचना को सुना।

फिर बेहद हैरतअंगेज ढंग से उसके चेहरे पर चिंता व परेशानी के लक्षण की बजाय उसके होंठों पर अर्थपूर्ण मुस्कराहट उभरी।

"तुम बहुत जल्दबाजी कर रहे हो ऑफिसर ।" मेजर अल्ताफ ने उसकी ओर देखते हुए कहा।

"सर।"

"अभी इस तरह की और भी सूचनाएं तुम्हारे पास आने वाली है। इसलिए तुम्हें कंट्रोलिंग नहीं छोड़नी चाहिए थी। यह सूचना तुम मुझे वहीं बैठे-बैठे दे सकते थे।"

उस अधिकारी के चेहरे पर हैरत के भाव उभरे।

"वापस जाओ ऑफिसर और अपनी सीट संभालो। क्योंकि किसी भी समय इस तरह की सूचनाएं तुम्हारे वायरलेस पर आने वाली हैं।"

"ऐसी प्रत्येक सूचना से मुझे अवगत कराते रहो। इसके लिए तुम्हें यहां आने की जरूरत नहीं है जब तक तुम्हें इसका आदेश न दिया जाए।"

"ओके सर।"

"यू मे गो नाऊ।"

उसने एक बार फिर फौजी अंदाज में सैल्यूट किया तथा पंजों के बल पीछे घूम गया और इसके साथ ही दरवाजा पार कर गया।

"सुना आप लोगों ने?" उसके जाने के बाद मेजर अल्ताफ ने उन लोगों की ओर देखते हुए कहा ।

सभी ने अपना चेहरा उठाकर मेजर अल्ताफ की ओर देखा।

उनमें से किसी के चेहरे पर भी उस अधिकारी की तरह हैरत या उत्तेजना के भाव नहीं थे।

शायद वे इन विस्फोटों का रहस्य जानते थे।

"जैसा कि आप लोगों ने सुना-उस हिंदुस्तानी एजेंट अनिल वर्मा का काम लगभग समाप्त हो चुका है। अभी कुछ और कैम्पों की तबाही की सूचना बस पहुंचने ही वाली है। इसके साथ ही उसका काम मुकम्मल रूप से पूरा हो जाएगा।"

"और अब हमारा काम शुरू होता है।"

"उन लोगों की फाइलें इस समय आपके सामने हैं जिन्होंने उस हिंदुस्तानी एजेंट के साथ

मिलकर मुल्क के साथ गद्दारी की है। अब समय आ गया है कि उन्हें उनकी गद्दारी की सजा दी जाए।"

"यह सजा उन लोगों को फौजी कानून के तहत दी जाएगी जो कि इतनी भयंकर होगी कि आगे से कोई मुल्क के साथ गद्दारी करने की बात सोच भी नहीं सकेगा।"

"इसके साथ ही अब आप लोग यह भी जान ही चुके हैं कि हमारे जिस कैम्प को उड़ाया गया है और कुछ दूसरे कैम्पों को अभी उड़ाया जाने वाला है-उससे हमें बहुत ही मामूली सा नुकसान हुआ है।"

"वह हिंदुस्तानी एजेंट उन कैम्पों को इसलिए तबाह कर रहा है, कि वहां हमारे वह प्रशिक्षण कैम्प चलाए जा रहे हैं, जहां से आतंकवाद की ट्रेनिंग देकर उन्हें हिंदुस्तान भेजा जाता है। लेकिन हकीकत में ऐसा नहीं है।"

"देखने से ऐसा लगता है कि वे प्रशिक्षण केंद्र हैं। जबकि हकीकत में वहां कुछ ऐसे लोगों को रखा गया है जो कि एक पड़ोसी मुल्क में चल रहे गृहयुद्ध के कारण हमारे यहां शरण लिए हुए हैं।"

"इस तरह उन कैम्पों में मारे जाने वालों में एक भी आतंकवादी नहीं है और हमारे पास इस बात के ठोस सबूत हैं।"

"इसके पीछे हमारा उद्देश्य हिंदुस्तानी इंटेलीजेंस को गुमराह करके उसकी योजना को नाकाम करना है जिसमें हमें पूरी कामयाबी मिली है।"

"हमने जिस तरह से उन कैम्पों को तबाह हो जाने दिया है, इसका एक और भी कारण है जो पहले कारण से ज्यादा महत्वपूर्ण है।"

"सच तो यह है कि यह वही कारण है जिसके लिए हमने जानबूझकर ऐसा होने दिया है।" कहकर मेजर अल्ताफ पल भर के लिए रुका।

वहां मौजूद अधिकारियों ने उत्सुकता व प्रश्नसूचक भाव से मेजर अल्ताफ की ओर देखा।

इसका कोई दूसरा कारण भी रहा होगा, इस विषय में उन्होंने सोचा तक नहीं था।

"दरअसल आज तक।" मेजर अल्ताफ ने कहा- "जब भी यह मामला अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर उठाया गया है, उसमें हमें मात खानी पड़ी है।"

"हिंदुस्तान की कूटनीति ने हर बार हमें शिकस्त दी है। लेकिन इस बार ऐसा नहीं होगा।"

"इस बार हमने ऐसा प्लान बनाया है कि हम पूरी दुनिया के सामने यह साबित कर सकेंगे कि अपने-आपको शांति का पुजारी कहने वाले हिंदुस्तान की हकीकत इसके ठीक विपरीत है।"

"वह एक आक्रामक मुल्क है और जिस आतंकवाद के लिए स्वयं बढ़ावा दे रहा है।"

"और यदि हम इसमें कामयाब हो गए, जो कि अब निश्चित है तो यह हमारी बहुत बड़ी कूटनीतिक विजय होगी और हिंदुस्तान को पूरी दुनिया के सामने शर्मिंदा होना पड़ेगा। उसे अपमान का वो घूंट पीना पड़ेगा, जिसकी वह कल्पना भी नहीं कर सकता।"

"कैसे?" एक अधिकारी ने उत्सुकतापूर्ण लहजे में प्रश्न किया- "कैसे होगा यह सब?"

मेजर अल्ताफ के होंठों पर अर्थपूर्ण मुस्कराहट उभरी।

"हमारे पास इस बात के सबूत तो हैं ही कि उन कैम्पों में वे निर्दोष और निरीह लोग हैं

जो युद्ध की मार से बचने के लिए वहां शरण लिए हुए थे।"

"हम लोग मानवता की भावना से उनकी मदद कर रहे थे। उन्हीं लोगों पर बम बरसाकर अमानवीयता और शैतानियत का सबूत देकर मानवता को कलंकित किया है जिसका कि वह स्वयं को अलम्बरदार कहकर पूरी दुनिया को धोखा दे रहा है।"

"और इसे साबित करेगा स्वयं वह हिंदुस्तानी एजेंट जिसका नाम अनिल वर्मा है और जो स्वयं इन विस्फोटों के लिए जिम्मेदार है। यह भी कि उसे हिंदुस्तानी इंटेलीजेंस ने वहां की सरकार की सहमति से इस अमानवीय काम को अंजाम देने के लिए भेजा है।"

"यह हिंदुस्तानी एजेंट अनिल वर्मा कुछ देर बाद ही हमारी हिरासत में होगा।" मेजर अल्ताफ ने कहा।

ठीक उसी समय उसके सामने रखे टेलीफोन की घंटी बजी।

उसने अपना हाथ बढ़ाकर रिसीवर उठाया।

"यस।"

फिर वह कुछ पल तक उस फोन कॉल को सुनता रहा और अंत में उसने रिसीवर वापस रख दिया।

"ऐसा ही एक और कैम्प तबाह कर दिया है।" मेजर अल्ताफ ने बताया-"अभी कुछ और कैम्पों की तबाही की सूचनाएं हमारे पास पहुंचने वाली हैं और जैसे ही अंतिम सूचना हमें मिलेगी, उसी समय हमारी कार्यवाही आरंभ हो जाएगी।"

"हिंदुस्तानी इंटेलीजेंस को भी शायद यह सूचनाएं मिल रही होंगी।"

"अपनी इस सफलता पर वे खुश हो रहे हों। जबकि यह बात उनके फरिश्ते भी नहीं जानते कि हमारे प्रशिक्षण शिविर बदस्तूर चल रहे हैं। वे कहां और किस तरह चलाए जा रहे हैं इसकी भनक तक उनको नहीं है।"

"आज की रात हमारे लिए जश्न की रात होगी। क्योंकि हम अपने दुश्मन के साथ लड़ी जाने वाली एक बहुत बड़ी और बहुत लम्बी कूटनीतिक जंग जीतने जा रहे हैं।" उसने उत्साहित स्वर में कहा।

फिर उसने एक अधिकारी की ओर देखा।

"कैप्टन अकरम!"

"यस सर।"

"तुम जानते हो कि इस तरह तुम्हारे पास सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। अनिल वर्मा नाम के उस हिंदुस्तानी एजेंट की गिरफ्तारी को तुम्हें ही अंजाम देना है।"

"मैं जानता हूं सर-मुझे खुशी है कि हमारे इतने बड़े दुश्मन की गिरफ्तारी मेरे हाथों होगी। इस काम को अंजाम देने के लिए मैं अपनी जान की बाजी लगा दूंगा।"

"जान की बाजी लगाने की जरूरत नहीं होगी। क्योंकि वह पूरी तरह से हमारे जाल में है। तुम्हें अपनी टीम के साथ जाकर महज यह औपचारिकता पूरी करनी है। लेकिन एक बात का ख्याल तुम्हें फिर भी रखना है।"

"किस बात का सर?"

"सुना गया है कि यह हिंदुस्तानी एजेंट वैसे तो इस पेशे में उतना पुराना नहीं है लेकिन उसकी क्षमताओं को कम करके नहीं आंका जा सकता। वह निहायत ही धूर्त और चालाक

आदमी है।”

“वह कितना भी धूर्त हो-कितना भी चालाक हो सर। अब वह मेरी पकड़ से नहीं बच सकेगा।”

“पकड़ से बचने का सवाल ही नहीं उठता। क्योंकि जबसे उसने हमारी सरजमीं पर कदम रखा है, उसी क्षण से वह हमारी पकड़ में है।”

“उसकी कोई भी गतिविधि ऐसी नहीं है जो कि हमारी नजर से बची रही हो। इसलिए उसका बचकर निकल जाना तो संभव ही नहीं।”

“इसके बावजूद भी तुम्हें पूरी चौकसी से अपने काम को अंजाम देना है। इस मामले में हम जरा-सी भी गफलत में नहीं रहना चाहते। मामूली-से-मामूली लापरवाही भी हमारे किए-धरे पर पानी फेर सकती है।”

“अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर हम जिस कूटनीतिक जंग को जीतने जा रहे हैं, उसके लिए हमारा सबसे बड़ा सबसे अहम हथियार यही हिंदुस्तानी एजेंट अनिल वर्मा होगा। यदि यह आदमी हमारी हिरासत में नहीं होगा तो हम वह सब साबित नहीं कर सकते जिसके लिए हमने अपना करोड़ों का नुकसान उन्हें करने दिया है।”

“आपके आदेश की देर है सर-यह आदमी हमारी हिरासत में होगा।”

“एक बात और है, जिसका तुम्हें खासतौर से ख्याल रखना होगा।”

“वह क्या सर?”

“हमारी पकड़ से बचने के लिए वह हर संभव प्रयास करेगा। उसके बावजूद भी यह कामयाब नहीं हो सका तो एक और भी रास्ता है जिसे वह अपना सकता है।”

“वह कौन-सा रास्ता है सर?”

“हमारी पकड़ में आने से बेहतर वह मौत को गले लगाना भी पसंद करेगा-वह आत्महत्या करने की भी कोशिश कर सकता है और यदि उसकी यह कोशिश कामयाब हो जाती है तो फिर हमारे सामने हाथ मलने के सिवा कोई चारा नहीं होगा।”

कैप्टन अकरम के चेहरे पर सोचपूर्ण भाव उभरे।

“वह ऐसा नहीं कर सकेगा सर।” उसने कहा, लेकिन इस बार उसके स्वर में वह पहले वाला विश्वास नहीं था।

“इसके लिए तुम्हें खास सावधानी बरतनी होगी।”

“मैं बरतूंगा सर।”

“क्या सावधानी बरतोगे?”

उसके चेहरे पर अनिश्चय के भाव उभरे।

“वह मैं बताता हूं।”

“जी।”

“इस अनिल वर्मा को तब तक अपनी गिरफ्तारी का आभास नहीं होना चाहिए जब तक कि उस पर पूरी तरह से काबू न पा लिया जाए।”

“यस सर।”

“यदि उस पर पूरी तरह से काबू कर लिया जाता है तो फिर उसकी ऐसी किसी भी कोशिश को आसानी से विफल किया जा सकता है।”

"ठीक है सर-मेरी पूरी कोशिश यही रहेगी।"

"कोशिश ही नहीं तुम्हें पूरी तरह से इसे सुनिश्चित करना होगा।"

"राइट सर।"

इसके पश्चात मेजर अल्ताफ ने बाकी अधिकारियों की ओर देखा- "तुम सब लोग अपने-अपने शिविरों के बारे में अब जान ही गए हो। तुम्हारा काम भी कैप्टन अकरम से कम जिम्मेदारी का नहीं है। इसलिए किसी को भी जरा-सी लापरवाही नहीं करनी है।"

उसी घड़ी टेलीफोन की घंटी एक बार फिर बजी। मेजर अल्ताफ ने अपना हाथ बढ़ाकर इस तरह रिसीवर उठाया मानो वह इसी का इंतजार कर रहा हो।

सभी ने सहमतिसूचक ढंग से अपनी गरदनें हिलाई।

"यस।"

फिर टेलीफोन पर जो कुछ कहा जा रहा था, उसे सुनकर मेजर अल्ताफ की आंखें चमकती जा रही थीं।

वहां बैठे प्रत्येक अधिकारी की नजर मेजर अल्ताफ के चेहरे पर ही जमी थी।

सचमुच वह उतनी ही खूबसूरत व हसीन थी जैसा कि उसके बारे में कहा जाता था। बल्कि उससे भी कहीं ज्यादा हसीन थी।

उसका हुस्न हकीकत में ऋषि-मुनियों की तपस्या भंग करने की क्षमता रखता था।

वह सीढ़ियों से इस तरह उतर रही थी जैसे कोई अप्सरा स्वर्ग से उतर रही हो।

उसके चारों ओर उसके हुस्न की सुगंध फैल रही थी।

सीढ़ियां उतरकर वह उस विशाल कक्ष में पहुंची जो

अत्याधुनिक साजो-सामान से सजा हुआ था।

जैसे ही वह उस कक्ष में पहुंची उसी समय टेलीफोन की घंटी बजी।

उसने टेलीफोन की ओर उपेक्षापूर्ण अंदाज में इस तरह देखा जैसे उसे इसमें कोई दिलचस्पी ही न हो।

लेकिन फिर वह फर्श पर चलते हुए टेलीफोन की ओर बढ़ी।

फर्श पर बेशकीमती कालीन बिछा हुआ था, जिस पर चलने वाले को ऐसा लगता था जैसे उसकी टांगें घुटनों तक फर्श में धंसी जा रही हों।

वह स्वयं चलती हुई ऐसी लग रही थी मानो उसके पैर जमीन पर नहीं बल्कि वह पानी पर तैर रही हो। ऐसा नहीं लगता था कि टेलीफोन तक पहुंचने में उसे कोई जल्दबाजी हो।

जबकि टेलीफोन की घंटी लगातार बज रही थी।

फिर उसने रिसीवर उठाकर कान से लगाया।

"यस।" उसने इतना ही कहा। लेकिन उसके मुंह से निकलने वाले इतने-से स्वर से ही ऐसा लगा जैसे वह कक्ष किसी मधुर संगीत से मदहोश हो उठा हो।

"मैडम अजरा खान।" उधर से कहा गया।

"हां-मैं बोल रही हूं लेकिन आपने नहीं बताया कि आप कौन बोल रहे हैं।"

"जरूर बताऊंगा लेकिन इससे पहले आप बताइए कि यहां आपके आसपास तो कोई नहीं है?"

उसकी आंखों में उलझनपूर्ण भाव नजर आए।

"क्यों?"

"क्योंकि मैं जो कुछ कहने जा रहा हूं वह आपके सिवा किसी दूसरे के कानों तक नहीं पहुंचना चाहिए। इसलिए आपके आसपास कोई दूसरा मौजूद हो तो उसे चलता कर दीजिए।"

"ऐसा क्या कहने जा रहे हैं आप?"

"वह तो आप सुन ही लेंगी। लेकिन वह बात किसी दूसरे के कान में पहुंच गई तो समझ लीजिए भूचाल आ जाएगा।"

"भूचाल आ जाएगा?"

"ऐसा ही समझ लीजिए मैडम।"

उसकी आंखों में हैरत के भाव गहरे हो गए। लेकिन वह विचलित होती नजर नहीं आई।

"यहां मेरे आसपास कोई नहीं है-आप जो कहना चाहते हैं निश्चिंत होकर कहिए।"

"मैं तो निश्चिंत ही हूं मैडम-मुझे कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। मैं तो जो कहने जा रहा हूं वह भरी महफिल में कह सकता हूं। लेकिन यह आपके हित में नहीं होगा-इसलिए आपने मेरी बात को गंभीरता से न लिया हो तो अब ले लीजिए। कोई आपके आसपास हो तो उसे चलता कर दीजिए। कुछ बातें ऐसी होती हैं मैडम-कुछ हालात ऐसे होते हैं कि एक समय-सीमा के अंदर वे इंसान के हाथ में होते हैं। लेकिन वह सीमा समाप्त होते ही इंसान के हाथ में कुछ नहीं होता।"

"मैं आपकी बात को पूरी गंभीरता से ले रही हूं। आपको जो कहना है तुरंत कहिए हुजूर-मैं मरी जा रही हूं। मुझे लग रहा है जैसे मेरा हार्टफेल हो जाने वाला है।" उसने कहा जबकि ऐसा था कुछ नहीं।

वह जरा भी गंभीर और विचलित नहीं थी।

"आपका हार्टफेल हो गया तो फिर बात ही क्या हुई मैडम? जो कुछ भी किया जा रहा है वह इसलिए कि आपका बाल भी बांका न हो सके।"

"आप कहिए तो।"

"खाड़ी का नागरिक-सुना गया है कि वह तेल का बहुत बड़ा व्यापारी है। आपका खास कद्रदान है। सुना है आपके लिए वह अपनी हस्ती तक लुटा सकता है।"

"आप किसी सैफ अली खान को जानती हैं मैडम?"

"सैफ अली खान?" उसके चेहरे पर एक बार फिर उलझनपूर्ण भाव नजर आए।

"सैफ अली खान क्यों पूछ रहे हैं आप सैफ अली खान के बारे में?"

"यानी आप जानती हैं उसे?"

"मैं कह तो रही हूं हुजूर-आपको विश्वास नहीं हो रहा हो तो स्टाम्प पर लिखकर दूं?"

"इसकी जरूरत नहीं है मैडम-आपके सामने किसी स्टाम्प की क्या जरूरत है? आपकी जुबान से निकलने वाला शब्द अपने-आप में कानून है।"

"यह सब छोड़िए हुजूर इस तरह तो मैं सुनते-सुनते थक जाऊंगी और असली बात तक पहुंच भी नहीं पाऊंगी।"

"इस बात का तो मुझे भी अफसोस है मैडम-इतनी लम्बी यात्रा में तो आपके नाजुक पैरों में छाले पड़ जाएंगे। लेकिन ऐसा न करने पर भी तो काम नहीं चलेगा। वो कहते हैं कि

किसी बड़ी मुसीबत से बचने के लिए छोटी मुसीबत को गले लगाना जरूरी हो जाता है।"

"मुसीबत?"

"हां मैडम-और इस मुसीबत का नाम वही सैफ अली खान है।"

"सैफ अली खान मुसीबत! वह मुसीबत कैसे हुआ हुजूर?"

"उसका भेद खुल गया है मैडम!"

"भेद खुल गया है-मैं समझी नहीं?"

"समझ तो आप जाएंगी मैडम-लेकिन अब तो देर हो चुकी है।"

"हुजूर-आप साफ-साफ अपनी बात कहिए। मैं मरी जा रही हूं।" उसने कहा। इस बार वह झूठ नहीं बोल रही थी। वह सचमुच ही पूरी बात सुनने के लिए मरी जा रही थी।

"सैफ अली खान दरअसल न तो खाड़ी का नागरिक है और न ही तेल का कोई व्यापारी। हकीकत तो यह है कि उसका नाम भी सैफ अली खान नहीं है।"

"फिर हकीकत क्या है?"

"यह आदमी भारतीय इंटेलीजेंस का जासूस है जो कि यहां उन प्रशिक्षण शिविरों को नष्ट करने के इरादे से आया था जहां आतंकवादियों को ट्रेनिंग देकर भारत में गड़बड़ी करने के लिए भेजा जाता है और वह ऐसा कर भी चुका है।"

"क्या कह रहे हैं आप?" अजरा खान की आंखें हैरत से फैल गई।

उसका खूबसूरत चेहरा विकृत हो गया।

"वही जो हकीकत है।"

"ऐसा है तो।" अजरा खान ने कहा- "उसने बहुत बड़ा धोखा किया है मेरे साथ। मैं उसे माफ नहीं करूंगी।"

"क्या करेंगी आप उसका?"

"मैं उसे पुलिस के हवाले कर दूंगी।"

"आप ऐसा नहीं कर सकेंगी।"

"क्यों नहीं कर सकूँगी?"

"क्योंकि वह अब आपको मिलेगा ही नहीं। दरअसल उसे आपकी खूबसूरती में कोई दिलचस्पी नहीं थी-उसे दिलचस्पी अपने उस काम में थी जिसके लिए वह यहां आया था। उसका वह काम पूरा हो चुका है। इसलिए वह अब इधर का रुख भी नहीं करेगा।"

"वैसे उसने आपके साथ कोई धोखा नहीं किया है-उसने वही किया है जो उसका काम था। वैसे उसके बारे में सोचने से आपको कोई लाभ नहीं होने वाला। आपके लिए तो अब अपने बारे में सोचना ज्यादा जरूरी है।"

"अपने बारे में?"

"हां।"

"मुझे अपने बारे में क्या सोचना है?"

"क्योंकि आपने उसकी मदद की है इस काम में।"

"मैंने? मैं उसकी मदद क्यों करती? मुझे तो उसकी हकीकत का पता भी नहीं था। पता होता तो वह कुछ भी करने से पहले पकड़ा गया होता।"

"आपने ऐसे दो फौजी अफसरों की उसके साथ मुलाकात कराने में मदद की है जो आपके

खास कद्रदानों में हैं। सच तो यह है कि वे आपके इशारों पर नाचते हैं। आपकी मदद के बिना यह संभव ही नहीं था।"

"यह सरासर झूठ है।"

"क्या झूठ है?"

"मैंने उसकी मुलाकात उनसे नहीं कराई। मुलाकात उसने स्वयं की थी। यह सही है कि वे बड़े दोस्ताना माहौल में बात करते थे। लेकिन मुझे क्या पता कि वे फौजी अफसर अपने मुल्क के साथ गद्दारी कर रहे हैं?"

"उन्होंने कुछ नहीं किया है-उन्होंने कोई गद्दारी नहीं की-कोई ऐसा काम नहीं किया जो मुल्क के अहित में हो।"

"फिर।" उसने उलझनपूर्ण स्वर में कहा- "फिर क्या बात हुई?"

"यहां की फौजी इंटेलीजेंस की बेवकूफी।"

"बेवकूफी?"

"हां उनका मानना है कि इस षड्यंत्र की रचना उन्हीं फौजी अफसरों के साथ मिलकर की गई है। और इसमें सबसे महत्वपूर्ण रोल तुम्हारा है।"

"नहीं।" उसके मुंह से सिसकारी-सी निकली।

"फौजी इंटेलीजेंस ने जो नतीजा निकाला है-वह बड़ा ही खतरनाक है।"

"क्या नतीजा निकाला है?"

"उनका मानना है कि हिंदुस्तानी इंटेलीजेंस के साथ आपके बहुत पुराने और घनिष्ट संबंध हैं। उन्हीं संबंधों का लिहाज करते हुए आपने उन जिम्मेदार फौजी अफसरों को अपने हुस्न के जाल में फंसाया और जब वे आपके इशारों पर नाचने लगे तो आपने उन्हें मजबूर किया कि वे उस हिंदुस्तानी जासूस के साथ मिलकर उसके मिशन को कामयाब बनाने में उसकी मदद करें।"

"नहीं।" अजरा खान ने कहा- "यह नहीं हो सकता।"

"हां यह नहीं होना चाहिए था मैडम अजरा। लेकिन उन फौजी अफसरों को कौन समझाए-वे बेवकूफ किसी की कहां सुनने वाले हैं उन्होंने जो नतीजा निकालना था निकाल लिया। अब तो वे उस पर दोबारा गौर करना भी अपनी बेइज्जती समझेंगे।"

अजरा खान को लगा जैसे उसके पैरों के नीचे जमीन खिसकने लगी हो।

वह जिस बेशकीमती नर्म कालीन पर खड़ी थी वह उसे अंगारों की तरह दहकता हुआ लग रहा था।

"लेकिन।" उसका स्वर आतंकपूर्ण था- "आप कौन हैं और यह सारी बातें कैसे जानते हैं?"

"क्योंकि वह बदनसीब सैफ अली खान मैं ही तो हूं।"

"सैफ अली खान-तुम?"

"यस मैडम।"

"यानी असली सैफ अली खान आप है-उस हिंदुस्तानी जासूस ने आपका रूप धारण करके...।"

"आप फिर गलत सोच रही है मैडम।"

"गलत?"

"दरअसल सैफ अली खान नाम के किसी अमीर तेल व्यापारी का कहीं कोई अस्तित्व ही नहीं है।"

"यानी तुम-तुम...।" अजरा खान की आंखों में नफरत के भाव उभर आए- "तुम ही वो हिंदुस्तानी एजेंट हो?"

"धोखेबाज...तुमने मेरे साथ इतना भयंकर छल किया है। मैंने क्या बिगाड़ा था तुम्हारा?"

"बिगाड़ा तो मैंने भी आपका कुछ नहीं मैडम-आप ही बताइए-मैंने आपको ऐसे किसी काम के लिए मजबूर किया है? मैंने जो कुछ किया है स्वयं किया है। उन फौजी अफसरों से तो यूं ही मुलाकात हो गई थी। उनसे भी मैने कोई मदद हासिल करने की कोशिश नहीं की।"

"लेकिन यहां की फौजी इंटेलीजेंस की बेवकूफी के कारण जो नतीजा निकाला गया है उसमें तो मैं कुछ नहीं कर सकता था न?"

"मैं अब तुम्हारी किसी बात पर विश्वास नहीं कर सकती धोखेबाज! तुमने मेरे साथ छल किया है।"

"चलिए मान लिया। हालांकि इसमें मेरा कोई कुसूर नहीं है। फिर भी आप ऐसा सोचती हैं तो मैं मान लेता हूं। लेकिन अब इसी तरह मुझे कोसते रहने से तो वह मुसीबत नहीं टल सकती जो तुम्हारे सिर पर टूटने वाली है।"

"अब क्या चाहते हो मुझसे?"

"मैं कुछ नहीं चाहता मैडम-मैंने तब भी कुछ नहीं चाहा। लेकिन हम भारतवासी अहसानफरामोश नहीं होते। मैंने कुछ वक्त आपके साथ गुजारा है। मेरे ही कारण आप इतनी भयंकर मुसीबत में फंस जाएं, यह मुझे अच्छा नहीं लगेगा।"

"अब तुम कर ही क्या सकते हो-तुमने जो करना था वह तो तुम कर चुके।"

"मैं आपकी मदद कर सकता हूं।"

"क्या मदद कर सकते हो?"

"इससे पहले कि आप फौजी अफसरों के हत्थे चढ़ें-मैं आपको यहां से निकाल सकता हूं।"

"निकाल सकते हो?"

"हां-मैं आपको इस मुल्क से निकालकर किसी ऐसी जगह पहुंचा सकता हूं जहां आपको शरण मिल सके और यहां की सरकार, जो कि फौजी अफसरों के दबाव में काम करती है, की पहुंच आप तक न हो सके।"

"यानी मुझे मुल्क छोड़कर भाग जाने की सलाह दे रहे हो?"

"अपने बचाव के लिए तुम्हारे सामने दूसरा कोई चारा है ही नहीं। वैसे भी इसमें तुम्हें कोई खास परेशानी का सामना नहीं करना होगा। क्योंकि दुनिया के कई मुल्कों के बैंकों में आपके गुप्त खाते हैं। इस तरह आप कहीं भी रहकर अपनी आइंदा जिंदगी चैन के साथ गुजार सकती हैं।"

"तुम्हारा मतलब मैं हमेशा के लिए यह मुल्क छोड़ दूं?"

"हमेशा के लिए भी नहीं-कुछ समय बाद उन फौजी अफसरों को अपनी बेवकूफी का अहसास हो जाएगा। उस समय संभव है माहौल आपके लिए अनुकूल हो जाए। तब आप

वापस लौट भी सकती हैं। लेकिन फिलहाल तो आपके हित में यही है कि आप इस मुल्क को छोड़ दें।"

"और इस तरह मैं अपने उस जुर्म पर सहमति की मोहर अपने हाथ से लगा दूं जो मैंने किया ही नहीं और जिससे मेरा दूर-दूर तक कोई वास्ता ही नहीं?"

"इसके सिवा कोई चारा भी तो नहीं आपके सामने।"

"चारा है।"

"क्या?"

"मैं अपने ऊपर लगाए गए इन आरोपों का सामना करूंगी। मैं यह साबित कर दूंगी कि मैंने ऐसा कुछ नहीं किया है। वैसे भी इतना आसान नहीं है मेरे ऊपर इस तरह इल्जाम लगा देना।"

"इससे पहले उन्हें हजार बार सोचना पड़ेगा। तुम शायद यह नहीं जानते कि मेरी पहुंच कहां तक है।"

"मैं जानता हूं आपकी पहुंच सियासी हल्कों तक भी बड़ी गहराई तक है। लेकिन आप समझदारी से काम नहीं ले रही हैं। आप शायद यह नहीं जानतीं कि यहां के फौजी अफसर कितने निरंकुश है। उनके सामने आपके सियासी संपर्क किसी काम नहीं आएंगे। वे किसी का लिहाज नहीं करेंगे।"

"बल्कि आपके ऊपर लगे गंभीर इल्जामों के बारे में सुनकर तो वे सियासी संपर्क भी आपसे मुंह चुराने की कोशिश करेंगे। बल्कि वे आपके साथ किसी भी तरह के संबंधों से साफ-साफ मुकर जाएंगे।"

"क्योंकि यहां के सियासी हालात तो तुम जानती ही हो-यहां के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ भी फौज का कोपभाजन बनने की हिम्मत नहीं रखते।"

"तो मैं स्वयं अपने-आपको बेगुनाह साबित कर दूंगी।"

"जरूर कर देंगी। लेकिन क्या आप जानती हैं कि फौजी अफसर कैसे संतुष्ट होंगे?"

"कैसे?"

"अपने तरीके से और उनके तरीके कितने खौफनाक होते हैं मैडम, इसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकतीं। और जब तक वे अपने वे सारे तरीके इस्तेमाल नहीं कर लेंगे, तब तक संतुष्ट नहीं होंगे।"

"इसके लिए आपका कोई तरीका कामयाब नहीं होगा मैडम। न तो आपके उच्च राजनीतिक संपर्क कामयाब होंगे-बल्कि आपका यह खूबसूरत हुस्न भी उनको प्रभावित नहीं कर सकेगा।"

"आपका रूपजाल तो यूं भी उनको प्रभावित नहीं कर सकेगा क्योंकि वह तो उन्हें स्वयं ही हासिल होगा। बल्कि वे पहला तरीका तो यही इस्तेमाल करेंगे।"

"क्या?"

"सबसे पहले आपको ऐसे फौजियों के हवाले कर दिया जाएगा जिन्हें वर्षों तक औरत का मुंह भी देखने को नहीं मिलता। उन फौजियों के लिए तो आपके यहां सफाई का काम करने वाली वह बूढ़ी अम्मा, जिसका जला हुआ चेहरा कितना भयंकर लगता है, भी जन्नत से उतरी हूर नजर आती है।"

"फिर आपकी तो बात ही क्या है?"

"आप तो उनके लिए ऐसे होंगी जैसे खुदा ने उनके लिए कोई नियामत बख्श दी हो।"

"आपको देखकर तो वे पागल हो उठेंगे-आप कल्पना कर सकती हैं कि वे शिकारी कुत्ते की तरह किस प्रकार एक-दूसरे से उलझ-उलझकर एक साथ आपके ऊपर टूट पड़ेंगे।"

"आप कल्पना कीजिए-उनकी पकड़ से निकलकर आपके पास क्या बचेगा? आपका यह हुस्न जो खुदा ने आपके लिए बख्शा है, उसमें क्या बचेगा आपके पास?"

"संभव है आपकी सांसें उस समय चलती रहें। मौत आपके ऊपर रहम करके आपको जिंदगी बख्श दे लेकिन वे फौजी अफसर इसके बावजूद भी आपके ऊपर रहम नहीं करने वाले।"

"रहम नाम का शब्द तो उनकी डिक्शनरी में होता ही नहीं।"

"इसके बाद भी आप जिंदा रहीं और उन फौजी अफसरों को विश्वास हो भी गया कि आप वाकई बेगुनाह है तो आपको जिंदगी बख्श दी जाएगी।"

"लेकिन वह जिंदगी क्या होगी, कैसी होगी, इसकी कल्पना आप आसानी से कर सकती हैं। जरा कीजिए कल्पना।"

अजरा खान सिर से पांव तक कांपकर रह गई। क्योंकि फौजी अफसरों के इस तरह के किस्से तो उसने स्वयं भी कई बार सुने थे।

"नहीं।" अजरा खान के मुंह से एक आतंकपूर्ण सिसकारी निकली।

"जान है तो जहान है मैडम अजरा खान-जो आप इस समय सोच रही हैं वह तो बहुत बाद की बातें हैं। जब तुम्हारा यह रूप ही नहीं रहेगा तो जिंदगी क्या रहेगी? आज जो लोग तुम्हारे ऊपर दौलत की बरसात करने को उतावले रहते हैं। वही कद्रदान तुम्हें भीख में एक खोटा सिक्का भी फेंकना पसंद नहीं करेंगे।"

"नहीं।"

"तुम सलामत रहीं-तुम्हारी जिंदगी सलामत रही तो अपने-आपको बेगुनाह साबित करने के बहुत सारे मौके मिलेंगे।"

अजरा खान के आतंकित चेहरे पर उलझनपूर्ण भाव नजर आए।

"लेकिन ।" उसने कहा- "मैं यह कैसे मान लूं कि तुम जो कह रहे हो वह हकीकत है?"

"मैं इसके सबूत दे सकता हूं मैडम अजरा खान-लेकिन इतना वक्त नहीं है। क्योंकि तुम्हारी गिरफ्तारी में बस फौज के एक उच्चाधिकारी के आदेश पर हस्ताक्षर करने की देर है। जो कि किसी समय भी किए जा सकते हैं। उसके ठीक दस मिनट बाद आप हिरासत में होंगी।"

"उससे बचने का आपके पास कोई रास्ता नहीं होगा। क्योंकि उस समय आपका यह महलनुमा बंगला फौजी छावनी में तब्दील हुआ नजर आएगा। फिर भी एक तरीका है, जिससे आप किसी हद तक मेरी बात पर विश्वास कर सकती हैं।"

"कौन-सा तरीका?"

"आपकी सिक्योरिटी की जो टीम है, उसका मुखिया बेहद सावधान और अपने काम में कुशल है। आपके गिर्द मंडराने वाले किसी भी खतरे की गंध वह आसानी से सूंघ सकता है।"

"उसके अलावा भी आपका कोई भरोसे का आदमी हो तो उसे कहिए कि वह आपके

बंगले का एक बाहरी चक्कर लगाए। लेकिन इस तरह सावधानी के साथ कि किसी को उसके इरादों की भनक लग सके। वह ऐसा करेगा तो उसे कई ऐसे आदमी नजर आएंगे जो भेष बदलकर आपके बंगले की इस तरह निगरानी कर रहे होंगे कि बंगले में आने-जाने वाला कोई भी आदमी उनकी नजर से बच न सके।"

"इतना ही नहीं-बंगले के अंदर होने वाली गतिविधियों पर भी उनकी नजर है।"

"इस हालत में आप बंगले से निकलने की कोशिश करती हैं तो भी आप उनकी नजर से नहीं बच सकतीं। क्योंकि उस हालत में आपका पीछा किया जाएगा।"

"लेकिन यह काम आपको बहुत सावधानी से करना होगा-अभी वे लोग यही मान रहे हैं कि उनके इरादों की भनक तुम्हें नहीं है। यदि उन्हें इसका जरा भी अहसास हो गया तो फिर कुछ भी करना तुम्हारे लिए संभव नहीं होगा।"

"तुम जिस बात का पता लगाने के लिए आदमी को भेजो उसकी वजह उसे भूलकर भी नहीं बतानी है। भले ही वह तुम्हारा कितना भी वफादार सेवक क्यों न हो। दूसरी बात यह कि इसके लिए भी तुम्हारे पास वक्त ज्यादा नहीं है।"

उसके चेहरे पर सोचपूर्ण भाव उभरे।

"ठीक है-मैं करती हूं ऐसा। लेकिन...।"

"लेकिन क्या?"

"इसमें तुम मेरी मदद कैसे करोगे?"

"यह सब तुम मेरे ऊपर छोड़ दो-तुम्हें बस अपने इस बंगले से बाहर निकलना होगा। बाकी सारा काम हमारा होगा।"

"लेकिन इस हालत में-जबकि मेरे बंगले पर निगरानी हो रही है तो मैं बाहर ही कैसे निकलूंगी?"

"तुम निकल सकती हो।"

"लेकिन कैसे?"

"तुम्हारे बंगले में एक गुप्त द्वार भी है जो पिछवाड़े की ओर एक संकरी गली में खुलता है और जिसके बारे में केवल तुम जानती हो-उस पर किसी की निगरानी नहीं है।"

"लेकिन।" उसकी आंखों में हैरत के भाव उभरे- "तुम उस गुप्त द्वार के बारे में कैसे जानते हो?"

"छोड़ो मैडम, इस तरह की बातें करने का वक्त ही कहां है?"

"गेट से निकलने के बाद मुझे क्या करना होगा?"

"कुछ नहीं करना होगा-आपको केवल वह संकरी गली पार करने के बाद सड़क पर आ जाना होगा। वहां पर तुम्हें नीले रंग की एक कांटेसा कार मिलेगी।"

"और उस कार में तुम मौजूद रहोगे?"

"नहीं मैडम-मैं आपको वहां मौजूद नहीं मिलूंगा। लेकिन इससे आपको कोई तकलीफ नहीं होगी। ड्राइवर स्वयं आपको पहचानेगा। आपकी सुविधा के लिए मैं गाड़ी का नम्बर आपको बता देता हूं। लेकिन इस नम्बर को कहीं नोट नहीं करना है। वह आपको केवल याद रखना है।"

"ठीक है।"

इसके बाद दूसरी ओर से उसे एक नम्बर बताया गया। जिसे अजरा खान ने एक बार मन-ही-मन में दोहराया।

"एक सवाल और।" उसने कहा।

"कहिए।"

"ड्राइवर की बजाय तुम स्वयं क्यों उस गाड़ी में मौजूद नहीं होंगे?"

"आप मेरी मौजूदगी की बात कर रही हैं मैडम मेरे चारों ओर तो उन लोगों ने ऐसा मजबूत जाल बुना हुआ है कि उसे पार करना संभव ही नजर नहीं आ रहा।"

"यानी तुम?"

"किसी समय भी मैं दुश्मनों के हत्थे चढ़ सकता हूं। यदि ऐसा हुआ तो भविष्य में शायद हमारी मुलाकात कभी हो ही नहीं सकेगी।"

"तुम्हें...तुम्हें अपनी चिंता नहीं है, मेरी परवाह कर रहे हो?"

"हम तो शायद पैदा ही इसीलिए हुए हैं मैडम-इसलिए मेरे जैसा हर आदमी अपने ऐसे किसी भी अंजाम के लिए हमेशा तैयार रहता है।"

"लेकिन आप तो निर्दोष हैं हमारे कारण आपका अंजाम इतना खतरनाक-इतना खौफनाक हो, यह बात हमें स्वीकार नहीं हो सकती।"

उसके मुंह से यह बात सुनकर अजरा खान की आंखों में उस व्यक्ति के प्रति सम्मान के भाव उभरे।

"लेकिन इसका मतलब यह नहीं है मैडम कि मैं उनके सामने आत्मसमर्पण करने जा रहा हूं।। अपने बचाव के लिए मैं हर संभव प्रयास करूंगा।"

"वैसे भी यह इतना आसान नहीं है कि दुश्मन मुझे अपनी हिरासत में ले सके। इसके लिए उन्हें नाकों चने चबाने होंगे। फिर भी ऐसी किसी संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता।"

"भगवान ने चाहा तो दोबारा हमारी मुलाकात हो भी सकती है। यदि ऐसा हुआ तो मैं वह गलतफहमियां दूर करने की कोशिश जरूर करूंगा जो आपको मेरे बारे में हो गई हैं।"

अजरा खान ने कुछ कहना चाहा-लेकिन कह नहीं सकी।

उसके पास शब्द ही नहीं थे।

"अब मैं जो कुछ कह रहा हूं उसे गौर से सुनो-तुम्हें अपने साथ कोई सामान या नकदी लाने की जरूरत नहीं है। उसका सारा इंतजाम कर दिया जाएगा। तुम्हें किसी प्रकार की असुविधा नहीं रहेगी। फिर भी तुम्हारी जरूरत का कोई ऐसा सामान हो जिसके बारे में तुम्हें लगे कि दूसरी जगह पर आसानी से उपलब्ध नहीं हो सकता तो तुम उसे साथ ला सकती हो। लेकिन वह बहुत ही मामूली-सा होना चाहिए।"

"लेकिन तुम्हें जिस बात का विशेष ध्यान रखना है वह यह कि तुम्हारे पास वक्त बहुत कम है। अपनी घड़ी में समय देख लो। अब से ठीक पंद्रह मिनट बाद वह गाड़ी वहां पहुंच जाएगी और उसके पंद्रह मिनट बाद तक तुम्हारा इंतजार करेगी।"

"इस बीच यदि तुम्हारे बंगले पर सेना या पुलिस पहुंच गई तो उस स्थिति में भी गाड़ी वहां नहीं मिलेगी। इसी से तुम अनुमान लगा सकती हो कि तुम्हारे पास बड़ी हद तक आधे घंटे का समय है और अपने सारे काम तुम्हें इसी अवधि में निबटाने हैं।"

आजरा खान ने कुछ नहीं कहा।

उसके चेहरे पर अनिश्चयपूर्ण भाव थे।

“अब मैं लाइन काट रहा हूं।” उधर से कहा गया और इसके साथ ही लाइन कट गई।

अजरा खान कुछ पल तक रिसीवर को हाथ में लिए खड़ी रही।

फिर उसने अपनी कलाई घड़ी को देखा।

उसकी आंखों में चिंता के भाव गहरे होते चले गए।

यह सब किसी खतरनाक साजिश का हिस्सा भी हो सकता था। लेकिन यह सब सोचने का वक्त ही उसके पास नहीं था।

□□□

अनिल वर्मा ने बैक-व्यू मिरर में देखा।

एक गाड़ी अब भी उसके पीछे आ रही थी। अब तक उसका पीछा करने वाली तीन गाड़ियां बदली जा चुकी थीं।

सब कुछ योजनाबद्ध ढंग से किया जा रहा था। उसका पीछा करने वाली गाड़ी को जब उसकी सहयोगी गाड़ी मिल जाती थी तो वह दूसरी दिशा में घूम जाती थी, जबकि दूसरी गाड़ी उसका पीछा करने लगती थी।

ऐसा अतिरिक्त सावधानीवश किया जा रहा था ताकि उस आदमी को इसकी भनक तक न लग सके जिसका पीछा किया जा रहा था।

लेकिन कितनी बड़ी भूल थी यह उनकी!

अनिल वर्मा के होंठों पर अर्थपूर्ण मुस्कराहट उभरी।

उसकी गाड़ी मद्धिम गति से शहर की सड़कों पर दौड़ रही थी।

गाड़ी ने एक नब्बे डिग्री का मोड़ पार किया। उस घड़ी पीछा करने वाली गाड़ी लगभग तीन सौ मीटर पीछे थी जो कि मोड़ के कारण दिखाई देना बंद हो गई।

उस मोड़ को पार करते ही अनिल वर्मा ने गाड़ी के एक्सीलेटर पर अपने पैर का दवाब बढ़ा दिया।

देखते-ही-देखते गाड़ी ने खतरनाक गति पकड़ ली।

कुछ पल बाद गाड़ी उस सुरंग में समा गई जो किसी पहाड़ को तोड़कर निकाली गई थी।

यह सुरंगनुमा रास्ता पूरा एक किलोमीटर लम्बा तथा कुछ इस प्रकार घुमावदार बना हुआ था कि उसके आर-पार नहीं देखा जा सकता था।

सुरंगनुमा रास्ते में दाखिल होने के बाद भी अनिल वर्मा ने अपनी गाड़ी की गति कम नहीं की।

वह गाड़ी अभी सुरंगनुमा रास्ते के दूसरे छोर के मुहाने से कुछ दूरी पर ही थी कि उसकी गति अचानक ही कम होती चली गई और मुहाना पार करने से पहले ही वह एक स्थान पर जाकर गतिशून्य हो गई।

जहां वह गाड़ी रुकी थी, उसके बराबर में ही एक दूसरी कार नजर आई जो कि विपरीत दिशा में मुंह किए खड़ी हुई थी।

उसी घड़ी एक वृद्ध व्यक्ति नजर आया जो कि अनिल वर्मा की गाड़ी रुकते ही उसकी ओर लपका।

जबकि अनिल वर्मा उसके करीब आने से पहले ही अपनी गाड़ी से बाहर आया तथा बगल में खड़ी दूसरी गाड़ी की ओर तेजी से लपका।

उसके हाथ में एक फैल्ट हैट थी जो कि उसने चलते-चलते ही अपने सिर पर रख ली।

इसके साथ ही वह बगल वाली गाड़ी की ड्राइविंग सीट पर सवार हो गया। उसका इंजन पहले ही स्टार्ट था।

ड्राइविंग सीट संभालते ही उसने क्लच दबाया तथा गियर लगाकर क्लच रिलीज कर दिया।

गाड़ी उसी घड़ी आगे बढ़ गई।

अनिल वर्मा ने बैक-व्यू मिरर में देखा।

वह गाड़ी जो उसने अभी अभी छोड़ी थी उसकी गाड़ी के साथ ही विपरीत दिशा में आगे बढ़ गई।

उस घड़ी अनिल वर्मा के चेहरे पर तनाव के लक्षण साफ-साफ नजर आ रहे थे। लेकिन जैसे ही दोनों गाड़ियां एक-दूसरे से विपरीत दिशा में आगे बढ़ीं, अनिल वर्मा के चेहरे पर इत्मीनान के भाव नजर आए।

चलते-चलते ही उसने एक हाथ से सिर पर रखी फैल्ट हैट को आगे की ओर इस तरह झुकाया ताकि उसके चेहरे पर किसी की सीधी नजर न पड़ सके।

इस तरह यह सारी कार्यवाही मात्र कुछ सेकेंडों में ही पूरी कर ली गई।

एक बार फिर अनिल वर्मा उस गाड़ी को सामान्य गति पर ड्राइव करने लगा।

अभी वह उस सुरंगनुमा रास्ते की आधी या उससे कुछ अधिक लम्बाई ही पार कर पाया था कि सामने से उसे किसी वाहन की हेडलाइट नजर आई।

पल-भर के लिए अनिल वर्मा के चेहरे के भावों में परिवर्तन हुआ, लेकिन अगले पल ही वह सामान्य हो गया।

तभी एक कार उसके बराबर से गुजरी।

उसे पार करते ही अनिल वर्मा के होंठों पर अर्थपूर्ण मुस्कराहट उभरी।

उसके बराबर से गुजरने वाली गाड़ी वही थी जो कि कुछ देर पहले उसका पीछा कर रही थी।

अनिल वर्मा ने अपना फैल्ट हैट उतारकर बराबर बाली सीट पर रखा तथा डैशबोर्ड पर लगा एक स्विच दबाया।

उसी घड़ी गाड़ी के अंदर बीप-बीप का एक स्वर उभरने लगा।

"हैलो...हैलो।" एक स्वर गाड़ी में डैशबोर्ड से आता प्रतीत हुआ- "सफेद हाथी अटैंडिंग दिस साइड, ओवर।"

"अनिल वर्मा रिपोर्टिंग, ओवर...।"

"अनिल वर्मा-रिपोर्ट दो, ओवर।"

"किला फतह।" अनिल वर्मा ने कहा- "ओवर।"

"गुड।" उधर से उभरने वाला स्वर उत्साहपूर्ण था- "वैरी गुड-ओवर एंड ऑल।"

इसके साथ ही अनिल वर्मा ने डैशबोर्ड पर दूसरा स्विच दबाया। नतीजतन वह आवाज आनी बंद हो गई। दूसरी ओर से संपर्क समाप्त हो चुका था।

अनिल वर्मा इस घड़ी अपना पूरा ध्यान ड्राइविंग पर केंद्रित किए हुए था। उसका चेहरा भावहीन था।

वह वृद्ध व्यक्ति वर्षों से ड्राइवरी करता आ रहा था। यूं कहो कि बचपन से ही वह ड्राइविंग के पेशे में था।

लेकिन उसके जीवन का यह पहला अवसर था, जबकि उसे एक मामूली-से काम के लिए इतनी बड़ी रकम दी गई थी।

वह गाड़ी भी उसकी अपनी नहीं थी बल्कि उन्होंने स्वयं वह गाड़ी उसे उपलब्ध कराई थी।

उसे बस इतना ही करना था कि उनके द्वारा उपलब्ध कराई गई गाड़ी को लेकर यहां तक पहुंचना था और गाड़ी से उतरकर सामने से आने वाली उस अज्ञात गाड़ी का इंतजार करना था जो वहीं आकर रुकने वाली थी और उस गाड़ी को लेकर उसे वापस उसी जगह पार्क कर देना था जहां से उसने पहली वाली गाड़ी ली थी।

उसे बता दिया गया था कि सामने वाली गाड़ी से उतरने वाला आदमी स्वयं उस गाड़ी को लेकर जाएगा।

यह सब उसे बड़ा अजीब-सा लग रहा था।

उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब किसलिए किया जा रहा था।

उसने इस विषय में उन लोगों से प्रश्न भी किया था।

लेकिन जवाब में कहा गया कि यदि उसे इस काम से हासिल होने वाली रकम में दिलचस्पी है तो उसके लिए इस शर्त का पालन करना जरूरी है कि वह इस विषय में कोई प्रश्न नहीं करेगा।

रकम में दिलचस्पी वह नहीं छोड़ सकता था।

उसे अपनी कैंसरग्रस्त बेटी के इलाज के लिए बहुत बड़ी रकम की जरूरत थी-जो उसी पर आश्रित थी और उसका पति उसे तलाक दे चुका था।

अपनी उस बेटी से बहुत प्यार करता था और उसका जीवन बचाने के लिए वह कुछ भी कर सकता था।

इसके लिए वह कोई गैरकानूनी काम करने से भी नहीं हिचकिचाने वाला था। जबकि इस काम में उसे वैसा कोई खतरा नजर भी नहीं आ रहा था।

यदि यह कोई गैरकानूनी काम था भी-तब भी उसे इसमें कोई खतरा नजर नहीं आ रहा था।

एक गाड़ी को निर्धारित स्थान पर छोड़कर दूसरी गाड़ी को लाने में आखिर खतरा भी क्या हो सकता था!

और वह इस काम का आधा हिस्सा पूरा भी कर चुका था।

जबकि इस काम से हासिल होने वाली तीन चौथाई रकम वह पहले ही हासिल कर चुका था।

उस रकम का चौथाई हिस्सा अभी बाकी था जो उसे इस गाड़ी को निर्धारित स्थान पर पहुंचाने के साथ ही हासिल हो जाने वाला था।

उसे इस बात पर पूरा विश्वास था कि बाकी रकम देने में उसके साथ कोई बेईमानी नहीं

की जाएगी।

यदि कोई खतरा था तो उसके विचार से काम का पहला हिस्सा पूरा करने में उसकी संभावना ज्यादा थी जिसे कि वह पूरा कर ही चुका था।

लेकिन यह प्रश्न अब भी उसके जेहन में बार-बार उभर रहा था कि वह कौन-सा कारण था कि उसे एक मामूली-से काम के लिए इतनी बड़ी रकम दी जा रही थी।

यह काम तो कोई बहुत मामूली-सी रकम लेकर भी कर सकता था।

कोई भी ड्राइवर बड़ी हद तक एक पूरे दिन की पगार लेकर इतना काम कर सकता था।

लेकिन इसके बदले में उसे हजारों की रकम दी गई थी।

यह सवाल उसे बार-बार परेशान कर रहा था।

लेकिन जब कैंसरग्रस्त बेटी का चेहरा उसके जेहन में उभरता था तो वह सारे सवाल अपने-आप ही पीछे छूट जाते थे।

इस सबके बावजूद उसके चेहरे पर इत्मीनान के भाव थे।

अब उसके पास इतनी रकम थी कि उसकी बेटी के इलाज में आ गई रुकावट को दूर किया जा सकता था। अब उसका इलाज सुचारु रूप से जारी रह सकेगा।

इन्हीं विचारों में डूबा हुआ वह उस गाड़ी को सामान्य गति से उसके निर्धारित स्थान के लिए ले जा रहा था।

इस तरह वह एक चौराहे पर पहुंचा।

उसने चौराहा पार किया तो सामने एक फौजी ट्रक को इस तरह सड़क के बीचोबीच आड़ा-तिरछा खड़ा पाया कि उसके बराबर से गाड़ी को निकालकर ले जाना संभव नहीं था।

उसने हॉर्न दिया।

लेकिन सामने खड़े ट्रक पर इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई।

यह इरादा छोड़ दिया।

उसने सोचा कि नीचे उतरकर देखा जाए। लेकिन फिर उसने अपना उसे अपनी मंजिल तक पहुंचने की जल्दी थी और उस फौजी ट्रक में शायद कोई खराबी आ गई थी।

वह दूसरे रास्ते से घूमकर भी अपनी मंजिल तक पहुंच सकता था। इसमें कोई बहुत ज्यादा वक्त जाया नहीं होने वाला था।

उसने गाड़ी में बैक गेयर लगाया और फिर उसे दाहिनी ओर घुमा दिया।

लेकिन कुछ दूरी तय करने के बाद फिर वैसी ही स्थिति का सामना उसे करना पड़ा।

उस ओर भी एक ट्रक उसी अवस्था में रास्ता रोके खड़ा नजर आया। यह भी फौजी ट्रक ही था।

उसके दिमाग में झटका-सा लगा।

यह ट्रक किसी खराबी के कारण नहीं खड़ा है बल्कि जानबूझकर रास्ता रोका गया है।

लेकिन क्यों?

उसके मस्तिष्क में किसी खतरे का संकेत हुआ। लेकिन अगले ही पल उसे लगा जैसे यह उसका वहम था। कोई खतरा होता तो अब तक सामने आ चुका होता।

लेकिन वैसा नहीं हुआ।

फिर भी गाड़ी से बाहर आकर हालात का जायजा लेने का साहस वह नहीं कर पाया।

उसके रास्ते दोनों ओर से बंद थे।

लेकिन वहीं खड़े रहकर रास्ता खुलने का इंतजार करना भी उसे सुरक्षित नहीं लगा।

अब एक ही बात उसके दिमाग में थी-जैसे भी हो उसे यहां से तो निकलना ही चाहिए।

यही सोचकर उसने गाड़ी को बैक करके विपरीत दिशा में घुमाया तथा सीधा आगे बढ़ा दिया।

एक बार फिर उसने चौराहा पार किया।

लेकिन इस बार उसके चेहरे पर आतंक के भाव साफ-साफ नजर आए। क्योंकि वह रास्ता भी ब्लॉक था और ठीक उसी तरह से ब्लॉक था जैसे कि बाकी दो रास्ते।

अब एक ही रास्ता बाकी था।

और वह रास्ता वही था जिधर से वह आया था। लेकिन अब उसे विश्वास हो गया था कि वापस लौट जाना भी अब शायद संभव नहीं हो सकेगा।

क्योंकि यह सारा इंतजाम उसे घेरने के लिए ही किया गया था।

इसलिए उसकी वापस लौटने की संभावनाएं भी निश्चित रूप से समाप्त कर दी गई होंगी।

वह अभी सोच ही रहा था कि बैक-व्यू मिरर पर उसे एक कार का प्रतिबिम्ब नजर आया जो चौराहे से उसकी ओर ही घूम रही थी।

उसी घड़ी उसने अपने सामने खड़े ट्रक से कई हथियारबंद सैनिकों को कूदकर नीचे आते देखा।

फिर वह सैनिक उसकी गाड़ी की ओर ही लपके।

उसने खिड़की से अपना चेहरा निकालकर पीछे की ओर देखा।

पीछे से आने वाली गाड़ी तो वहीं खड़ी थी लेकिन कई सैनिक उसकी ओर तेजी से बढ़ रहे थे।

वे सभी हथियारबंद थे तथा उनकी राइफलों का रुख उसकी ओर इस अंदाज में था मानो वे उसे गोलियों से छलनी करने को आतुर हो रहे हों। उसके जिस्म में काटो तो खून नहीं था।

अब उसकी समझ में आया कि इतनी बड़ी रकम उसे यूं ही नहीं दे दी गई थी।

उसे किसी बहुत ही खतरनाक काम के लिए इस्तेमाल कर लिया गया था। जिसके बारे में वह कुछ नहीं जानता था।

वह चाहता तो गाड़ी छोड़कर भागने की कोशिश कर सकता था लेकिन अब तो इस काम में भी देर हो चुकी थी। अब तो वह कुछ भी नहीं कर सकता था।

देखते-ही-देखते उसकी गाड़ी को चारों ओर से सैनिकों द्वारा घेर लिया गया। उनकी राइफलों में से प्रत्येक का निशाना उसी की ओर था। एक बार यदि उनका दहाना खोल दिया गया तो उसके जिस्म के चीथड़े भी हाथ नहीं लगने वाले थे।

इस भयंकर कल्पना से वह कांपकर रह गया।

उन सैनिकों के चेहरे उसे बड़े ही खूंखार नजर आ रहे थे।

लेकिन अभी तक उससे कुछ नहीं कहा गया था। वह स्वयं तो जैसे कुछ पूछने या कुछ

कह पाने की स्थिति में था ही नहीं।

उसकी जुबान तो क्या-उसके पूरे जिस्म को ही लगता था जैसे लकवा मार गया हो।

उसी घड़ी एक व्यक्ति वहां पहुंचा जो संभवतः उस गाड़ी से निकलकर आया था जो चौराहे से उसकी ओर घूम गई थी। उसके जिस्म पर फौजी वर्दी नहीं थी। लेकिन हाव-भाव देखकर वह कोई फौजी अफसर ही नजर आ रहा था।

उस फौजी अफसर ने ड्राइवर के चेहरे पर अपनी नजरें गड़ा दीं। फिर उसकी आंखों में अजीब से भाव उभरे।

उसी घड़ी एक और सैनिक अधिकारी उसके करीब पहुंचा।

उसके जिस्म पर बाकायदा सैनिक वर्दी थी।

"यह।" उस सादी वर्दी वाले ने हैरतपूर्ण स्वर में कहा- "वो आदमी नहीं है।"

"क्या?" वर्दी वाले अफसर की आंखों में भी हैरत के भाव नजर आए।

"यह अनिल वर्मा नहीं है।"

"यह कैसे हो सकता है?"

"यही हुआ है।"

"अनिल वर्मा नहीं है तो फिर यह कौन है? और अनिल वर्मा कहां है? गाड़ी तो वही है। वह इसी गाड़ी में सवार था।"

लेकिन इन सवालों का जवाब उनमें से किसी के पास नहीं था।

कई पल तक वे इस स्थिति में खड़े रहे, मानो उन्हें काठ मार गया हो।

"इन सवालों का जवाब।" सादी वर्दी वाले ने कहा- "यही आदमी देगा। यह कोई बहुत बड़ी चाल चली गई है और इसमें सबसे अहम भूमिका इसी आदमी की है।"

उसका इतना कहना था कि सैनिक ड्राइवर के ऊपर टूट पड़े।

ड्राइवर को कुछ करने का या कुछ कहने का अवसर ही नहीं दिया गया।

□□□

कैप्टन कबीर ठाकुर ने बेहद गर्मजोशी और उत्साह के साथ अपने से जूनियर उस प्रतिभाशाली युवक के साथ हाथ मिलाया और कई पल तक उसका हाथ हैंडपाइप के हत्थे की तरह हिलाता रहा।

"मुझे तुम पर नाज़ है अनिल वर्मा।" उसने कहा- "और मुझे ही क्या, जिस तरह तुमने अपनी जिम्मेदारी को अंजाम देकर दुश्मन की आंखों में धूल झोंकी है। उससे तो हमारा पूरा महकमा ही नहीं बल्कि पूरे देश को तुम पर नाज होगा।"

"यह आप क्या कह रहे हैं सर!"

"मैं जो कह रहा हूं, वो गलत नहीं है।"

"मैं क्या कर सकता था सर-यह तो आप बुजुर्गों का आशीर्वाद है।"

"बुजुर्ग!" कैप्टन कबीर ठाकुर ने उसकी ओर देखा- "तुम मुझे बुजुर्ग कह रहे हो-अरे भाई, अभी तो मेरी शादी भी नहीं हुई।"

"आप मेरे सीनियर हैं सर-इस नाते तो आप बुजुर्ग ही हुए न! रही शादी की बात-वह तो कुछ लोग उस समय भी कर लेते हैं जबकि यमराज का बुलावा करीब आ चुका होता है।"

"मेरे ऐसा कहने से आपकी शादी में रुकावट नहीं आने वाली। फिर मैं तो आपका बच्चा

हूं। इसलिए मेरे तो बुजुर्ग ही हुए न।”

“लगता है कोई पुरानी रंजिश निकाल रहे हो मेरे से।”

“रंजिश!”

“यह रंजिश नहीं तो और क्या है जो मेरी शादी में रुकावट डाल रहे हो।”

“शादी में रुकावट-मैं कहां रुकावट डाल रहा हूं सर?”

“भाई मेरे, इससे बड़ी क्या रुकावट होगी जब किसी लड़की को पता चलेगा कि मैं बुजुर्ग हो गया-तुम्हारे जैसे मेरे बच्चे हैं। तब मेरे से कौन शादी करने को तैयार होगी ? शादी करना तो दूर रहा, मेरे से इस तरह डरकर भागेंगी जैसे भैंस छतरी को देखकर बिदकती है।”

कबीर ठाकुर की इस बात पर अनिल वर्मा जोर से हंसा।

“तुम हंस रहे हो-मेरा घर उजाड़कर हंस रहे हो?”

“उजाड़ने की नौबत कहां से आ गई सर-अभी तो घर बसा भी नहीं है।”

“तुम्हारे इसी तरह के इरादे रहे तो शायद ही घर बस पाए कभी।”

“ऐसा नहीं होगा सर-मैं तो वैसे ही आपकी बारात में जाने के लिए मरा जा रहा हूं।”

“बारात-बारात करोगे मेरी?”

“क्यों नहीं करूंगा सर-बारात का जिक्र होते ही तो रसगुल्लों की कल्पना से मेरे मुंह में पानी आ रहा है। भगवान के लिए आप कहीं चुपचाप किसी मंदिर में जाकर या कोर्ट में जाकर शादी मत कर बैठिएगा।”

“अच्छा?”

“एक बात तो बताइए सर।”

“पूछो।”

“वह वक्त आने में कितनी देर है और कुछ आंटीजी के बारे में बताइए।”

“आंटी-कौन आंटी?”

“अरे वही जो आपकी दुल्हन बनकर आएगी।”

“तुम्हारा मतलब में किसी आंटी को ब्याहकर लाऊंगा?”

“मेरा वही मतलब है सर-लेकिन आंटी आपकी थोड़े ही होगी। वह तो मैं अपने लिए कह रहा हूं।”

“अनिल वर्मा!”

“यस सर।”

“लगता है मेरे हाथों से मार खाने का इरादा लेकर आया है।”

“मार तो जरूर खाऊंगा सर। लेकिन...!”

“लेकिन क्या?”

“पहले उनके बारे में तो कुछ बताइए।”

“किसके बारे में?”

“जिनके साथ आपका चक्कर चला हुआ है।”

“तुमसे किसने कहा कि मेरा किसी के साथ चक्कर चला हुआ है।”

“किसी को कहने की क्या जरूरत है सर-यह तो स्वाभाविक बात है।”

“कोई स्वाभाविक बात नहीं है ऐसा कुछ नहीं है।”

"मेरे सिर पर हाथ रखकर कहिए।"

"क्यों सिर पर हाथ रखकर क्या होगा?"

"उससे आप झूठ नहीं बोल सकेंगे-सच्चाई सामने आ जाएगी।"

"सिर पर हाथ रखने की बजाय सिर पर हाथ मारने से भी सच्चाई आ सकती है सामने?"

"जरूर आ सकती है सर-लीजिए।" कहते हुए उसने कैप्टन कबीर ठाकुर के सामने बाकायदा अपना सिर झुका दिया।

कैप्टन कबीर ठाकुर मुस्कराया।

"बताइए न सर-कौन है वो?"

"कहा न, कोई नहीं।"

"सवाल ही नहीं उठता सर-कोई-न-कोई तो जरूर है जो आपके लौटने का इंतजार कर रही होगी।"

कैप्टन कबीर ठाकुर के चेहरे के भाव पल-भर के लिए बदले।

एक खूबसूरत लेकिन भोला-भाला चेहरा उसके जेहन में उभरा।

लेकिन अगले पल ही उसने अपने इन भावों को छुपा लिया।

"यह।" उसने कहा- "इन बातों का वक्त नहीं है अनिल वर्मा। तुम जानते हो इस समय हमारा एक-एक पल कितना कीमती है-कितना महत्वपूर्ण है। इस वक्त को यूं ही बेकार की बातों में जाया नहीं करना चाहिए।"

"आप इन्हें बेकार की बातें कह रहे हैं सर।"

"बेकार की न सही-फिर भी यह वक्त इन बातों के लिए नहीं।"

"इन बातों के लिए तो हमें इसी तरह वक्त निकालना होता है सर-क्या पता फिर कभी वक्त मिले ही नहीं।"

"ठीक है अनिल वर्मा-इस विषय पर अब बहुत बातें हो चुकी हैं। बाकी बातें फिर करेंगे। बी सीरियस नाऊ।"

"एक शर्त पर सर।"

"शर्त?"

"जी।"

"कैसी शर्त?"

"आपको यह वादा करना होगा कि पहली फुरसत में ही आप उनके बारे में बताएंगे।"

कैप्टन कबीर ठाकुर मुस्कराया।

"वादा कीजिए सर।"

"ठीक है-बताऊंगा-जरूर बताऊंगा।"

"यानी कि बारात की तैयारी पक्की ?"

"अब बारात की बात छोड़ो-जानते नहीं यहां दुश्मन वक्त से पहले ही हमारी बारात निकालने की तैयारी किए बैठा है। यदि वह इसमें कामयाब हो गया तो उस बारात की कभी नौबत ही नहीं आएगी।"

"वो नौबत तो जरूर आएगी सर।" उसने पूरे आत्मविश्वास के साथ कहा- "दुश्मन हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।"

"दुश्मन को कभी कमजोर मत समझो अनिल वर्मा-उसकी ओर से कभी असावधान मत रहो।"

"हम असावधान नहीं हैं सर।"

"असावधान हो।"

"कैसे?"

"तुम जानते हो कि अजरा खान नाम की वह औरत दुश्मन के हत्थे चढ़ गई तो क्या होगा?"

"क्या होगा?"

"उसके द्वारा दुश्मन इस बात का पता आसानी से लगा लेगा कि उसके जिन आदमियों को हमने उसके शक के दायरे में ला दिया है-वास्तव में ऐसा कुछ नहीं है। जो कुछ हो रहा है उससे वे लोग एकदम बेखबर हैं और हमने दुश्मन के उन आदमियों को इसलिए उसके शक के दायरे में ला दिया है, ताकि वह उनके साथ उलझा रहे और तब तक हम अपना काम पूरा कर दें।"

"यदि एक बार दुश्मन का इस बात का पता चल गया कि उसके आदमी निर्दोष है-अजरा खान नाम की वह औरत निर्दोष है।"

"उस स्थिति में वह इतना सावधान हो जाएगा कि हम अपना काम तो क्या कर सकेंगे-हमारा यहां से जिंदा निकलना ही असंभव हो जाएगा।"

"तो वह हमारी सारी चाल को समझ जाएगा।"

"इसलिए उस औरत को भी दुश्मन के हत्थे चढ़ने से बचाना उतना ही जरूरी है जितना कि तुम्हारा बचना।"

अनिल वर्मा के होंठों पर अर्थपूर्ण मुस्कराहट उभरी।

"अजरा खान दुश्मन के हत्थे नहीं चढ़ेगी सर।"

"तुम यह बात गारंटी के साथ कैसे कह सकते हो?"

"क्योंकि इसके लिए हेडक्वार्टर ने मुझे पहले ही आगाह कर दिया था। मुझे यह भी बता दिया था कि मुझे क्या करना है और इस काम में मेरी मदद कौन कर सकता है। इसलिए मैंने इस बात का इंतजाम कर दिया है कि वह दुश्मन के हत्थे न चढ़ सके।"

"यह सब करने के बाद ही मुझे निर्देश दिया गया था कि आपसे संपर्क करके पूरी रिपोर्ट आपको दूं। क्योंकि इसके बाद की सारी जिम्मेदारी आपकी होगी और मुझे हेडक्वार्टर से सीधे निर्देश लेने की जरूरत नहीं होगी।"

"इसके बाद मुझे केवल आपके निर्देशों का पालन करने के लिए कहा गया है।"

"क्या इंतजाम किया है तुमने उसका?"

"मैंने उसे उस खतरे से आगाह कर दिया है जो उसके सिर पर मंडरा रहा है और उसे साफ-साफ बता दिया है कि उसे इस मुसीबत से बचना है तो उसके लिए फिलहाल यह मुल्क छोड़ना जरूरी है।"

"वह इसके लिए राजी हो गई?"

"यस सर।" उसने बताया- "वह इसके लिए राजी हो गई है। उसके सामने और कोई चारा नहीं था। क्योंकि मैंने उसे अच्छी तरह से समझा दिया था कि उसने मेरी सलाह नहीं

मानी तो वह किस तरह की भयंकर मुसीबत में फंसने वाली है।"

"गुड।"

"वह मुल्क छोड़ने के लिए राजी है-अपना बंगला तो वह अब तक छोड़ भी चुकी होगी-दुश्मन की फौज या पुलिस उसके पास पहुंचेगी तो उसे अजरा खान के फरिश्ते भी वहां नहीं मिलेंगे, लेकिन...।"

"लेकिन क्या?"

"मुझे बताया गया है कि इससे आगे अजरा खान के लिए मेरी सारी जिम्मेदारियाँ खत्म हो जाएंगी। उसे इस मुल्क की सीमाओं से पार करना आपकी जिम्मेदारी होगी। अब तक वह उस स्थान पर सुरक्षित पहुंच चुकी होगी जैसा कि हेडक्वार्टर का निर्देश था।"

कैप्टन कबीर ठाकुर के चेहरे पर सोचपूर्ण भाव उभरे।

उसी घड़ी उसके ट्रांसमीटर पर सिग्नल मिला।

कैप्टन कबीर ठाकुर ने तुरंत अपना ट्रांसमीटर ऑन किया फिर उधर से जो कुछ कहा गया उसे वह बड़ी गौर से सुनता रहा।

अंत में उसने अनिल वर्मा की ओर देखा।

"वह वाकई सुरक्षित स्थान पर पहुंच चुकी है अनिल वर्मा।" कैप्टन ठाकुर ने कहा-"लेकिन इसके बावजूद भी उसे तब तक सुरक्षित नहीं कहा जा सकता जब तक वह इस मुल्क की सीमाओं के अंदर है। उसे पूरी तरह सुरक्षित करने के लिए जरूरी है कि उसे इस मुल्क की सीमाओं से दूर भेजा जाए। जितना जल्दी हो सके यह काम किया जाए।"

"अब आपका क्या विचार है सर?"

"वही-जो मैं कह रहा हूं। वैसे मुझे भी हेडक्वार्टर से इस बात का निर्देश दिया गया था कि किसी को इस मुल्क से भगाना है। लेकिन यह मुझे नहीं बताया गया था कि वह अजरा खान नाम की यही औरत होगी।"

"उसे इस मुल्क की सीमाओं से बाहर भेजने का इंतजाम हो जाएगा अनिल वर्मा।"

"कब तक हो जाएगा सर?"

"बहुत जल्दी-शायद अभी।"

"अभी?"

"हां।" कैप्टन ठाकुर ने कहा तथा ट्रांसमीटर पर किसी से संपर्क स्थापित करने का प्रयास करने लगा।

पल-भर बाद ही वह इस कोशिश में सफल हो गया।

"हैलो...हैलो...सफेद हाथी-सफेद हाथी, ओवर...।"

"सफेद हाथी अटैंडिंग दिस साइड, ओवर...।"

"फौरन यहां पहुंचो।" कैप्टन कबीर ठाकुर ने ट्रांसमीटर पर कहा- "जितना जल्दी हो सके यहां पहुंचो। ओवर...।"

"ओके-मैं दस मिनट में पहुंचता हूं-ओवर...।"

"ओवर एंड ऑल।"

इसके साथ ही कैप्टन कबीर ठाकुर ने ट्रांसमीटर बंद किया तथा अनिल वर्मा की ओर देखा।

"अजरा खान को कब तक और कितनी जल्दी इस मुल्क की सीमाओं से दूर सुरक्षित भेजा जा सकता है, इसका पता अभी कुछ मिनट बाद चल जाएगा।"

अनिल वर्मा ने उत्तर में कुछ नहीं कहा।

□□□

सारे छापे एक साथ एक ही समय पर मारे गए थे।

ऐसा इसलिए किया गया था ताकि मुजरिम एक-दूसरे को सावधान न कर सकें।

वे दोनों फौजी अफसर जिनको इस कांड में लिप्त पाया गया था तथा एक उच्च प्रशासनिक अधिकारी गिरफ्तार किए जा चुके थे।

उनकी गिरफ्तारी का जिम्मा जिन टीमों को सौंपा गया था उनके कमांडर मेजर अल्ताफ को अपनी रिपोर्ट दे चुके थे और इस घड़ी वे मेजर अल्ताफ के सामने मौजूद थे।

दो गिरफ्तारियों की सूचना मिलनी बाकी थी-हकीकत में ये दोनों गिरफ्तारियां ही इस कांड की सबसे महत्वपूर्ण गिरफ्तारियां थीं।

उनमें एक अजरा खान नाम की वह खूबसूरत औरत थी और दूसरा था भारतीय इंटेलीजेंस का वह तेज-तर्रार जासूस अनिल वर्मा।

मेजर अल्ताफ सहित वहां मौजूद सभी का विचार था कि अब तक वे दोनों गिरफ्तारियां भी अमल में आ चुकी थीं।

बस देर उसकी औपचारिक सूचनाएं यहां तक पहुंचने की थी।

और उसी का इंतजार किया जा रहा था।

वक्त गुजर रहा था।

काफी इंतजार करने के बाद भी उधर से अभी तक कोई सूचना नहीं मिल सकी थी। जबकि अब तक सूचना यहां पहुंच जानी चाहिए थी।

हालांकि उस देरी के कारण मेजर अल्ताफ उतना चिंतित नहीं नजर आ रहा था। लेकिन उसके चेहरे पर तनाव के लक्षण अवश्य दिखाई दे रहे थे।

वह अपनी सीट से उठा।

वहां मौजूद कमांडर्स ने उसकी ओर देखा तो मेजर अल्ताफ ने उन्हें बैठे रहने का संकेत दिया तथा स्वयं उस कक्ष में चहलकदमी करने लगा।

फिर उसने एक सिगरेट सुलगाई तथा उसके लम्बे-लम्बे कश लेने लगा।

वह जिस तरह बेसब्री के साथ सिगरेट के कश ले रहा था, उससे जाहिर था कि जैसे-जैसे वक्त बीत रहा था, उसके ऊपर हावी होती जा रही थी।

यह बात उसके वे मातहत भी महसूस कर रहे थे जो वहां मौजूद थे।

वह तब तक चहलकदमी करता रहा जब तक उसकी सिगरेट समाप्त नहीं हो गई।

उसने सिगरेट को फर्श पर फेंका तथा फिर उसे अपने जूते की नोक से बड़ी बेरहमी के साथ कुचला और फिर से अपनी सीट पर आकर वापस बैठ गया।

उसने अपनी कलाई घुमाकर घड़ी को देखा।

फिर उसने सामने रखे टेलीफोन का रिसीवर उठाकर कोई नम्बर डायल किया।

"कैप्टन इकबाल और कैप्टन अकरम से संपर्क स्थापित करो और मेरी बात कराओ-फौरन।" उसने फोन पर कहा।

"हाँ कोशिश कर रहे हैं सर लेकिन...।" दूसरी ओर से कहा गया।

"लेकिन?"

"उनसे संपर्क हो नहीं पा रहा।"

"संपर्क नहीं हो पा रहा क्यों?"

"कुछ समझ में नहीं आ रहा सर ।"

"तुम्हारी मशीन में कोई खराबी है क्या?"

"हम यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं सर।"

"इसका पता लगाने में हफ्ता-दस दिन का वक्त लगाओगे?" मेजर अल्ताफ ने नाराजगी-भरे लहजे में कहा।

"ऐसा नहीं है सर-हम बहुत जल्दी पता लगा रहे हैं।"

"ठीक है-जल्दी करो। यदि यह तुम्हारी मशीनरी की खराबी निकली तो तुम्हें बहुत भारी पड़ेगी। ऐसे वक्त पर तुम्हारी मशीन धोखा देती है तो इसे बर्दाश्त नहीं किया जा सकता।" कहते हुए उसने रिसीवर पटक दिया।

ठीक उसी घड़ी कैप्टन इकबाल नाम का वह फौजी अफसर अंदर दाखिल हुआ।

यह वही आदमी था जिसे अजरा खान की गिरफ्तारी की जिम्मेदारी सौंपी गई थी।

वहां मौजूद प्रत्येक व्यक्ति की नजरें उसकी ओर ही घूम गईं।

कैप्टन इकबाल ने फौजी ढंग से मेजर अल्ताफ को सैल्यूट किया। लेकिन उसके सैल्यूट करने में न तो गर्मजोशी थी और न ही उसके चेहरे पर किसी प्रकार का उत्साह नजर आ रहा था।

मेजर अल्ताफ ने उसके चेहरे पर अपनी नजरें गड़ा दी।

"तुमने।" मेजर अल्ताफ ने कहा- "इतनी देर कैसे लगा दी तुम्हें तो अब तक आ जाना चाहिए था।"

"वहाँ तो भारी गड़बड़ हो गई सर।"

"गड़बड़-कैसी गड़बड़? क्या उस औरत ने अपनी गिरफ्तारी के विरोध में कोई हंगामा खड़ा कर दिया था? वह ऐसा कर सकती थी। क्योंकि देश की कई प्रभावशाली व ताकतवर हस्तियां इस औरत के प्रभाव में हैं। वह इसकी धमकी जरूर दे रही होगी। उसके पास अपनी सुरक्षा के लिए बाकायदा एक अच्छा-खासा दस्ता है। वह तो नहीं उलझ गया तुम्हारे साथ?"

"ऐसा कुछ नहीं हुआ सर।"

"ऐसा कुछ नहीं हुआ? ऐसा कुछ नहीं हुआ तो फिर हुआ क्या है? तुम सारी बात एक ही बार में क्यों नहीं बताते?"

"वह अपने बंगले पर मौजूद नहीं मिली सर।"

"बंगले पर मौजूद नहीं मिली?" मेजर अल्ताफ ने हैरतपूर्ण नेत्रों से उसकी ओर देखा- "यह कैसे हो सकता है? जिस वक्त तुम्हें वहां भेजा गया था, उस वक्त वह वहीं मौजूद थी- उसके ऊपर कड़ी नजर थी। वह हमारे आदमियों की नजर से बचकर निकल सके, ऐसा मुमकिन ही नहीं।"

"वैसे भी वहाँ निगरानी करने वाले दस्ते को तुम्हारे यहां से रवाना होने से पहले ही

सतर्क करके निर्देश दे दिए गए थे कि वह यदि बंगले से बाहर जाने की कोशिश करे तो उसकी ऐसी किसी भी कोशिश को विफल कर दिया जाए। इसलिए यह मुमकिन ही नहीं कि वह बंगले पर न मिलती।"

"लेकिन ऐसा हुआ है सर।"

"ऐसा नहीं हो सकता कैप्टन-मुझे लगता है उस औरत ने तुम्हें मूर्ख बना दिया है।"

"मूर्ख-मूर्ख कैसे बना दिया सर?"

"वह बंगले से बाहर निकल ही नहीं सकती थी। उसने अपने-आपको वहीं कहीं छिपा लिया है। बंगले के कर्मचारियों से उसने कह दिया होगा कि वे तुम्हारे सामने उसकी मौजूदगी से इनकार कर दें और तुम वापस आ गए?"

"ऐसा नहीं है सर।"

"कैसा नहीं है?"

"हम केवल इतना कहने पर ही वापस नहीं आ गए हैं, बल्कि उसके बंगले की पूरी तरह से तलाशी ली गई है।"

"पूरी तरह से तलाशी नहीं ली गई है-उसके बंगले में कोई ऐसी गुप्त जगह जरूर रही होगी जो तुम्हारी नजर में नहीं आई। वैसे भी वह जिस पेशे में है, उसके अनुसार उसने अपने बंगले में ऐसा कोई प्रबंध जरूर किया होगा।"

"वह बंगले में मौजूद नहीं है सर-इस बात की पूरी तस्दीक कर ली गई है। वह बंगले से निकल चुकी है।"

"यह मुमकिन ही नहीं। वह बंगले से निकल ही नहीं सकती थी। हमारे उन आदमियों की आंखों में वह धूल नहीं झोंक सकती थी जिन्हें उसकी निगरानी पर लगाया गया था।"

"उसने ऐसा ही किया है सर।"

"कैसे?"

"पिछले दरवाजे से।"

"पिछले दरवाजे से?"

"यस सर-उसके बंगले में एक गुप्त द्वार भी है जो पिछवाड़े की ओर खुलता है। और जो किसी की जानकारी में नहीं था। इसलिए इस पर निगरानी की व्यवस्था भी नहीं की गई थी।"

"वह उसी दरवाजे से निकलकर गायब हो गई है सर।" मेजर अल्ताफ की आंखें हैरत से फैलकर चौड़ी हो गईं। कई पल तक वह फटे-फटे नेत्रों से कैप्टन इकबाल की ओर देखता रहा।

"तुम।" अंत में उसने कहा- "तुम यह कैसे कह सकते हो कि उसके बंगले में ऐसा कोई प्राइवेट रास्ता है और वह उससे फरार हो गई?"

"मैंने अपनी आंखों से देखा है सर।"

"उसे फरार होते हुए?"

"उसे फरार होते हुए नहीं सर, बल्कि उस गुप्त दरवाजे को मैंने देखा है। वह गुप्त दरवाजा उस समय हमारी नजर में आया जब उसके बंगले में उसे तलाश किया जा रहा था।"

"उसके बंगले में रहने वाला कोई कर्मचारी भी उस रास्ते के बारे में नहीं जानता।"

"जानता नहीं या किसी ने तुम्हारे सामने यह स्वीकार नहीं किया?"

"वहां ऐसा माहौल नहीं था सर कि कोई कर्मचारी झूठ बोलने की कोशिश करता। हमने वहां काफी सख्ती बरती है।"

"क्या वह दरवाजा खुला हुआ था?"

"फिर तुमने कैसे नतीजा निकाल लिया कि वह उस रास्ते से फरार हो गई?"

"नहीं सर।"

"दरवाजा बाहर से बंद था सर-यदि उस रास्ते का प्रयोग न हुआ होता तो उसे अंदर से बंद होना चाहिए था। लेकिन ऐसा नहीं था। उस दरवाजे को मैंने खुलवाकर देखा था। इसके लिए एक आदमी को बहुत दूर का चक्कर काटना पड़ा था। तब वह उस दरवाजे तक पहुंचा था जो कि एक तंग गली में खुलता था।"

"ऐसा भी तो संभव है कि किसी दूसरे कारण से उसे बाहर से ही बंद रखा जाता हो।"

"ऐसा नहीं है सर-मैंने स्वयं तस्दीक की है। कुछ ऐसे चिह्न मिले हैं जो साबित करते हैं कि दरवाजे के साथ हाल ही में छेड़छाड़ की गई है।"

"इसका पता लग जाने के बावजूद भी उसे नहीं पकड़ सके वह किसी रॉकेट पर बैठकर तो भाग नहीं गई होगी। उसे तलाश करने की कोशिश की जाती तो वह वहीं कहीं मिल सकती थी।"

"यह बात नहीं है सर।"

"बात क्या है?"

"उसकी तलाश में बंगले का कोना-कोना देख गया। तब कहीं जाकर हम उस दरवाजे तक पहुंचे और इस बीच इतना वक्त जरूर लग गया कि वह काफी दूर निकल सकती थी।"

"वैसे भी हमें यह पता चला कि हमारे पहुंचने से एक घंटा पहले उसे उसके बेडरूम में जाते देखा गया था। उसके बेडरूम में उसकी इजाजत के बिना कोई जा नहीं सकता।"

"लेकिन सवाल यह उठता है कि वह फरार क्यों हुई? जबकि उसे इस तरह की कोई भनक तक नहीं थी कि वह गिरफ्तार होने जा रही है।"

"पहले तो उसे इसकी भनक लगने का सवाल ही नहीं उठता सर-लेकिन ऐन वक्त पर उसने किसी तरह हमें बंगले में दाखिल होते देख लिया हो।"

"उसी से उसने नतीजा निकाल लिया हो कि उसके उस कारनामे की पोल खुल चुकी है। और ऐसा कोई नतीजा निकालकर तो उसने बड़ी आसानी से अपने अंजाम की कल्पना कर ली होगी।"

"तब तो उसके पास फरार होने के सिवा कोई चारा ही नहीं था।"

"फिर भी मैं यह नहीं मान सकता कि।" मेजर अल्ताफ ने कहा- "इतने समय में वह हमारी पहुंच से दूर निकल गई हो-तुम्हें इसकी कोशिश इतनी अवश्य करनी थी जो कि तुमने नहीं की। इस बात की संभावना अब भी है कि वह वहीं कहीं छिपी इस बात का इंतजार करती रही हो कि हमारी गतिविधियां समाप्त हो-और अब, जबकि तुम वापस लौट आए हो तो उसके पास इतना वक्त जरूर है कि अपने-आपको किसी सुरक्षित ठिकाने तक पहुंचा सके।"

"मैं इस संभावना से तब भी बेखबर नहीं था सर-इसीलिए मैंने उस पूरे इलाके की

मुकम्मल तलाशी कराई है। इसके बावजूद भी वह वहीं कहीं छिपी हो सकती है, इस संभावना को मैंने अभी तक नहीं नकारा है। इसीलिए मैं ऐसा इंतजाम करके आया हूं कि वह पूरा इलाका हमारी निगरानी में रहे।"

"उस इलाके की प्रत्येक गतिविधि पर हमारी कड़ी नजर है। यदि वह अभी तक वाकई वहां छिपी है तो अब उसकी वहां से निकलने की संभावना बिल्कुल नहीं है।"

"यदि वह ऐसा कोई प्रयास करती है तो फौरन हमारी पकड़ में आ जाएगी।"

"ऐसा इंतजाम करके तो तुमने ठीक ही किया है कैप्टन। लेकिन इससे हमारी चिंता कम नहीं होने वाली। उस औरत का हमारी पकड़ में आना बहुत जरूरी है।"

"मुझे एक बात का शक है सर।"

"किस बात का शक है तुम्हें?"

"हमारे पहुंचने से एक घंटा पहले ही उसका अपने बेडरूम में घुस जाना और अब तक उसका नजर में न आना इस बात का संकेत है कि उसे अपनी गिरफ्तारी की भनक पहले ही लग चुकी थी।"

"उसके जिन कर्मचारियों का यह कहना है कि उसे बेडरूम में घुसते देखा गया है, दरअसल वह उनकी आंखों का धोखा था।"

"कैसा धोखा?"

"वह उसी समय फरार हो गई थी और उस समय हम उसे गिरफ्तार करने के लिए यहां से रवाना भी नहीं हुए थे।"

"यह कैसे हो सकता है?"

"इस सवाल का जवाब तो फिलहाल मेरे पास नहीं है सर। लेकिन मुझे इस बात की संभावना बहुत अधिक नजर आ रही है कि हकीकत में ऐसा ही हुआ है।"

"तुम्हारा अनुमान सही है तो।" मेजर अल्ताफ की आंखों में चिंता के गहरे भाव नजर आए- "यह एक बहुत खतरनाक बात होगी कैप्टन। तब तो हमें कुछ और बुरी सूचनाएं ग्रहण करने के लिए अपने-आपको तैयार रखना चाहिए।"

"कुछ और बुरी सूचनाएं?"

"हमारी इस कार्यवाही की पूर्वसूचना यदि अजरा खान नाम की उस औरत को हासिल हो सकती है तो वैसी सूचना कुछ ऐसे दूसरे व्यक्तियों को भी हासिल हो सकती है, जिन्हें नहीं होनी चाहिए।"

"यदि ऐसा हकीकत में हुआ है तो हमारे लिए यह एक अत्यंत खतरनाक स्थिति हो सकती है।"

वहां मौजूद सभी कमांडरों के चेहरों पर सोचपूर्ण भाव नजर आए। मेजर अल्ताफ ने फोन उठाया।

"तुमने अपनी मशीन की गड़बड़ी का पता लगाया?"

"हमने पता लगा लिया है सर।" उधर से जवाब मिला- "हमारी मशीनों में कोई गड़बड़ नहीं है। वे एकदम चौकस हालत में काम कर रही हैं सर।"

"तो कैप्टन अकरम से संपर्क करने की कोशिश क्यों नहीं कर रहे?"

"हम बराबर कोशिश कर रहे हैं सर-लेकिन उनसे संपर्क नहीं हो पा रहा।"

उसने रिसीवर वापस रखा।

"कैप्टन इकबाल!"

"यस सर।"

"तुम स्वयं कैप्टन अकरम के पास जाकर हालात का पता लगाओ। मेरा विचार है कि वहां कोई गड़बड़ जरूर है।"

"यस सर।" कहने के साथ ही कैप्टन इकबाल ने उसे सैल्यूट किया। फिर वह पंजों के बल पीछे घूम गया।

लेकिन वह एक कंदम भी आगे नहीं निकाल पाया था कि कैप्टन अकरम अंदर दाखिल हुआ।

कैप्टन अकरम से कोई सवाल करने की जरूरत ही नहीं पड़ी क्योंकि उसके उत्साहहीन व उतरे हुए चेहरे ने ही बता दिया था कि वह नाकाम होकर वापस लौटा है।

जबकि उसे अनिल वर्मा को गिरफ्तार करके लाने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपकर भेजा गया था।

और इसी पर फौजी हुक्मरानों की उस योजना की सफलता का दारोमदार था जिसके लिए उन्होंने वर्षों मेहनत की थी और उस पर पानी की तरह पैसा बहाया था।

इसके बावजूद भी मेजर अल्ताफ ने कैप्टन अकरम की ओर देखते हुए कहा-"अपनी रिपोर्ट दो कैप्टन।"

और कैप्टन अकरम ने जो नकारात्मक सूचना दी, उसके बाद मेजर अल्ताफ ने उसे इस तरह घूरकर देखा जैसे कैप्टन अकरम ही इसके लिए पूरी तरह से जिम्मेदार है और वह उसे गोली मार देने का इरादा रखता हो।

उस सफेद बालों वाले आकर्षक व्यक्तित्व के धनी अधेड़ व्यक्ति ने उत्साहपूर्ण अंदाज में कैप्टन कबीर ठाकुर के साथ हाथ मिलाया।

"इनसे मिलिए।" कैप्टन ठाकुर ने अनिल वर्मा की ओर संकेत करते हुए कहा- "मिस्टर अनिल वर्मा।"

उसने अपना हाथ अनिल वर्मा की ओर बढ़ाया। उस घड़ी उसके होंठों पर बेहद प्रभावशाली मुस्कराहट थी।

"तो आप हैं वो हस्ती।" उसने कहा- "नाम तो बहुत सुना था इनका। आज मुलाकात भी हो गई।"

फिर दोनों ने गर्मजोशी के साथ हाथ मिलाए।

"तुम भी समझ लो अनिल वर्मा कि इस समय जिस आदमी से मिल रहे हो वह बड़ी ऊंची चीज है। इनका नाम तो मैं स्वयं भी नहीं जानता। वैसे भी इनका कोई एक नाम नहीं है। आजकल इन्हें सफेद हाथी कहकर जाना जाता है।"

"सफेद हाथी।" अनिल वर्मा के होंठों पर मुस्कराहट उभरी।

"वैसे यह नाम इन्हें बहुत सोच-समझकर दिया गया है। इनका यह नाम हकीकत से एकदम मेल खाता है।"

"हकीकत से मेल खाता है?" अनिल वर्मा के चेहरे पर प्रश्नसूचक भाव उभरे।

"बैठो।" कैप्टन ठाकुर ने कहा- "फिर बताता हूं कि इनका यह नाम हकीकत के करीब

कैसे है।”

तीनों ने अपनी-अपनी सीटें ग्रहण की।

कैप्टन ठाकुर ने पहले ही मौजूद एक कीमती व्हिस्की की बोतल से तीन जाम तैयार किए।

फिर तीनों ने अपने-अपने जाम उठाकर चीयर्स किया।

“हां तो अनिल वर्मा-यह बात तुम्हें बड़ी अजीब लग रही होगी कि इन्हें सफेद हाथी नाम क्यों दिया गया?”

“आपका कहना सही है सर-मैं ठीक यही बात सोच रहा था।”

“दरअसल हमारा महकमा इनके ऊपर बहुत मोटी रकम खर्च कर रहा है। हमारे यहां एक कहावत तुमने जरूर सुनी होगी कि फलां आदमी ने सफेद हाथी पाल रखा है।”

“लेकिन यह कहावत आमतौर पर वहाँ लागू होती है जहां कोई मोटी रकम केवल किसी शौक को पूरा करने के लिए खर्च की जाती है और उसका कोई उपयोग नहीं होता।”

“यह कहावत वही लागू होती है जहां किसी चीज पर या किसी आदमी पर बहुत ज्यादा रकम खर्च की जाती है। सुनी होगी तुमने वह कहावत?”

“यस सर-मैंने सुनी है।”

“तो क्या आप कह रहे हैं सर कि इनके लिए हमारा महकमा जो खर्च कर रहा है वह केवल शौक के लिए ही कर रहा है?”

“बस यही फर्क है।”

“यही फर्क है?”

“दरअसल यह महाशय हमारे बड़े काम की चीज हैं। यह हमारे जितने काम की चीज हैं उसके मुकाबले इनके ऊपर खर्च की जाने वाली रकम तो कुछ भी नहीं है।”

“मुझे एक बात पर ऐतराज है कैप्टन।” सफेद हाथी ने हस्तक्षेप करते हुए कहा।

“किस बात पर एतराज है आपको?”

“मुझ जैसे अच्छे-खासे आदमी को आपने चीज बना दिया।”

“आपका ऐतराज जायज है। लेकिन हम एक मशीनरी के पुर्जे भी हैं, इसलिए ऐसा कुछ कहना गलत भी नहीं है।” कहकर कैप्टन कबीर ठाकुर ने अनिल वर्मा की ओर देखा।

“हां तो मैं इन महाशय के बारे में बता रहा था कि यह कितनी ऊंची चीज हैं। दरअसल इस मुल्क में हमारी सारी गतिविधियों व योजनाओं की सफलता में इनका बहुत बड़ा योगदान रहता है।”

“यहां की आंतरिक व गोपनीय सूचनाएं हासिल करना इनके लिए बहुत ही आसान काम है। यहां की फौज व सरकार की वे सारी सूचनाएं जो हमारे देश के अहित में होती हैं, हमारे पास इन्हीं के माध्यम से पहुंचती हैं।”

“इसके अलावा भी यह इतने बड़े-बड़े कारनामे अंजाम देते हैं जिनके बारे में तुम सोच भी नहीं सकते।”

“मेरे ख्याल से परिचय तो काफी हो चुका है कैप्टन ठाकुर।” सफेद हाथी ने फिर टोका।

“ठीक कह रहे हैं आप इससे ज्यादा तो मैं वैसे भी कुछ नहीं बता सकता। क्योंकि आपका पूरा परिचय तो मैं स्वयं भी नहीं जानता। मुझे तो इसमें भी संदेह है कि हमारा सुपर चीफ

भी आपके बारे में सब कुछ जानता होगा।”

वह अर्थपूर्ण ढंग से मुस्कराया।

“मुझे जिस तरह से जल्दबाजी में बुलाया गया है, उस समय मैंने सोचा था कि हम किसी महत्वपूर्ण मुद्दे पर बात करने वाले हैं। लेकिन परिचय का सिलसिला इतना लम्बा हो गया कि मुझे लगता है...।”

“आपका अनुमान सही है-हम अत्यंत महत्वपूर्ण मसले पर बात करने जा रहे हैं। लेकिन इससे पहले मेरे सहयोगी अनिल वर्मा को आपका परिचय कराना जरूरी था।”

“वह तो हो चुका।”

“तो फिर काम की बात सुनिए।”

“सुन रहा हूं।”

“एक औरत को सीमा पार कराना है।”

“हो जाएगा।” उसने बेहद सामान्य ढंग से कहा।

“बहुत जल्दी में होना है।”

“जल्दी ही हो जाएगा।”

“ज्यादा-से-ज्यादा कितना वक्त लग सकता है?”

“इसका सही जवाब तो तब दिया जा सकता है जब यह पता चले कि सीमा पार कहां पहुंचाना है?”

“इसका जवाब तो हमारा हेडक्वार्टर स्वयं आपको देगा।”

“ठीक है।”

“उसके बाद मुझे इतना वक्त लगेगा जितनी देर में उसकी फोटो तैयार की जा सकती है और यह काम मैं बहुत जल्दी ही पूरा कर दूंगा।”

“आप यह नहीं जानना चाहेंगे कि...।” अनिल वर्मा ने कहा- “वह औरत कौन है और उसे सीमा पार क्यों भेजा जा रहा है?”

“मैं उन सवालों के बारे में जानने में कोई रुचि नहीं रखता जिनके बारे में जानना मेरे लिए जरूरी न हो। वैसे वह औरत अजरा खान ही होगी।” उसने कहा।

अनिल वर्मा ने हैरत से उसकी ओर देखा।

“यह आप कैसे जानते हैं ?”

“कैप्टन का संदेश मिलते ही मुझे इस बात का पता चल गया था कि मुझे किस काम के लिए बुलाया जा रहा है।”

अनिल वर्मा के चेहरे पर उस व्यक्ति के प्रति प्रशंसापूर्ण भाव उभरे।

जबकि कैप्टन कबीर ठाकुर के चेहरे पर इसकी कोई प्रतिक्रिया नजर नहीं आई।

“आपके इतना कहने से अजरा खान की ओर से हमारी चिंता समाप्त हो गई।” कैप्टन कबीर ठाकुर ने कहा- “इस तरह अब हम अपना पूरा ध्यान अपने अभियान पर लगा सकते हैं जिसका अब अंतिम अध्याय पूरा करना बाकी है और उसे पूरा करने के लिए हमारे लिए यही सबसे बढ़िया मौका है और यही सबसे उपयुक्त समय है और इसी के लिए हमें आपके सहयोग की सबसे ज्यादा आवश्यकता है।”

“मैं हर तरह का सहयोग करने के लिए हर समय उपलब्ध हूं।”

"आप हमारे मिशन के बारे में तो जानते ही होंगे। अब तक दुश्मन सोच रहा था कि उसकी चाल कामयाब हो रही है। उसने हमें झांसा दिया कुछ नकली प्रशिक्षण शिविरों की जानकारी हमें परोसकर।"

"उसका विचार था कि हम उन नकली प्रशिक्षण शिविरों को तबाह करने में उलझ जाएं और वह असली प्रशिक्षण शिविरों में हमारे विनाश के लिए एक फसल तैयार करता रहे।"

"लेकिन दुश्मन नहीं जानता था कि हम उसकी चाल को उसी समय समझ गए थे जबकि वह चाल उसने चली भी नहीं थी।"

"वह यह भी नहीं जानता कि उसके असली प्रशिक्षण शिविरों के नक्शे व उनके बारे में संपूर्ण जानकारी हमारे पास है और हमारा एकमात्र उद्देश्य उन्हें तबाह करना है।"

"उन्हीं प्रशिक्षण शिविरों को तबाह करने का इरादा लेकर मैं यहां पहुंचा हूं। उनके बारे में जो जानकारी हमारे पास उपलब्ध नहीं थी, वह भी मैं अब तक हासिल कर चुका हूं।"

"इसके साथ ही मैं अपनी पूरी तैयारी मुकम्मल कर चुका हूं। अब केवल उसे अंतिम रूप देना बाकी है।"

"यह वक्त इसलिए सबसे ज्यादा उपयुक्त है, क्योंकि इस समय दुश्मन अपनी उस योजना की नाकामी के कारण बौखलाया हुआ है जो उसने हमारे विरुद्ध बनाई थी और जिसके बारे में उसका विचार था कि वह नाकाम नहीं हो सकते।"

"इससे पहले कि वह अपनी नाकामी से उबर सकें, हमें अपना काम पूरा कर लेना है। क्योंकि इस ओर उनका ध्यान इस समय बिल्कुल नहीं होगा।"

"इन सारी बातों में...।" सफेद हाथी ने कहा- "मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है कैप्टन कबीर ठाकुर। मुझे केवल उस काम में दिलचस्पी होगी जिसे आप या महकमा मुझे सौंपता है।"

"मैं वही बताने जा रहा हूं।"

"ठीक है-कहिए।"

"आज रात ही उन स्थानों के नक्शे आपको उपलब्ध करा दिए जाएंगे जो हमारा लक्ष्य हैं।"

"ठीक है।"

"उनको उड़ाने के लिए मुझे अंत्यंत आधुनिक विस्फोटक और उन्हें नियंत्रित करने वाली पूरी प्रणाली चाहिए।"

"मिल जाएगी।"

"कब तक?"

"जब आप चाहेंगे-समझ लीजिए वह सारी सामग्री मेरे पास मौजूद है। तुम जब चाहोगे-जहां चाहोगे, पहुंचा दी जाएगी।"

"केवल इतने से ही काम नहीं चलेगा।"

"और क्या चाहिए?"

"मुझे कुछ लड़के भी चाहिए।"

"लड़के?"

"हां, ऐसे लड़के जो उन प्रशिक्षण शिविरों में बेरोक-टोक आ-जा सकें-वहां पर विस्फोटकों को लगा सकें और मेरा आदेश मिलते ही रिमोट कंट्रोल के द्वारा उस प्रणाली को

चालू कर सकें।"

सफेद हाथी के चेहरे पर सोचपूर्ण भाव उभरे।

"क्या हुआ? कुछ मुश्किल काम है क्या?"

"नहीं।" उसने कहा- "कोई मुश्किल काम नहीं है। मेरे पास ऐसे कई लड़के हैं जो हर समय अपनी जान पर खेलने के लिए तैयार रहते हैं। लेकिन...।"

"लेकिन क्या?"

"उन्हें प्रशिक्षण शिविरों में किस तरह दाखिल कराया जाए, यह सोचने की बात है। यह काम जरूर मुश्किल होगा। क्योंकि उन प्रशिक्षण शिविरों की सुरक्षा व्यवस्था इतनी मजबूत जरूर होगी कि किसी बाहरी आदमी का उनमें प्रवेश संभव न हो सके।"

"हां।" कैप्टन कबीर ठाकुर ने कहा- "प्रशिक्षण शिविरों में सुरक्षा की व्यवस्था जरूर होती है। लेकिन वह इतनी अभेद्य भी नहीं है कि वहां कोई आ-जा न सके। कई ऐसे बाहरी आदमी हैं जो वहां नियमित रूप से आते-जाते हैं।"

"ऐसे कौन आदमी हैं जो वहां नियमित रूप से आते जाते।"

"सफाई कर्मचारी और उन्हें उन प्रशिक्षण शिविरों में कहीं भी जाने से नहीं रोका जाता।"

"हां-वे अनजान व्यक्ति नहीं होते-लेकिन कई बार ऐसा होता है कि वे अपनी जगह जबकि उन्हें कोई जरूरी काम होता है तो अपने घर के किसी दूसरे सदस्य या रिश्तेदार को भेज देते हैं।"

"लेकिन वे अनजान व्यक्ति तो होते नहीं होंगे।"

"और उन्हें बिना किसी पूछताछ के या बिना किसी छानबीन किए दाखिल कर दिया जाता है।"

"थोड़ी-बहुत पूछताछ तो जरूर होती है। लेकिन उनके पास एक विशेष प्रकार का कार्ड होता है। उसे देखने के बाद उसे विश्वसनीय मान लिया जाता है।"

"इसका मतलब तो यह हुआ कि उनकी सुरक्षा के प्रति घोर लापरवाही बरती जाती है।"

"वे लोग ऐसा नहीं मानते-उनके विचार से यह व्यवस्था काफी है। लेकिन अंदर जाने से पहले उनकी तलाशी अवश्य ली जाती है।"

"वह कोई खास बाधा नहीं है।" सफेद हाथी ने कहा- "क्या सफाई कर्मचारियों के सिवा भी कुछ लोग हैं जिनका वहां आना-जाना होता है?"

"हां-कुछ लोग ऐसे हैं जो प्रशिक्षार्थियों की जरूरतों का सामान जैसे साबुन, बनियान, अंडरवियर, शेविंग का सामान बेचने के लिए जाते हैं। एक-दो फल विक्रेता भी वहां ठेली लगाते हैं।"

"तो इस तरह कोई भी अपना सामान बेचने के लिए वहां जा सकता है?"

"कोई भी तो नहीं जा सकता। इसके लिए ऐसे आदमियों को पास जारी किए जाते हैं। पास जारी करते समय ऐसे लोगों की जरूर कड़ी छानबीन की जाती है। लेकिन उस पास को लेकर यह जरूरी नहीं है कि वही आदमी जाए जिसके नाम से वह पास जारी होता है।"

"सफाई कर्मचारियों जैसी छूट उन लोगों के लिए भी दी गई है। क्योंकि इन लोगों से वे किसी तरह का खतरा महसूस ही नहीं कर सकते।"

"क्या यह दुकानदार भी उन प्रशिक्षण शिविरों के अंदर कहीं भी आ-जा सकते हैं?"

"हां-वे कहीं भी आ-जा सकते हैं। लेकिन इसकी सुविधा इन्हें उतनी नहीं होती जितनी कि सफाई कर्मचारियों को होती है।"

"प्रशिक्षार्थी अपनी जरूरत का सामान स्वयं उनके पास आकर ले जाते हैं।

"लेकिन कभी-कभी वो उन्हें अपने पास भी बुला लेते हैं। तब वे चले जाते हैं।"

"यानी वे केवल बुलावे पर ही कहीं जा सकते हैं?"

"हां।"

"तलाशी तो उनकी भी ली जाती होगी?"

"जरूर ली जाती है। लेकिन वह तलाशी कैसी होती होगी, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि वे कुछ ऐसा सामान भी अंदर पहुंचा देते हैं जिसकी उन्हें इजाजत नहीं होती।"

"ऐसा कौन-सा सामान होता है?"

"जैसे सिगरेट।"

"सिगरेट-क्या वहां धूम्रपान पर प्रतिबंध होता है?"

"प्रतिबंध तो नहीं होता।" कैप्टन कबीर ठाकुर ने बताया- "लेकिन इसकी सप्लाई की इजाजत उन लोगों को नहीं है। बीड़ी-सिगरेट की सप्लाई उनके राशन के साथ होती है।"

"फिर उन दुकानदारों को बीड़ी-सिगरेट अंदर ले जाने की क्या जरूरत होती है?"

"जरूरत होती है क्योंकि प्रशिक्षार्थियों को बीड़ी-सिगरेट एक निर्धारित मात्रा में सप्लाई की जाती है, उससे ज्यादा नहीं जबकि वहां कई प्रशिक्षार्थी धूम्रपान के इतने शौकीन होते हैं कि उनका काम उससे नहीं चलता।"

"इसलिए वे अपनी बाकी जरूरत उन दुकानदारों के माध्यम से पूरी करते हैं।"

"सिगरेट।" सफेद हाथी की आंखों में सोचपूर्ण भाव नजर आए- "क्या तुम्हारे पास इसकी निश्चित जानकारी है कि वहां सिगरेट पहुंचती है?"

"मैं जो जानकारी दे रहा हूं वह विश्वसनीय है। उस पर किसी तरह का शक करने की गुंजाइश नहीं है।"

"यदि सिगरेट पहुंच सकती है तो।" सफेद हाथी ने कहा- "फिर कुछ भी पहुंच सकता है। चाहो तो टैंक भी पहुंच सकता है।"

"नहीं-नहीं।" कैप्टन कबीर ठाकुर ने कहा- "टैंक नहीं पहुंचाना हमें।"

"एक सवाल और है जिसका जवाब मुझे चाहिए।"

"पूछो।"

"उन प्रशिक्षण शिविरों में काम करने वाले सफाई कर्मचारियों व दुकानदारों में से कुछ के बारे में जानकारी हासिल हो सकती है?"

"कुछ के बारे में क्यों-उन सभी के बारे में पूरी जानकारी हमने हासिल कर ली है। उन सभी की लिस्ट पूरी जानकारी के साथ आपको उन नक्शों के साथ ही उपलब्ध करा दी जाएगी।"

"तब तो समझ लो किसी तरह की प्रॉब्लम ही नहीं होगी। सब कुछ वैसे ही हो जाएगा जैसे तुम चाहते हो कैप्टन।"

"वह तो हमने आपके बिना कहे ही समझ लिया था।" कैप्टन कबीर ठाकुर ने मुस्कराते हुए कहा।

"ठीक है।" उसने अपने जाम को खाली करते हुए कहा- "मेरे लिए और कोई सेवा?"

"सेवा है लेकिन उसकी जरूरत अभी नहीं पड़ने वाली।"

"कब पड़ने वाली है?"

"जब मिशन पूरा हो जाएगा।"

"मिशन पूरा हो जाने के बाद क्या जरूरत पड़ सकती है?"

"मिशन पूरा होते ही हमें इस मुल्क की जमीन छोड़ देनी होगी और उस समय हवाई मार्गों सहित सभी अंतर्राष्ट्रीय मार्गों पर किस कदर चौकसी रहेगी, इसका अनुमान आप आसानी से लगा सकते हैं।"

"उन हालात में हमें पैदल चलकर ही बॉर्डर पार करना होगा। लेकिन बॉर्डर पार करना भी उतना आसान तो होगा नहीं। उसके चप्पे-चप्पे पर जबरदस्त निगरानी होगी और वह निगरानी इस तरह की होगी कि सेना की नजर से बचकर मक्खी भी बॉर्डर के आर-पार नहीं जा सकेगी।"

"मक्खी आर-पार भले ही न जा सके, लेकिन आप लोग पार हो जाएंगे। परंतु मैं केवल इधर से पार कर सकता हूं। दूसरी ओर क्या व्यवस्था होगी, इसकी जिम्मेदारी मेरी नहीं होगी।"

"आपको इसकी जिम्मेदारी लेने की जरूरत नहीं होगी दूसरी ओर हमारा स्वागत करने वाले तैयार होंगे जिनके पास हमारी जानकारी भी होगी और हमारी पहचान भी।"

"ठीक है लेकिन मुझे इस बात से कोई वास्ता नहीं होगा कि वहां आप लोगों का स्वागत फूलमालाओं से हो या फिर भारतीय सेना के जवान और सीमारक्षक आपको घुसपैठिए समझकर गोलियों से छलनी कर दें।"

"ओके ओके।" कहते हुए कैप्टन ठाकुर ने नए जाम तैयार करने के लिए बोतल उठाई।

"बस।" सफेद हाथी ने अपने जाम पर हथेली रखते हुए कहा- "मेरे लिए और नहीं।"

"क्यों?"

"मुझे अब चलना है-मेरे पास वक्त की तंगी है। नहीं तो मैं पूरी बोतल खाली करने से पहले उठने वाला नहीं था।"

"एक पैग तो ले ही सकते हो।"

"नहीं ले सकता क्योंकि एक पैग लेने में जितना वक्त लगता है, उतने वक्त में प्रलय हो सकती है।" कहते हुए उसने अपनी सीट छोड़ दी।

पहले अनिल वर्मा ने उसके साथ हाथ मिलाया-फिर कैप्टन ठाकुर के साथ हाथ मिलाते हुए उसने कहा।

"इसके बाद हमारी मुलाकात शायद तभी होगी जब आप लोग इस मुल्क की जमीन को छोड़ रहे होंगे। शायद उस समय भी संभव न हो सके।"

"ऐसी क्या बात है अभी तो हम यहां हैं ही-मुलाकात तो होती ही रहेगी।"

"नहीं होती रहेगी।" उसने कहा- "आप लोगों को ऐसी कोशिश भी नहीं करनी है। हमारी मुलाकात तब तक नहीं होगी जब तक ऐसा करना बिल्कुल जरूरी न हो।"

"ठीक है हम लोग ऐसी कोशिश नहीं करेंगे। लेकिन यदि ऐसा जरूरी हुआ तो?"

"उसके लिए तो मैं कह चुका हूं। फिर भी हमारे हित में यही होगा कि ऐसा न हो।"

इसके बाद वह विदा हुआ।

उसके जाने के बाद कैप्टन ठाकुर ने अपने व अनिल वर्मा के लिए नए जाम तैयार किए।

"यह आदमी वाकई।" अनिल वर्मा ने अपना जाम उठाते हुए कहा- "कोई बहुत ऊंची चीज मालूम होता है सर।"

"यह उससे भी ऊंची चीज है-जैसा कि मालूम होता है।" कैप्टन ठाकुर ने कहा।

"लेकिन यह है कौन?"

"मैं इस आदमी के बारे में जितना जानता था, वह तुम्हें बता चुका हूं। लेकिन यह आदमी हमारे बारे में सब कुछ जानता है।"

"लेकिन...।" अनिल वर्मा के चेहरे पर उलझनपूर्ण भाव उभरे।

"इन हालात में क्या इस आदमी पर इस हद तक विश्वास किया जा सकता है?"

"क्योंकि हेडक्वार्टर से हमें ऐसा कोई संकेत नहीं मिला। इसके विपरीत मुझे स्पष्ट रूप से कहा गया था कि इस आदमी की किसी भी सलाह को हम नजरअंदाज न करें। साथ ही मुझे इस बात की सख्त हिदायत दी गई है कि मैं इस आदमी के बारे में कुछ भी जानने की कोशिश न करूं।"

"क्या बात है?"

"यह सोचना हमारा काम नहीं है।"

"क्यों?"

"इस आदमी से केवल जरूरी विषयों पर ही बात की जाए। किसी व्यक्तिगत विषय पर या कोई गैरजरूरी बात बिल्कुल न की जाए।"

"इसका मतलब हेडक्वार्टर के लिए यह एक विश्वसनीय आदमी है।"

"इसका मतलब यही होता है अनिल वर्मा।"

"लेकिन इसके पूरे परिचय से हेडक्वार्टर भी क्या उतना ही अपरिचित है जितना कि हम?"

"इस विषय में मैं कुछ नहीं कह सकता। लेकिन हमारा सुपर बॉस पाणिकर कितना काइयां आदमी है, इसका पूरा अनुभव शायद तुम्हें अभी नहीं है। मुझे नहीं लगता कि वह किसी आदमी की पूरी जन्मपत्री देखे बिना उस पर इस कदर विश्वास कर सकता है।"

"यह तो आप ठीक कह रहे हैं सर। वैसे देखने से लगता है कि यह आदमी किसी पश्चिमी मुल्क का नागरिक है।"

"गलत।"

"जी?"

"तुम्हारा अनुमान एकदम गलत है अनिल वर्मा। क्योंकि अगली बार जब तुम इस आदमी से मिलोगे तो यह तुम्हें कोई हब्शी एक नए रूप में ही नजर आएगा।"

"उसके बाद वह अफगान...यानी हर बार यह आदमी तुम्हें जाति का अफ्रीकी नजर आएगा।

"इतना बड़ा बहुरूपिया है यह आदमी?" अनिल वर्मा ने हैरतपूर्ण स्वर में कहा।

“यह इससे भी बड़ा बहुरूपिया है।”

अनिल वर्मा के चेहरे पर उस आदमी के प्रति प्रशंसापूर्ण भाव नजर आए और वह अपना जाम उठाकर चुस्कियां लेने लगा।

□□□

फौजी इंटेलीजेंस की क्रूरता का कहर सबसे पहले उस ड्राइवर पर टूटा जो उस गाड़ी से पकड़ा गया था। जिसका पीछा इसलिए किया जा रहा था कि उसे अनिल वर्मा नाम का हिंदुस्तानी एजेंट स्वयं ड्राइव कर रहा था और एक निश्चित स्थान पर उसे घेरकर गिरफ्तार करने की योजना तैयार की गई थी।

लेकिन उस गाड़ी में अनिल वर्मा की बजाय उस आदमी को देखकर सभी हतप्रभ रह गए थे।

अंत में उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

उससे पूछताछ का सिलसिला आरंभ हुआ।

उस घड़ी फौजी अफसर अपनी नाकामी से बुरी तरह खीजे हुए थे और ऐसा लगता था जैसे इस आदमी को ही वे अपनी इस नाकामी के लिए पूरी तरह जिम्मेदार समझ रहे हों।

इसलिए इस आदमी पर उनका कहर टूटना ही था।

आरंभिक पूछताछ में उसके साथ कुछ नर्मी के साथ पेश आया गया।

लेकिन बीच में ही उसे सहयोग न करने पर खतरनाक परिणाम भुगतने की चेतावनी भी दी जाती रही।

वह बूढ़ा ड्राइवर समझ चुका था कि उसके सिर पर एक भारी मुसीबत आ पड़ी है।

और उसने वह स्वीकार कर लिया तो उस मुसीबत का रूप और भी संगीन होगा।

इसलिए शुरू में वह इस तरह की किसी भी घटना से इनकार ही करता रहा। वह कहता रहा कि वह इस बारे में न तो कुछ जानता है और न ही उसका इससे कोई वास्ता है। वह तो अपने पेशे के अनुसार इस गाड़ी को किराए पर लेकर चला था। उस समय वह गाड़ी में अकेला था-उसके साथ कोई दूसरा आदमी था ही नहीं।

उसे तो किसी गड़बड़ी का पता तब चला, जब सेना द्वारा उसकी गाड़ी को चारों ओर से घेर लिया गया।

इससे पहले वह कुछ नहीं जानता था।

लेकिन फौजी इंटेलीजेंस के लोगों के सामने वह ज्यादा देर तक अपने इस बयान पर कायम नहीं रह सका।

क्योंकि प्रारंभिक नरमी के कुछ देर बाद ही उसके साथ सख्ती बरतना आरंभ कर दिया गया। क्योंकि वे लोग ज्यादा सब्र से काम लेने वालों में से नहीं थे।

उसके ऊपर सख्ती की गई।

सख्ती करते समय इस बात को बिल्कुल ही नजरअंदाज कर दिया गया कि वह बूढ़ा व कमजोर आदमी इतनी सख्ती बर्दाश्त भी उसे लगने लगा कि जिस सच्चाई के खुलने से उसके ऊपर मुसीबत टूट पड़ने वाली है उससे कहीं ज्यादा मुसीबत तो उसके कर सकेगा या नहीं।

और वह इस सख्ती से जल्दी ही टूट गया।

ऊपर उस घड़ी टूट रही थी।

वह सच्चाई बताने पर राजी हो गया।

लेकिन उसने इस बात का वादा उन लोगों से लेना चाहा कि सच्चाई जानने के बाद उसे इस तरह की यातनाएं नहीं दी जाएंगी।

उसे उसी घड़ी इसका यकीन दिला दिया गया।

लेकिन उसके किसी वादे पर विश्वास करना कितनी बड़ी भूल थी, यह बात शायद वह नहीं जानता था।

“बोल-सच्चाई क्या है?” उससे पूछा गया।

उत्तर में उसने बता दिया कि किसी अजनबी ने किस प्रकार उसे एक मामूली-से काम के लिए इतनी बड़ी रकम की पेशकश की थी।

हालांकि वह जानता था कि जिस काम के लिए उसे इतनी बड़ी रकम दी जा रही थी, वह कोई मामूली काम नहीं हो सकता था।

इसके पीछे जरूर कोई गहरा रहस्य था।

लेकिन उसकी बेटी की जिंदगी के सवाल ने उसके दिमाग को जकड़ लिया था।

वह इस विषय में कुछ भी नहीं सोच सका था।

इस तरह वह इस काम के लिए तुरंत राजी हो गया जिसके लिए उसे अधिकतर रकम उसी समय अदा कर दी गई।

रकम का एक हिस्सा उसे बाद में दिया जाने वाला था जिसके लिए उसे उन लोगों पर पूरा विश्वास था कि उसके साथ कोई बेईमानी नहीं की जाएगी।

लेकिन वह यह नहीं जानता था कि वे लोग कौन थे? उसने एक बार यह जानने की कोशिश जरूर की थी। लेकिन उसे कह दिया गया था कि उसे यह सब जानने की जरूरत नहीं है। उसे केवल उस रकम से मतलब होना चाहिए जो उसे दी जा रही है। दूसरा उस काम से जो कि उसे रकम के बदले करना है। इसके सिवा उसे कुछ नहीं सोचना।

एक तरह से यह उनके बीच हुए समझौते की शर्त भी थी।

जिनका पालन करना उसके लिए जरूरी था।

और उस बड़ी रकम की झलक देखने के बाद कुछ भी सोचने-समझने की शक्ति तो उसके अंदर वैसे ही नहीं रह गई थी।

इस तरह उस ड्राइवर द्वारा दी गई जानकारी से उन्हें यह तो मालूम हो ही गया कि वह चालाक आदमी किस तरह उनकी आंखों में धूल झोंकने में कामयाब हो गया।

लेकिन केवल इसी जानकारी से तो अब उनका भला होने वाला नहीं था।

उन्हें तो यह जानकारी हासिल करना अत्यंत जरूरी था कि उनकी आंखों में धूल झोंकने के बाद वह कहां गया और इस समय वह कहां हो सकता था।

उन्हें उस आदमी के बारे में भी जानकारी चाहिए थी जिसने उस बूढ़े ड्राइवर को वह बड़ी रकम अदा की थी।

और उस जानकारी को हासिल करने के लिए उतावले हो रहे इंटेलीजेंस के उन फौजी हुक्मरानों ने अपने जल्लादों को आदेश दिया कि यह जानकारी इसी बूढ़े के हलक में हाथ डालकर निकालनी है।

उसकी इस बात पर यकीन नहीं किया गया कि वह जो कुछ जानता था बता चुका-इससे आगे वह कुछ नहीं जानता।

वह चीखता रहा-चिल्लाता रहा उस वादे की दुहाई देता रहा कि जो उसके साथ किया गया था।

लेकिन उन्होंने तो यह मानने से ही इनकार कर दिया कि उसके साथ कोई वादा भी किया गया था।

इस तरह एक बार उसे फिर से जल्लादों के हवाले कर दिया।

उन जल्लादों के हवाले जिनके दिल में रहम नाम की कोई चीज थी ही नहीं और किसी इंसान को यातनाएं दे-देकर किस तरह ज्यादा-से-ज्यादा तड़पाया जा सकता है, इसके कितने ही गुर वे जानते थे।

और ऐसे सैकड़ों हथकंडों को इस्तेमाल करने में वे पूरी तरह से माहिर थे।

उनके बारे में कहा जाता था कि वे पत्थरों को भी बोलने पर मजबूर कर सकते हैं।

इस तरह एक बार फिर उस बूढ़े, लाचार और कमजोर आदमी पर भयंकर यातनाओं का दौर आरंभ हो गया जिसका कुसूर यह था कि वह अपनी बेटी को एक भयंकर बीमारी से तड़प-तड़पकर मरते नहीं देख सकता था।

उसकी चीखों से वह कक्ष दहलने लगा।

ऐसा लग रहा था जैसे उस टॉर्चर चैम्बर की दीवारें तक भयंकर पीड़ा से चीत्कार कर उठी हों।

लेकिन उन जल्लादों का दिल उन यातनाओं से नहीं पिघल ऐसा लगता था जैसे उनके अंदर हर तरह की मानवीय संवेदनाएं मर चुकी हों।

वे उस लाचार बूढ़े की चीखों में जिन शब्दों को सुनना चाहते थे। वह शब्द उन्हें सुनाई ही नहीं दे रहे थे।

दे भी नहीं सकते थे।

जो कुछ वह जानता था-बता चुका था।

लेकिन वे लोग उससे जो जानना चाहते थे उसके बारे में वह कुछ भी नहीं जानता था।

फिर कोई भी यातना उससे वह जानकारी कैसे उगलवा सकती थी?

यातनाओं को सहन करते-करते उसकी ताकत समाप्त होती चली गई। यहां तक कि उसकी चीखों की आवाज भी मद्धिम होती चली गई।

अंत में उसके जिस्म में इतनी भी ताकत नहीं रह गई कि वह तड़प भी सके।

उसका जिस्म जैसे संज्ञाविहीन होता चला गया।

लेकिन जल्लादों की क्रूरता उसके ऊपर और भी बढ़ती चली गई।

इसका अहसास उन्हें बहुत बाद में हुआ कि वे अपना पराक्रम एक लाश के ऊपर आजमा रहे हैं।

तब कहीं जाकर उनकी यातनाओं का सिलसिला थमा।

वह मर चुका था।

उन्होंने प्रश्नसूचक दृष्टि से एक-दूसरे की ओर देखा।

“यह तो मर चुका है।”

"अब क्या करें?" दूसरे ने प्रश्न किया ।
"हम कर भी क्या सकते हैं? इसे जिंदा तो किया नहीं जा सकता।"
"लेकिन इसकी सूचना तो देनी होगी-इसमें देर करना ठीक नहीं होगा।"
"ठीक है-तू जाकर बोल दे।" उसने कहा।
दूसरा हिचकिचाया।
"बोल दे न जाकर।" उसने जोर देते हुए कहा।
इसके बाद वह व्यक्ति मेजर अल्ताफ के सामने हाजिर हुआ।
मेजर अल्ताफ ने अपना चेहरा उठाकर उसकी ओर देखा।
"क्या?"
"क्या हुआ-कुछ बताया उसने?"
"नहीं सर।"
"नहीं?" मेजर अल्ताफ के चेहरे पर नागवारीपूर्ण भाव पैदा जाकर उसकी जुबान खुलवाने की कोशिश करो।
"अब उसकी जुबान नहीं खुल सकती सर।"
"क्यों नहीं खुल सकती? तुम्हारे हाथों को लकवा मार गया?"
"वह...वह मर चुका है सर।"
"मर चुका है? कैसे मर गया?"
"वह कुछ जानता ही नहीं था सर-जानता होता तो उसने जरूर बता दिया होता। लेकिन हमने इसके बावजूद भी उस पर सख्ती की। उसी के नतीजे से वह मर गया।"
"वह कुछ जानता ही नहीं था या तुम अपनी नाकामी छिपाने के लिए ऐसा कह रहे हो?"
"यह बात नहीं है सर-हमें पूरा यकीन है कि वह कुछ जानता ही नहीं था।"
"लेकिन तुमने उसे मरने क्यों दिया?"
"हमने इसके लिए पूरी सावधानी रखी थी सर-लेकिन उसके बावजूद भी वह मर गया। दरअसल वह बहुत ही कमजोर आदमी साबित हुआ।"
मेजर अल्ताफ के चेहरे पर सोचपूर्ण भाव उभरे।
"ठीक है।" उसने कहा- "उसकी लाश को ठिकाने लगा दो।" उसने भावहीन स्वर में कहा।
वह सच बोल रहा था या झूठ-केवल यही जानने के लिए उसकी जान ले ली गई।
यह उन लोगों के लिए कोई बड़ी बात नहीं थी।
लेकिन मरने वाला उस पीड़ा से मुक्त जरूर हो गया जो कि उसे अपनी बेटी को भयंकर बीमारी से तड़प-तड़पकर मरते हुए देखते रहने से होने वाली थी।
वह हर तरह की पीड़ा से मुक्ति पा चुका था।
□□□
वह आदमी बहुत तेजी के साथ उस ठेले को धकेलता चला जा रहा था जिस पर कई तरह के ताजा फल रखे हुए थे।
उसी घड़ी एक जीप उस ठेले के बराबर में आकर रुकी। गाड़ी के साथ ही वह ठेला भी

रुक गया।

ठेला धकेलने वाले व्यक्ति ने जीप की ओर देखा। जीप की ड्राइविंग सीट से एक व्यक्ति बाहर आया। फिर आगे बढ़ता हुआ ठेले वाले के करीब पहुंचा।

"सब ठीक है?" जीप ड्राइवर ने पूछा।

"हां सब ठीक है।"

"तुमने अपना काम ठीक से समझ लिया?"

"बिल्कुल समझ लिया।"

"यह काम बहुत सावधानी के साथ किया जाना है। मामूली-से-मामूली लापरवाही सारा खेल बिगाड़ सकती है।"

"कभी पहले हुई है मेरे किसी काम में लापरवाही?"

"तुम्हारी योग्यता देखकर ही तो यह काम तुम्हें सौंपा गया है। लेकिन इसके लिए तुम्हें चेतावनी देना जरूरी था।"

"ठीक है।"

उसी घड़ी जीप ड्राइवर ने अपने ओवरकोट की थैले जैसी बड़ी जेबों से जो चीज निकाली वे सेब थे। वह सेब निकाल-निकालकर उसके ठेले पर रखने लगा।

ठेले वाला उन्हें देखता रहा।

वह सेब गिनती में छः-सात से कम नहीं थे। उसके बाद उसने ठेले वाले की ओर देखा।

"इन सेबों की किस्म जानता है?"

उत्तर में उसके होंठों पर अर्थपूर्ण मुस्कराहट उभरी।

"खूब जानता हूं।" उसने कहा।

"यह खतरनाक किस्म के बम हैं लेकिन देखने पर कोई सोच भी नहीं सकता कि यह खूबसूरत सेब इतने खतरनाक बम हो सकते हैं।"

"इनकी सबसे बड़ी विशेषता तो यह है कि इनमें से खुशबू भी सेब जैसी आती है।" कहते हुए उसने एक बम उठाकर उसकी नाक के सामने किया।

"सूंघकर देखो।"

"सचमुच इतनी अच्छी सुगंध है-मन करता है अभी खा लूं।"

"इन्हें खाने की कोशिश का अंजाम जानते हो? पहले हवा में उड़ोगे और जब जमीन पर गिरोगे तो जिस्म, जिस्म नहीं रहेगा बल्कि चीथड़े होंगे। चीथड़े भी ऐसे कि पहचानना मुश्किल होगा कि यह मानवीय जिस्म के चीथड़े हैं या किसी जानवर के।"

"जानता हूं-अच्छी तरह से जानता हूं।"

"तो क्या इन बमों को इसी तरह बाकी सेब के ढेर से अलग रखोगे?"

"बाकी ढेर से अलग नहीं रख सकता-इसे असली सेबों के बीच में मिलाकर रखना होगा।"

"जरूरत पड़ने पर इसकी पहचान कैसे करोगे?"

उसने एक हाथ में सेब उठाया तथा दूसरे में बम।

"इस तरह।" उसने कहा।

"मैं समझा नहीं।"

"उसी साइज का सेब वजन में हल्का है जबकि बम भारी है। लेकिन वजन का यह अंतर इतना कम है कि हर-एक आदमी इसमें अंतर नहीं कर सकता।"

"गुड।" जीप ड्राइवर ने प्रशंसापूर्ण नेत्रों से उसकी ओर देखते हुए कहा-

"लेकिन एक बात बताओ।"

"क्या?"

"बम तो इस तरह आसानी से छिपाकर ले जाए जा सकते हैं। लेकिन इन्हें रिमोट से जोड़ने का सामान कैसे ले जाओगे?"

"मुझे मेरा काम समझाने की जरूरत नहीं है। सारा सामान मेरे हवाले कर दो। बाकी काम मेरा है।"

"ठीक है।" जीप ड्राइवर ने कहा। फिर उसने दूसरी जेब में हाथ डालकर मिठाई के डिब्बे के आकार का एक कार्ड-बोर्ड का डिब्बा निकालकर उसे थमा दिया।

"सारा सामान डिब्बे के अंदर है। लेकिन उसके सभी पार्ट अलग-अलग हैं ताकि अंदर छिपाकर ले जाने में तुम्हें सुविधा रहे। पार्ट्स को जोड़ने का काम तुम्हारा है।"

"ठीक है-मैं कर लूंगा।"

"नक्शे को ठीक से समझ लिया है कि बम कहां-कहां लगाए जाने हैं?"

"सब कुछ समझने के बाद ही इस काम को अंजाम देने के लिए चला हूं।"

"ठीक है-बेस्ट ऑफ लक।" उसने कहा तथा जीप की ओर बढ़े गया।

उसने भी अपना ठेला आगे बढ़ा दिया।

चलते-चलते ही वह बमों को असली सेबों के ढेर में छिपा रहा था।

उस घड़ी उसके चेहरे पर किसी प्रकार के तनाव के भाव नजर नहीं आ रहे थे।

□□□

कर्नल का चेहरा तमतमाया हुआ था। उसकी आँखें सुर्ख हो रही थीं। वही सुर्ख आंखें उठाकर उसने अपने सामने खड़े मेजर अल्ताफ की ओर देखा।

मेजर अल्ताफ के चेहरे पर शर्मिंदगी के भाव थे।

वह तुम्हारा बड़बोलापन था।

"मैं नहीं जानता था मेजर कि।" उसने कहा- "तुम इतने नाकारा आदमी साबित हो सकते हो। तुम अब तक जो कहते रहे हिंदुस्तानी-अकेला हिंदुस्तानी तुम्हारी सारी सुरक्षा व्यवस्था की धज्जियां उड़ाता हुआ तुम्हारे मुंह पर थूककर चला गया।"

"तुम बोलते बहुत हो मेजर, लेकिन कर कुछ नहीं सकते।"

"और तुम यहां चले आए अपने चेहरे पर उस हिंदुस्तानी के थूक का निशान दिखाने।"

"तुम्हें शर्म आनी चाहिए थी मेजर-तुम्हें डूबकर मर जाना चाहिए था।"

मेजर अल्ताफ कुछ कहना चाहता था। लेकिन कह नहीं पा रहा था। वह कह भी क्या सकता था-उसके पास इसका कोई जवाब था ही नहीं।

"तुम दावा करते थे कि वह हर समय तुम्हारी निगरानी में है तुम तो यहां तक दावा करते थे कि तुम उसकी सांसों की गति तक गिनकर बता सकते थे। क्यों किया था तुमने इस तरह का दावा?"

"मेरा वह दावा।" उसने हिचकिचाते हुए कहा- "गलत नहीं था कर्नल साहब।"

"गलत नहीं था?"

"वह इसी तरह की निगरानी में था सर-हर पल उसके ऊपर नजर रखी जा रही थी।"

"फिर वह तुम्हारी आंखों में धूल झोंककर-तुम्हारे मुंह पर तमाचा मारकर निकल कैसे गया?"

"उसने...उसने ट्रिक ही ऐसी इस्तेमाल की थी सर-हम यह नहीं सोच सके कि वह इतनी मामूली-सी ट्रिक इस्तेमाल करेगा। यदि उसने कोई दूसरा तरीका इस्तेमाल किया होता तो वह जरूर हमारी पकड़ में आ गया होता।"

"यह तो वाकई उसकी गलती है।" कर्नल के चेहरे पर व्यंग्यात्मक भाव उभरे- "उसे यह बात तुम्हें पहले ही बतानी चाहिए थी कि वह कौन-सी ट्रिक इस्तेमाल करेगा। है न?"

"आई एम सॉरी सर।"

"क्या सॉरी?"

मेजर फिर कोई जवाब न दे सका।

वैसे यह कोई अप्रत्याशित नहीं था-कर्नल का सामना करने से पहले ही उसने सोच लिया था कि उसे तगड़ी लताड़ लगाई जानी जरूरी थी।

"तुम समझते हो मेजर कि तुम्हारे सॉरी बोल देने भर से मामला खत्म हो गया? अब तुम्हें कुछ करने की जरूरत नहीं है?"

"जरूरत है सर-मैं ऐसा नहीं समझता। हम चुप नहीं बैठे।"

"क्या कर रहे हो?"

"वह हमसे बचकर हिंदुस्तान नहीं जा सकता। एक बार किसी कारण से वह हमारी पकड़ाई में आने से बच गया। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह हमारी पकड़ाई में आ ही नहीं सकता। उसकी तलाश बड़े व्यापक पैमाने पर की जा रही है।"

"वह कहीं भी छिपा हो-अपने-आपको ज्यादा समय तक छिपाकर नहीं रख सकेगा-बहुत जल्दी ही वह हमारी पकड़ाई में आ जाएगा।"

"तुम...तुम पकड़ सकोगे उसे?"

"क्यों नहीं सर-उसे हम जरूर पकड़ लेंगे।"

"वह तुम्हारे अपने मुल्क में तुम्हारी आंखों में धूल झोंक गया-उसके मुल्क में जाकर पकड़ लोगे उसे?"

"उसके मुल्क में क्यों सर-उसे हम यहीं पर पकड़ लेंगे।"

"यहां होगा तभी तो पकड़ सकोगे उसे?"

"वह यहीं तो होगा सर-अभी वह हमारे मुल्क की सीमाएं पार नहीं कर सका होगा।"

"क्यों नहीं कर सका होगा?"

"उसे इतना वक्त ही कहां मिला है सर!"

"तबसे अब तक इतना वक्त हो चुका है मेजर कि पूरी दुनिया की दो बार परिक्रमा की जा सकती है। जबकि तुम कहते हो उसे इतना वक्त ही नहीं मिला।"

"उसके गायब होने के कुछ देर बाद ही हमें यह जानकारी हो गई थी सर-उतने समय में तो वह सीमा पार कर नहीं सकता था। रॉकेट पर सवार होकर भी नहीं कर सकता था।"

"लेकिन तब से अब तक तो कर सकता था-इतने समय में तो उसे बैलगाड़ी की भी

जरूरत नहीं थी। वह पैदल चलकर भी पार कर सकता था।"

"नहीं कर सकता था सर।"

"क्यों नहीं कर सकता था?"

"क्योंकि उसके तुरंत बाद तो हमने चौकसी बढ़ा दी थी। और यह चौकसी बहुत कड़ी थी जो कि अभी तक भी उसी तरह जारी है।"

"चौकसी के बावजूद भी वह सीमा पार कर सकता था।"

"नहीं कर सकता सर-वह कोई साधारण चौकसी नहीं है। वह अभी सीमा पार नहीं कर पाया है सर-अब ऐसी कोशिश करेगा भी नहीं। करेगा तो उसी समय पकड़ा भी नहीं जाएगा। यह बात मैं दावे के साथ कह सकता हूं सर-इसकी पूरी गारंटी है मेरी।" उसने कहा।

"गारंटी।" कर्नल ने घूरकर उसकी ओर देखा- "दावा!"

"ऐसा दावा तो तुम पहले भी कर चुके थे।"

"मैंने दावा किया जरूर था सर-लेकिन इस बार हम कोई भी लापरवाही नहीं करेंगे।"

"तुम्हारा मतलब अब तक तुम लापरवाही ही करते रहे हो-यह बात स्वीकार कर रहे हो तुम?"

"मेरा यह मतलब नहीं था सर।"

"क्या मतलब है तुम्हारा?"

"दरअसल हम इस बार पहले वाली गलतियां नहीं दोहराने वाले। क्योंकि हम उनसे सबक ले चुके हैं।"

"अभी तक तुमने कोई सबक नहीं लिया मेजर।"

"सर।"

"तुम उसकी निगरानी कराते रहेउस समय तुमने कोई सावधानी नहीं बरती और जिस तरह तुम सब संतुष्ट थे-अपने मातहतों के काम से वैसे ही तुम अब संतुष्ट नजर आ रहे हो। जबकि तुम्हारे मातहत जो उसकी निगरानी कर रहे थे, स्वयं को उसकी नजरों से नहीं बचा सके। इसकी बजाय वह स्वयं उनके द्वारा अपनी निगरानी कराता रहा। उनके द्वारा वह तुम्हारे हर एक्शन का अनुमान लगाता रहा।"

"ऐसा नहीं है सर।"

"कैसा नहीं है?"

"हमारे आदमियों ने इस बात की भनक तक नहीं लगने दी कि हम उसकी निगरानी कर रहे हैं।"

कर्नल ने घूरकर उसकी ओर देखा।

"और यह बात भी तुम दावे के साथ कह सकते हो-गारंटी के साथ कह सकते हो?"

वह हिचकिचाया।

"जवाब दो।"

"हां।" उसने कहा- "हां।"

"क्या हो?"

"उसे इस बात की भनक नहीं लगने दी सर कि उसकी निगरानी की जा रही है।"

"बेवकूफ आदमी-तुम्हारा यह दावा सही है तो क्या ऐन वक्त पर उसे सपना आ गया कि वह गिरफ्तार होने वाला है? इस काम के लिए उसने एक गाड़ी उस सुरंग में पहले ही अरेंज कर ली थी जिसमें बैठकर वह तुम्हारे आदमियों की नाक के नीचे से बड़ी सहूलियत के साथ होता हुआ गुजर गया।"

"तुमने तो उसे इस बात की भनक नहीं लगने दी। फिर तो उसे इस बात का सपना ही आया होगा या फिर ऐन वक्त पर कोई फरिश्ता उसकी मदद के लिए आ पहुंचा होगा। क्यों?"

मेजर अल्ताफ के मुंह से बोल न फूटा।

कर्नल ने उसे बेवकूफ कहकर कुछ गलत नहीं कहा था।

दरअसल यह उसकी बेवकूफी ही थी कि इतनी मामूली-सी बात भी उसकी समझ में नहीं आ सकी।

वह अपनी नाकामी पर इस कदर बौखलाया हुआ था कि उसका दिमाग ही ठीक से काम नहीं कर रहा था।

या फिर वह सोच रहा था कि इतनी मामूली-सी बातों पर उसे सोचना ही नहीं चाहिए।

कर्नल उसकी ओर घूरता रहा।

वह कुछ बोल नहीं पा रहा था। दरअसल यह उसकी इतनी भारी बेवकूफी थी कि उसके जवाब में उसके पास कहने के लिए कुछ था ही नहीं।

"मेजर अल्ताफ!"

"यस सर।"

"लगता है तुम्हारा दिमागी तवाजुन बिगड़ चुका है। मैं तुम्हारे डॉक्टर से बात करूंगा। जिस आदमी का दिमागी तवाजुन इस कदर बिगड़ गया हो उसके कंधों पर इतनी बड़ी जिम्मेदारी नहीं सौंपी जा सकती। क्यों न तुम्हें इस जिम्मेदारी से मुक्त कर दिया जाए? क्या तुम आराम करना चाहते हो?"

मेजर अल्ताफ ने उत्तर नहीं दिया।

उसके चेहरे पर शर्मिंदगी के भाव उभर रहे थे।

"तुमने जवाब नहीं दिया मेजर-मैं सीरियसली कह रहा हूं।"

"मुझे एक मौका और दीजिए सर।"

"मौका-मौका किसलिए?"

"मैं उस हिंदुस्तानी एजेंट को गिरफ्तार करके आपके सामने हाजिर कर दूंगा सर।"

"साल-छः महीने में कर लोगे उसे गिरफ्तार?"

"ऐसा नहीं है सर-मैं बहुत जल्दी उसे गिरफ्तार कर लूंगा।"

"कितनी जल्दी?"

मेजर अल्ताफ के चेहरे पर उलझनपूर्ण भाव उभरे।

"मेजर!"

"यस सर।"

"तुम्हें केवल दो दिन का वक्त दिया जा रहा है-दो दिन, यानी अड़तालीस घंटे।"

"घड़ी में समय देख लो-अब से ठीक अड़तालीस घंटे बाद मुझे वह हिंदुस्तानी एजेंट

चाहिए। तुम्हारे पास जितने साधन मौजूद हैं, उनके मद्देनजर अड़तालीस घंटे कम नहीं हैं। अड़तालीस घंटे में पूरे मुल्क को थाली की तरह पलटकर देख सकते हो। या इतना समय भी तुम्हें कम लग रहा है ?"

"नो सर।"

"व्हाट नो सर?"

"यह समय काफी होगा।"

"ठीक है फिर-अब यहां खड़े रहकर वक्त जाया क्यों कर रहे हो? तुम्हारा एक-एक सेकेंड कीमती है।"

"यस सर।"

"एक बात और।"

"यस सर।"

"ठीक अड़तालीस घंटे बाद तुम्हारी किस्मत का भी फैसला किया जाना है।"

"इस जिम्मेदारी के बदले में सेना तुम्हारे ऊपर कितना रुपया खर्च करती है यह तुम जानते ही होंगे। तुम्हें जो ऐशो आराम मुहैया कराया गया है उसका एक हिस्सा भी रैंक के दूसरे अफसरों को हासिल नहीं है।"

"यह बात अपने दिमाग में अभी से बैठा लो कि इस नाकामी के बदले में तुम्हें दी जाने वाली वह सारी सुविधाएं वापस ले ली जाएंगी।"

"हमारी सेना किसी नाकारा आदमी के ऊपर दौलत नहीं लुटा सकती। तुम समझ रहे हो न मेरी बात?"

"यस सर।"

"यू मे गो नाऊ।"

इसके बाद मेजर अल्ताफ विदा हुआ। लेकिन उस घड़ी वह अपने-आपको बहुत ही अपमानित महसूस कर रहा था।

□□□

वह फौजी जीप उस जंगली पथरीले रास्ते पर दौड़ रही थी जिसमें दो फौजी अफसर सवार थे। उनमें एक ड्राइविंग सीट संभाले हुए था, जबकि दूसरा उसकी बगल में बैठा हुआ था।

उस रास्ते पर चलती हुई जीप एक दूसरे कच्चे रास्ते पर मुड़ी जोकि घने पेड़ों के झुरमुट से इस तरह घिरा हुआ था कि उस पर जाने वाले वाहन को कुछ दूरी से भी देखा जाना संभव नहीं था।

वह पूरी तरह से पेड़ों के साये में छिप सकता था।

कुछ दूरी का फासला तय करने के बाद जीप रुक गई।

जीप रुकते ही दोनों फौजी अफसर जीप से बाहर आए।

वह फौजी अफसर हकीकत में फौजी अफसर नहीं बल्कि भारतीय इंटेलीजेंस के वे दो तेज-तर्रार दुस्साहसी अधिकारी थे जो दुश्मन के घर में घुसकर अपना खेल खेलने की हिम्मत रखते थे।

कैप्टन कबीर ठाकुर व उसका सहयोगी अनिल वर्मा।

फौजी अफसरों के वेश में वही दोनों थे।

यह भी कम दुस्साहस का काम नहीं था। यह जंगली इलाका पूरी तरह से फौजी गतिविधियों का केंद्र था। उसके चप्पे-चप्पे पर फौज की नजर होती थी।

उन पर जरा शक होने का मतलब था बिना किसी पूछताछ के गोलियों से छलनी हो जाना।

लेकिन उन दोनों के चेहरों पर किसी प्रकार के तनाव या आतंक के भाव नहीं थे।

वे सामान्य चाल से चलते हुए दोबारा उसी रास्ते तक पहुंचे जहां से उनकी जीप मुड़ी थी।

यह कच्चा रास्ता जंगली अवश्य था। लेकिन सैनिक वाहनों की आवाजाही उस पर हर वक्त रहती थी।

वे दोबारा उसी रास्ते पर पहुंचे।

एक बार उन्होंने पलटकर देखा। वहां से उनकी जीप बिल्कुल भी नजर नहीं आ रही थी।

फिर वे दोनों उस रास्ते पर उधर देखने लगे। जिस ओर आते-जाते उनकी जीप दूसरी ओर मुड़ गई थी।

अनिल वर्मा ने अपनी रिस्टवॉच में समय देखा।

ऐसा लगता था जैसे उन्हें किसी का इंतजार हो।

वे पूरे पांच मिनट तक खड़े रहे। इस बीच उनके चेहरों पर सतर्कता के भाव थे।

उसी घड़ी एक व्यक्ति उन्हें सामने से आता हुआ नजर आया।

उन दोनों के चेहरों के भावों में परिवर्तन हुआ। उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा। फिर आंखों-ही-आंखों में जैसे उन्होंने कोई निर्णय लिया और वे उसी दिशा में आगे बढ़ गए जिधर से वह आदमी आ रहा था।

शायद उन्हें इसी आदमी का इंतजार था।

कुछ कदम चलकर ही वे उस आदमी के करीब पहुंचकर रुके।

उन तीनों की नजरें आपस में टकराईं।

फिर उस व्यक्ति के होंठों पर मुस्कराहट उभरी।

"क्या रिपोर्ट है?" कैप्टन कबीर ठाकुर ने बिना किसी प्रश्न के उस आदमी के चेहरे पर नजरें गड़ाते हुए प्रश्न किया।

"रिपोर्ट क्या होगी साहब।" उस आदमी ने कहा- "मेरा काम तैयार है। सारी तैयारी मुकम्मल हो चुकी है। बस लीवर दबाने की देर है जो कि आपका संकेत मिलते ही हो जाएगा।"

"गुड।" कैप्टन कबीर ठाकुर ने कहा- "इस वक्त तुम्हें अतिरिक्त सावधानी बरतने की जरूरत है। अब तुम जाकर अपना मोर्चा संभालो और हमारे संकेत का इंतजार करो।"

"ठीक है-मोर्चा तो मैंने संभाल ही लिया है।"

"इस समय तुम्हारे लिए सबसे बड़ी जरूरत इस बात की है कि तुम अपने-आपको हर किसी की नजर से बचाकर रख सको।"

"हमारे सारे मोर्चों में तुम्हारा मोर्चा सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। इसीलिए तुम्हारी रिपोर्ट लेने के लिए हमें स्वयं एक बहुत बड़ा खतरा उठाकर यहां आना पड़ा है।"

"आप इस ओर से बिल्कुल निश्चिंत रहिए। कोई मेरे ऊपर नजर नहीं रख सकता। कोई मेरे ऊपर शक नहीं कर सकता। मैंने अपने मोर्चे के लिए ऐसा सुरक्षित स्थान चुना है कि वहां तक किसी की नजर पहुंच ही नहीं सकती।"

"जहाँ तक कामयाबी का सवाल है, उसकी चाबी इस समय मेरे हाथ में है और मेरी चाबी आपके हाथ में है। आपका इशारा मिलते ही लीवर दबा दिया जाएगा।"

"लीवर दबाते ही यह शांत जंगल कांप उठेगा-हर तरफ तबाही-ही-तबाही-मौत-ही-मौत नजर आएगी।"

"ऐसा नजारा।" अनिल वर्मा ने कहा- "यहीं नहीं-कई और स्थानों पर भी नजर आएगा।"

"दूसरी जगह क्या होता है, उससे मेरा कुछ लेना-देना नहीं।" उसने कहा- "मुझे अपने काम से मतलब है और उसमें आपको किसी शिकायत का मौका नहीं मिलेगा।"

"ठीक है।" कैप्टन कबीर ठाकुर ने कहा- "तुम अपना मोर्चा संभालो और हमारे संकेत का इंतजार करो।"

"मेरी समझ में नहीं आता साहब कि अब इंतजार किस बात का है। सारी तैयारी मुकम्मल है। फिर इंतजार करने का रिस्क क्यों लिया जाए? इंतजार करने का कोई कारण तो होना चाहिए कोई वजह तो होनी चाहिए।"

"तुम्हारे लिए वह कारण जानना जरूरी नहीं है।"

"ठीक है जानना जरूरी नहीं तो नहीं पूछता। लेकिन एक बात जरूर पूछना चाहता हूं।"

"क्या?"

"आपके संकेत का इंतजार कब तक करना होगा?"

"निश्चित रूप से कुछ नहीं बता सकते। लेकिन अब इसके लिए ज्यादा इंतजार नहीं करना होगा। संभव है इस बार तुम्हारे मोर्चे में दाखिल होने के कुछ मिनट बाद ही संकेत मिल जाए।"

"ठीक है।"

"एक बात और।"

"क्या?"

"इस बार तुम्हें मोर्चे में दाखिल होने के बाद तब तक बाहर नहीं आना है, जब तक तुम्हारा काम पूरा नहीं हो जाता। हालांकि यह काम बहुत जल्दी पूरा होने वाला है। फिर भी किसी कारणवश देरी होती है तो भी तुम्हें बाहर खुले में नहीं आना है।"

"नहीं आऊंगा, कुछ देरी भी हो जाती है, तब भी कोई बात नहीं। चार-छः दिन तक तो मैं एक ही स्थान पर बिना कुछ खाए-पिए आराम से रह सकता हूं।"

"वैरी गुड।" कैप्टन कबीर ठाकुर ने कहा- "वैसे तुम्हें भूखे-प्यासे रहने की नौबत नहीं आएगी।"

"ठीक है साहब-अब चलता हूं।"

कैप्टन ठाकुर ने सहमति दी। वह जाने के लिए वापस मुड़ा।

"सुनो।"

उसने पलटकर देखा।

"तुम एक बहुत बड़ा काम करने जा रहे हो इससे हाथ मिलाकर नहीं जाजोगे?" कहते हुए कैप्टन ठाकुर ने अपना हाथ उसकी जोर बढ़ाया।

"जापसे हाथ मिलाने की मेरी हैसियत कहां है साहब?"

"क्यों-हैसियत को क्या हुआ तुम्हारी?"

"मेरी हैसियत को कुछ नहीं हुआ साहब। लेकिन आप बड़े आदमी हैं।"

"बड़े आदगी कैसे होते हैं?"

"यह सब तो मैं नहीं जानता साहब, लेकिन आप बड़े आदमी है।"

"इसमें बड़े छोटे का सवाल नहीं है दोस्त। हम सब साथी है-दोस्त हैं। तुम और तुम्हारे जैसे कई हमारे साथी हैं जिनकी बदौलत ही हमारा यह मिशन कामयाब हो सकता है। इसलिए तुम्हारा महत्व किसी तरह भी कम नहीं है। यह बात अपने दिमाग से कभी मत निकालना कि इस मिशन की कामयाबी का सारा दारोमदार तुम्हारे कंधों पर है।"

"ऐसा है तो साहब।" उसने कहा- "मैं वादा करता हूं कि इस कामयाबी के लिए मैं अपनी जान की बाजी लगा दूंगा।"

कहकर उसने कैप्टन ठाकुर का हाथ थाम लिया।

कैप्टन ठाकुर के साथ गर्मजोशी से हाथ मिलाने के बाद उसने अनिल वर्मा की ओर हाथ बढ़ाया।

"विश यू ऑल द बेस्ट।" अनिल वर्मा ने उसे शुभकामनाएं देते हुए कहा।

फिर वह उनसे विदा हुआ तो जिम्मेदारी का अहसास उसके चेहरे पर साफ-साफ नजर आ रहा था।

कैप्टन कबीर ठाकुर और अनिल वर्मा वापस उस जीप के करीब पहुंचे। अनिल वर्मा ने कैप्टन ठाकुर की ओर देखा।

"यह बात।" उसने कहा- "ज्यादा देर तक छिपी नहीं रह सकती सर। उन दोनों फौजी अफसरों के गायब होने की बात पता चलते ही उनकी तलाश आरंभ हो जाएगी जिनकी वर्दियां इस समय हम इस्तेमाल कर रहे हैं। वैसे उनकी लाशें तो आसानी से बरामद नहीं होने वालीं। लेकिन उनके गायब होने की बात ही अफरा-तफरी मचाने के लिए काफी होगी। उस स्थिति में इस गाड़ी का इस्तेमाल करना हमारे लिए बहुत खतरनाक हो सकता है। क्योंकि इस गाड़ी को तो कहीं भी पहचाना जा सकता है सर।"

"तुम ठीक कह रहे हो अनिल वर्मा। लेकिन इस समस्या से छुटकारा पाने के बारे में तुम क्या सोच रहे हो?"

"इससे छुटकारा पाने के लिए हमें इन वर्दियों व इस जीप से छुटकारा पा लेना चाहिए सर। उसके बाद यह समस्या ही नहीं रहेगी।"

"ठीक है-हम इस गाड़ी को कहीं छिपा देते हैं। यह वर्दियां भी गाड़ी में ही छोड़ देंगे।"

"इसके लिए हमें कहीं दूर जाने की जरूरत नहीं है सर-इसके लिए इससे बढ़िया जगह हमें कहीं और कहां मिलेगी? इसे यहीं कहीं छिपा देते हैं।"

"हम ऐसा नहीं कर सकते वर्मा।"

"क्यों नहीं कर सकते सर?"

"हालांकि यहां पर गाड़ी को तलाश करना आसान नहीं होगा। लेकिन यह नामुमकिन

तो नहीं। एक परसेंट भी यदि गाड़ी को यहां से बरामद कर लिया गया तो उन्हें हमारे इरादों की भनक पड़ सकती है।"

"उन्हें जरा भी शक हो गया तो इस प्रशिक्षण शिविर की छानबीन आरंभ कर दी जाएगी। यदि ऐसा हुआ तो हमारी सारी पोल खुल जाएगी और हमारे सारे किए-धरे पर पानी फिर जाएगा। इसलिए हम गाड़ी को यहां छिपाने का खतरा नहीं उठा सकते।"

"कम-से-कम तब तक तो यह खतरा उठा ही नहीं सकते जब तक कि हमें वह आखिरी रिपोर्ट नहीं मिल जाती, जिसके बाद हमें एक्शन आरंभ कर देना है।"

"एक बार एक्शन का संकेत देने के बाद तो फिर दुश्मन हमारे मिशन को रोक ही नहीं सकता। लेकिन तब तक हमें हर तरह की सावधानी रखनी होगी।"

"पूरी तरह चौकस रहना होगा। समझो कि यह उस कहानी का क्लाइमैक्स है। हमारी जरा-सी लापरवाही इस कहानी का सारा रूप बदल सकती है।"

"लेकिन इस वर्दी और इस गाड़ी को साथ लेकर घूमना भी तो बहुत बड़े खतरे का वायस बन सकता है सर।"

"गाड़ी और वर्दी को साथ लेकर घूमने का तो मेरा भी कोई इरादा नहीं है वर्मा-मैं इनसे तुरंत छुटकारा पाने का ख्वाहिशमंद हूं। लेकिन इस तरह कि इन्हें बरामद न किया जा सके। यदि बरामद कर भी लिया जाए तो वह जगह हमारे लक्ष्यों से इतनी दूर हो कि दुश्मन को हमारे इरादों की भनक लग ही न सके।"

अनिल वर्मा के चेहरे पर सोचपूर्ण भाव उभरे।

"सभी जगह से रिपोर्ट आ चुकी है सर-केवल एक लक्ष्य ऐसा है जहां से रिपोर्ट अभी तक नहीं आई है। जबकि अब तक रिपोर्ट आ जानी चाहिए थी।"

"कहीं कोई गड़बड़ तो नहीं सर यदि ऐसा है तो हमें एक्शन के लिए संकेत दे देना चाहिए। उस हालत में केवल एक लक्ष्य को छोड़कर हम अपने बाकी लक्ष्य तो बेध सकते हैं। यदि वाकई कोई गड़बड़ है तो हमारा सारा मिशन ही खटाई में पड़ सकता है।"

"इस तरह का वहम मत करो वर्मा-कोई गड़बड़ नहीं है। रिपोर्ट में देरी होना तो इस बात का सबूत है कि कहीं कोई गड़बड़ नहीं है। यदि कोई गड़बड़ होती तो उसकी रिपोर्ट अब तक आ चुकी होती।"

कैप्टन ठाकुर की बात सुनकर अनिल वर्मा के चेहरे पर आश्वासनपूर्ण भाव नजर आए।

"इसके बारे में चिंतित होने की कतई कोई जरूरत नहीं है वर्मा। हमारा मिशन कामयाब ही रहेगा। हम जिस काम के लिए यहां आए हैं-उसे पूरा करके ही जाएंगे।"

"एक परसेंट इस बात की संभावना तो है कि हम जिंदा या मुर्दा वापस न जा सकें। लेकिन हमारा मिशन कामयाब न हो, यह नहीं हो सकता।"

"वह तो हो ही नहीं सकता सर-जिस मिशन की जिम्मेदारी आप संभाले हुए हैं उसके नाकाम होने का तो सवाल ही नहीं उठता सर।"

"उसके बाद हमें मौत को भी गले लगाना पड़ा तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ने वाला सर।"

"यह बातें छोड़ो अनिल वर्मा-फिलहाल इस गाड़ी से छुटकारा पाने की बात सोचो।"

"ठीक है सर-जैसा आप कहें।"

"फिलहाल इसे यहां से तो हटाओ-इसे कहां ठिकाने लगाना है, यह बात रास्ते में ही सोच ली जाएगी। स्टार्ट करो गाड़ी को।"

कैप्टन ठाकुर का आदेश मिलते ही अनिल वर्मा गाड़ी का स्टेयरिंग संभालकर बैठ गया।

कैप्टन ठाकुर भी उसकी बगल में बैठ गया।

उसी घड़ी गाड़ी का इंजन स्टार्ट हो गया।

□□□

अधेड़ उम्र के उस व्यक्ति का नाम मनमोहन देसाई था।

भारतीय इंटेलीजेस के उन चंद अधिकारियों में से वह भी एक था जिसकी रॉ की आतंकवाद निरोधक शाखा के गोपनीय दस्तावेजों अति गोपनीय फैसलों तक सीधी पहुंच थी।

इस तरह वह अत्यंत भरोसेमंद, अति विश्वसनीय जिम्मेदार अधिकारी था।

उस घड़ी वह उस विशेष शाखा के सुपर बॉस के.सी. पाणिकर के निर्देशन में होने वाली किसी महत्वपूर्ण बैठक से भाग लेकर लौट रहा था।

उस समय उसके चेहरे पर तनाव के लक्षण साफ-साफ नजर आ

वह जिस गाड़ी को स्वयं ड्राइव कर रहा था, ऐसा लगता था जैसे उसका ध्यान ड्राइविंग की बजाय किसी दूसरी जगह पर लगा हुआ इसके बावजूद भी वह बड़ी दक्षता के साथ ड्राइविंग कर रहा था।

लेकिन उसकी गाड़ी की स्पीड बेहद संतुलित थी।

काफी देर तक उसकी गाड़ी शहर की सड़कों पर घूमती रही।

ऐसा लगता था जैसे वह स्वयं भी न जानता हो कि उसकी मंजिल कौन-सी थी?

काफी देर तक शहर की सड़कों पर भटकते रहने के बाद उसकी गाड़ी शहर के एक पांच सितारा होटल में दाखिल हो गई।

गाड़ी को पार्किंग में छोड़कर वह होटल के अंदर पहुंचा तथा काउंटर के सामने से गुजरता हुआ होटल के बार में पहुंचा, जहां एक विशाल हॉल था, जहां पर काफी लोग एक साथ बैठकर कीमत शराब की चुस्कियों का मजा ले सकते थे।

हालांकि उस समय होटल में उसके एक नकली नाम से एक शानदार सुईट बुक था।

लेकिन अपने सुईट में जाने की बजाय वह सीधा बार में पहुंचा।

उसने अपने लिए एक सुविधाजनक टेबल पसंद की और वहां जाकर बैठ गया।

अपने-आपको वहां स्थापित करने के बाद उसने व्हिस्की का ऑर्डर दिया।

उसी घड़ी उसके पसंदीदा ब्रांड की व्हिस्की, खाने-पीने की सभी चीजों सहित उसकी टेबल पर हाजिर हो गई।

उसने अपना जाम उठाया तथा उसकी चुस्कियां लेने लगा।

उस घड़ी भी उसके चेहरे पर तनाव व उलझन के भाव साफ-साफ नजर आ रहे थे।

वह कुछ देर तक व्हिस्की की चुस्कियों के साथ उसका आनंद लेता रहा।

लेकिन वह आनंद नहीं ले रहा था।

वह तो शायद अपना तनाव कम करने की नीयत से शराब का सहारा ले रहा था।

पैग समाप्त करते ही वह उठा, फिर संतुलित चाल से बाथरूम की ओर बढ़ गया।

वह शायद व्हिस्की का ही प्रभाव था कि उसका वह तनाव काफी कम हो गया था।

वह बाथरूम में दाखिल हो गया।

अंदर पहुंचते ही उसने बाथरूम का दरवाजा अंदर से बंद कर दिया, फिर उसे हिलाकर इस बात की तसल्ली भी कर ली कि दरवाजा ठीक से बंद हो गया है।

एक बार फिर उसके चेहरे पर तनाव के लक्षण नजर आए।

उसने चौकन्नी नजरों से इधर-उधर देखा, मानो बाथरूम की दीवारों के ही आंखें लग गई हों।

जबकि वहां उसकी किसी भी हरकत को किसी के द्वारा देखा जाना संभव नहीं था।

उसने अपनी जेब में हाथ डालकर एक पॉकेट साइज का ट्रांसमीटर निकाला जो कि आधुनिक तकनीक से बना अत्यंत शक्तिशाली ट्रांसमीटर था।

उस घड़ी उसकी उंगलियों में कंपन साफ-साफ नजर आ रहा था।

फिर वह ट्रांसमीटर पर किसी से संपर्क स्थापित करने की कोशिश करने लगा।

जल्दी ही उसे इसमें सफलता मिल गई।

"हैलो...हैलो...कोबरा नम्बर टू. कोबरा नम्बर टू रिपोर्टिंग फ्रॉम हिंदुस्तान...ओवर...।"

"हेडक्वार्टर अटैंडिंग-रिपोर्ट दो कोबरा नम्बर टू-ओवर...।"

"इधर भारी गड़बड़ है-ओवर...।"

"कैसी गड़बड़?"

"कैप्टन कबीर ठाकुर के बारे में एक बहुत ही महत्वपूर्ण और खतरनाक जानकारी हासिल हुई है, ओवर...।"

"कैसी जानकारी?"

"उसके बारे में जो कहा गया था कि वह बीमार है और स्वास्थ्य लाभ के लिए एड़ियां लेकर किसी हिल स्टेशन पर गया हुआ या लेकिन हकीकत में ऐसा नहीं है।"

"हकीकत क्या है?"

"ऐसा केवल गुमराह करने के लिए किया गया था-न तो उसे कोई बीमारी थी और न ही वह छुट्टियां बिताने के लिए कहीं गया हुआ है।"

"फिर कहां गया था वह?"

"उसे किसी बहुत ही महत्वपूर्ण मिशन पर भेजा गया है। उसकी बीमारी का बहाना उसके मिशन को गोपनीय रखने का एक बहाना था।"

"उसे कहां भेजा गया है और उसका मिशन क्या है?"

"उसे पाकिस्तान भेजा गया है लेकिन उसके मिशन के बारे में जानकारी नहीं मिल सकी है कि क्या है।"

"लेकिन यहां तो किसी अनिल वर्मा को भेजा गया था-वह यहां पहुंचा है। कहीं ऐसा तो नहीं कि यह अनिल वर्मा ही कैप्टन कबीर ठाकुर हो-ओवर।"

"ऐसा नहीं है-अनिल वर्मा, अनिल वर्मा ही है। कैप्टन ठाकुर को उसके बाद में भेजा गया है।"

"क्या वह यहां आकर अनिल वर्मा से मिला है?"

"मेरे पास इस बात की कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। लेकिन यह तय है कि वे दोनों

ही इस समय पाकिस्तान में हैं और कैप्टन कबीर ठाकुर किसी खतरनाक कारनामे को अंजाम देने जा रहा है।"

"कोई अनुमान, जो कैप्टन ठाकुर के मिशन के बारे में तुम लगा सकते हो?"

"अनुमान लगा रहा हूं लेकिन उस अनुमान के नतीजे बहुत ही खतरनाक हैं।"

"क्या अनुमान है?"

"अनुमान यह है कि यहां की इंटेलीजेंस शायद उस चाल को समझ चुकी है जिसमें फंसाकर अनिल वर्मा को वहां ले जाया गया था।"

"यह नहीं हो सकता।"

"क्यों नहीं हो सकता?"

"यदि ऐसा होता तो अनिल वर्मा ने यहां आकर हमारे उन नकली प्रशिक्षण शिविरों को तबाह करने का जोखिम न उठाया होता।"

"ऐसा उसने जानबूझकर किया है।"

"जानबूझकर-जानबूझकर क्यों?"

"वहां के खुफिया तंत्र को धोखा देने के लिए। इसलिए कि खुफिया तंत्र का पूरा ध्यान अनिल वर्मा की ओर ही लगा रहे।"

"क्यों?"

"ताकि उस दौरान कैप्टन कबीर ठाकुर अपना वह विशेष मिशन पूरा कर सके।"

"लेकिन उसका विशेष मिशन क्या हो सकता है?"

"उसके मिशन के बारे में अनुमान लगाना जरा भी मुश्किल नहीं।"

"अपना अनुमान बताओ।"

"यहां पहले ही इस बात की जानकारी रही हो कि उसे गुमराह करने की नीयत से जिन आतंकवादी ठिकानों की जानकारी यहां दी गई है, वे नकली ठिकाने हैं।

"फिर इसी चाल को ध्यान में रखते हुए यहां की इंटेलीजेंस ने अपनी योजना तैयार की है शायद।"

"उस योजना के अनुसार उसने वैसा ही किया ताकि ऐसा लगे कि वह उसकी चाल में फंस गई है। जबकि हकीकत में वह फंसी हैं।"

"उनके पास उन असली शिविरों के बारे में जानकारी शायद उपलब्ध है।"

"और इधर जबकि वहां के खुफिया तंत्र की नजरों का केंद्र पूरी तरह से अनिल वर्मा ही बना हुआ हो उस घड़ी कैप्टन कबीर ठाकुर असली प्रशिक्षण शिविरों को तबाह करने का सामान जुटा रहा हो। क्योंकि उसके पास इसके लिए बढ़िया मौका है। उसकी ओर किसी का ध्यान ही नहीं होगा।"

"तुम बहुत खतरनाक अनुमान लगा रहे हो कोबरा नम्बर टू।

"लेकिन सही अनुमान लगा रहा हूं। मैं यहां की इंटेलीजेंस की कार्यप्रणाली को बहुत बेहतर ढंग से समझता हूं।"

"लेकिन केवल अनुमान के आधार पर तो कोई नतीजा नहीं निकाला जाता कोबरा नम्बर टू। उसके लिए तथ्यों का पता लगाया जाना जरूरी है। कुछ ठोस जानकारी जरूरी है।"

"कोई नतीजा तो नहीं निकाल जा सकता लेकिन सतर्क तो हुआ जा सकता है। कैप्टन ठाकुर बहुत ही खतरनाक किस्म का आदमी है। उसके बारे में कसम खाकर कहा जाता है कि वह कभी अपने मिशन में फेल नहीं होता।"

"इस बार वह जरूर नाकाम होगा यदि वह पाकिस्तान की धरती पर कदम रख चुका है तो इस बार वापस हिंदुस्तान नहीं जा सकेगा। इस बार उसके खाते में नाकामी के साथ-साथ उसकी मौत भी दर्ज की जाएगी।"

"यह इतना आसान नहीं है।"

"इसे आसान किया जाएगा। ऐसा करके इस बार उसने निश्चित रूप से अपनी मौत को बुलावा दिया है। क्या तुम इस तरह की कोई जानकारी उपलब्ध करा रहे हो जिसके आधार पर यहां उसकी खोज करना आसान हो?"

"फिलहाल ऐसी कोई जानकारी मेरे पास उपलब्ध नहीं है।"

"उपलब्ध नहीं है तो उपलब्ध कराओ।"

"मैं कोशिश करता हूं जैसे ही कोई जानकारी मुझे हासिल होगी, मैं तुरंत उसे आप तक पहुंचाने की कोशिश करूंगा। लेकिन उसे तलाश करने से भी जरूरी काम आपके लिए दूसरा है।"

"कौन-सा दूसरा जरूरी काम?"

"आपको यह मानकर चलना है कि कैप्टन कबीर ठाकुर की पहुंच आपके उन प्रशिक्षण शिविरों तक हो चुकी है। एक बार उसकी पहुंच होने की देर है-फिर उनकी तबाही में देर नहीं लगेगी। इसलिए सबसे पहला काम उनकी सुरक्षा के पुख्ता बंदोबस्त करने का है।"

"वह तो समझो हो गया-उनकी सुरक्षा व्यवस्था इतनी चौकस कर दी जाएगी कि उनकी तबाही का इरादा रखने की कोशिश करने वाला कैप्टन कबीर ठाकुर वहां पहुंचने से पहले ही तबाह हो जाएगा। अब उसे हमारे शिविरों की नहीं बल्कि अपनी तबाही का इंतजार करना होगा कोबरा नम्बर टू।"

"ठीक है-अब मैं संपर्क समाप्त करता हूं। कैप्टन कबीर ठाकुर के बारे में जो भी जानकारी मुझे हासिल होगी वह मैं फौरन उपलब्ध करा दूंगा।"

"ओके ओवर एंड ऑल।"

मनमोहन देसाई ने ट्रांसमीटर जेब में रखा। उसके चेहरे पर राहत के भाव नजर आए।

उसका यह काम निर्विघ्न पूरा हो गया था।

उसने बाहर जाने की नीयत से बाथरूम का दरवाजा खोला।

आगे कदम रखने से पहले उसने अपना चेहरा उठाया।

उसी घड़ी उसकी आंखें हैरत व आतंक से फैलती चली गईं।

उसे अपना खेल खत्म होता नजर आया।

लेकिन इससे पहले वह देशद्रोही एक जांबाज देशभक्त की मौत का सामान कर चुका था।

□□□

उस बूढ़े ड्राइवर ने यह साबित कर दिया था कि उसके पास ऐसी कोई जानकारी नहीं थी जो उन लोगों के काम आ सके। लेकिन ऐसा साबित करने के लिए उसे अपनी जान देनी पड़ी।

उसके बाद इंटेलीजेंस के जल्लादों का कहर उन तीन आदमियों पर टूटा जिनमें एक उच्च प्रशासनिक अधिकारी, बाकी दो सेना के अधिकारी थे।

वह प्रशासनिक अधिकारी जल्लादों की भावनाओं को सहन करते-करते मरा तो नहीं, लेकिन अपना दिमागी संतुलन खो बैठा था। अब वह जाने क्या-क्या बक रहा था।

उसकी कोई बात किसी की समझ में नहीं आ रही थी।

अंत में यह मान लिया गया कि वह पूरी तरह से पागल हो चुका है। इसलिए उससे कोई भी जानकारी हासिल करना संभव ही नहीं था।

इसके लिए कोई भी कोशिश करना बेकार था।

लेकिन वह सैनिक अधिकारी काफी सख्तजान साबित हुए।

इंटेलीजेंस के जल्लाद उनके ऊपर अपने सभी हथकंडे इस्तेमाल कर चुके थे। लेकिन न तो वे मरे और न ही और न ही पागल हुए।

इसके बावजूद भी उनकी जुबान खुलवाने की कोशिश जारी थी।

यातनाओं के नए-नए तरीके उन पर इस्तेमाल किए जा रहे थे।

मेजर अल्ताफ का विचार था कि अनिल वर्मा के बारे में सारी जानकारियां उनसे हासिल की जा सकती हैं।

वह अपने जल्लादों पर बार-बार इस बात के लिए दबाव डाल रहा था कि वे जल्दी-से-जल्दी उनकी जुबान खुलवाने का प्रयास करें।

लेकिन वे अब तक जितनी कोशिश कर चुके थे उसके बाद उन्हें उम्मीद नहीं थी कि उनकी कोई कोशिश कामयाब हो सकती है। जबकि यह मामला मेजर अल्ताफ के गले का फंदा बना हुआ था। इसके लिए उसे दी गई अड़तालीस घंटे की अवधि में से आधी बीत चुकी थी।

अब उसके पास वक्त बहुत कम रह गया था।

अपने गले में से फंदा निकालने की उसकी आशा अब उन्हीं दोनों के ऊपर टिकी हुई थी।

वह स्वयं टॉर्चर चैम्बर में पहुंचा।

उसके जल्लाद उस समय भी उनमें से एक के ऊपर अपने हथकंडे इस्तेमाल कर रहे थे।

उसका दूसरा साधी जल्लादों की दूसरी टीम के हथकंडों का शिकार दूसरे चैम्बर में हो रहा था।

मेजर अल्ताफ ने अपने हाथ का संकेत किया तो जल्लाद रुक गए। फिर उसका संकेत पाकर वे बाहर चले गए।

मेजर अल्ताफ उसके करीब पहुंचा।

“तुम जानते हो कि।” मेजर अल्ताफ ने उसके चेहरे पर नजरें गड़ाते हुए कहा- “तुम्हारा क्या अंजाम होने जा रहा है!”

“यह जुल्म है मेजर-हमारे साथ अन्याय है। ज्यादती की जा रही है हमारे साथ। हमने कुछ नहीं किया। हम कुछ नहीं जानते।”

“यह राग अलापना छोड़ो और गौर से वह सुनो जो मैं कह रहा हूं। क्योंकि उससे तुम्हारे बचाव का रास्ता निकल सकता है-इस नरक से तुम्हें मुक्ति मिल सकती है।”

पल-भर के लिए उसकी बुझी-बुझी आंखों में आशा की एक किरण नजर आई।

उसने मेजर अल्ताफ की ओर देखा।

"यह ऑफर केवल तुम्हारे लिए है क्योंकि सबको नहीं बचाया जा सकता। तुममें से किसी एक को बचाया जा सकता है।"

"मुझे...मुझे बचा लो मेजर-खुदा के लिए मुझे इस नरक से मुक्ति दिला दो।"

"मैं भी यही चाहता हूं। क्योंकि बाकी लोगों के साथ मेरी जरा भी हमदर्दी नहीं है। किसी गद्दार के साथ मेरी हमदर्दी हो ही नहीं सकती।"

"लेकिन तुम्हारे पिछले शानदार रिकॉर्ड को देखते हुए तुम्हारी यह गलती माफ की जा सकती है। इसके लिए मुझे स्वयं रिस्क उठाना पड़ेगा। लेकिन तुम्हारे लिए मैं वह रिस्क उठा सकता हूं।"

"मैं आपका यह अहसान हमेशा याद रखूगा मेजर।"

"अहसान याद करने की जरूरत नहीं है। इसके लिए तुम्हें वह करना होगा जो मैं कहूंगा।"

"मैं करूंगा मेजर-आप जो कहेंगे, मैं करूंगा।"

"कहिए-मुझे क्या करना है?"

"इस कांड का सारा दोष बाकी लोगों के सिर पर डालना होगा। तभी तुम्हारी जान बच सकती है। क्या तुम इसके लिए तैयार हो?"

"मैं तैयार हूं मेजर-मैं कुछ भी करने के लिए तैयार हूं।"

"अगले कुछ मिनट में ही तुम यहां से निकल सकते हो। बोलो लेकिन मुझे यहां से निकाल लीजिए।"

"तुम ऐसा चाहते हो?"

"हां-हां मेजर।"

"इसका एक ही रास्ता है।"

"मुझे वह रास्ता जल्दी बताइए मेजर।"

"अनिल वर्मा नाम के उस हिंदुस्तानी एजेंट की गिरफ्तारी। वह गिरफ्तार हो गया तो समझ लो तुम्हारी जान बच गई। लेकिन केवल तुम्हारी। बाकी कोई नहीं बचेगा।"

उसकी आंखों में उलझनपूर्ण भाव उभरे।

"और यह तुम्हारे सहयोग से हो-तभी तुम्हें निर्दोष साबित किया जा सकता है।"

"लेकिन मेजर...।"

"बीच में मत बोलने लग जाओ। पहले पूरी बात सुनो।"

उसकी आंखों में प्रश्नसूचक भाव उभरे।

"तुम्हें बचाने व उन लोगों के सिर पर तुम्हारा भी दोष मढ़ने का यही एक रास्ता है, जबकि तुम सारी हकीकत बयान कर दो। तुम वह सारी जानकारी मुझे दे दो जो जानकारी तुमने उस हिंदुस्तानी एजेंट को दी है।"

"तुम यह बताओ कि वह इस समय कहां हो सकता है? तुम्हारे अलावा तुम्हारी जानकारी में उसके संबंध और किन-किन लोगों के साथ हैं। यदि तुम्हारे द्वारा दी गई कोई जानकारी उसकी गिरफ्तारी में मददगार साबित होती है तो समझ लो तुम्हारी जान बच गई। न केवल तुम्हारी जान बच गई, बल्कि तुम्हारा मौजूदा ओहदा भी बहाल कर दिया

जाएगा।"

"यह सब तभी तक मुमकिन है जब तक यह सारा मामला मेरे हाथों में है। एक बार मेरे हाथों से मामला निकल गया तो फिर खुदा भी तुम्हारी मदद नहीं कर सकेगा।"

उसकी आंखों में आशा की जो किरण नजर आई थी वह उसी घड़ी बुझ गई।

"बोलो क्या कहते हो-चाहते हो इस नर्क से मुक्ति?"

"हां।" उसने थूक निगलते हुए कहा-"हां मेजर।"

"तो फिर शुरू कर दो अपना बयान।"

"लेकिन मेजर...।"

"क्या लेकिन ?"

"मैं जब कुछ जानता ही नहीं तो बताऊँ क्या?"

मेजर अल्ताफ ने घूरकर उसकी ओर देखा।

"बोलो।"

"मैं उस आदमी के बारे में कुछ नहीं जानता मेजर। जानता तो उसके करीब भी फटकने की कोशिश न करता। मुझे तो उसका परिचय खाड़ी के एक तेल व्यापारी के रूप में कराया गया था।

उसका नाम सैफ अली खान बताया गया था।

"अजरा खान ने उसके साथ मेरी मुलाकात यूं ही रस्मी तौर पर कराई थी। मैंने उसमें कोई खास दिलचस्पी भी नहीं ली। मुझे इस बात की सपनों में भी भनक नहीं थी कि अपने-आपको तेल का व्यापारी बताने वाला यह आदमी हिंदुस्तानी जासूस भी हो सकता है।"

"उसने मुझसे कोई जानकारी हासिल करने की कोशिश की होती तो शायद मुझे उस पर शक भी हुआ होता।"

"उसके साथ जब भी मेरी कोई बात होती थी तो वह महज रस्मी बात होती थी। उसने कभी भी मुझसे कोई महत्वपूर्ण जानकारी हासिल करने की कोशिश नहीं की।"

"इसीलिए मुझे तो अब भी इसका विश्वास नहीं हो रहा मेजर कि वह...।"

"बकवास बंद कर हरामजादे !" मेजर अल्ताफ इतनी जोर से चीखा कि उस कक्ष की दीवारें तक हिलकर रह गईं।

उसने खूंखार अंदाज में उसके सिर के बाल पकड़कर दो-तीन बार जोर का झटका दिया।

"हरामजादे-मैं यहां तेरी यह बकवास सुनने नहीं आया। तेरा यह रटा-रटाया बयान जो तुझे उस हिंदुस्तानी कुत्ते ने पढ़ाया है-अब तक मैं सौ बार सुन चुका हूं।"

"अब मैं तेरे मुंह से हकीकत सुनना चाहता हूं। बोल हकीकत क्या है?"

"सौ बार नहीं मेजर-हजार बार भी पूछोगे तो मेरा बयान यही होगा। क्योंकि हकीकत यही है। और एक दिन इस हकीकत का पता भी चलेगा।"

"और जब इस हकीकत का पता चलेगा तो आपको मेरे साथ किए गए जुल्मों का जवाब देना होगा मेजर।"

मेजर अल्ताफ के चेहरे पर भूकम्प के भाव उभरे।

"मेरे से जवाब मांगता है कुत्ते-तुझे जवाब जरूर दूंगा। तू समझता है कि तेरी जुबान नहीं खुल सकती? तेरी जुबान जरूर खुलेगी-जरूर खुलेगी। क्योंकि तेरे जैसे गद्दारों की जुबान

पर लगे ताले की चाबी हमेशा हमारे पास होती है।" कहते मेजर अल्ताफ ने उसके बाल छोड़ दिए तथा अपने दोनों हाथों से ताली बजाई।

वह जल्लाद फिर हाजिर हुए।

उन्होंने खूंखार नेत्रों से उस सैनिक अधिकारी की ओर देखा।

"इसकी गद्दारी की सजा अब केवल इसे ही नहीं मिलेगी। इसके बीवी-बच्चों को भी मिलेगी। अभी कुछ देर में ही इसकी बीवी को तुम्हारी खुराक बनाकर भेजता हूं। यहीं...इसी के सामने।"

"नहीं।" वह अधिकारी अपनी पूरी ताकत से चीखा।

मेजर अल्ताफ के चेहरे पर अर्थपूर्ण मुस्कराहट उभरी।

जल्लादों ने अपने होंठों पर जुबान फिराई। औरत का नाम लेते ही उनके मुंह में जैसे पानी आ गया हो।

उसी घड़ी एक सैनिक ने अंदर प्रवेश किया। मेजर अल्ताफ ने पलटकर उसकी ओर देखा।

"आपके लिए मैसेज है सर-अर्जेंट।"

अल्ताफ के चेहरे पर उलझनपूर्ण भाव पैदा हुए।

फिर वह तेज कदमों से टॉर्चर चैम्बर से बाहर जाने वाले दरवाजे की ओर बढ़ा।

□□□

"मेजर अल्ताफ।" दूसरी ओर से कहा गया- "मेरी बात गौर से सुनो। हमने जिस तरह से हिंदुस्तानी इंटेलीजेंस को अपने झांसे में फंसाने की कोशिश की थी और हमें लग भी रहा था कि वह हमारे झांसे में आ रही है लेकिन हकीकत में ऐसा नहीं था।"

"वे लोग पहले ही हमारी चाल को समझ गए थे और ऐसा जाहिर कर रहे थे कि वे हमारे जाल में फंस रहे हैं।"

"ऐसा उन्होंने इसलिए किया कि हमारा ध्यान केवल उधर ही केंद्रित हो जाए और वे सहूलियत के साथ अपना काम कर दें।"

"यह कैसे हो सकता है सर?" मेजर अल्ताफ के चेहरे पर हैरत के भाव उभरे।

"ऐसा ही हुआ है मेजर-हमारे हिंदुस्तानी कॉन्टेक्ट ने अभी-अभी खबर दी है कि कैप्टन कबीर ठाकुर नाम का वह खतरनाक हिंदुस्तानी एजेंट हमारे मुल्क में पहुंच चुका है जबकि हमारे पास उसके छुट्टी मनाने की जानकारी थी।"

"वह पिछले काफी समय से हमारे मुल्क में सक्रिय है। यह भी अनुमान किया जा रहा है कि उसके पास हमारे सभी प्रशिक्षण शिविरों के नक्शे व उनके बारे में सारी जानकारी मौजूद है और वह उन्हें बरबाद करने का इरादा लेकर हमारे मुल्क में आ गया है।"

"जिस तरह से अनिल वर्मा तुम्हारी आंखों में धूल झोंककर फरार हुआ है, उससे अनुमान लगाया जा सकता है कि वह हमारे ठिकानों को बरबाद करने का प्लान मुकम्मल कर चुका है।"

"जिस तरह से हमारे नकली ठिकानों को तबाह किया गया है उसे देखकर लगता है कि हमारे असली ठिकानों को भी किसी भी वक्त तबाह किया जा सकता है।"

"ओह नो।" मेजर अल्ताफ के मुंह से हैरतपूर्ण सिसकारी निकली।

"वक्त हैरत करने का नहीं है मेजर-जल्दी कुछ करने का है। किसी भी क्षण कुछ भी हो

सकता है। यदि उस हिंदुस्तानी एजेंट का प्लान कामयाब हो गया तो दुश्मन के खिलाफ चलाए जा रहे हमारे अभियान की रीढ़ टूट जाएगी। हमारे मुल्क की अर्थव्यवस्था चौपट हो जाएगी।"

"मेरे लिए क्या आदेश है सर?"

"सब कुछ मेरे आदेशों पर ही मत करो-अपना दिमाग भी इस्तेमाल करो-लेकिन सबसे पहले प्रशिक्षण शिविरों की सिक्योरिटी को एलर्ट करो।"

"इस बात का फौरन पता लगाया जाए कि वहां कहीं बम तो नहीं फिट किए गए हैं। यदि ऐसा हो तो उन बमों को फौरन निष्क्रिय कर दो और चौकसी इतनी कड़ी कर दो कि वहां परिंदा भी पर न मार सके।"

"प्रशिक्षण शिविरों में किसी भी गैरसैनिक कर्मचारी के दाखिले पर पूरी तरह से पाबंदी आयद कर दो। यहां तक कि स्वीपर तक भी वहां नहीं जाना चाहिए।"

"इस तरह के जो कर्मचारी वहां मौजूद हों, उन्हें तुरंत हिरासत में लेकर पूछताछ करो और जब तक यह हिंदुस्तानी एजेंट पकड़ा नहीं जाता, तब तक उन्हें हिरासत में ही रहने दो।"

"इसके अलावा बमों को निष्क्रिय करने वाले दस्ते सभी प्रशिक्षण शिविरों को रवाना कर दो। जितनी जल्दी संभव हो सके, उन दस्तों को वहां पहुंचा दो।"

"ठीक है सर।" उसने कहा- "यह सारे इंतजाम मैं अभी किए देता हूं। सारे इंतजाम करने के बाद मैं स्वयं भी प्रशिक्षण शिविरों के दौरे पर निकलता हूं।"

मेजर अल्ताफ ने हेडफोन उतारकर हैंगर पर लटकाया। उस घड़ी उसके चेहरे पर बौखलाहट साफ-साफ नजर आ रही थी।

□□□

कैप्टन कबीर ठाकुर के चेहरे पर भी चिंता के भाव नजर आए।

उसे जिस रिपोर्ट का बेचैनी से इंतजार हो रहा था वह उसे अभी तक नहीं मिल पाई थी।

और अब प्रतिपल बढ़ती उसकी बेचैनी चिंता में तब्दील होने लगी थी। उसकी चिंता को उसके सहयोगी अनिल वर्मा ने भी महसूस किया।

"क्या बात है सर?" उसने कहा- "आप कुछ चिंतित नजर आ रहे हैं।"

"तुम्हारा अनुमान ठीक है अनिल वर्मा-अब तक रिपोर्ट का न आना निश्चित रूप से चिंता का विषय है।"

"मुझे किसी गड़बड़ की संभावना लग रही है सर।"

"गड़बड़ तो हो नहीं सकती।"

"फिर भी मुझे नहीं लगता सर कि इस मामले में हमें अब और रिस्क लेना चाहिए। एक मोर्चे के लिए हम अपने बाकी मोर्चों पर हार जाना पसंद नहीं करेंगे। मेरा विचार है कि हमें अपने बाकी मोर्चों पर सिग्नल भेज देना चाहिए।"

"क्योंकि इसमें जरा-सी भी गड़बड़ होती है तो हम पूरी तैयारी के बावजूद भी अपनी जंग हार जाएंगे।"

"हमारा जंग हार जाना इतना आसान नहीं है अनिल वर्मा, फिर भी मुझे लग रहा है कि मौजूदा हालात में तुम्हारी सलाह मान लेने में ही हमारा हित है।"

"तो सिग्नल भेज दिए जाएं सर?"

"ठहरो-मुझे एक बार और सोच लेने दो।" कैप्टन ठाकुर ने कहा। उसके चेहरे पर सोचपूर्ण भाव उभर रहे थे।

अनिल वर्मा पहली बार उसे तनावग्रस्त देख रहा था।

इस तनाव का वाकई कोई गंभीर कारण था या फिर एक खतरनाक कहानी के खतरनाक क्लाइमैक्स पर पहुंचने के कारण ऐसा था।

उसी घड़ी उनके ट्रांसमीटर पर सिग्नल आया।

इसके साथ ही दोनों की आंखों में चमक उभरी।

"रिपोर्ट को रिसीव करो अनिल वर्मा-फौरन।" कैप्टन ठाकुर ने कहा। उसके स्वर में उत्तेजना थी।

□□□

पहाड़ी क्षेत्र में स्थित उस प्रशिक्षण शिविर पर बम निष्क्रिय करने वाले दस्ते के साथ मेजर अल्ताफ स्वयं पहुंचा।

क्योंकि उन्हें पहले ही किसी संभावित घटना से सतर्क कर दिया गया था।

लेकिन शिविर का बाकी काम सुचारु रूप से चल रहा था।

क्योंकि उन्हें सतर्क करने के साथ-साथ इस बात के निर्देश भी दिए गए थे कि इस सूचना को फैलने से रोकें ताकि किसी प्रकार की अव्यवस्था या आतंक का माहौल तैयार न हो।

आतंकवाद की ट्रेनिंग ले रहे उन गुमराह नवयुवकों को इस बात का अहसास तक नहीं था कि उनके ऊपर किसी भारी तबाही के टूट पड़ने के आसार बन रहे हैं।

मेजर अल्ताफ का काफिला जैसे ही वहां रुका तो वहां मौजूद सेना के वे जिम्मेदार लोग उसकी ओर तेजी से बढ़े।

इस बीच काफिले के सभी लोग अपनी-अपनी गाड़ियों से बाहर आकर मेजर अल्ताफ के करीब एकत्र हो गए।

"फौरन अपना काम आरंभ कर दो।" उसने निर्देश देते हुए कहा- "पूरे शिविर के चप्पे-चप्पे को छान मारो। कहीं कोई विस्फोटक सामग्री नजर आए तो उसे वहीं पर निष्क्रिय कर दो। यह सारा काम चंद मिनटों में ही पूरा हो जाना चाहिए।"

"यस सर।" दस्ते के कमांडर ने कहा।

"कुछ लोगों को हिरासत में लिया?" उसने वहां मौजूद सूबेदार रैंक के एक जूनियर अधिकारी से प्रश्न किया।

"यस सर।"

"ऐसे कुल कितने लोग हैं?"

"नौ लोग हैं सर।" उसने बताया- "उनमें सात साफ-सफाई करने वाले हैं और बाकी दो आदमी ठेला लगाकर लड़कों की जरूरत का सामान बेचते हैं।"

"इन सबको फौरन हेडक्वार्टर पहुंचाओ। आगे से इस तरह का कोई भी बाहरी आदमी अंदर दाखिल नहीं होना चाहिए। सप्लाई का काम लड़के स्वयं करेंगे और उनकी जरूरत का सारा सामान तुम्हें स्वयं मुहैया कराना है। इस आदेश के पालन में किसी प्रकार की ढील नहीं होनी चाहिए।"

"यस सर।"

बम निरोधक दस्ते का कमांडर उनसे कुछ कदम की दूरी पर अपने मातहतों को निर्देश दे रहा था।

मेजर अल्ताफ ने उनकी ओर देखा।

उसी घड़ी उसे करीब दो सौ गज की दूरी पर धुएं की एक लकीर नजर आई।

धुएं की उस लकीर को देखते ही मेजर अल्ताफ की आंखों में चिंता के भाव नजर आए।

और इससे पहले कि वह कुछ समझ पाता, कानों के पर्दे फाड़ डालने की क्षमता रखने वाला एक जबरदस्त धमाका हुआ। उसकी दहल से पूरी जमीन किसी भूकम्प की तरह कांप उठी।

इसके साथ ही धुएं व आग का एक विशाल तूफान आसमान की ओर उठता नजर आया।

इसके साथ ही पूरे इलाके में कोहराम मच गया।

मेजर अल्ताफ ने पलटकर पीछे की ओर देखा । उसे शिविर के मेन गेट से महकमे की एक गाड़ी अंदर आती नजर आई।

फिर अचानक ही दूसरे धमाके के साथ सेना की वह गाड़ी किसी तिनके के समान आसमान की ओर उड़ती नजर आई। मेजर

अल्ताफ ने अपनी आंखों से उस फौजी गाड़ी के परखच्चे आसमान में उड़ते देखे।

यह धमाका पहले धमाके की तरह ही भीषण था।

मेजर अल्ताफ का चेहरा आतंक व हैरत से पीला पड़ गया।

उसकी आंखें फैलकर कटोरियों से बाहर निकलने को आतुर हो रही थीं।

इसके बाद फिर तीसरा धमाका।

उस समय वे गुमराह युवक, जिनकी शायद क्लास लग रही थी, मौत से बचने के लिए बाहर निकलकर मैदान की ओर भागने का प्रयास कर रहे थे।

लेकिन मौत ने उन्हें इसका अवसर नहीं दिया।

तीसरे धमाके ने उनके जिस्मों के चीथड़े उड़ा दिए जो एक बार आसमान में उड़े और फिर इधर-उधर जमीन पर छितरा गए।

उनमें एक-दो जरूर खुशनसीब थे जो मौत की उस सीमारेखा को पार कर चुके थे। कुछ ऐसे भी थे जो मौत के जबड़ों से निकलने में तो कामयाब हो गए थे, लेकिन उनके जिस्म के कुछ हिस्से उस तबाही की भेंट चढ़ गए।

दूसरी ओर से मानवीय चीखें गूंजी जो उन धमाकों के कारण आतंक से डूबी थीं।

उसके बाद एक और धमाका।

इसके बाद तो जैसे भीषण विस्फोटों की एक कभी न समाप्त होने वाली श्रृंखला आरंभ हो गई थी।

ऐसा लग रहा था जैसे दो देशों के बीच में घमासान जंग छिड़ गई हो।

कुछ लोग जान बचाने की नीयत से बाहर से निकल-निकलकर मैदान की ओर भाग रहे थे।

लेकिन इस बात का उन्हें स्वयं विश्वास नहीं था कि इस मुसीबत से उन्हें कहीं भी पनाह मिल सकती है।

मेजर अल्ताफ अपनी आंखों से तबाही का मंजर देख रहा था और वह कुछ भी नहीं कर सकता था। उस समय वह अपने-आपको बेहद मजबूर पा रहा था।

वह जहां खड़ा था वहां अकेला ही खड़ा रह गया।

उसके आसपास खड़े लोग अपनी-अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर दौड़ रहे थे।

लेकिन मेजर अल्ताफ शायद यह भूल गया था कि मौत उसके करीब भी आएगी। वहां चलने वाले बम जैसे उसे देखकर अपनी दिशा बदल देंगे।

अब भी वह शायद यह सोच रहा था कि उस तबाही को रोकने का क्या तरीका हो सकता है।

अचानक ही उसे इस बात का अहसास हुआ कि मौत उसके बड़े रैंक का लिहाज नहीं करने वाली।

उसे इस बात का अहसास हुआ कि उसके लिए उस समय सबसे बड़ी जरूरत अपनी जान की हिफाजत करने की थी।

उसके कई साथी मैदान के बीचोबीच पहुंचकर जमीन पर पेट के बल लेट गए थे।

बचाव के लिए बस यही एक कोशिश हो सकती थी-मेजर अल्ताफ के दिमाग में अब यह बात आई कि ऐसी ही कोशिश उसे भी करनी चाहिए।

अचानक ही उसे भारी खतरा महसूस हुआ।

वह एक पक्की इमारत के इतना करीब खड़ा था कि यदि उस इमारत में विस्फोट हुआ तो वह उसकी चपेट में आने से नहीं बच सकता था।

उसने उस इमारत से दूर निकल जाना चाहा।

लेकिन यह बात बहुत देर से उसके दिमाग में आई थी। वह अभी पीछे की ओर घूमा ही था कि एक और भयंकर विस्फोट हुआ जिसे सुनने के बाद उसके कानों से कुछ भी सुनाई देना बंद हो गया।

उसने मौत से बचकर भागने का प्रयास किया।

लेकिन देर हो चुकी थी।

उस इमारत का ढेर सारा मलबा-हजारों टन वजन का आग से दहकता हुआ मलबा मेजर अल्ताफ के ऊपर गिरा।

और जान बचाने की उसकी इच्छा उसके मन में ही रह गई।

उसका सारा वजूद मलबे के ढेर में दबकर रह गया ।

वह मलबा ही उसकी कब्र बनकर रह गया।

इसके साथ ही मीलों के क्षेत्रफल में फैला वह प्रशिक्षण शिविर ही मलबे के ढेर में बदलकर रह गया था।

वह पूरा इलाका ही जैसे भयंकर नर्क बनकर रह गया था। हर तरफ मौत-ही-मौत-तबाही-ही-तबाही नजर आ रही थी।

मौत और तबाही के अलावा कुछ भी नहीं था।

□□□

आतंकवादी गतिविधियों का संचालन करने वाली पाकिस्तानी फौज की इंटेलीजेंस के मुख्यालय में एक-एक करके उसके प्रशिक्षण शिविरों की तबाही के समाचार पहुंच रहे थे।

उसकी पूरी मशीनरी सकते के आलम में थी।

चारों तरफ अफरातफरी मची हुई थी। प्रशिक्षण शिविरों के साथ ही मेजर अल्ताफ की मौत से तो उस पूरे महकमे में हड़कम्प मच गया था। उसकी मौत पर तो उसके आगे की गतिविधियों का पूरा संचालन ही एक बार ठप्प होकर रह गया था।

आनन-फानन में किसी दूसरे को उसकी ड्यूटी नहीं सौंपी जा सकती थी। क्योंकि उसकी ड्यूटी को संभालने वाले किसी भी अधिकारी को पहले उसका काम बड़ी बारीकी से समझाना जरूरी था।

इसलिए आपातकालीन स्थिति में कर्नल फतह मोहम्मद बानी को ही उसकी जिम्मेदारी भी संभालनी पड़ी। क्योंकि इस सारे अभियान का सर्वेसर्वा यही आदमी था।

कर्नल फतेह मोहम्मद के बाद मेजर अल्ताफ ही वह आदमी था जो उस पूरी मशीनरी का संचालन करता था।

इस तरह इंटेलीजेंस की उस विशाल मशीनरी व उसके कर्ता-धर्ता की बीच की कड़ी का काम मेजर अल्ताफ कर रहा था।

इस तरह उस कड़ी के टूट जाने पर एक बार के लिए सारी व्यवस्था गड़बड़ा गई थी।

इसमें सबसे बड़ी समस्या का समाधान कर्नल फतेह मोहम्मद बानी को ही करना पड़ रहा था।

इन हालात में दोहरी जिम्मेदारी संभालना उसके लिए नामुमकिन तो नहीं, लेकिन बहुत मुश्किल जरूर था।

लेकिन यह आदमी इस तरह आसानी से हालात के सामने हार मान लेने वाला आदमी नहीं था।

विपरीत परिस्थितियों में भी हालात पर काबू कर लेने की उसके अंदर अभूतपूर्व क्षमता थी।

जल्दी ही वह प्रारंभिक झटके से अपने-आपको उबार चुका था। इसके साथ ही उसने सारा मामला अपने नियंत्रण में ले लिया।

मेजर अल्ताफ जैसे विश्वसनीय व योग्य सहयोगी का चयन करना आसान काम नहीं था। लेकिन उन हालात में उसे अपने एक सहायक की जरूरत फिर भी थी जो इस समय उसकी मदद कर सके। यह देख सके कि उसके आदेशों पर उसकी मशीनरी द्वारा किस तरह अमल किया जा रहा था।

उसने अस्थायी तौर पर एक सैनिक अधिकारी को मेजर अल्ताफ की जिम्मेदारी सौंपी और उसे उसका काम समझाया।

अब उन्हें अपनी सारी ताकत उन मुजरिमों की तलाश में लगा देनी थी जिनके कारण उनके मुल्क के अंदर जंग जैसे हालात पैदा हो गए थे।

उन्हें किसी भी कीमत पर गिरफ्तार करना था।

कर्नल फतेह मोहम्मद बानी का अनुमान था कि इसके बाद वे दोनों हिंदुस्तानी एजेंट सीमा पार करने की कोशिश करेंगे। लेकिन वह किसी कीमत पर भी उसे गिरफ्तार करना चाहता था।

क्योंकि उस घड़ी वे दोनों आदमी-खासतौर से कैप्टन कबीर ठाकुर उनका सबसे बड़ा

दुश्मन था। उसकी गिरफ्तारी के लिए वह अपनी सारी ताकत झोंक देना चाहते थे।

कर्नल फतेह मोहम्मद बानी ने अपने उस नए सहयोगी को इसके लिए सभी जरूरी निर्देश देकर भेजा।

लेकिन वह इस संभावना को भी इस बार नकारना नहीं चाहता था कि सारी सतर्कता के बावजूद भी वे सीमा पार करने में कामयाब हो सकते थे।

वह उस स्थिति से निबटने की तैयारी भी कर लेना चाहता था।

वह भारत की भूमि से भी उसे पकड़कर वापस लाने की रणनीति अभी से बना रहा था।

इसीलिए उसने अपने संचार यंत्रों को सक्रिय किया।

"हैलो...हैलो कोबरा...कोबरा, ओवर...।"

"कोबरा अटैडिंग दिस साइड...ओवर।"

"कैप्टन कबीर ठाकुर यहां से भागने की फिराक में है। यहां उसकी तलाश कराई जा रही है और उसे गिरफ्तार करने के जो व्यापक प्रबंध किए गए हैं उन्हें छोड़कर निकल जाना उसके लिए असंभव है।"

"कबीर ठाकुर हमें हर कीमत पर चाहिए। यदि तुमने इस काम में हमारा सहयोग दिया कोबरा तो तुम्हें दौलत के ढेर पर बिठा देंगे। इतनी दौलत, जिसकी तुम कभी कल्पना भी नहीं कर सकते।"

इसके बावजूद भी तुम्हें उधर नजर रखनी है। "इतनी दौलत के लिए तो कोबरा कुछ भी कर सकता है। कैप्टन कबीर ठाकुर यदि सीमा पार कर गया तो समझ लो कि मेरे जाल में फंस गया।"

"मेरा तो यहां तक विचार है कि आप वहां उसे गिरफ्तार करने की कोशिश ही न करें-उसे सीमा पार करा दें। यहां मैं उसके लिए जाल लगाकर उसका इंतजार कर रहा हूं।"

"ठीक है-तुम अपनी तैयारी मुकम्मल रखो।"

"लेकिन मैं उसे वापस तुम्हारे मुल्क में नहीं पहुंचा सकता। मैं उसे यहीं पर तुम्हें सौंप सकता हूं।"

"तुम्हें इसकी जरूरत नहीं है। तुम उसे हिंदुस्तान में ही हमें सौंप दो। उसे वापस यहां लाने का इंतजाम हम स्वयं कर लेंगे।"

"तो आप भी वह इंतजाम करके रखें-वह सीमा के इस पार कदम रखते ही मेरे जाल में फंस जाएगा। ओवर...।"

"ओवर एंड ऑल।"

कर्नल फतेह मोहम्मद बानी ने संपर्क समाप्त किया। उस घड़ी वह काफी हद तक आश्वस्त नजर आ रहा था।

लेकिन उधर से पूरा विश्वास दिलाने के बावजूद भी वह उसकी यह सलाह मानने का इरादा नहीं रखता था कि उसे सीमा पार करने का मौका मुहैया करा दे।

यह व्यवस्था तो उसने तबके लिए की थी, जबकि उसकी सारी व्यवस्था में छेद करते हुए वह सीमा पार कर दे।

पूनम ने अपना चेहरा उठाकर उस व्यक्ति की ओर देखा जिसके चेहरे पर घनी व गंदी दाढ़ी थी। उसकी उलझी हुई व गंदी दाढ़ी ने उसका चेहरा इतना घिनौना बना दिया था कि

उसे देखकर पूनम को उबकाई आ रही थी।

वह अजीब-सी नजरों से पूनम की ओर घूर रहा था।

“आखिर तुम बताते क्यों नहीं-कौन हो तुम और मुझे यहां क्यों लाया गया है?”

उस व्यक्ति के होंठों पर अर्थपूर्ण मुस्कराहट उभरी।

“तुम मेरी बात का जवाब क्यों नहीं देते? तुम्हारे पास पवन की तस्वीर कहां से आ गई-उससे तुम्हारा क्या वास्ता है ?”

“मैं तुम्हें यही बताने आया हूं बेबी।”

“क्या?”

“यह कि इस पवन कुमार की असलियत क्या है।”

“पवन कुमार की असलियत-मैं उसे अच्छी तरह से जानती हूं। उसके बारे में कुछ भी जानने की जरूरत नहीं मुझे। मैं सिर्फ यह जानना चाहती हूं कि उसका तुम्हारे साथ क्या वास्ता है।”

“यह पवन कुमार एक बहुत बड़ा फ्रॉड है-एक नम्बर का चालाक और मक्कार आदमी है। उसने तुम्हारे साथ भी छल किया है-तुमसे अपनी असलियत छिपाकर रखी है।”

“तुम्हारी इन बातों में आकर मैं पवन से नफरत करने लगूंगी, यदि तुम ऐसा सोचते हो तो यह तुम्हारी भूल है। लेकिन यह बात मेरी समझ में नहीं आ रही कि तुम ऐसा क्यों चाहते हो।”

“तुम उससे नफरत करो या प्यार करो-हमें इससे कुछ लेना-देना नहीं है। लेकिन यह आदमी, जिसने तुम्हें अपना नाम पवन कुमार बताकर तुम्हें अपने प्रेमजाल में फंसाया है-यह उसका असली नाम भी नहीं है।”

“असली नाम नहीं है ?”

“उसका असली नाम है कैप्टन कबीर ठाकुर।”

“कैप्टन कबीर ठाकुर?”

“हां यह कैप्टन कबीर ठाकुर इंटेलीजेंस का एक खतरनाक जासूस है। उसने यह बताकर भी तुम्हें धोखे में रखा है कि वह किसी कंपनी की ओर से ट्रेनिंग में जा रहा है। हकीकत तो यह है कि ऐसी किसी कंपनी का कोई वजूद ही नहीं है जिसमें तुम जानती हो कि वह कोई बहुत बड़ा अधिकारी है।”

पूनम की आंखों में हैरत के भाव उभरे।

“वह दरअसल एक दुश्मन देश में यहां के लिए जासूसी करने गया है। लेकिन उसका यह मिशन काफी गोपनीयता के बावजूद भी गोपनीय नहीं रहा। उसका भेद खुल चुका है और अब उसका वहां से जिंदा वापस लौटना बहुत ही मुश्किल है।”

“नहीं!” पूनम के मुंह से सिसकारी-सी निकली।

“तुम्हें उस आदमी के लिए चिंतित नहीं होना चाहिए, उसने अपनी असलियत को छिपाकर तुम्हारे साथ धोखा किया है। उसने तुम्हारे साथ प्यार का झूठा नाटक किया है।”

“नहीं।”

“क्या नहीं?”

“वह कोई झूठा नाटक नहीं था। वह प्यार था-सच्चा प्यार-पवित्र प्यार।”

"सच्चा प्यार?" उसकी आंखों में व्यंग्यात्मक भाव उभरे।

"हाँ।" पूनम ने कहा- "सच्चा प्यार।"

"सच्चे प्यार में इसी तरह धोखा किया जाता है-इसी तरह असलियत छिपाई जाती है?"

"यदि पवन की असलियत यही है जो तुमने बताई है तो मेरी नजरों में उसके प्रति सम्मान और बढ़ गया है। मुझे उस पर नाज है। अपने-आप पर नाज है कि मैंने उस महान व्यक्ति से प्यार किया है जो सच्चा देशभक्त है। वह देश के लिए अपनी जान की बाजी लगा सकता है उसके लिए अपने सभी रिश्तों को, यहां तक कि अपने प्यार को भी कुरबान कर सकता है। इसके साथ ही एक बात और भी सुन लो।"

"क्या?"

"वह वापस भी आएगा और जिंदा वापस आएगा। क्योंकि मैं, यानी उसका प्यार, उसका इंतजार कर रहा है।"

"हो सकता है तुम्हारे प्यार में इतनी ताकत हो कि उसे वापस खींच लाए। लेकिन वापस आकर तो उसे बहुत निराशा होगी।"

"कैसी निराशा?"

"उसे यह जानकार बहुत निराशा होगी कि उसके आने से पहले ही उसका प्यार लुट चुका है।"

"कहना क्या चाहते हो तुम?"

"यदि वह भी वाकई तुम्हे इतना ही प्यार करता है तो वह तुम्हारे साथ शादी की तमन्ना लेकर आएगा। लेकिन यहां आकर पता चलेगा कि तुम्हारी सुहागरात तो पहले ही मनाई जा चुकी है।"

उसका वाक्य पूरा होने से पहले ही पूनम का हाथ हवा में लहराया और उसका तमाचा तड़ाक से उस दाढ़ी वाले के गाल से टकराया।

"हरामजादे...तेरी जुबान से अब एक भी गंदा लफ्ज निकला तो चेहरा नोच लूंगी तेरा।"

"चेहरा नोचने से किसने मना किया है मेरी जान...लेकिन तुम्हारी सुहागरात तो आज मनकर ही रहेगी।"

पूनम के चेहरे पर भूकम्प के भाव नजर आए। एक बार फिर उसका हाथ हवा में लहराया।

उस बार उसके हाथ में पहले से ज्यादा ताकत थी। लेकिन उस दाढ़ी वाले के चेहरे से टकराने से पहले ही पूनम की कलाई उसके हाथ की जकड़ में आ गई।

यह पकड़ इतनी चुस्त थी कि उसकी नाजुक कलाई ऐसा लगा जैसे पिघलकर रह जाएगी।

पूनम के चेहरे पर पीड़ा व नफरत के भाव नजर आए।

"हरामजादे!"

"मुझे खूबसूरत हसीनाओं के मुंह से गंदी गालियां सुनना बहुत अच्छा लगता है मेरी जान।"

पूनम ने कसमसाकर अपनी कलाई को छुड़ाने का प्रयास किया। लेकिन उसे लगा जैसे उसकी कलाई लोहे के शिकंजे में कस गई हो।

"मेरा हाथ छोड़ दे कुत्ते!"

लेकिन उसके बाद तो वह सचमुच में ही शिकारी कुत्ता बन गया। शिकारी कुत्ते की तरह ही वह पूनम के ऊपर झपट पड़ा।

पूनम अपने-आपको उस शैतान से मुक्त करने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा रही थी। लेकिन इस बात का अहसास उसे उसी समय हो गया था कि वह ज्यादा देर तक उस राक्षस के साथ संघर्ष नहीं कर सकेगी। वह राक्षस उससे कहीं ज्यादा ताकतवर था जैसा कि वह नजर आ रहा था।

इसके बावजूद भी पूनम ने उसके सामने हार नहीं मानी।

वह अपनी पूरी ताकत से उसका विरोध कर रही थी।

लेकिन उसका विरोध क्षीण होता चला गया। और जैसे-जैसे उसका विरोध क्षीण होता जा रहा था वैसे ही उस शैतान के ऊपर वहशत सवार होती जा रही थी।

अब तक पूनम के जिस्म के वस्त्र जगह-जगह से फट चुके थे जिनके झरोखों से उसकी लाज बाहर झांकने लगी थी।

उसे लगने लगा था कि अब वह ज्यादा देर तक उस राक्षस से अपनी इज्जत सुरक्षित नहीं रख पाएगी।

उसी घड़ी एक भारी जिस्म व नाटे कद के व्यक्ति ने अंदर कदम रखा।

"जोजो!" उसने कड़दार स्वर में कहा।

दाढ़ी वाले ने एक झटके के साथ पूनम से अपने-आपको अलग किया तथा पलटकर पीछे की ओर देखा।

"कमांडर, आप!"

"यह क्या हो रहा है जोजो?"

"कुछ नहीं कमांडर-यूं ही जरा मनोरंजन के इरादे से इधर आया था।" उसने धूर्ततापूर्ण स्वर में कहा।

"लेकिन तुम जो कुछ कर रहे हो इसकी किसने इजाजत दी है तुम्हें?"

"इसके लिए इजाजत की क्या जरूरत थी कमांडर?"

"नहीं थी जरूरत।"

"मैं तो यही समझ रहा था कमांडर।"

नाटे कद के व्यक्ति का तमाचा उसके गाल पर पड़ा।

"बेवकूफ!"

जोजो के चेहरे पर शर्मिंदगी के भाव उभरे।

"कमांडर!"

"बेवकूफ-तू जानता नहीं यह लड़की हमारे लिए कितनी महत्वपूर्ण है?" उसने कहा।

पूनम आतंक व उलझनपूर्ण नेत्रों से उस नाटे कद के व्यक्ति की ओर देख रही थी। वह अभी तक इस बात का निश्चय नहीं कर पाई थी कि यह व्यक्ति दुश्मन था या दोस्त।

दोस्त तो हो नहीं सकता था।

"मैं जानता हूं कमांडर।" जोजो ने कहा- "यह लड़की वाकई हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन...।"

"क्या लेकिन?"

"इससे क्या फर्क पड़ता है-इसका बिगड़ क्या जाएगा? महत्वपूर्ण तो यह फिर भी रहेगी।"

"तूने सोने का अंडा देने वाली मुर्गी के बारे में सुना है?"

"सुना है कमांडर-जरूर सुना है। मैं यह भी जानता हूं कि यह लड़की हमारे लिए सोने का अंडा देने वाली मुर्गी है।"

"यह मुर्गी नहीं है बेवकूफ बल्कि यह सोने की खान है। जिसमें से कितना भी सोना निकालो, कम नहीं होता।"

"वह बात तो ठीक है कमांडर, लेकिन उससे फर्क क्या पड़ेगा?"

"सोने की खान के साथ इस तरह की बदसलूकी नहीं की जाती उल्लू के पट्ठे-उसे संभालकर रखा जाता है। संवारकर रखा जाता है।"

जोजो उसकी बात से संतुष्ट तो नहीं हुआ लेकिन वह उस नाटे आदमी की हुक्मउदूली नहीं कर सकता था।

लेकिन पूनम की समझ में नहीं आ रहा था कि वह सोने का अंडा देने वाली मुर्गी कैसे बन गई। वह सोने की खान कैसे बन गई ।

यह बात जरूर उसकी समझ में आ रही थी कि पवन के साथ किसी प्रकार उनका दुश्मनी का रिश्ता जरूर था।

फिलहाल वह इस बात के लिए राहत महसूस कर रही थी कि उस राक्षस के हाथों उसकी इज्जत लुटने से बच गई।

लेकिन यह राहत वक्ती तौर पर थी।

कोई ऐसा कारण जरूर था जिसके कारण वह नाटा आदमी उसके साथ बदसलूकी नहीं कर सकता था और यह तभी तक था जब तक कि वह अनजाना कारण मौजूद था।

"अब चल यहां से।" नाटे व्यक्ति ने कहा- और मेरी इजाजत के बिना इधर आने की कोशिश नहीं करनी है तूने। समझ गया मेरी बात?"

"समझ गया कमांडर।" उसने कहा।

एक बार फिर उसने कामुक अंदाज में इस तरह पूनम की ओर देखा जैसे किसी भूखे कुत्ते के सामने से मांस का टुकड़ा उठा लिया हो।

पूनम उस आदमी से कुछ पूछना चाहती थी। लेकिन वह पूछ कुछ नहीं सकी।

वे दोनों उस कक्ष से बाहर चले गए।

□□□

बूढ़े और कमजोर मवेशियों से लदा हुआ वह ट्रक उस सैनिक चेकपोस्ट पर रुका, जहां प्रत्येक वाहन को कड़ी जांच-परख के बाद जाने दिया जाता था।

चेकपोस्ट पर सैनिक गतिविधियां कुछ ज्यादा ही बढ़ गई नजर आ रही थीं। मानो कोई असाधारण स्थिति हो।

ट्रक के रुकने पर ड्राइविंग सीट से एक भारी डील-डौल वाला पठान खिड़की से कूदकर बाहर आया।

दूसरी खिड़की से एक मैले-कुचैले कपड़ों वाला युवक बाहर आया जो उस ट्रक का

क्लीनर था तथा दूसरा व्यक्ति अधेड़ आयु का था। उसके चेहरे पर दाढ़ी थी तथा चार खाने वाला तहमद उसने घुटने से भी ऊंचे बांधा हुआ था।

अपनी वेशभूषा से ही वह मवेशियों का व्यापारी नजर आ रहा था।

ड्राइवर व चार खाने के तहमद वाला व्यक्ति उस अधिकारी के सामने पहुंचे जो वाहनों के कागजात चेक कर रहा था। जबकि क्लीनर ट्रक के टायर चेक करने लगा।

उन्होंने कुछ कागजात टेबल पर रख दिए।

उस अधिकारी ने उन कागजात को बारीकी से चेक किया।

पहले उसने ड्राइविंग लाइसेंस तथा गाड़ी के दूसरे कागजात चेक किए। ड्राइविंग लाइसेंस पर लगी तस्वीर से ड्राइवर की शक्ल का मिलान किया।

फिर मवेशियों की बिल्टी चेक की जो सीमा के करीब एक बूचड़खाने में बिक्री के लिए जा रहे थे। चार खाने वाले व्यक्ति का व्यापारिक लाइसेंस चेक किया।

पूरे कागजात देखने के बाद वह संतुष्ट नजर आया तथा कागजात वापस लौटा दिए।

इस बीच दूसरे सैनिकों ने ट्रक की पूरी तरह से तलाशी लेने का काम पूरा कर लिया। ट्रक में कोई संदिग्ध वस्तु या गतिविधि उन्हें नजर नहीं आई।

"कोई खास बात है क्या जनाब?" ड्राइवर ने कागजात लेते हुए उस अधिकारी से पूछा।

"क्यों?" अधिकारी ने प्रश्नसूचक नेत्रों से उसकी ओर देखा।

"यूं ही पूछ रहा था जनाब आज कुछ ज्यादा ही चौकसी नजर आ रही है।"

"जानते हो-यह सैनिक एरिया है। सैनिक एरिया में हर किसी को दाखिल नहीं होने दिया जा सकता।"

"हमेशा तो ऐसा नहीं होता जनाब।"

"बहस मत करो।" उस अधिकारी ने रूखेपन से कहा- "जाकर काम देखो अपना।"

"जी जनाब।" ड्राइवर ने कहा तथा अपने ट्रक की ओर बढ़ गया। तब तक उन्हें इस बात की इजाजत मिल गई थी कि वे अपना ट्रक ले जा सकते थे।

वे तीनों गाड़ी में सवार हुए और गाड़ी आगे बढ़ गई।

कुछ दूर निकल जाने पर तीनों ने एक-दूसरे की ओर देखा।

उनके होंठों पर अर्थपूर्ण मुस्कराहट उभरी।

यह सारी चौकसी जिनके लिए की जा रही थी, वह इतनी सहूलियत से उनकी नाक के ऐन नीचे से होकर गुजर गए और उनके फरिश्तों को भी उनकी भनक नहीं लग सकी।

वे सोच भी नहीं सकते थे कि मैले-कुचैले कपड़े पहने वह गंदा-सा नवयुवक जो उस ट्रक का क्लीनर नजर आ रहा था यह वही कैप्टन कबीर ठाकुर था जिसने पूरे मुल्क में तबाही मचा दी थी और वहां की पूरी सेना की नींद हराम हो गई थी।

शानदार पठानी सूट पहने जो खूबसूरत नौजवान ट्रक को ड्राइव कर रहा था, वह उसका सहयोगी अनिल वर्मा था। जो कि उस समय अपने सीनियर का उस्ताद बना हुआ था।

तीसरा मवेशी व्यापारी हकीकत में ही मवेशी व्यापारी था। इस व्यापार के लिए उसके पास वैध लाइसेंस था। लेकिन न जाने क्या कारण था कि वह सफेद हाथी के नाम से जाने जाने वाले उनके मददगार के ऊपर जान न्योछावर कर देने का जज्बा रखता था।

उसकी दूसरी विशेषता यह थी कि वह सीमा के आसपास के इलाके के चप्पे-चप्पे से

परिचित था।

वह उन रास्तों व पगडंडियों पर चलकर सीमा पार तक घूम आने में महारत हासिल किए हुए था।

इसलिए कैप्टन ठाकुर व अनिल वर्मा को सुरक्षित सीमा पार कराने की जिम्मेदारी उसी को सौंपी गई थी और उसने इस जिम्मेदारी को खुशी से स्वीकार कर लिया था।

अनिल वर्मा ने कैप्टन कबीर ठाकुर की ओर देखा।

"अब आप इन गंदे कपड़ों से मुक्ति पा लीजिए सर।"

"मुझे इससे बड़ी असुविधा हो रही है।"

"असुविधा-तुम्हें क्या असुविधा हो रही है? मुझे तो कोई असुविधा नहीं हो रही।"

"क्यों?"

"देखने वाले आपको मेरा क्लीनर समझ रहे हैं। यह मुझे अच्छा नहीं लग रहा सर।"

कैप्टन कबीर ठाकुर मुस्कराया।

"इस तरह के नाटक करना तो हमारे पेशे का एक अंग है अनिल वर्मा-इसमें अच्छा या बुरा लगने का सवाल कहां से पैदा हो गया?"

"फिर भी सर...!"

"खतरा अभी टला नहीं है अनिल वर्मा-यह सैनिक एरिया है और यह एरिया सीमा तक फैला हुआ है। इसलिए जब तक हम सीमा पार नहीं कर लेते, तब तक हमें पूरी सावधानी बरतनी है। इसमें जरा-सी चूक हमारी मौत का कारण बन सकती है। अपने देश की सीमा में हमें इसी वेश में कदम रखना है। इन कपड़ों से निजात हमें वहीं जाकर मिलेगी।"

इसके बाद अनिल वर्मा ने अपना ध्यान ड्राइविंग पर केंद्रित कर लिया।

□□□

कैप्टन कबीर ठाकुर व अनिल वर्मा के विजयी होकर लौटने पर उनके महकमे में उनका जोरदार स्वागत किया गया। वहीं मनमोहन देसाई ने गिरफ्तारी के बाद बहुत सारी महत्वपूर्ण जानकारियां दीं।

उसने कई ऐसे लोगों के नाम बताए जो कि उसके साथ मिलकर देश के साथ गद्दारी कर रहे थे।

लेकिन एक रहस्य अभी बाकी था।

वह रहस्य उन लोगों के बारे में था जिन्होंने डॉक्टर जसवीर चावला के बेटे का अपहरण किया था और उस पर कैप्टन कबीर ठाकुर को एक विशेष मेडिकल रिपोर्ट तैयार करने के लिए दबाव डाला था। वे लोग कौन थे, इसका पता अभी तक नहीं लग रहा था।

लेकिन इसकी छानबीन जोर-शोर से की जा रही थी और इस मामले की छानबीन करने वाली टीम ने दावा किया था कि अगले एक-दो दिन में ही वे इस मामले की तह तक पहुंच जाएंगे। क्योंकि उनके पास उन लोगों के बारे में कुछ महत्वपूर्ण सुराग थे जो उन्हें जल्दी में ही हाथ लगे थे।

लेकिन कैप्टन कबीर ठाकुर पूनम के बारे में सोच रहा था-वह उससे मिलने के लिए मरा जा रहा था।

पहली फुरसत में ही वह पूनम से मिलने के लिए उसके घर पहुंचा।

लेकिन घर पर उसे पूनम नहीं मिली।

उसके घर में कहीं ताला नहीं लगा हुआ था-इसका मतलब तो यही था कि वह यहीं कहीं आसपास में होगी।

लेकिन अंदर जाकर उसने देखा तो घर के हालात बता रहे थे जैसे कई दिन से घर में कोई रहा ही न हो।

फर्श पर धूल जमी थी।

कैप्टन कबीर ठाकुर का माथा ठनका।

यह सब उसे बेहद रहस्यपूर्ण नजर आया। इस तरह घर को खुला छोड़कर पूनम कहां जा सकती थी? इस तरह की लापरवाही तो वह नहीं कर सकती थी।

कैप्टन ठाकुर की आंखों में चिंता के भाव नजर आए। यह मामला उसकी समझ में नहीं आ रहा था।

वह अभी सोच ही रहा था उसी घड़ी एक लड़का वहां पहुंचा। कैप्टन ठाकुर ने उसकी ओर देखा। लड़के के हाथ में एक लिफाफा था जो उसने कैप्टन ठाकुर की ओर बढ़ा दिया।

कैप्टन ठाकुर के चेहरे पर उलझनपूर्ण भाव उभरे।

"क्या है यह?"

"एक आदमी ने दिया है अंकल-आपको देने के लिए।"

उसने लिफाफा ले लिया।

वह लड़का वापस चला गया।

कैप्टन कबीर ठाकुर ने लिफाफा खोलकर देखा। उसमें एक पत्र था।

'कैप्टन ठाकुर,

हमें विश्वास था कि तुम यहां जरूर पहुंचोगे। इसलिए

हम यहीं पर तुम्हारा इंतजार कर रहे थे। क्योकि यह संदेश तुम तक पहुंचाना हमारा फर्ज था।

संदेश तुम्हारी प्रेमिका पूनम के संबंध में है।

यदि पूनम की सलामती चाहते हो तो अभी इसी समय इस पत्र के दूसरी ओर लिखे पते पर पहुंच जाओ। वहां पहुंचकर तुम्हें बताया जाएगा कि पूनम के साथ तुम्हारी मुलाकात कहां और कैसे हो सकती है।

इस मामले में किसी प्रकार की चालाकी दिखाने की कोशिश मत करना ऐसा करना तुम्हारी प्रेमिका के स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं होगा। इस बात का ध्यान रखना कि तुम इस समय भी हमारी नजर में हो और जब तक हमारी नजर में रहोगे जब तक अपनी प्रेमिका के पास नहीं पहुंच जाते।

यदि अपनी उस फूल जैसी हसीन प्रेमिका की क्षत-विक्षत लाश देखना पसंद हो तो इस पत्र के निर्देशों का पालन न करना या फिर मामूली-सी चालाकी दिखाने की कोशिश कर देखना।

पूनम की वह लाश सूरज की पहली किरण के साथ ही तुम्हारे पास तोहफे के रूप में पहुंच जाएगी जिसे तुम देखने का भी साहस नहीं कर पाओगे।

पीछे लिखे पते तक पहुंचने के लिए तुम अपनी उसी गाड़ी का इस्तेमाल कर सकते हो

जिस पर सवार होकर तुम यहां तक पहुंचे हो।

तुम्हारे शुभचिंतक ।'

कैप्टन ठाकुर चिंतित हो उठा।

वह जिस पूनम से मिलने के लिए वह महीनों से तड़प रहा था और उसी तड़प को शांत करने की तमन्ना लेकर वह यहां पहुंचा था वह उसे मौत के मुंह में नजर आई।

इतना तो वह खड़े-खड़े ही समझ गया कि ये वही लोग थे जिन्होंने एक बार उसे उस मिशन से दूर करने की कोशिश की थी और उनका महकमा अभी तक उनका पता नहीं लगा सका था।

लेकिन फिलहाल उसके पास यह सोचने का वक्त नहीं था।

फिर उसने फैसला करने में ज्यादा वक्त नहीं लगाया।

उने उस पत्र को पलटकर देखा।

उसकी नजरें वहां लिखे पते पर तैरने लगीं।

उसके चेहरे के भावों से स्पष्ट था कि वह अपनी जिंदगी का एक अहम फैसला ले चुका था।

फिर वह तेज कदमों से घर से बाहर जाने वाले दरवाजे की ओर बढ़ा।

□□□

एक मजबूत रस्सी के द्वारा जकड़कर कैप्टन कबीर ठाकुर को इस तरह मजबूर कर दिया था कि वह अपने स्थान से हिल भी नहीं सकता था। उसके बराबर में ही पूनम को भी बंधनों में जकड़ा हुआ था। लेकिन उसके बंधन उतने सख्त नहीं थे।

कैप्टन कबीर ठाकुर ने उस नाटे व्यक्ति की ओर देखा जो उस दाढ़ी वाले व्यक्ति के बराबर में खड़ा था।

"मैंने तुम्हारी शर्त पूरी कर दी है।" उसने कहा- "तुम्हारी कोई दुश्मनी है तो मेरे साथ है। पूनम के साथ तुम्हारी कोई दुश्मनी नहीं है। अब इसे आजाद कर दो।"

"हमने ऐसा कोई वादा तो नहीं किया था कैप्टन कबीर ठाकुर। हमने केवल इतना कहा था कि तुम्हारी मुलाकात तुम्हारी प्रेमिका से करा दी जाएगी और हमने अपना कहना पूरा कर दिया है।"

"तुम वादाखिलाफी कर रहे हो।"

"हम कोई वादाखिलाफी नहीं कर रहे। वैसे हम लड़की को मुक्त कर देंगे। लेकिन जब हम इसे मुक्त करेंगे तब यह जीवन से ही मुक्त होने की बात करेगी।"

"तुम ऐसा कुछ नहीं करोगे। तुम इसे आजाद कर दो। इसके बाद तुम जो कहोगे मैं वही करूंगा।"

"हमें तुमसे कुछ नहीं कराना है कैप्टन ठाकुर-हमारा काम समाप्त हो चुका है। तुम्हारे साथ हमारी कोई दुश्मनी भी नहीं है। लेकिन तुम्हारे दुश्मनों से हमने वादा किया था उसी वादे के तहत हम तुम्हें उनके हवाले कर देंगे। लेकिन इस लड़की को जिंदा छोड़कर हम अपने लिए कोई खतरा मोल लेना अफोर्ड नहीं कर सकते।"

"तुम मेरे किस दुश्मन की बात कर रहे हो?"

"कर्नल फतेह मोहम्मद बानी।" एक नया स्वर उस कक्ष में उभरा। उसके साथ ही एक

भारी डील-डौल वाले व्यक्ति ने अंदर कदम रखा- "मुझे कर्नल फतेह मोहम्मद बानी कहते हैं कैप्टन कबीर ठाकुर।"

"कर्नल फतेह मोहम्मद बानी।" कैप्टन ठाकुर की आंखों में अजीब-से भाव उभरे।

"तुम्हें इस बात पर फ़ख्र होना चाहिए कैप्टन कबीर ठाकुर कि मैं स्वयं तुम्हें गिरफ्तार करने के लिए आया हूं। वैसे तुमने हमारे मुल्क में जो कुछ किया उसे देखते हुए तुम्हारी हिम्मत और दिलेरी की दाद देनी पड़ेगी।"

"तुम्हारे मुल्क में तो तुम्हारी इस कामयाबी पर जश्न मनाया जा रहा होगा। तुम्हारे लोग समझ रहे होंगे कि तुमने हमें बहुत बड़ी चोट दी है हमारे घर में घुसकर।"

"लेकिन थोड़ी देर बाद ही वे जान जाएंगे कि हमने भी उस आदमी को-जिसे तुम्हारा मुल्क हीरो का दर्जा दे रहा है-उसके मुल्क में जाकर पकड़ा है।"

"तुम्हारा देश भी जान लेगा कि कोई हमें चोट तो पहुंचा सकता है, लेकिन हम अपने ऐसे मुजरिम को उसके घर भी पकड़कर लाने की हिम्मत रखते हैं।"

"इससे उन लोगों का सिर नीचा हो जाएगा जो तुम्हारी बहादुरी के कारण अपना सिर उठाकर चलने की कोशिश कर रहे हैं।"

"नहीं कर्नल बहादुरी में तुम हमारा मुकाबला नहीं कर सकते तुम कायर हो-और तुम्हारी कायरता हमारे महान देश का सिर नहीं झुका सकती।"

"कायरता-हम तुम्हारे मुल्क में घुसकर तुम्हें गिरफ्तार कर रहे हैं इसके बाद भी तुम हमें कायर कह रहे हो?"

"कोई भी बहादुर आदमी-कोई मर्द का बच्चा एक निर्दोष, एक भोली-भाली लड़की को ढाल बनाकर अपनी लड़ाई नहीं लड़ सकता। यह सिर्फ कायरों का काम है और वही तुमने किया है।"

"यह हमारी कायरता नहीं कैप्टन- इसे समझदारी कहते हैं।"

"तुम इसे कुछ भी कहो कर्नल-लेकिन कायरता फिर भी कायरता ही रहेगी। हम ऐसी कायरता कभी नहीं कर सकते कि अपनी जंग लड़ने के लिए किसी औरत का सहारा लें।"

"हम अपनी जंग में औरतों को इस्तेमाल नहीं करते बल्कि उनकी रक्षा करने के लिए अपनी जान की बाजी लगा देते हैं। अजरा खान नाम की वह औरत इस बात का सबूत है। हमने इसलिए उसकी रक्षा की है, क्योंकि वह हमारे कारण तुम्हारे कहर का शिकार होने जा रही थी-हालांकि उसने हमारी कोई मदद नहीं की। वह हमें जानती तक नहीं थी।"

"बहादुरी की बात तुम उस आदमी के सामने कर रहे हो कर्नल जो तुम्हारे घर में घुसकर तुम्हारी नाक काटकर लाया है।"

"बहुत बड़ी-बड़ी बातें कर रहे हो कैप्टन कबीर ठाकुर। लेकिन उस समय तुम्हारी सारी अकड़ निकल जाएगी जब तुम हमारे जल्लादों के हाथों में होंगे। उस समय सारी बहादुरी भूलकर गिड़गिड़ाते हुए रहम की भीख मांग रहे होंगे।"

"अभी तो मैं अपने देश में ही हूं कर्नल-तुमने अभी से शेखचिल्ली वाले सपने देखने शुरू कर दिए।"

"अब ज्यादा वक्त नहीं है कैप्टन कबीर ठाकुर-बहुत जल्दी तुम इस देश की धरती से बहुत दूर होंगे। फिर कभी इस धरती पर कदम रखना तुम्हें नसीब नहीं होगा।"

"मुझे अपने अंजाम की कोई परवाह नहीं है कर्नल-लेकिन मेरे वहां तक पहुंचने में अभी जितना वक्त है, इतने वक्त में तो कुछ भी हो सकता है। इतने वक्त में तो हजारों बार प्रलय हो सकती है।"

"लगता है अब शेखचिल्ली वाले सपने तुम देख रहे हो। लेकिन तुम्हारे यह सपने पूरे होने वाले नहीं हैं। अब कोई प्रलय नहीं आने वाली।"

लेकिन प्रलय आ गई। वह प्रलय जिसके बारे में स्वयं कैप्टन कबीर ठाकुर ने भी नहीं सोचा था।

यह प्रलय उसी के महकमे की उस टीम के कमांडोज के रूप में आई थी जो डॉक्टर चावला के बेटे के अपहरण से संबंधित मामले को देख रहे थे।

"तुम्हारा खेल खत्म हो चुका है।"

यह कोड़े की फटकार जैसा वही स्वर था, जिसे सुनकर वे तीनों फुर्ती के साथ पलट गए थे।

"हिलना नहीं-अगर जरा-सी भी हरकत करने की कोशिश की तो गोलियों से छलनी करके रख दिए जाओगे।"

उन तीनों को कई जोड़ी खूंखार आंखें व खतरनाक गनों के मुहाने अपनी ओर घूरते नजर आए।

और इसके बाद उन्हें कुछ भी करने का मौका नहीं मिला।

कमांडोज ने उन्हें दबोच लिया।

दो कमांडोज ने बड़ी तत्परता के साथ आगे बढ़कर कैप्टन कबीर ठाकुर व पूनम के बंधन खोल दिए।

कैप्टन कबीर ठाकुर ने कर्नल फतेह मोहम्मद बानी की ओर देखा।

"प्रलय तो आ गई कर्नल फतेह मोहम्मद बानी।" उसके स्वर में व्यंग्य था।

और अभी-अभी अपनी बहादुरी की डींग हांकने वाले उस बड़बोले आदमी का चेहरा आतंक से पीला पड़ता चला गया।

□□□

कर्नल फतेह मोहम्मद बानी की गिरफ्तारी को उससे भी बड़ी सफलता के रूप में देखा जा रहा था जो कि दुश्मन के आतंकवादी प्रशिक्षण शिविरों को तबाह करके कैप्टन कबीर ठाकुर ने हासिल की थी।

उसकी गिरफ्तारी से दुश्मन के पूरे जासूसी नेटवर्क को तोड़ा जा सकता था।

और उस समय जबकि इंटेलीजेंस के विशेषज्ञ कर्नल फतेह मोहम्मद बानी व दूसरे गिरफ्तार किए गए लोगों से पूछताछ करके उनके संपर्कों के बारे में जानने की तैयारी कर रहे थे-ठीक उसी समय कैप्टन कबीर ठाकुर इस सारी कार्यवाही से बेखबर अपनी उस प्रेमिका के साथ अपने पवित्र व सच्चे प्यार का एक नया अध्याय लिखने की तैयारी कर रहा था।

पूनम को भी उससे बहुत सारी बातें करनी थीं-उससे बहुत सारी शिकायतें करनी थीं। वे शिकायतें जिनसे हकीकत में उसे कोई शिकायत नहीं थी। बल्कि उनके कारण तो उसे गर्व था अपने प्यार पर।

समाप्त